1180

उर्दू संग्रह

पुस्तक का नाम शाहजहाँ बादशाह नामा

लेखक मुन्शी देवी प्रशाद कायस्थ

प्रकाशन वर्ष 1870

आगत संख्या 1180

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

1180

1180,U

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होपा जी दरबनी
हिम्मत सिंघ
हिरदे राम कछ वाहा
हिरदे राम वांका कछ वाहे का बेटा

1180

1180 U

پاجی دکنی۔
ہمت سنگھ۔
ہردے رام کچھواہا۔
ہردے رام نسف اہا۔

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

शत्रुसाल कछवाहा माधो सिंघका
बेटा-
शत्रुसाल हाड़ा राव रतन का पोता
शम शेर खां शेरखां तंवर का बेटा
शत्रु जीत
शुभ करण
श्री सिंघ राठोड
हमीर राव दखनी
हमीर सिंघ ईसर दास सीसो दिये
का बेटा-
हर चन्द (राव) कछवाहा
हटी सिंघ (राव) राव हूंदा का बेटा
हर दास झाला
हर नाथ महा पात्र
हर राम भगवान दास कछ
का बेटा
हरी सिंघ राव रतन हाडा का
हरी सिंघ तिलोक चन्द का
हरी सिंघ राव चांदा का बेटा
हरी सिंघ किशन सिंघ राठो
बेटा-

ستروسال کچھواہہ خلف
مادھو سنگھ-
ستروسال ہاڈا نبیرہ راو رتن
شمشیر خان خلف شیر خاں تنور
ستروجیت
سبھکرن
سری سنگھ راٹھور-
ہمیر راو دکھنی
ہمیر سنگھ ولد ایسرداس
سیسودیہ-
ہرچند (راو) کچھواہا-
ہٹی سنگھ (راو) ولد راو ہودا
ہرداس جھالا-
ہرناتھ مہاپاتر
ہررام ولد بھگوان داس
*
ہرسنگھ ولد راو رتن ہادا
ہری سنگھ ولد تلوک چند
ہرسنگھ ولد راو چاندا (شاید ہنی سنگھ)
ہری سنگھ ولد کشن سنگھ
راٹھور *

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सामाजी	ساماجی-
सारंग देव (राजा)	سارنگدیو (راجہ)
साहूजी	ساہوجی-
सुखदेव (राजा) बुंदेला	سکھدیو (راجہ) بندیلہ
सुजान सिंघ सीसोदिया	سجان سنگھ سیسودیہ-
सुन्दर ब्राह्मण कवि राय	سندر برہمن کب رائی-
सुन्दर दास मीर सामान	سندردس میر ساماں
सूरज हाडा (राव)	سرجن ہاڈا (راؤ)
सूर भुरटिया (राव)	سور بھرٹیہ (راؤ)
सूरज सिंघ राठोड (राजा)	سورجنگھ (راجہ) راٹھوڑ
सूरज मल (राजा) राजा वासू का बेटा-	سورجمل (راجہ) راجہ باسو کا بیٹا-
सूरज मल राना अमर सिंघ का बेटा	سورجمل ولد رانا امرسنگھ
सोम देव भरजी का दामाद	سوم دیو داماد بھرجی-
स्याम ददा	سیام دادا
स्याम सिंघ राठोड करमसी का बेटा	سیام سنگھ راٹھوڑ ولد کرم سی
शंकर (राना) राना उदय सिंघ का बेटा	شنکر (رانا) ولد رانا اودیسنگھ
शक्ति सिंघ	سکت سنگھ-
शत्रुसाल राव सूर भुरटिया का [illegible]	شترسال پسر راو سور بھورٹیہ-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रूप सिंघ (राव) चन्द्रावत	روپ سنگھ (راؤ) چندراوت
रोद बाय जमी दार	رود بائے زمیندار-
लछमी नारायण	لچھمی نراین-
लखमन सेन चोहान	لکھمن سین چوہان-
संगी वमखल वड़ी तिस्लत का ज़मीदार-	سنگی بنجل زمیندار تبت کلاں-
संग्राम गुन्नोर का ज़मी दार	سنگرام زمیندار گنور
संग्राम जम्बू का जमी दार	سنگرام زمیندار جمبو-
संग्राम सिंघ कछ वाहा	سنگرام سنگھ کچھواہا-
संग्राम सिंघ राजावत	سنگرام سنگھ راجاوت-
संग्राम राजावत	سنگرام راجاوت-
सतरदी खीची	ستردی کھیچی
सबलसेन	سبل سین
सबल सिंघ राजा सूर सिंघ का बेटा	سبل سنگھ ولد راجہ سورسنگھ-
सभा चन्द (राय)	سبھا چند (رائے)
समरसी रावल वांस वाडा	سمرسی راول بانسواڑہ-
सरदार ज़मी दार	سردار زمیندار-
सर्ग देव आसाम का राजा	سرگ دیو راجہ آسام
सहना राजा अमर सिंघ का भाई	سہنا برادر راجہ امرسنگھ-
सांगा राना	سانگا (رانا)
साबाजी	سابا جی

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राज कंवर राणा जगत सिंघ का बेटा
राज रूप (राजा) राजा जगत सिंघ का बेटा
राम दास (राजा) कछ वाहा
राम सिंघ करमसी राठोड का बेटा
राम सिंघ (कंवर) राजा जय सिंघ कछ वाहे का बेटा
राय सिंघ भाला
राय सिंघ राव अमर सिंघ राठोड का बेटा
रावत राव
रावत राय धनगर
रावत राय दखनी
रुघ नाथ सो सिंघ का ज़मीदार
रुघ नाथ भाटी
रुस्तम राव
रूप चंद गुलेरी
रूप सिंघ कछ वाहा
रूप सिंघ राठोड हरी सिंघ का भतीजा-
रूप सिंघ राव मुकंद का बेटा

راج کنور ولد رانا جگت سنگھ
راج روپ (راجہ) ولد راجہ جگت سنگھ۔
رام داس (راجہ) کچھواہا۔
رام سنگھ ولد کرم سی راٹھوڑ۔
رام سنگھ (کنور) خلف راجہ جے سنگھ۔
رائے سنگھ جھالا۔
رائے سنگھ خلف راؤ امر سنگھ راٹھوڑ۔
راوت راؤ۔
راوت دھنگر۔
راوت راؤ دکھنی۔
رگناتھ زمیندار سوسنگ
رگناتھ بھاٹی۔
رستم راؤ۔
روپ چند گوالیاری (گلیری)
روپ سنگھ کچھواہا۔
روپ سنگھ راٹھوڑ ہر سنگھ کا بھتیجا۔
روپ سنگھ ولد راؤ مکند۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुकंद जमीदार	مکند زمیندار-
मुकंद जादों	مکند جادوں-
मुकंद दास राजा गोपाल दास का भाई	مکند داس راجہ گوپال داس کا بھائی ٭
मुकंद दास राठोड	مکند داس راٹھوڑ-
मुकंद दास (राय) यमीनुद्दोला का वकील	مکند داس (رائے) وکیل یمین الدولہ-
मुरारी पंडित	واری پنڈت
मेदनी राय	میدنی رائے-
मेदनी मल	میدنی مل-
मेदनी राय	میدنی رائے-
मेनाजी साहूजी का भाई	مینا ساہوجی کا بھائی-
मोहक सिंघ सीसोदया	محکم سنگھ سیسودیہ-
मोहन सिंघ	موہن سنگھ-
यसवंत राय दखना	یونت رائے دکھنی-
रतन (राव) हाडा	رتن راؤ ہاڈا-
रतन राठोड महेस दास का बेटा	رتن راٹھوڑ ولد مہیس داس
रतनाई	رتنائی-
रवी राय साठिया	روی رائے ساٹھیا-
राघो चोधरी	راگھو چودھری
राघो जादों राय का बेटा	راگھو ولد جادوں رائے ٭

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वाहे का बेटा	کچھواہا-
मनोहर दास विट्ठल दास का भाई	منوہر داس بٹھلداس کا بھائی-
मलूक चन्द मुसरफ़ (कायस्थ)	ملوک چند مشرف (کایتھ)
महेस दास महावत खानी	مہیس داس مہابت خانی-
महेस दास राठोड़	مہیس داس راٹھوڑ-
माधो सिंघ सीसो दिया	مادھو سنگھ سیسودیہ-
माधो सिंघ राजा बासू के बेटे सूरज मल का भाई-	مادھو سنگھ برادر سورجمل خلف راجہ باسو-
माधो जी	مادھوجی-
माधो सिंघ हाड़ा राव रतन का बेटा	مادھو سنگھ ہاڈا ولد راؤ رتن-
मान सिंघ गवालेरी (गुलेरी)	مان سنگھ گوالیاری (گولیری)
मान (राजा) तंवर	مان (راجہ) تنور-
मान सिंघ मिरजा राजा (कछवाहा)	مان سنگھ مرزا راجہ کچھواہا
मान सिंघ (राजा) विक्रमाजीत का बेटा-	مان سنگھ (راجہ) ولد بکرماجیت-
मान सिंघ रावत	مان سنگھ راوت
मानक चोहान	مانک چوہان-
मानी दास (राय)	مانی داس (رائے)
मालूजी भोसला	مالوجی بھوسلہ-
माई दास (राय)	مائیداس (رائے)
मित्र सेन राजा स्याम सिंघ का भाई	مترسین برادر راجہ سیام سنگھ-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वेटा कछवाहा	خلف جگت سنگھ-
भीकूजी	بھیکوجی-
भीम सीसोदिया (महाराजा) रानश	بھیم (مہاراجہ) سیسودیہ خلف رانا
मर सिंघ का वेटा-	امر سنگھ-
भीम राठोड़	بھیم راٹھوڑ-
भीम सेन	بھیم سین-
भोज राज दखनी	بھوج راج دکھنی-
भोज राज सेखावत राय सल दर	بھوج راج سیکھاوت ولد رائے
वारी का वेटा	سال درباری-
भोज कच्छ के ज़मीदार भारा क	بھوج راج ولد بھارا زمیندار
छ का वेटा	کچھ-
भोज राज किलेदार	بھوج راج قلعدار-
भोज वल नायक वारी	بھوج بل نایکواڑی-
भोपत	بھوپت-
भोपत संग्राम का वेटा	بھوپت سنگرام کا بیٹا-
मंगूजी बनालकर	منگوجی بنالکر-
मंगूजी दखनी	منگوجی دکھنی-
मंगूराम दखनी	منگورام دکھنی-
मथरादास कछवाहा	متھرا داس کچھواہا-
मदन सिंघ भदोरिया	مدن سنگھ بھدوریہ
मन रूप (राजा) जग नाथ कछवा	منروپ (راجہ) ولد جگناتھ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बिक्रमा जीत राजा मान सिंघ तंवर का बेटा	بکرماجیت ولد راجہ مان سنگھ تنور۔
बिक्रमा जीत भदोरिया	بکرماجیت بھدوریہ۔
बिठ्ठल दास (राजा) गोड़	بٹھل داس (راجہ) گوڑ۔
बिलास तान सेन का बेटा	بلاس ولد تان سین۔
बिहारी दास कछ वाहा-	بہاری داس کچھواہا۔
बिहारी मल	بہاری مل۔
बीर नरायरा ज़मीदार पचेट	بیرنارائن زمیندار پچیٹ۔
बीर नारायरा (राजा) ज़मी दार को च बिहार	بیرنرائن زمیندار کوچ بہار۔
बीरमदे	بیرم دیو۔
बनी दास (राजा) बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा	بینی داس (راجہ) ولد راجہ برسنگھدیو۔
भगवान दास राजा बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा	بھگوان داس ولد راجہ برسنگھدیو بندیلہ۔
भरजी ज़मी दार बगलाना	بھرجی زمیندار بگلانہ۔
भागीरथ भील	بھاگیرتھ بھیل۔
भारत बुंदेला (राजा)	بھارت بندیلہ (راجہ)
भार मल (राजा) किशन सिंघ का बेटा	بھار مل (راجہ) خلف راجہ کشن سنگھ۔
भारमल इडरिया	بھار مل اڈریہ۔
भाव सिंघ (राजा) जगत सिंघ का	بھاؤ سنگھ کچھواہا (راجہ)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बलराम गोड़ राजा गोपाल दास का बेटा-	بلرام گوڑ ولد راجہ گوپال داس-
बलराम राना जगत सिंघ का बकील -	بلرام ولد رانا جگت سنگہ
	*
बल्लू चोहान	بلو (رائے) چوہان
बल्लू राठोड़	بلو راٹھوڑ-
बसराम	بسرام-
बसेता जी ज़मीदार	بسیتا جی زمیندار-
बहरोज़ (राजा)	بہروز (راجہ)
बहादर जी दखनी	بہادر جی دکھنی
बहादर सिंघ (राजा)	بہادر سنگہ (راجہ)
बाघ, शेरखां, तंवर का बेटा	باگہ ولد شیر خاں تنور
बाघ राना अमर सिंघ का बेटा	باگہ ولد رانا امر سنگہ
बाबू लछमन ज़मीदार	بابو لچھمن زمیندار
बाला राजा जगनाथ कछवाहे का बेटा	بالا ولد راجہ جگناتھ کچھواہا
	*
बासू (राजा)	باسو راجہ
बिक्रमा जीत राजा जूझार सिंघ बुंदेला का बेटा	بکرماجیت ولد راجہ جوجھار سنگہ بندیلہ-
बिक्रमा जीत (राजा) असली नाम सुंदर दास ब्राह्मण	بکرماجیت (راجہ) اصلی نام سندر داس برہمن-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पेम चंद राय मनोहर का पोता	پیم چند ولد رائے منوہر-
पेम नरायण ज़मीदार	پیم نراین زمیندار-
प्रताप उज्जनिया	پرتاب اوجینیہ-
प्रताप ज़मीदार पलामूं	پرتاب زمیندار پلامو-
प्रताप सिंघ चोहान	پرتاب سنگہ چوہان-
प्रताप बलभद्र का बेटा	پرتاب ولد بلبھد ہر چیرو-
प्रीछत	پریچھت-
पृथ्वी राज सारंग देव का बेटा	پرتھی راج ولد سارنگدیو-
पृथ्वी राज राठोड़	پرتھی راج راٹھوڑ-
पृथ्वी सिंघ कछवाहा	پرتھی سنگہ کچھواہا-
पृथ्वी चंद चम्बे का ज़मीदार	پرتھی سنگہ زمیندار چمبہ-
फ़तह सिंघ सीसोदिया महाराना भीम का बेटा	فتح سنگہ سیسودیہ خلف مہاراجہ بھیم-
बख़्तावर (राजा)	بختاور (راجہ)
बदन सिंघ भदोरिया (राव)	بدن سنگہ (راؤ) بھدوریہ-
बनमाली दास (राय)	بن مالیداس (رائے)
बनारसी दास (राय)	بنارسی داس- (رائے)
बरबल राव	بربل راؤ-
बलदेव प्रीछत का बेटा	بلدیو ولد بریچھت-
बलभद्र सेखावत	بلبھد ہر سیکھاوت-
बलराम हाड़ा	بلرام ہاڈا-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बेटा-	٭
नर हर दास राजा बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा-	نرہر داس ولد راجہ برسنگدیو پندیلہ-
नर हर दास झाला	نرہر داس جہالا-
नायक बख़्श	نایک بخشو-
नाहर सोलंखी	ناہر سولنکھی-
नित्या नन्द	نتیانند-
निहाल चंद जोहरी	نہال چند جوہری-
पतंग रायजादों	پتنگ جادوں-
परमजी (दौलत मंद) भरजी का बेटा	پرم جی- (دولتمند) بھرجی کا بیٹا-
परस राम	پرسرام-
परसूजी खीसूजी का भाई	پرسوجی کھیسوجی کا بھائی-
परसूजी	پرسوجی-
परसोतम राजा राज सिंघ का पोता	پرسوتم نبیرہ راجہ راج سنگھ-
पहाड़ सिंघ (राजा) राजा बर सिंघ देव का बेटा-	پہاڑ سنگھ (راجہ) ولد راجہ برسنگدیو-
पहाड़ सिंघ राठोड़	پہاڑ سنگھ راٹھوڑ-
पारबती (रानी) बर सिंघ देव की	پاربتی (رانی) زوجہ کلاں راجہ برسنگدیو
पिथोरा राय	پتھورا (رائے)
पीथा जी भच लाजी का बेटा	پنجھوجی خلف اچلاجی-
पूंजा रावल	پونجا راول-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तोडर मल (राय)	ٹوڈرمل (رائے)
तोडर मल (राजा)	ٹوڈرمل (راجہ)
दत्ताजी दखनी	دتاجی دکھنی-
दलपतराय	دلپت رائے-
दलपत माडरा राठोड़ का बेटा	دلپت خلف مانڈن راٹھوڑ-
दयानत राय गुजराती	دیانت رائے گجراتی-
दयाल शेर खां का बेटा	دیال پسر شیرخان-
दयाल दास (रावत) झाला	دیال داس (راوت) جھالا-
दादाजी पंडित	داداجی پنڈت-
दुर्गभान जूझार सिंघ बुंदेले का बेटा	درگ بھان ولد راجہ جوجھار سنگھ بندیلہ
दुर्जन साल विक्रमाजीत का बेटा	درجن سال خلف بکرماجیت-
दूदा (राव) राव चांदा का बेटा	دودا (راؤ) ولد راؤ چاندا-
देव जी	دیوجی-
देवी सिंघ राजा बुंदेला	دیبی سنگھ (راجہ) بندیلہ-
दोलों नाग नाथ	دولو ناگ ناتھ-
द्वारिका दास कछ वाहा राजा गिरधर का बेटा	دوارکا داس کچھواہا ولد راجہ گردھر-
नरपत हाड़ा	نرپت ہاڈا-
नर सिंघ दास (राजा) द्वारिका दास का बेटा-	نرسنگداس (راجہ) ولد دوارکا داس-
नर सिंघ देव राजा विक्रमाजीत का	نرسنگدیو (راجہ) ولد بکرماجیت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जसवंत राठोड़ महेस का भाई	جسونت راٹھوڑ برادر مہیس
जसवंत राय	جسونت رائے۔
जसवतराय	جسونت راؤ۔
जादों राय कायथ दीवान व्यूतात	جادوں رائے کائستھ دیوان بیوتات
जादों दास	جادوں داس۔
जादों राय	جادوں رائے۔
जुझार सिंघ बुंदेला राजा वर सिंह दे व का बेटा	جوجہار سنگھ بندیلہ ولد راجہ نرسنگدیو۔
जेत सिंघ राठोड़	جیت سنگھ راٹھوڑ۔
जेत सूर	جیت سور۔
जोकू (राजा) दोलत मंद	جوکو (راجہ) دولت مند۔
जोधा (राणा) ज़मीदार उमर कोट	جودھا (رانا) زمیندار امرکوٹ
डूंगरसी	ڈونگرسی۔
तामा जी डोडिया	تاماجی ڈوڈیہ
ताना जी दखनी	تاناجی دکنی۔
तान सेन करलावत	تان سین کلاوت۔
तिलोक चन्द	تلوک چند۔
तिलोक चन्द (राजा) सेखावत	تلوک چند (راجہ) سیکھاوت۔
तिलंग राय	تلنگ رائے۔
तेज राय	تیج رائے۔
तोडर मल अफ़ज़ल खानी	ٹوڈرمل افضل خانی۔

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जग जीवन जर्राह
जग जीवन ऊदा जी का बेटा
जग राम हिरदे राम का बेटा
जग राम कछवाहा
जगनाथ कलांवत महा कवि राय
जग नाथ दलपत का बेटा
जग नाथ राठोड़ (राय)
जग नाथ राठोड़
जगदेव राय नादों राय का भाई
जग मरीं नादों
जग माल किशन सिंघ राठोड का बेटा
जगत सिंघ (राना) राना करण का बेटा
जगत सिंघ (राजा) राजा बासू का बेटा-
जय राम बड़ गूजर अनोप सिंघ का बेटा
जय सिंघ (राजा) राजा मान सिंघ का पोता-
जसवंत सिंघ (राजा) राजा गज सिंघ का बेटा-

جگ جیون جراح -
جگ جیون اوداجی کا بیٹا -
جگ رام خلف ہردے رام -
جگ رام کچھواہا -
جگناتہ کلاونت مہاکبی رائی -
جگناتہ ولد دلپت رائی -
جگناتہ راٹھوڑ (رائے)
جگناتہ راٹھوڑ -
جگدیو رائے برادر جادوں رائی
جگ من جادوں -
جگمال ولد کشن سنگہ راٹھوڑ -
جگت سنگہ (رانا) خلف رانا کرن *
جگت سنگہ (راجہ) خلف راجہ باسو *
جے رام بڈگوجر ولد راجہ انوپ سنگہ -
جے سنگہ (راجہ) نبیرۂ راجہ مان سنگہ -
جسونت سنگہ (راجہ) خلف راجہ گج سنگہ *

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गिरधर (राजा) बड़ा बेटा केशो दास का-
गूजर गुलरी-
गोकल दास सीसो दिया-
गोपाल दास गोड़ (राजा)
गोपाल सिंघ मन रूप का बेटा-
गोपी नाथ
गोविन्द दास राठोड़-
गोविन्द दास खान दोरानी
गोरधन राठोड़
चन्द्र नारायण
चन्द्र भान कछवाहा
चन्द्र भान चौहान (राय)
चन्द्र मणि राजा बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा-
चंपत (बुंदेला)
चंपाल
चतुर भुज चौहान
चतुर भुज सोनग्रा
चांदा (राव) गोंड़ वारो का ज़मींदार
चेत सिंघ-

گردھر (راجہ) خلف اکبر
کیشو داس +
گوجر گوالیاری (گلیری)
گوکل داس سیسودیہ -
گوپال داس گوڑ (راجہ)
گوپال سنگھ ولد منروپ +
گوپی ناتھ -
گوبند داس راٹھوڑ -
گوبند داس خاندورانی +
گوردھن راٹھور -
چندنارائن -
چندربھان کچھواہا -
چندربھان (رائے)
چندرمن ولد راجہ نرسنگدیو بندیلہ +
چنپت بندیلہ -
چنپال -
چتربھوج چوہان -
چتربھوج سونگرہ -
چاندا (راؤ) زمیندار گونڈوانہ
چیت سنگھ -

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

क्रपा राम	کرپارام-
किशन सिंघ तंवर	کشن سنگہ تنور-
किशन सिंघ (राजा) राजा सूरज सिंघ राठोड़ का भाई	کشن سنگہ (راجا) برادر سورج سنگہ راٹھوڑ-
किशन सिंघ राजा मान सिंघ का पोता	کشن سنگہ نبیرہ راجہ مان سنگہ
किशन सिंघ भदो रिया	کشن سنگہ بھدوریا-
किशनाजी वकील	کشناجی وکیل-
किशनाजी (कृष्णाजी) शिरज़ा राव	کشن جی (کرشناجی) شرزہ راؤ-
कीरत सिंघ जय सिंघ का वेटा	کیرت سنگہ ولد راجہ جے سنگہ-
कीरत सिंघ	کیرت سنگہ-
केबा ज़मीदार चांदा	کیبا زمیندار چاندا-
केसरी सिंघ महावत खांनी को किया-	کیسری سنگہ مہابت خانی-
खीलूजी भोंसला	کھیلوجی بھوسلا-
खेत्र दास राजा विक्रमा जीत का भाई	کھیتر داس برادر راجہ بکرماجیت-
गज सिंघ राठोड़ (राजा) राजा सूर सिंघ का वेटा	گج سنگہ (راجہ) خلف راجہ سورج سنگہ-
गज सिंघ विहारी दास का वेटा	گج سنگہ ولد بہاری داس-
गिरधर दास विठ्ठल दास का वेटा	گردھر داس ولد بٹھلداس-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उदय भान राजा गिरधर का बेटा	اودے بہان ولد راجہ گردہر
सेखावत-	سیکھاوت *
उदय भान जुझार सिंघ का बेटा	اودے بہان خلف راجہ جوجہار سنگہ
ऊदा जी राम दखनी	بندیلہ *
एत वार राव	اودا جی رام دکھنی *
एत माद राव	اعتماد راؤ دکھنی *
*कंवर सेन किस्ट वार का राजा	اعتبار راؤ دکھنی *
कन्हर राव क़िले दार	کنور سین راجہ کشتوار *
कनक सेन बैस	کنہر راؤ قلعہ دار *
कनैही वल भद्र सेखावत का	کنک سین بیس
बेटा	کنہی ولد بلبھدر سیکھاوت
कया ज़मादार चांदा (गोड़)	کیا زمیندار چاندا (گونڈ)
करन (राना)	کرن رانا *
करन (राव) राव सूर का बेटा	کرن (راؤ) ولد راؤ سور بھورٹیہ *
करम सिंघ	کرم سنگہ *
करम सी राठोड़	کرم سی *
कल्याण झाला	کلیان جہالا *
कल्याण (रावल) जेसल मेर	کلیان (راول) جیسلمیر *
काका जी पंडित	کاکا جی پنڈت *
	کاسیداس (رائے) بخشی کابل *
कासीदास (राय) बखशी काबुल	

* یہ تینوں نام ایک ہی شخص کے معلوم ہوتے ہیں

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अमर सिंघ रा जावत कछवा हा-
अमर सिंघ राजा नरवर के राजा राम दास का पोता-
अमर सिंघ राना-
अमर सिंघ (राव) राजा गज सिंघ का बेटा-
इन्द्र भान-
इन्द्र मणि बुंदेला-
इन्द्र साल हाड़ा राव रतन का बेटा
ईसर दास राना जगत सिंघ का नोकर-
उग्र सेन राजा मान सिंघ का पोता
उग्र सेन कछवाहा-
उग्र सेन शत्रु साल का बेटा कछवाहा-
उदय सिंघ (राव) बागड का-
उदय सिंघ मोटा राजा, राजा सूरज सिंघ का बेटा-
उदय सिंघ राना-
उदय भान राठोड़

امر سنگھ راجاوت کچھواہا
امر سنگھ (راجہ) بنبیرہ راجہ رام داس نروری کچھواہا
امر سنگھ (رانا)
امر سنگھ (راؤ) خلف راجہ گج سنگھ راٹھوڑ
اندر بھان
اندر من بندیلہ
اندر سال ہاڈا راؤ رتن کا بیٹا-
ایسر داس ملازم رانا جگت سنگھ
اوگرسین بنبیرہ راجہ مان سنگھ
اوگرسین کچھواہا
اوگرسین
اوگرسین ولد شترو سال (سین) کچھواہا
اودے سنگھ راؤ باگڑ کا
اودے سنگھ (سوڑ راجہ) خلف راجہ سورجنگھ-
اودے سنگھ (رانا)
اودے بھان راٹھوڑ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नामावली

इस किताब के दोनों हिस्सों में जिन हिन्दु सरदारों के नाम आये हैं वे यहां छांट कर लिखे जाते हैं कि जिस से उनकी औलाद को फ़ायदा पहुंचे॥

अचला जादों राय का बेटा -
अनि रुद्र बड़ा बेटा राजा बिठ्ठल दास का -
अनि राय सिंघ दलरा दूसरा नाम राजा अनूप सिंघ बड गूजर -
अनोप सिंघ राजा बड़ गूजर -
अनोप सिंघ बड़ गूजर -
अरजुन गोड़ बिठ्ठल दास का बेटा -
अरजुन राजा जगत सिंघ का चचा

فہرست اسمائے

اس کتاب کے دونوں حصوں میں جن جن ہندو سردار وں کا ذکر آیا ہے اُنکے نام اخذ کر کے یہاں لکھے جاتے ہیں کہ جس سے اُنکی اولاد کو فائدہ پہونچے

اچلا خلف جادوں رائے -
انرودہ خلف کلاں راجہ بٹھلداس +
انی رائے سنگہ دلن عرف راجہ توپ سنگہ بڈگوجر +
انوپ سنگہ (راجہ) بڈگوجر +
انوپ سنگہ بڈگوجر -
ارجن گوڑ ولد راجہ بٹھلداس -
ارجن عم راجہ جگت سنگہ

+ +

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कछवाहे का पोता ५सदी २५०स
वार-
१०४ सकत सिंघ चोहाण ५सदी
२५० सवार-
१०५ बेनी दास राजा बर सिंघदेव
बुंदेले का बेटा ५सदी २०० सवार-सं.१६९८
में १राजपूत के हाथ से मारा
गया-
१०६ उग्रसेन राजा मान सिंघ कछ
वाहा का पोता ५सदी २०० सवार
१०७ मान सिंघ राजा विक्रमा जीत
का बेटा ५सदी २०० सवार-
१०८ मनोहर दास विठ्ठल दास का
भाई ५सदी २०० सवार-
१०९ कन्ही बल भद्र सेखावत का
बेटा ५सदी २०० सवार-
११० केसरी सिंघ राठोड़ ५सदी
२०० सवार-
पांच सदी सेकम की फेरिस्त बाद
शाह नामे में नहीं दी गई है॥

کچھواہا کا پوتہ ۵ صدی ۲۵۰
سوار ٭
۱۰۳- کشن سنگھ راجہ مان سنگھ کچھواہا
کا پوتہ ۵ صدی ۲۵۰ سوار ٭
۱۰۴- اسکت سنگھ چوہان ۵ صدی
۲۵۰ سوار ٭
۱۰۵- بینی داس ولد راجہ برسنگدیو
بندیلہ ۵ صدی ۲۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں
ایک راجپوت کے ہاتھ سے مارا گیا ٭
۱۰۶- اوگرسین نبیرہ راجہ مان سنگھ
کچھواہہ ۵ صدی ۲۰۰ سوار ٭
۱۰۷- مانسنگھ راجہ بکرماجیت کا بیٹا ۵
صدی ۲۰۰ سوار ٭
۱۰۸- منوہر داس برادر بٹھلداس ۵
صدی ۲۰۰ سوار ٭
۱۰۹- کنہی ولد بلبدھر شیخاوت ۵
صدی ۲۰۰ سوار ٭
۱۱۰- کیسری سنگھ راٹھوڑہ ۵ صدی
۸۰ سوار ٭
پانصدی سے کم کی فہرست بادشاہ نامہ
میں نہیں دی گئی۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

९३ पेम चन्द राय मनोहर का पोता ६ सदी ४०० सवार-

९४ बाघा शेर खां तंवर का बेटा ६ सदी ३०० सवार-

५ सदी

९५ राजा किशन सिंघ तंवर ५ सदी ५०० सवार-

९६ चतुर भुज सोनग्रा ५ सदी ५०० सवार-

९७ राजा जग मन जादों ५ सदी ५०० सवार-

९८ हमीर सिंघ सीसो दिया ५ सदी ५०० सवार-

९९ बल्लू चोहान ५ सदी ३०० सवार-

१०० गोविंद दास राठोड़ ५ सदी २५० सवार-

१०१ जस वंत महेस दास राठोड़ का भाई ५ सदी २५० सवार

१०२ पृथ्वी सिंघ राजा मान सिंघ

۹۳ - پیم چند نبیرہ رائے منوہر ۶ صدی ۴۰۰ سوار +

۹۴ - باگھا ولد شیر خاں تنور ۶ صدی ۳۰۰ سوار +

پانصدی

۹۵ - راجہ کشن سنگھ تنور ۵ صدی ۵۰۰ سوار +

۹۶ - چتربھوج سوانگرا ۵ صدی ۵۰۰ سوار +

۹۷ - راجہ جگمن جادوں ۵ صدی ۵۰۰ سوار +

۹۸ - ہمیر سنگھ سیسودیہ ۵ صدی ۵۰۰ سوار +

۹۹ - بلو چوہان - ۵ صدی ۳۰۰ سوار +

۱۰۰ - گوبند داس راٹھوڑ ۵ صدی ۲۵۰ سوار +

۱۰۱ - جسونت برادر مہیس داس راٹھوڑ ۵ صدی ۲۵۰ سوار +

۱۰۲ - پرتھی سنگھ راجہ مان سنگھ -

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सदी ५०० सवार-

८४ चतुर भुज चौहान ७ सदी ५०० सवार-

८५ जगन्नाथ राठोड़ ७ सदी ४०० सवार- सं. १६९८ में मर गया

८६ सग राम कछ वाहा ७ सदी ४०० सवार-

८७ मथ रादास कछ वाहा ७ सदी ४०० सवार-

८८ राजा उदे भारा ७ सदी ४०० सवार-

८९ नारायण दास सीसो दिया ७ सदी सवार ३००

९० राय सभा चन्द ७ सदी २०० सवार-

६ सदी

९१ प्रताप सिंघ चोहारा ६ सदी ५०० सवार-

९२ उग्र सेन शत्रु साल कछ वाहा का बेटा ६ सदी ४०० सवार-

صدی ۵۰۰ سوار ٭

۸۴- چتر بھوج چوہان ۷ صدی ۵۰۰ سوار ٭

۸۵- جگناتھ راٹھوڑ ۷ صدی ۴۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں مرگیا ٭

۸۶- سگرام کچھواہا ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۷- متھرا داس کچھواہا ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۸- راجا اودے بھان ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۹- نارائن داس سیسودیہ ۷ صدی ۳۰۰ سوار ٭

۹۰- رائے سبھا چند ۷ صدی ۱۰۰ سوار ٭

ششصدی

۹۱- پرتاب سنگھ چوہان ۶ صدی ۵۰۰ سوار ٭

۹۲- اوگرسین ولد شترو سال ۶ صدی ۴۰۰ سوار ٭

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

७४ गोरधन राठोड़ ८ सदी ४०० सवार-

७५ इन्दर साल हाड़ा ८ सदी ४०० सवार-

७६ नाहर सोलंखी ८ सदी ४०० सवार-

७७ प्रजव सिंघ शत्रु साल कछवाहे का बेटा ८ सदी ३०० सवार-

७८ राना जेधा ज़मीदार उमरकोट ८ सदी ३०० सवार सं. १७०० में मर गया-

७ सदी

७९ राजा वह रोज़ राजा रोज़ अफ़ज़ू का बेटा ७ सदी ५५० सवार

८० भोज राज कछवाहा ७ सदी ५०० सवार-

८१ चन्द्रभान कछवाहा नरूका ७ सदी ५०० सवार-

८२ रावत दयाल दास झाला ७

۷۴- گوردھن راٹھور آٹھ صدی ۴۰۰ سوار ✤

۷۵- اندر سال ہاڈا- ۸ صدی ۴۰۰ سوار ✤

۷۶- ناہر سولنکی ۸ صدی ۴۰۰ سوار ✤

۷۷- عجب سنگھ ولد شترو سال کچھواہہ- ۸ صدی ۳۰۰ سوار ✤

۷۸- رانا جودھا زمیندار اومرکوٹ ۸ صدی ۳۰۰ سوار سنہ ۱۷۰۰ میں گذر گیا ✤

ہفت صدی

۷۹- راجہ بہروز خلف راجہ روز افزوں ہفتصدی ۵۵۰ سوار ✤

۸۰- چندربھان کچھواہہ نروکا ۷ صدی ۵۰۰ سوار

۸۱- بھوج راج کچھواہہ ۷ صدی ۵۰۰ سوار ✤

۸۲- راوت دیالداس جھالا ۷ صدی

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

1180

सवार-

६६ राय रायां हज़ारी १५० सवार

६७ राय भारमल हज़ारी १५० सवार-

९ सदी

६८ राजा मान गुलेरी ९ सदी ८५० सवार-

६९ जग राम कछ वाहा ९ सदी ८५० सवार-

८ सदी

७० नर सिंघ दास राजा द्वार कादास का बेटा ८ सदी ८०० सवार-

७१ कृपा राम गोड़ ८ सदी ७५० सवार-

७२ उग्रसेन कछ वाहा ८ सदी ६०० सवार-

७३ लस्वमन सेन चोहान ८ सदी ५०० सवार-सं. १६९८ में मरगया-

۲۵۰ سوار ✤

۶۶- رائے رایاں ہزاری ۱۵۰ سوار

۶۷- رائی بہارمل ہزاری ۱۵۰ سوار ✤

نصدی

۶۸- راجہ مان گلیری ۹ صدی ۸۵۰ سوار ✤

۶۹- جگرام کچھواہا نصدی ۸۵۰ سوار ✤

۸ صدی

۷۰- نرسنگداس خلف راجہ دوارکاداس آٹھ صدی ۸۰۰ سوار ✤

۷۱- کرپارام گوڑ ۸ صدی ۷۵۰ سوار ✤

۷۲- اوگرسین کچھواہا ۸ صدی ۶۰۰ سوار ✤

۷۳- لکھمن سین چوہان ۸ صدی ۵۰۰ سوار- سنہ ۱۶۵۸ میں مرگیا ✤

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar Digitized by eGangotri

ज़ारी ६०० सवार-

५७ महेस दास राठोड़ हज़ारी ६०० सवार

५८ राज सिंघ खीया राठोड़ का बेटा हज़ारी ६०० सवार- संवत १६९८ में मर गया-

५९ भग वान दास राजा बर सिंघ देव बुंदेल का बेटा हज़ारी ६०० सवार सं. १६९८ में मर गया-

६० किशन सिंघ भदोरिया हज़ारी ६०० सवार- सं. १७०१ में मर गया-

६१ राय तिलोक चन्द कछवाहा हज़ारी ५०० सवार-

६२ भोज राज दखनी हज़ारी ५०० सवार-

६३ राजा कंवर सेन किस्टवार का ज़मीदार हज़ारी ४०० सवार-

६४ राजा पृथ्वी चंद चम्बे का ज़मीदार हज़ारी ४०० सवार

६५ राय कासी दास हज़ारी २५०

ہزاری چھ سو سوار *

۵۷- مہیس داس راٹھوڑ ہزاری ۶۰۰ سوار *

۵۸- راج سنگھ ولد گھیان راٹھوڑ ہزاری ۶۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ کے آخیر میں مرگیا *

۵۹- بھگوان داس خلف راجہ برسنگدیو بندیلہ ہزاری ۶۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں مرگیا *

۶۰- کشن سنگھ بھدوریہ ہزاری ۶۰۰ سوار- سنہ ۱۰۵۴ میں مرگیا *

۶۱- رائے تلوک چند کچھواہا ہزاری ۵۰۰ سوار *

۶۲- بھوج راج دکنی ہزاری ۵۰۰ سوار *

۶۳- راجہ کنور سین زمیندار کشٹوار ہزاری ۴۰۰ سوار *

۶۴- راجہ پرتھی چند زمیندار چنبہ ہزاری ۴۰۰ سوار *

۶۵- رائے کاسیداس ہزاری

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

४७ कंवर राम सिंघ राजा जय सिंघ का बेटा हज़ारी १००० सवार

४८ गोपाल सिंघ राजा मन रूप कछवाहे का बेटा हज़ारी १००० सवार-

४९ राजा बदन सिंघ भदोरिया हज़ारी १००० सवार-

५० रावल समर सी बांस बाड़े का जमीदार हज़ारी १००० सवार-

५१ प्रताप चरवा हज़ारी १००० सवार-

५२ गिरधर दास गोड़ हज़ारी ८०० सवार-

५३ राय सिंघ राजा गज सिंघ राठोड़ का पोता राव अमर सिंघ का बेटा हज़ारी ७०० सवार-

५४ अरजुन गोड़ राजा बिठ्ठल दास का बेटा हज़ारी ७०० सवार-

५५ राय सिंघ झाला हज़ारी ७०० सवार-

५६ राजा अमर सिंघ नरवरी ह

۴۷- کنور رام سنگھ خلف راجہ جے سنگھ کچھواہا ہزاری ہزار سوار +

۴۸- گوپال سنگھ خلف راجہ منروپ کچھواہا - ہزاری ایک ہزار سوار +

۴۹- راجہ بدن سنگھ بھدوریہ ہزاری ایکہزار سوار +

۵۰- راول سمرسی زمیندار بانسواڑہ ہزاری ایکہزار سوار +

۵۱- پرتاب جروہ ہزاری ہزار سوار +

۵۲- گردھرداس گوڑ ہزاری ۸۰۰ سوار +

۵۳- رائے سنگھ ابن راؤ امر سنگھ خلف راجہ گج سنگھ ہزاری ۷۰۰ سوار +

۵۴- ارجن گوڑ - خلف راجہ بٹھلداس ہزاری سات سو سوار +

۵۵- رائے سنگھ جھالا ہزاری سات سو سوار +

۵۶- راجہ امر سنگھ نروری

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

३९ भीम राठोड़ डेढ हजारी २००० सवार सं. १७०२ में मर गया-

४० दोलत मंद भरजी जमी दार वग लाणे का बेटा डेढ हजारी २००० सवार-

४१ हरी सिंघ राजा सूरज सिंघ का छोटा भाई डेढ हज़ारी ८०० सवार सं. १७०१ में मर गया-

४२ चन्द्र मणि बुंदेला डेढ हज़ारी ८०० सवार-

४३ स्याम सिंघ करमसी राठोड़ का बेटा डेढ हज़ारी ६०० सवार

४४ संग्राम ज़मींदार गुन्नोर डेढ हज़ारी ६०० सवार सं. १६९९ में गुज़र गया-

४५ राय बाजादों राय दखनी का भाई डेढ हज़ारी ६०० सवार-

४६ सुजान सिंघ सीसो दिया डेढ हज़ारी ५०० सवार-

हज़ारी

۳۹- بھیم راٹھوڑ ہزاری ایکہزار سوار ۱۰۵۵ سنہ میں مرگیا ٭

۴۰- دولت مند ولد بھرجی زمیندار بگلانہ ڈیڑہ ہزاری ایکہزار سوار ٭

۴۱- ہری سنگہ راجہ سورج سنگہ کا چھوٹا بھائی ڈیڑہ ہزاری ۹۰۰ سوار ۱۰۵۴ سنہ میں مرگیا ٭

۴۲- چندرمن بندیلہ ڈیڑہ ہزاری ۸۰۰ سوار ٭

۴۳- سیام سنگہ ولد کرمسی راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار ٭

۴۴- سنگرام زمیندار گنور ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار ۱۰۵۲ سنہ میں گذر گیا ٭

۴۵- رایبا برادر جادوں رائے دکنی ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار ٭

۴۶- سجان سنگہ سیسودیہ ڈیڑہ ہزاری پانسو سوار ٭

ہزاری

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३० रवी राय दखनी २ हज़ारी २००० सवार-

३१ हापाजी दखनी २ हज़ारी २००० सवार-

डेढ हज़ारी

३२ राय टोडर मल डेढ़ हज़ारी १५०० सवार दु ॰ अस्पा ति ॰ अस्पा

३३ रतन राठोड़ डेढ हज़ारी १५०० सवार-

३४ रावल पूंजा ज़मी दार डूंगर पुर का डेढ हज़ारी १५०० सवार-

३५ आनि रुद्र राजा बिट्ठ दास का बेटा डेढ हज़ारी १५०० सवार-

३६ सेवा राम गोड़ डेढ हज़ारी १५०० सवार-

३७ राव हटी सिंघ चंद्रा वत डेढ हज़ारी २००० सवार- सं॰ १७०१ में दखन में मर गया-

३८ राव रूप सिंघ चंद्रा वत डेढ हज़ारी २००० सवार-

۳۰- ربی رائے دکنی دو ہزاری ایکہزار سوار ٭

۳۱- ہاپاجی دکنی دو ہزاری ایکہزار سوار ٭

ڈیڑہ ہزاری

۳۲- رائے ٹوڈرمل ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭

۳۳- رتن راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭

۳۴- راول پونجا زمیندار ڈونگرپور ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭

۳۵- انرودھ خلف راجہ بٹھلداس ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭

۳۶- سیوارام گوڑ ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭

۳۷- راو ہٹی سنگھ چندراوت ڈیڑہ ہزاری ایک ہزار سوار سنہ ۱۱۵۴ میں دکھن میں مرگیا ٭

۳۸- راو روپ سنگھ چندراوت ڈیڑہ ہزاری ایکہزار سوار ٭

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

दो हज़ारी

२१ पृथ्वी राज राठोड़ २ हज़ारी ज़ात २००० सवार-

२२ राजा राज रूप २ हज़ारी ज़ात २००० सवार-

२३ सबल सिंघ राजा सूरज सिंघ राठोड़ का बेटा २ हज़ारी १५०० सवार-

२४ राव करण भुरटिया २ हज़ारी १५०० सवार-

२५ राजा जै राम बड़ गूजर २ हज़ारी १५०० सवार-

२६ रूप सिंघ किशन सिंघ राठोड़ का पोता २ हज़ारी २००० सवार-

२७ राम सिंघ करम सी राठोड़ का बेटा २ हज़ारी १००० सवार-

२८ राजा राम दास नर बरी २ हज़ारी १००० सवार- सं. १६९६ में गुज़र गया-

२९ पीथूजी दखनी २ हज़ारी १००० सवार-

دو ہزاری

۲۱- پرتھی راج راٹھوڑ دو ہزاری دو ہزار سوار ٭

۲۲- راجہ راجروپ دو ہزاری دو ہزار سوار ٭

۲۳- سبل سنگھ ولد راجہ سورج سنگھ راٹھوڑ دو ہزاری پندرہ سو سوار ٭

۲۴- راؤ کرن بھٹیہ دو ہزاری ذات ۱۵۰۰ سوار ٭

۲۵- راجہ جے رام بڑ گوجر دو ہزاری پندرہ سو سوار ٭

۲۶- روپ سنگھ خلف کشن سنگھ راٹھوڑ دو ہزاری ایکہزار سوار ٭

۲۷- رام سنگھ خلف کرمسی راٹھوڑ دو ہزاری ایکہزار سوار ٭

۲۸- راجہ رام داس نروری دو ہزاری ہزار سوار ۱۰۴۹ھ میں مرگیا ٭

۲۹- پیتھوجی دکنی دو ہزاری ایکہزار سوار ٭

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१२ भर जी बगलाने का ज़मी दार ३ हज़ारी २५०० सवार सं. १६८५ में मर गया-

१३ राजा जगत सिंघ राजा बासू का बेटा ३ हज़ारी २००० सवार संवत् १७०२ में मर गया-

१४ ऊदा जी राम दखनी ३ हज़ारी २००० सवार-

१५ परसूजी भोंसला ३ हज़ारी १५०० सवार-

१६ जादों राय दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार-

१७ मंगूजा बनाल कर ३ हज़ारी १५०० सवार-

१८ रावत राय दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार-

१९ दत्ताजी दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार-

ढाई हज़ारी

२० राजी देवी सिंघ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले का बेटा २५०० ज़ात २००० सवार-

۱۲- بھرجی زمیندار بگلانہ سہ ہزاری ڈھائی ہزار سوار ۱۰۴۸ھ میں مرگیا ؛

۱۳- راجہ جگت سنگھ خلف راجہ باسو سہ ہزاری ۲ ہزار سوار ماہ ذی الحجہ ۱۰۵۵ھ میں مرگیا ؛

۱۴- اودا جی رام دکنی ۳ ہزاری دو ہزار سوار ؛

۱۵- پرسوجی بھوسلہ تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار ؛

۱۶- جادوں رائے دکنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار ؛

۱۷- منگوجی بنالکر تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار ؛

۱۸- راوت رائے دکنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار ؛

۱۹- دتاجی دکنی ۳ ہزاری ایکہزار سوار ؛

دو ہزاری و پانصدی

۲۰- راجہ دیوی سنگھ خلف راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ ڈھائی ہزاری دو ہزار سوار ؛

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६ राव अमर सिंघ राठोड़ राजा गज सिंघ का बेटा ४ हज़ारी ३००० सवार- साबन सुदी १ सं. १७०१ को जनून और बेअदबी में अपनी जान खो बैठा-

७ राजा राय सिंघ सझ राजा भीम का बेटा ४ हज़ारी २००० सवार संवत १६९७ में बंगाले में गुज़र गया

३ हज़ारी

८ राजा पहाड़ सिंघ बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा ३ हज़ारी ३००० सवार जिसमें २००० सवार दु अस्पा और ति अस्पा थे-

९ शत्रु साल हाड़ा ३ हज़ारी ३००० सवार-

१० माधो सिंघ हाड़ा ३ हज़ारी ३००० सवार-

११ महेस दास राठोड़ दल पत का बेटा - चेत सुदि २ सं. १७०६ को मर गया ३ हज़ारी २५०० सवार-

۶- راؤ امر سنگھ راٹھوڑ خلف راجہ گج سنگھ چار ہزاری تین ہزار سوار - سلخ جمادی الاول ۱۰۵۴ھ کو جنون اور بے ادبی سے اپنی جان کھو بیٹھا ٭

۷- راجہ رای سنگھ خلف مہاراجہ بھیم سیسودیہ چار ہزاری دو ہزار سوار ۱۰۵۰ھ میں گذر گیا ٭

تین ہزاری

۸- راجہ پہاڑ سنگھ خلف راجہ نرسنگدیو بندیلہ تین ہزاری تین ہزار سوار جس میں ۲ ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ تھے ٭

۹- راؤ ستروسال ہاڈا تین ہزاری تین ہزار سوار ٭

۱۰- مادھو سنگھ ہاڈا تین ہزاری تین ہزار سوار ٭

۱۱- مہیس داس راٹھوڑ ولد دلپت - ۹ صفر ۱۰۵۷ھ کو مر گیا - تین ہزاری ڈھائی ہزار سوار-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिन्दू मन सब दार ॥

पिछले १० बरसों में
संवत १६८४ से सं. १७०४ तक

पांचहज़ारी

१ राजा जस वंत सिंघ राजा गज सिंघ का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार जिनमें २५०० दुअस्पा अौर तिअस्पा -

२ राजा जय सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार जिनमें २००० दुअस्पा अौर तिअस्पा थे

३ राजा गज सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार जेठ सुदी ३ सं. १६८५ को गुज़र गया -

४ राजा जगत सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार -

५ राजा बिठ्ठल दास गोड़ ५ हज़ारी ५००० सवार -

४ हज़ारी

हिंदू मनसब दार

पहले दस बरस में
सन १०४७ से सन १०५७ तक

पांचहज़ारी

१- राजा जसवन्त सिंघ खलफ राजा गज सिंघ पांचहज़ारी ज़ात पांचहज़ार सवार जिन में २५०० दो अस्पा और सेह अस्पा थे ॥

२- राजा जय सिंघ पांचहज़ारी ज़ात पांचहज़ार सवार - जिनमें दो हज़ार सवार दो अस्पा और सेह अस्पा थे ॥

३- राजा गज सिंघ पांचहज़ारी ज़ात पांचहज़ार सवार - २ मुहर्रम सन १०४८ को गुज़र गया ॥

४- राजा जगत सिंघ पांचहज़ारी पांचहज़ार सवार ॥

५- राजा बिठ्ठलदास गोड़ पांचहज़ारी पांचहज़ार सवार ॥

चारहज़ारी

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२०० सवार- साल ३ में ख़ांन जहां लोदी के मुक़ाबिले में काम आया

१२० मुकंद दास राजा गोपाल दास गोड़ का बेटा ५सदी १५० सवार- साल ४ में ख़ांन जहां लोदी के मुक़ाबिले में काम आया-

१२१ हिरदे नरायण ५सदी १५० सवार-

१२२ राय सभा चंद ५सदी ९० सवार-

१२३ मंगू राम दखनी ५सदी ८० सवार-

۲۰۰ سوار- سال ۳ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا *

۱۲۰- مکند داس ولد راجہ گوپالداس گوڑ- پانصدی ذات ۱۵۰ سوار سال ۴ میں خاں جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا *

۱۲۱- ہردے نراین پانصدی ۱۵۰ سوار *

۱۲۲- رائے سبھاچند پانصدی ۹۰ سوار *

۱۲۳- منگورام دکنی پانصدی ۸۰ سوار *

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

या-

११० रावत दयाल दास झाला ५ सदी २५० सवार-

१११ मान सिंघ राना विक्रमा जीत राना का बेटा ५ सदी २५० सवार-

११२ माधो सिंघ सीसो दिया ५ सदी २५० सवार-साल ८ में मर गया

११३ बेनी दास राजा बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा ५ सदी ४०० सवार

११४ नर हर दास बेनी दास का भाई ५ सदी २०० सवार-साल ७ में मर गया-

११५ बदन सिंघ भदो रिया ५ सदी २०० सवार-

११६ गिरधर दास राजा बिठ्ठल दास का भाई ५ सदी २०० सवार-

११७ रघु नाथ जमी दार सो सिंघ ५ सदी २०० सवार-

११८ हर दास झाला ५ सदी २०० सवार-साल ३ में मर गया-

११९ नर हर दास झाला ५ सदी

مرگیا ٭

۱۱۰- راوت دیالداس جھالا پانصدی ۲۵۰ سوار ٭

۱۱۱- مان سنگھ (رانا) خلف بکرماجیت پانصدی ۲۵۰ سوار ٭

۱۱۲- مادھوسنگھ سیسودیہ پانصدی ۲۵۰ سوار سال ۸ میں مرگیا ٭

۱۱۳- بینی داس راجہ نرسنگھدیو بندیلہ کا بیٹا پانصدی ۴۰۰ سوار ٭

۱۱۴- نرہرداس برادر بینی داس پانصدی ۴۰۰ سوار سال ۷ میں مرگیا ٭

۱۱۵- بدن سنگھ بھدوریہ پانصدی ذات ۲۰۰ سوار ٭

۱۱۶- گردھرداس برادر راجہ بٹھلداس پانصدی ۲۰۰ سوار ٭

۱۱۷- رگناتھ زمیندار سوسنگھ پانصدی ۲۰۰ سوار ٭

۱۱۸- ہرداس جھالا- پانصدی ۲۰۰ سوار ٭

۱۱۹- نرہرداس جھالا- پانصدی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सवार-

१०१ मथरा दास कछ वाहा ५सदी ४०० सवार-

१०२ हरी सिंघ राव चांदा का बेटा ५सदी ४०० सवार-

१०३ नाहर सोलंखी ५सदी ४०० सवार-

१०४ वीर भान ज़मी दार चन्द्र कोटा बंगाला ५सदी ३०० सवार-

१०५ राजा जग मरिग जादों ५सदी ३०० सवार-

१०६ चन्द्र भान ज़मी दार कांगड़ा ५सदी ३०० सवार-

१०७ दल पत मांडरा राठोड़ का बेटा ५सदी ३०० सवार- साल ३ में मर गया-

१०८ मुकंद जादों ५सदी ३०० सवार-

१०९ राजा उदय सिंघ राजा मान सिंघ ज़मी दार जंमू का बेटा ५सदी २५० सवार-साल १० में मर ग

سوار ٭

۱۰۱- متھرا داس کچھواہا پانصدی ۴۰۰ سوار ٭

۱۰۲- ہری سنگھ خلف راو چاندا- پانصدی ۴۰۰ سوار ٭

۱۰۳- ناہر سولنکی پانصدی ۴۰۰ سوار ٭

۱۰۴- بیر بھان زمیندار چندر کوٹہ صوبہ بنگالہ پانصدی ۳۰۰ سوار ٭

۱۰۵- راجہ جگ منی جادوں پانصدی ۳۰۰ سوار ٭

۱۰۶- چندر بھان زمیندار کانگڑا- پانصدی ۳۰۰ سوار ٭

۱۰۷- دلپت خلف مانڈن راٹھوڑ- پانصدی ۳۰۰ سوار- سال ۳ میں مرگیا ٭

۱۰۸- مکند جادوں پانصدی ۳۰۰ سوار ٭

۱۰۹- راجہ اودے سنگھ خلف راجہ مان سنگھ زمیندار جمبو پانصدی ۲۵۰ سوار سال ۱۰ میں-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बेटा ७ सदी २०० सवार - साल ३ में मर गया -

९२ राय बनारसी दास ७ सदी २०० सवार -

६ सदी

९३ स्याम सिंघ करमसी राठोड़ का बेटा ६ सदी ४०० सवार -

९४ राजा उदय भान राजा गिरधर का बेटा ६ सदी ४०० सवार -

९५ उग्रसेन प्रभु साल कछवाहे का बेटा ६ सदी ४०० सवार -

९६ बाघ शेरखां तंबर का बेटा ६ सदी ३०० सवार

९७ इन्द्र साल राव रतन का बेटा ६ सदी ३०० सवार -

९८ मुकंद दास राठोड़ ६ सदी ५० सवार -

५ सदी

९९ नरसिंघ दास राजा द्वारिकादास का बेटा ५ सदी ४०० सवार -

१०० चन्द्र भान नरू का ५ सदी ४०० सवार - साल ३ में मर गया ❊

९२ - रायसिंघ बनारसीदास ६ सदी २०० सवार ❊

६ सदी

९३ - स्याम सिंघ वलद करमसी राठोड़ ६ सदी ४०० सवार ❊

९४ - राजा उदय भान वलद राजा गिरधर ६ सदी ४०० सवार ❊

९५ - उग्रसेन वलद सत्रु साल कछवाहा ६ सदी ४०० सवार ❊

९६ - बाघ वलद शेरखां तंबर ६ सदी ३०० सवार ❊

९७ - इन्द्र साल वलद राव रतन हाड़ा ६ सदी ३०० सवार ❊

९८ - मुकंद दास राठोड़ ६ सदी ५० सवार ❊

पांचसदी

९९ - नरसिंघ दास वलद राजा द्वारिकादास पांचसदी ४०० सवार ❊

१०० - चन्द्र भान नरू का पांचसदी ४०० सवार

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

८ सदी ३०० सवार-

८३ फ़तह सिंघ सांसो दिया महाराजा भीम का बेटा ८ सदी २०० सवार साल २ में मर गया-

७ सदी

८४ क्रिपा राम गोड़ ७ सदी ७०० सवार-

८५ शत्रु साल राव सूर भुरटिये का बेटा ७ सदी ६०० सवार-

८६ राजा वहरोज राजा रोज़ अफ़ज़ूं का बेटा ७ सदी ५०० सवार-

८७ जग नाथ ७ सदी ३०० सवार-

८८ बीर नारायण ज़मींदार पचेट सूबे बिहार ७ सदी ३०० सवार- साल ६ में मर गया-

८९ हिरदे राम भगवान दास कछवाहे का बेटा ७ सदी ३०० सवार-

९० रूप सिंघ कछ वाहा ७ सदी ३०० सवार-

९१ बाला जग नाथ कछ वाहे का

८ सदी तीन सो सवार ✣

८३- फ़तह सिंघ सीसोदिया ख़लफ़ महाराजा भीम ८ सदी ०० सवार साल ۱ में मर गया ✣

७ सदी

८४- कृपा राम गोड़ ७ सदी ७ सो सवार ✣

८५- सत्रुसाल वलद राव सूर भुरटिया ७ सदी ०० सवार ✣

८६- राजा बहरोज़ वलद राजा रोज़ अफ़ज़ूं ७ सदी पांसो सवार ✣

८७- जगनाथ ७ सदी तीन सो सवार ✣

८८- बीरनारायन ज़मींदार पचेट सूबे बहार ७ सदी ०० सवार- साल ६ में मर गया ✣

८९- हरदे राम वलद भगवान दास कछवा ७ सदी ३ सो सवार ✣

९०- रूप सिंघ कछवाहा ७ सदी तीन सो सवार ✣

९१- बाला कछवाहा वलद जगनाथ ७ सदी

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

۷۴ - دیانت رائی - نہصدی ۱۵۰ سوار ٭

۸ صدی

۷۴ - مہیس داس ولد دلپت راٹھور ۸ صدی ۶۰۰ سوار ٭

۷۵ - رائے تلوک چند نبیرہ رائے منوہر ۸ صدی ۵۰۰ سوار ٭

۷۶ - لکھمی سین چوہان ۸ صدی پانسو سوار ٭

۷۷ - اوگرسین کچھواہا ۸ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۷۸ - بھوج راج ولد رائی سال درباری ۸ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۷۹ - رائی جگناتھ راٹھوڑ ۸ صدی ۴۰۰ سوار سال ۳ میں مرگیا ٭

۸۰ - راجہ اودے سنگھ ولد سیام سنگھ تنوز کا بیٹا ۸ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۱ - سبحان سنگھ سیسودیہ - ۸ صدی ۳۰۰ سوار - سال ۸ میں مرگیا ٭

۸۲ - رانا جودھا زمیندار اومرکوٹ

۷۳ دیانت رائ ۸ سدی ۱۵۰ سوار -

۸ سدی

۷۴ مہیس داس دلپت راٹھوڑ کا بیٹا ۸ سدی ۶۰۰ سوار -

۷۵ رائ تلوک چند رائ منوہر کا پوتا ۸ سدی ۵۰۰ سوار -

۷۶ لکھمی سین چوہان ۸ سدی ۵۰۰ سوار -

۷۷ اوگر سین کچھواہا ۸ سدی ۴۰۰ سوار -

۷۸ بھوج راج ولد رائ سال درباری کا بیٹا ۸ سدی ۴۰۰ سوار -

۷۹ رائ جگناتھ راٹھوڑ ۸ سدی ۴۰۰ سوار - سال ۳ میں مر گیا -

۸۰ راجا اودے سنگھ سیام سنگھ تنور کا بیٹا ۸ سدی ۴۰۰ سوار

۸۱ سبحان سنگھ سیسودیا دیا ۸ سدی ۳۰۰ سوار - سال ۸ میں مر گیا -

۸۲ رانا جودھا زمیندار اومر کوٹ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

री ५०० सवार-

६४ राजा कुंवर सेन किस्टवार का राजा हजारी ३०० सवार-

६५ राय भाई दास हज़ारी १५० सवार- साल ५ में मरा-

६६ राय वन माली दास हज़ारी १०० सवार- साल ४ मे मरा-

६ सदी

६७ राजा मान सिंघ गुलेरी ६ सदी ८५० सवार-

६८ सबल सिंघ राजा सूरज सिंघ राठोड़ का बेटा ६ सदी ८०० सवार-

६९ गोपाल मनूप कछ वाहे का बेटा ६ सदी ६०० सवार-

७० गोकल दास सीसो दिया ६ सदी ५०० सवार-

७१ राव हरचन्द कछवाहा ६ सदी ४०० सवार- साल ४ में मरा-

७२ राय कासी दास ६ सदी ४०० सवार-

پانسو سوار ٭

۶۴- راجہ کنور سین کشتوار کا راجہ ہزاری ۳۰۰ سوار ٭

۶۵- رائی مائیداس ڈیڑھ ہزاری ۱۵۰ سوار سال ۵ میں مرا ٭

۶۶- رائے بن مالی داس ہزاری ۱۰۰ سوار سال ۴ میں مرا ٭

نہصدی

۶۷- راجہ مان سنگھ گولیری ۶ صدی ۸۵۰ سوار ٭

۶۸- بل سنگھ خلف راجہ سورج سنگھ راٹھوڑ- ۶ صدی ۸۰۰ سوار ٭

۶۹- گوپال ولد منروپ نہصدی ۶۰۰ سوار ٭

۷۰- گوکلداس سیسودیہ نہصدی ۵۰۰ سوار ٭

۷۱- راو ہرچند کچھواہا نہصدی چارسو سوار- سال ۴ میں مرا ٭

۷۲- رائے کاسی داس نہصدی ۴۰۰ سوار ٭

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

५६ भगवान दास राजा वर सिंघ देव बुंदेला का बेटा हज़ारी ६०० सवार-

५७ किशन सिंघ भदोरिया हज़ारी ६०० सवार-

५८ रूप गुलरी हज़ारी ६०० सवार साल ९ में श्री नगर की मोहिम में काम आया-

५९ भार मल किशन सिंघ राठोड़ का बेटा हज़ारी ५०० सवार-

६० राजा गिरधर केसो दास का बेटा जेमल मेड़तिया का पोता हज़ारी ५०० सवार-साल ३ में खानजहां लोदी के मुकाबिले में काम आया-

६१ जेत सिंघ राठोड़ हज़ारी ५०० सवार- साल ३ में मरा-

६२ मित्र सेन राजा स्याम सेन तंवर का भाई हज़ारी ५०० सवार- साल ६ में मरा-

६३ स्याम सिंघ सीसोदिया हज़ा

۵۶- بھگوان داس خلف راجہ بیر سنگھ دیو بندیلہ ہزاری چہ سو سوار ٭

۵۷- کشن سنگھ بھدوریہ ہزاری چہ سو سوار ٭

۵۸- روپ گولیری ہزاری چہ سو سوار سال ۹ میں سری نگر کی مہم میں کام آیا ٭

۵۹- بھارمل خلف راجہ کشن سنگھ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار ٭

۶۰- راجہ گردھر ولد کیسو داس نبیرہ جے مل میڑتیہ ہزاری پانسو سوار خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ٭

۶۱- جیت سنگھ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار سال ۳ میں مرا ٭

۶۲- متر سین راجہ سیام سنگھ تنور کا بھائی ہزاری پانسو سوار سال ۶ میں مرا ٭

۶۳- سیام سنگھ سیسودیہ ہزاری

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

लेमें मारा गया-

४७ भीम राठोड़ डेढ हज़ारी ८०० सवार-

४८ चन्द्र मणि बुंदेला डेढ हज़ारी ८०० सवार-

४९ जग माल राठोड़ किशन सिंघ का बेटा डेढ हज़ारी ८०० सवार- साल २ में मर गया-

५० संग्राम गुन्नोर का जमींदार हज़ारी

५१ रावल । समर सी बांसवाड़े का ज़मींदार हजारी २००० सवार-

५२ हरी सिंघ राठोड़ किशन सिंघ का बेटा हज़ारी २००० सवार-

५३ जय राम राजा अनी राय का बेटा हज़ारी २००० सवार-

५४ बल बद्र शेखावत हज़ारी ६०० सवार- साल ३ में खान जहां लोदी के मुक़ाबिल में काम आया-

५५ राजा बीरना रायरा गूजर हज़ारी ६०० सवार- साल ३ में मर गया

میں مارا گیا +

۴۷- بھیم راٹھوڑ ڈیڑھ ہزاری- آٹھ سو سوار +

۴۸- چندرمن بندیلہ ڈیڑھ ہزاری آٹھ سو سوار +

۴۹- جگمال راٹھوڑ ولد کشن سنگھ- ڈیڑھ ہزاری- آٹھ سو سوار سال ۲ میں مرگیا +

۵۰- سنگرام زمیندار گنور + ہزاری

۵۱- راول سمرسی زمیندار بانسواڑہ ہزاری- ایکہزار سوار +

۵۲- ہری سنگھ راٹھوڑ خلف کشن سنگھ راٹھوڑ +

۵۳- جے رام راجہ انی رائے کا بیٹا ہزاری- ہزار سوار +

۵۴- بلبھدر سیکھاوت ہزاری چھ سو سوار سال ۳ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا +

۵۵- راجہ بیرنرائن بڈگوجر ہزاری- چھ سو سوار سال ۳ میں مارا گیا +

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

डेढ हज़ारी १००० सवार-

४१ हिरदे राम बाका कछ वाहे का बेटा डेढ हजारी १००० सवार- साल ९ में मर गया-

४२ राजा द्वारिका दास राजा गिरधर कछ वाहे का बेटा डेढ हज़ारी १००० सवार- साल ४ में ख़ानजहां लोदी के मुकाबिले में काम आया-

४३ शत्रु साल कछ वाहा डेढ हज़ारी १००० सवार- साल ३ में खान जहां लोदी के मुकाबिले में काम आया-

४४ राव हटी सिंघ राव दूदा चन्द्रावत का बेटा डेढ हज़ारी १००० सवार-

४५ राजा प्रताप सिंह उज्जेनिया डेढ हज़ारी १००० सवार- साल १० में अब दुल्ला खां के हाथ से मारा गया-

४६ करम सी राठौड़ डेढ हज़ारी ८०० सवार- खान जहां के मुक़ाबि

ڈیڑھ ہزاری ہزار سوار ❖

۴۱- ہردی رام خلف بانکا کچھوا ڈیڑھ ہزاری ہزار سوار سال ۹ میں مر گیا ❖

۴۲- راجہ دوارکا داس ولد راجہ گردھر کچھوا ڈیڑھ ہزاری ایک ہزار سوار سال ۴ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ❖

۴۳- ستردسال کچھوا ڈیڑھ ہزاری ایک ہزار سوار سال ۳ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ❖

۴۴- راؤ ہٹی سنگھ راؤ دودا چند راوت کا بیٹا- ڈیڑھ ہزاری- ایکہزار سوار ❖

۴۵- راجہ پرتاب سنگھ اوجنیہ ڈیڑھ ہزاری- ایک ہزار سوار سال ۱۰ میں عبد اللہ خاں کے ہاتھ سے مارا گیا ❖

۴۶- کرم سی راٹھور ڈیڑھ ہزاری آٹھ سو سوار خان جہاں کے مقابلہ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

२ हज़ारी १५००० सवार - साल ६ में दौलता बाद को मोहिम में काम आया -

३२ रावत राय धन गर दखनी २ हज़ारी १५०० सवार -

३३ बिहारी दास कछवाहा २ हज़ारी १२०० सवार - साल चार में मर गया -

३४ राजा राम दास नर वरी २ हज़ारी १००० सवार -

३५ राजा रोज अफ़ज़ू २ हज़ारी १००० सवार - साल ८ में मर गया -

३६ अनी राय २ हज़ारी १००० सवार

३७ पाथूजी अचला जी का बेटा दखनी २ हज़ारी १००० सवार -

३८ डापाजी वेडिया २ हज़ारी ८०० सवार -

डेढ हज़ारी

३९ रावल पूजा डूगर पुरका ज़मीदार डेढ हज़ारी १५०० सवार

४० सेवा राम गौड़ बल राम का बेटा

२ दो हज़ारी - पन्द्रह हज़ार सवार - साल ६ में मुहम दौलत आबाद में काम आया ।

३२ - रावत राये दहंगर दकनी दो हज़ारी पन्द्रह सो सवार ।

३१ - बहारी दास कछवाहा दो हज़ारी बारह सो सवार - साल ४ में मर गया ।

३४ - राजा राम दास नरवरी दो हज़ारी - एक हज़ार सवार ।

३५ - राजा रोज़ अफ़ज़ूं दो हज़ारी एक हज़ार सवार साल ८ में मर गया ।

३६ - अनी राये दो हज़ारी एक हज़ार सवार ।

३७ - पीथोजी वलद अचलाजी दकनी दो हज़ारी एक हज़ार सवार ।

३८ - डापाजी डोडीये दो हज़ारी आठ सो सवार ।

डेढ हज़ारी

३९ - रावल पूंजा ज़मींदार डूंगरपूर - डेढ हज़ारी पन्द्रह सो सवार ।

४० - सेवाराम गौड़ पसर बलराम -

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

१५०० सवार-

२४ भादो सब दखनी ३ हज़ारी २००० सवार-

२५ राजा मन रूप कछ वाहा ३ हज़ारी १००० सवार साल ३ में मर गया-

२६ दयाजी वहादुर जी का वेटा ३ हज़ारी १००० सवार-

ढाई हज़ारी

२७ राजा देव सिंघ राजा भारत बुंदेले का वेटा

२ हज़ारी

२८ सुग राज बुंदेला २ हज़ारी २००० सवार साल ८ में अपने वाप के साथ मारा गया-

२९ पृथ्वी राज राठोड़ २ हज़ारी १७०० सवार-

३० राव करण राव सूर भुरटिया का वेटा २ हज़ारी २५०० सवार-

३१ राव दूदा राव चांदा का पोता

۱۵۰۰ سوار +

۲۴- جادوں رائے دکھنی تین ہزاری ہزار سوار +

۲۵- راجہ منروپ کچھواتین ہزاری ہزار سوار سال ۳ میں مرگیا +

۲۶- دیاجی ولد بہادرجی تین ہزاری ایکہزار سوار +

ڈہائی ہزاری

۲۷- راجہ دیبی سنگہ خلف بھارت بندیلہ +

دو ہزاری

۲۸- جگراج بندیلہ دو ہزاری دو ہزار سوار- سال ۸ میں اپنے باپ کے ساتہ مارا گیا +

۲۹- پرتھی راج راٹھوڑ دو ہزاری ۱۷۰۰ سترہ ہزار سوار +

۳۰- راؤ کرن خلف راؤ سور بھورٹیہ دو ہزاری پندرہ ہزار سوار +

۳۱- راؤ دودا نبیرہ راؤ چاندا-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

का पोता ३ हज़ारी ३००० सावार
१५ अमर सिंघ राठोड राजा गज
सिंघ का बेटा ३ हज़ारी ३०००
सवार-
१६ माधो सिंघ हाड़ा राव रतन का
बेटा ३ हज़ारी ३००० सवार-
१७ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला राजा
बर सिंघ देव का बेटा ३ हज़ारी
३००० सवार साल ५ में मर गया-
१८ राजा जगत सिंघ राजा बासू
का बेटा ३ हज़ारी ३००० सवार-
१९ ऊदा जी राम ऊदाजी दखनी
का बेटी ३ हज़ारी २००० सवार-
२० राजा राय सिंघ सीसो दिया म
हा राजा भीम का बेटा ३ हज़ारी
१५०० सवार-
२१ राजा अनोप सिंघ ३ हज़ारी
१५०० सवार साल १० में मर ग
या-
२२ मंगूजी ३ हज़ारी १५०० सवार
२३ पर सूजी दखनी ३ हज़ारी

کا پوتہ تین ہزاری تین ہزار سوار ٭
۱۵- امر سنگھ راٹھوڑ ولد راجہ
گج سنگھ- تین ہزاری دو ہزار
سوار ٭
۱۶- راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ ولد راجہ
بر سنگھ دیو تین ہزاری دو ہزار سوار
سال ۵ جلوسی میں مرگیا ٭
۱۸- راجہ جگت سنگھ خلف راجہ باسو-
تین ہزاری دو ہزار سوار ٭
۱۹- اودا جی رام خلف اودا جی دکھنی
تین ہزاری دو ہزار سوار ٭
۲۰- راجہ رائے سنگھ سیسودیہ مہاراجہ
بھیم کا بیٹا تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار ٭
۲۱- راجہ انوپ سنگھ تین ہزاری
۱۵۰۰ سوار- سال ۱۰ میں
مرگیا ٭
۲۲- منگو جی دکھنی تین ہزاری
۱۵۰۰ سوار ٭
٭ ٭
۲۳- پرسو جی دکھنی تین
ہزاری ٭

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

६ मालूजी दखनी खीलूजी का भाई ५ हज़ारी ५००० सवार-

७ ऊदाजी राम दखनी ५ हज़ारी ५००० सवार साल ६ में मरगया

८ बहा दरजी दखनी जादों राय का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार साल ८ में मर गया-

४ हज़ारी

९ राजा भारत बुंदेला ४ हज़ारी ३५०० सवार साल ७ में मर गया-

१० राजा विठ्ठल दास गोड ४ हज़ारी ३००० सवार-

११ राव सूर भुरटिया ४ हज़ारी ३००० सवार साल ४ में मर गया-

१२ जग देव राय जादों राय का भाई ४ हज़ारी ३००० सवार साल ५ में मर गया-

१३ हमीर राय दखनी ४ हज़ारी २५०० सवार साल ७ में मरगया

३ हज़ारी

१४ राव शत्रु साल हाडा राव रतन

۶- مالوجی دکھنی برادر کھیلوجی پنجہزاری پنجہزار سوار ٭

۷- اودا جی رام دکھنی پنجہزاری پنجہزار سوار سال ۶ جلوسی میں مرگیا ٭

۸- بہادر جی دکھنی خلف جادوں رائے پنجہزاری پنجہزار سوار ٭

۹- راجہ بھارت بندیلہ چار ہزاری ۳۵۰۰ سوار ٭

۱۰- راجہ بٹھلداس گوڑ چار ہزاری تین ہزار سوار ٭

۱۱- راؤ سور بھورٹیہ چار ہزاری تین ہزار سوار سال ۴ میں مرگیا ٭

۱۲- جگدیو رائے ولد جادوں رائے چار ہزاری - تین ہزار سوار - سال ۵ میں مرگیا ٭

۱۳- ہمیر رائے دکھنی - چار ہزاری - ۲۵۰۰ سوار - سال ۷ میں مرگیا ٭

تین ہزاری

۱۴- راؤ ستروسال ہاڈا راؤ رتن

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शाह जहां बाद शाह के हिन्दू मनसबदार पहिले १० बरस में ॥

सम्बत १६८४ से सं. ८४ तक

पांचहजारी

१ राजा जगत सिंह ५ हज़ारी ५००० सवार-

२ राजा गज सिंघ राठोड़ राजा सूरज सिंघ का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार-

३ राजा जय सिंघ कछवाहा ५ हज़ारी ५००० सवार-

४ राव रतन हाड़ा ५ हज़ारी ५००० सवार- सन ४ जलूसी में बाल घाटे में मर गया-

५ राजा जुझार सिंघ बुंदेला राजा वर सिंघ देव का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार- साल ८ जलूसी में बागी हो कर मर गया-

تتمہ شاہ جہاں نامہ

ہندو منصب دار شاہ جہانی

پہلے دس برس میں

سنہ ۱۰۹۴ سے سنہ ۱۰۹۴ تک

پنجہزاری

۱- رانا امر سنگھ پنجہزاری پنج ہزار سوار-

۲- راجہ گج سنگھ راٹھور خلف راجہ سورج سنگھ پنج ہزاری پنج ہزار سوار-

۳- راجہ جے سنگھ کچھواہا پانچہزاری پنج ہزار سوار

۴- راو رتن ہاڈا پانچہزاری پنج ہزار سوار سنہ جلوسی میں بالا گھاٹ میں مرگیا-

۵- راجہ جوجھار سنگھ بندیلہ خلف راجہ بر سنگھ دیو پنج ہزاری پنج ہزار سوار سال ۸ جلوسی میں باغی ہوکر مارا گیا-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समेत जेहूं से पार उतर गया उस
वक़्त बहुत लोग दरिया में डूब ग
ये अलमान इनसे पहिले चले ग
ये थे जो हमेशा बलख़ और बद
ख़शां को लूट करते थे -

बादशाह नामे में लिखा
है कि बलख़ की मोहिम में १
ख़ता तो शाहज़ादे मुराद बख़्श
से यह हुई कि जब चग़ताईयों के
थोक उस को साहिब ज़ादा रुकह
कर बंदगी के वासते उसके पास
आने वाले थे वह घबरा कर चला
आया दूसरी ग़लती वहां दुर ख़ां
ने यह की कि नज़र मोहम्मद ख़ां
का पीछा न किया और शेर ख़ान
अदे ख़ुद चेचक तूके इलाकों की
हिफ़ाज़त की तीसरी ख़ता औरंग
ज़ेब की यह थी कि दुश मन से ल
ड़ने के लिये बलख़ से आगे चला
गया फिर पीछा आया और अब
दुल अज़ीज़ ख़ां का पीछा न किया

जेहून से उतर गया उस वक़्त
बहुत लोग दरिया मेंन डूब गये
और अलमान इस से पहले
चले गये थे जो बलख़ और बदख़शान
को लूटा करते थे -

बादशाह नामे मेंन लिखा है
कि बलख़ की मुहिम मेंन एक ख़ता तो शाहज़ादे
मुराद बख़्श से यह हुई कि जब चग़ताईयों
के ओस और ईलचात उसको साहिबज़ादे
साहिबज़ादे कहे कर वास्ते बंदगी के उसके
पास आनेवाले थे वह घबर कर चला आया
दूसरी ख़ता बहादुर ख़ां ने की कि
नज़र मुहम्मद ख़ां का तआक़ब न किया और सरहद
दाने ख़ुद चेचकतू की हफ़ाज़त की तीसरी ख़ता
औरंगज़ेब की यह थी कि दुश्मन के मुक़ाबले
के लिये बलख़ से आगे चला गया और फिर
वापस आया और अब्दुल अज़ीज़ ख़ां का तआक़ब न किया

नोट

बादशाह नामे की दूसरी जिल्द यहां ख़त्म हो
गई है क्योंकि शाहजहां बादशाह की तख़्त नशीनी
तारीख़ जलूस के हिसाब से बीस बरस पूरे
हो गये थे

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ह ज़ादे के पास इस वक़्त बहुत-
थोड़ी फ़ौज थी उज़बक बहुत ज़िया
दा जमा हो गये थे १ लाख सवार
से ज़िया थे बेग औग़ली कहताथा
कि हमारी बहादुरी और महनत
से जो हमने इस लड़ाई में कीहै
हिन्दुस्तान के ग़ैरत वाले सिपाहि
यों के सिवाय जो कोई दूसरा ल
शकर क्या "क़ज़ल बाशों" का औ
र क्या और कोई हो तातो ग़ारत
हो जाता-

शाह ज़ादेने अब यह तज़
वीज की कि बड़े लशकर को तो
अपने बेटे मोहम्मद सुलतान
के साथ बलख़ में छोड़ दे और
छड़ी सवारी से दुश मनो का मु-
क़ाबिला करे अबदुल अज़ीज़ख़ां
जो बदख़शां पर हमला करनेका
नाम लेकर रस्ते से जेहूं के कि
नारे पर पहुंचा था यह ख़बर सु
न कर सावन सुदी १ को अपनी फ़ौज

بلخ مانگتا تھا اوسوقت شاہزادہ
کے پاس بہت تھوڑا لشکر تھا
اور اوزبک بہت زیادہ جمع ہو گئے
تھے بلکہ ایک لاکھ سے زیادہ
تھے - بیگ اوغلی کہتا تھا کہ وہ
با این تردد و تلاشی کہ از مادرین
یساق بہ روئے کار آمدہ جز
ناموس پرستان جمیت دوست ہندوستان
ہر لشکرے کہ می بود چہ قزلباش
وچہ غیر آنہا برہم مے خورد -
اب شاہزادہ اورنگ زیب نے
یہہ تجویز کی کہ اردوے بزرگ
کو اپنے بیٹے سلطان محمد کے
ساتھہ بلخ مین چھوڑ دے اور جریدہ
دشمنون کا مقابلہ کرے عبدالعزیز
خان یہہ سنکر بدخشان پر
حملہ کرنے کا نام لے کر راہ
خشکی سے جیحون کے کنارہ
جا پہونچا اور وہان
سے سلخ جمادی الاوّل
کو معہ اپنی فوج کے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर सुबहान कुली से जा मिले और अबदुल अज़ीज़ खां भी "यलंग तोश" समेत वहां जा पहुंचा दूसरे दिन रस्ते चलते २ कुछ लड़ाई हुई-

असाढ सुदी १३ को उज़बकों का लश्कर ७ हिस्से हो कर लड़ने को आया उनका मीर तज़ुक "यादगार" अली मरदान खां से लड़ा और ज़ख्मी हो कर पकड़ा गया उज़बक फिर सामने से भाग गये दूसरे दिन कूंच के वक़्त लड़ने को आये मगर राजा पहाड़ सिंघ मौतमिद खां मीर आतिश और बहादुर खां के चचा नेक नाम ने हमला कर के उन को भगा दिया-

सावन वदी ४ को शाहज़ादा बलख के क़रीब आ पहुंचा मगर उज़बक भी पीछे लगे हुवे आये अबदुल अज़ीज़ खां अपने भाई सुबहान कुली के वास्ते शाहज़ादे से बलख मांगा था शाह-

سبحان قلی سے جا ملے عبد العزیز خان بھی معہ یلنگتوش کے وہاں جا پہونچا دوسرے دن راستہ چلتے چلتے کچھ لڑائی ہوئی -

۱۴ جمادی الاول کو اوزبکوں نے اپنے لشکر کو سات حصوں میں منقسم کرکے حملہ کیا اونکا میر تزک "یادگار" علیمردان خان پر حملہ آور ہوکر گرفتار ہوا باقی اوزبک مقابلہ سے بھاگ گئے

۱۵ جمادی الاول کو پھر اوزبکوں نے کوچ کے وقت حملہ کیا مگر راجہ پہاڑ سنگھ معتمد خان میر آتش و نیکنام عم بہادر خان نے مقابلہ کرکے اونکو بھگا دیا-

۱۸ جمادی الاول کو بادشاہزادہ بلخ کے قریب واپس پہونچا لیکن اوزبک بھی ساتھ لگے ہوئے آئے - عبد العزیز خان اپنے بھائی سبحان قلی کے واسطے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जंग वग़ैरा कई अमीर ज़ख़्मी होकर काम आये-

असाढ़ सुदी ११ को शाहज़ादे ने अली मरदान खां की सलाह से आगे को कूच किया लशकर के बांई तरफ़ की हिफ़ाज़त पर राजा राय सिंघ और शत्रु साल वग़ैरा राज पूतों और बरक़ंदाज़ों को सौंपी गई थी बेग औगली ने सामने आकर जंग की लेकिन मैदान छोड़ कर भाग गया बादशाही लशकरने आगे बढ़ कर उस का डेरा लूट लिया "कतलक मोहम्मत" और "बेग औगली" तो अली आबाद की तरफ़ चले गये और सुब हान कुली अबदुल अज़ीज़ खां के हुक्म से बहुत सा लश्कर लेकर आसताने अलवियां की राह से बलख़ के ऊपर गया शाहज़ादा यह सुन कर पीछे लौटा उज़बक चारों तरफ़ से दौड़े और लड़भिड़

जंग وغیرہ کئی امیر زخمی ہو کر کام آئے۔

۱۰ جمادی الاول کو شاہزادہ نے علیمردان خان کی صلاح سے آگے کو کوچ کیا نزک لشکر میں محافظت جانب چپ اُردو کی راجہ رائے سنگھ و راو شترسال وغیرہ راجپوتوں اور برقندازوں کے ذمہ کی گئی تھی بیگ اوغلی نے سامنے آکر جنگ کی مگر تاب مقاومت نہ لاکر بھاگ گیا بادشاہی لشکر نے آگے بڑھکر اوسکا ڈیرہ لوٹ لیا قتلق محمد اور بیگ اوغلی تو علی آباد کی طرف چلے گئے اور سبحان قلی عبدالعزیز خان کے حکم سے بہت سا لشکر لے کر آستانہ علویہ سے بلخ کے اوپر آیا شاہزادہ نے یہہ خبر سنکر مراجعت کی اوزبک چاروں طرف سے جمع آور ہوے اور لڑ بھڑکر

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दुरखां पेश वाई को आया-

आसाद सुदी २ को शाहज़ादा बलख़ में दाख़िल हुआ और राव रतन हाड़ा के बेटे माधो सिंघ को किले बलख़ की हिफ़ाज़त पर मुक़र्रर किया-

अब दुल अज़ीज़ खां कासे ना पती वेग औगली तूरान के बहुत से लशकर के साथ आमोया नदी से उतर आया था औरंगज़ेब ने फ़ौज सजा कर उसके मुकाबिले पर कूच किया-

आसाद सुदी १० को तेमूराबाद में वहा दुरखां और अमीरुल उमरा अली मरदान खां का मुकाबिला उज़बकों से हुआ शाहज़ादे ने राजा राय सिंघ राव शत्रु साल ग़ज़नफ़र और मुरशीद कुली वगेरा को उन की मदद पर भेजा लड़ाई में बाद शाही लशकर की फ़तह हुई मगर सैईद खां वहा दुर ज़फ़र

بہادر خان نے پیشوائی کر کے ملازمت کی

غرہ جمادی الاول کو شاہزادہ بلخ مین داخل ہوا اور راو رتن ہاڈ کے بیٹے مادہو سنگہ کو قلعہ بلخ کی حفاظت پر مقرر کیا

عبد العزیز خان کا سپہ سالار بیگ اوغلی بہت سی فوج کے ساتھہ آب آمویہ سے اوتر آیا تہا اورنگ زیب نے فوج آراستہ کر کے اوسکے اوپر کوچ کیا-

۹ جمادی الاول کو مقام تیمور آباد مین بہادر خان اور امیر الامرا علیمردان خان سے اوزبکون سے لڑائی ہوئی بادشاہزادہ نے راجہ رائے سنگہ راو ستر سال غضنفر و مرشد قلی وغیرہ کو اونکی مدد پر بہیجا

لڑائی مین بادشاہی لشکر کی فتح ہوئی مگر سعید خان بہادر ظفر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सें २००० सवार दुअस्पा और सिह अस्पा थे और १ घोड़ा खासा तबेले से सोने के साज का और १ लाख रुपये खर्चे के वास्ते देकर बलख जाने की रुखसत दी और उस के हाथ २० लाख रुपये शाहजादे औरंगजेब के पास भेजे-

महेस दास राठौड़ का बेटा रतन जालोर से पिछले महीनेमें हाजिर हो गया था उस को खिलअत और घोड़ा इनायत हुआ-

हमीर सिंघ सीसो दिया व रघू चोहान महेस दास के भाई जसवंत और दूसरे कई राजपूत सरदारों को भी घोड़े मिले और ये सब राजा जय सिंघ के साथ भेजे गये-

बलख की मोहिम

आसाढ सुदी १ को शाहजादा औरंगजेब बलख पहुंचा वहा

جیسن دو ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے اور ایک گھوڑہ خاصہ طویلہ سے مع ساز طلا کے اور دو لاکھ روپیہ خرچ کے واسطے دیکر بلخ جانے کی رخصت دی اور ۲۰ لاکھ روپیہ اوسکے ساتھہ اورنگ زیب کے پاس بھیجے-

مہیس داس راٹھوڑ کے بیٹے رتن کو جو جالور سے پچھلے مہینے مین حاضر ہو گیا تھا خلعت اور گھوڑا عنایت ہوا

ہمیر سنگھ سیسودیہ بلو چوہان مہیس داس کے بھائی جسونت اور دوسرے کئی راجپوت سردارونکو بھی گھوڑے ملے اور یہ سب راجہ جے سنگھ کے ہمراہ بھیجے گئے-

بلخ کی مہم

سلخ ربیع الثانی کو شاہزادہ اورنگ زیب بلخ پہونچا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वार में हाज़िर होने की इजाज़त हुई-

इसी दिन राजा जय सिंघ भी जो दखन से बुलाया गया था २००० सवारों से हाज़िर आया वह ३ करोड़ २० लाख रुपये और ३ लाख मोहरें आगरे के ख़ज़ाने से लाया था सो लाहोर में ब मूजब हुक्म के जाफ़र खां को सोंप आया था-

सादुल्ला खां वज़ीर का मनसब सात हज़ारी ७००० सवारों का और इसलाम खां का ७ हज़ारी २००० सवारों का हो गया-

असाढ सुदी १२ को बादशाह ने राजा जय सिंघ को खिलअत खासा जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत इनायत करके १००० सवार उसके सवारों में से दुअस्पा और सिह अस्पा कर दिये जिस से उस का मनसब पांच हज़ारी ज़ात और ५००० सवार का हो गया जि

दरबار میں حاضر ہونے اور
ملازمت حاصل کرنے کی اجازت ملی

اسیدن راجہ جی سنگھ
بھی جو دکن سے بلایا گیا تھا معہ
دو ہزار سواران کے حاضر
دربار ہوا وہ ایک کرور ۲۰ لاکھ
روپیہ اور تین لاکھ مہریں
حسب الحکم بادشاہ کے خزانہ
عامرہ اکبر آباد سے لایا تھا سو لاہور میں
جعفر خان کو سونپ آیا تھا

سعد اللہ خان وزیر کا
منصب سات ہزاری ذات
سات ہزار سوار کا اور اسلام خان صوبہ
دار دکن کا سات ہزاری پانچ ہزار سوار کا ہو گیا

۱۱ جمادی الاول کو بادشاہ نے
راجہ جے سنگھ کو خلعت
خاصہ جمدھر مرصع معہ پھول کٹارہ
کے عنایت کر کے ایک ہزار سوار اوسکے
منصب سے دو اسپہ اور سہ اسپہ
کر دیئے جس سے اب اوسکا منصب
پانچ ہزاری ذات اور پانچ ہزار سوار کا ہو گیا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ल हाड़ा हिरावल थे उज बक फिर हार कर भाग निकले-

जेठ सुदी १ को बाद शाह भी काबुल में दाखिल हो गये-

दर बार का हाल

जेठ सुदी २ को राजा जग मन को घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ सुदी ६ को तुला दान के दर बार में विठ्ठल दास के बेटे अरजुन गोड़ का मन सब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का हो गया-

ब्यूतात के दीवान राय मुकंद दास का भी इज़ाफ़ा हुआ-

राय मनोहर के पोते पेमचंद के मनसब में भी तरक्की हुई-

बैसाख बदी १० को शाह ज़ादा शुजअ बंगाले से काबुल में हाज़िर आया और उस की अरज़ से शाह ज़ादे मुराद बख्श को भी दर

ہاڈہ ہراول تھے اوزبک شکست فاش کھا کر فرار ہوئے۔

دربار کا حال

سلخ ربیع الاول کو بادشاہ کابل مین پہونچے۔

غرہ ربیع الثانی کو راجہ جگمن کو گھوڑا عنایت ہوا۔

۸ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین ارجن ولد بٹھل داس گوڑ اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور سات سو سوارون کے منصب کو پہونچا۔

بیوتات کے دیوان رائے مکند داس کا بھی اضافہ ہوا

رائے منوہر کے پوتے پیم چند کے منصب مین ترقی ہوئی۔

۲۴ ربیع الثانی کو شاہزادہ شجاع بنگالہ سے کابل مین حاضر آیا اور اوسکی عرض سے شاہزادہ مراد بخش کو بھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बलख जाना

वेसाख वदी ६ को पिशोर से कूच करके वेसाख सुदी १० को काबुल पहुंचा और वेसाख सुदी १४ को वहां से बलख को रवाना हुआ -

कज के घाटे में खलील बेग गिरदावर से और उज बकों से लड़ाई हुई बाद शाह जादे ने महाराजा (भीम) के बेटे राजा राय सिंघ, राव शत्रु साल, नज़र बहादुर, राव रूप सिंघ चन्द्रावत, राजा अमर सिंघ कछवाहा, बल राम हाड़ा, और इन्द्र साल, को झिरावल की अनी में से उज बकों के ऊपर भेजा इन के पहुंचते ही उजबक भाग गये -

आसाढ वदी १२ को फिर घाटे कज़ में लड़ाई हुई इस दिन भी राजा राय सिंघ और शत्रु सा

شاہزادہ اورنگ زیب کا بلخ جانا

۲۳ صفر کو شاہزادہ اورنگ زیب پشور سے کوچ کرکے ۸ ربیع الاول کو کابل پہونچا اور ۱۲ کو وہان سے روانہ بلخ ہوا درہ کزمین خلیل بیگ گرداور سے اور اوزبکون سے لڑائی ہوئی بادشاہزادہ نے راجہ رائے سنگہ ولد مہاراجہ بہیم و راو ستروسال و نظر بہادر خویشگی راو روپ سنگہ چندراوت و راجہ امر سنگہ کچھواہہ و بلرام ہاڈہ و اندر سال صف ہراول مین سے بہیجا اوزبک اونکے پہونچتے ہی بہاگ گئے -

۲۵ ربیع الثانی کو پہر گہاٹہ کزمین لڑائی ہوئی اسدن بہی راجہ رائے سنگہ اور ستروسال

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ने ४ महीने तक खूब मुका बिला कि
या एक दो बार बाहर निकल कर
भी लड़ा जिसमें बुंदेला पैदलों ने
बहुत बहादुरी की-

बैसाख सुदी १० को खान
ने सुरंगसेभी कुछ दीवार क़िले की
उड़ाई मगर लड़ाई हार कर
पीछा लौट गया उस वक्त किसी
ने उस से कह दिया कि बहादुर
खां बलख में नहीं है इससे उस
ने कत्लक सुलतान को बलख
लेने के वास्ते भेजा मगर बुखारा
के लोग जो अबदुल अज़ीज़ खां
से नाराज़ होकर चले आये थे उ
सको बहका कर बहुत से उज़ब
कों समेत उस फोज में लगये जो
अबदुल अज़ीज़ खां की तरफ़ से
बलख के ऊपर हमला करने वा
ली थी

शाह ज़ादा औरंगज़ेब का

نے چار مہینے تک اوسکا
خوب مقابلہ کیا دو ایک بار
باہر نکل کر حملہ بھی کیا جس
مین پیادگان بندیلہ نے
خوب بہادری دکھلائی ۸
ربیع الاول کو خان نے
سرنگ سے کچھ دیوار
بھی قلعہ کی اوڑائی تاہم
اوسکو شکست کھا کر ناکام
واپس جانا پڑا اوس وقت
کسی نے کہا کہ بہادر خان
بلخ مین نہین ہے خان نے
اپنے بیٹے قتلق سلطان
کو بلخ فتح کرنے کے واسطے
بھیجا مگر بخارا کے لوگ جو
عبد العزیز خان سے ناراض
ہوکر چلے آئے تھے قتلق
سلطان کو بہکا کر معہ بہت سے
اوزبکون کے اوس فوج مین
لگئے جو عبد العزیز خان کے حکم
سے بلخ کے اوپر حملہ کرنے والی تھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गान से मर्व और मर्व से जंगल-
के रस्ते भश हद हो कर सफ़ा हां ग
या शाह ईरान ने पेश वाई कर
के घोड़े पर सुला क़ात की शहर
के दर वाजे से १ कोस तक रंगीन
और रेशमीन कपड़े बिछे हुवे थे
शाहने ख़ान की बड़ी ख़ातिर की
दोनों १ गद्दी पर बैठे खान १५
दिन वहां रहा और फिर किसी-
कदर फ़ौज शाह की कि जिसको
पोशीदा तौर पर हुक्म हिरात से
आगे बढ़ने का नहीं था लेकर म
शहद में आया और वहां से फ़ौ
ज को हिरात में जमा रहने का क
ह कर मर्व को गया और मर्व से
बचकतू पहुंच कर अपने बेटे क
तलक सुलतान को उज्बकों के
पास भेजा और ४००० सवार मे
मने के फ़तह करने को भेजे फिर
ख़ुद भी इस किले के ऊपर आया
बादशाही किलेदार शाद खां

شیرخان سے مرو اور مرو سے
براہ جنگل مشہد ہو کر صفاہان
میں گیا وہاں شاہ ایران نے
گھوڑے پر ملاقات کی شہر کے دروازہ
سے ایک فرسخ تک رنگین
اور ریشمین کپڑے بطور
پاانداز کے بچھے ہوئے تھے
شاہ نے خان کی بڑی خاطر
کی اور اپنے برابر مسند پر
بیٹھایا نذر محمد خان
پندرہ دن تک وہاں رہا
پھر کسی قدر فوج شاہ کے
ہمراہ لے کر کہ جسکو درپردہ
ہرات سے آگے بڑھنے کا
حکم نہ تھا مشہد آیا اور وہاں فوج
جمع ہونے کا حکم دیکر مرو اور مرو
سے چیچکتو گیا وہاں سے اپنے بیٹے تک
سلطان کو بھیجکر اوزبکوں کو بلایا
چلد ہزار سوار میمنہ فتح کرنے کو
بھیجے پیچھے سے خود بھی آگیا
بادشاہی قلعدار شاد خان

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लख में छोड़ कर ख़ुद उन के मु
क़ाबिले को रवाना हुआ यह सुन
कर वे थाने से हट गये वहा दुर खां
ने इमाम बकरी के पुल पर पहुंच
कर कुछ आदमी ग़नीम की ख़बर
लाने को भेजे इतनेमें सुना कि असा
लत खां जेठ वदी ९ को रवाने हो
गया है तो वहा दुर ख़ांने राम सिं
घ राठोड और अजब सिंघ क
छवाहे को भेज कर कहा कि मोह
कम सिंघ सीसो दिया और पहल
वान दर वेश से मिल कर क़िले
की हिफ़ाज़त करें अलमान जेहूं
नदी से उतर गये और अब दुल
अज़ीज़ खां करणी से इस तरफ़
बढा और "बेग औली" उसके आ
गे आगे चला आता था वहा दुर
खां यह सुन कर लडाई की तै
यारी के वास्ते बलख़ को लौट
आया -

नज़र मोह्मद खां शेर

بلخ مین چھوڑکر اونکے مقابلہ
کو روانہ ہوا یہہ سنکر وہ تہانہ
مذکور سے ہٹ گئے بہادر خان
نے پل امام بکری پر پہونچکر غنیم
کی خبر لانے کو آدمی بھیجے اتنے
مین سنا کہ اصالت خان ۲۲
ربیع الاول کو روانہ ہوگیا
پس رام سنگہ راٹھوڑ
اور عجب سنگہ سیسودیہ کو
بھیجا تاکہ باتفاق محکم سنگہ
سیسودیہ و پہلوان درویش
کے قلعہ کی محافظت کرین
المان جیحون سے اوتر
گئے اور عبد العزیز خان قرشی
اس طرف کو روانہ ہوا
بیگ اوغلی اوسکی طرف سے
آگے آگے چلا آتا تہا
بہادر خان کو یہہ سنکر
واسطے تیاری جنگ کے
بلخ کو واپس چلا آیا -

نذر محمد خان شیر خان

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के वास्ते उस तरफ़ जाना पड़ा मगर उस के साथी बहुत से तो मारे गये थे और जो रहे थे वे थोड़े से हीथे इस लिये नूरुल हसन उस के पहुंचाने को आया और कुलीच ख़ां-फ़र ख़ांर को गया और वहां से अशक मश जा कर किले की मरम्मत की और वहीं रहने लगा-

वैसाख सुदी ८ को पांच छः हज़ार अलमान अली मगूल के चशमे पर अबदुल अज़ीज़ ख़ां के कहने से गये वहां दुर ख़ां ने असालत ख़ां को राजा पहाड़ सिंघ और राजा जय राम के साथ भेजा उन्हों ने जाकर उनसे लूट का माल छीन लिया और बहुत से आदमियों को मार डाला-

वैसाख सुदी १० को १५००० सवार अबदुल अज़ीज़ ख़ां के भेजे हुवे खाना बाद के थाने पर आये वहां दुर ख़ां असालत ख़ां को ब

के मुहाफ़ज़ों को सताने उस तरफ़ रवाना हुवा चूंकि उसके बहुत से हमराही काम आ चुके थे और थोड़े से बाक़ी रहे थे इस लिये नूरुल हसन उसके पहुंचाने को साथ हुवा फ़ीलच ख़ान फ़रख़ार को गया और वहां से अशकमश जाकर बहुत क़िलेमें मुक़ीम हुवा-

६ रबीउल अव्वल को पांच छः हज़ार अलमान चशमे अली मग़ूल पर अब्दुल अज़ीज़ ख़ान के इशारे से गये बहादुर ख़ां ने असालत ख़ान को मय राजा पहाड़ सिंघ व राजा जे राम के भेजा उन्हों ने जाकर उनसे माल मसरूक़ा छीन लिया और बहुत से आदमियों को मार डाला

१० रबीउल अव्वल को पन्द्रह हज़ार सवार अब्दुल अज़ीज़ ख़ान की हिदायत से खाना खान आबाद पर आये बहादुर ख़ान असालत ख़ान को

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

भी ज़ख़्मी हुवे राजा लड़ता हुआ
शहर की तरफ़ लौटा आगे २ बाग़
की गली आगई राजा के कोतवा
ल ने दी वार पर चढ़ कर मारे ती
रों और बंदूकों के राजा और नू
रुल हसन का दुश्मनों से पीछा
छुड़ाया फिर उजबकों ने कई दि
नों तक शहर के पास लड़ाई जा
री रखी और नहर तोड़ कर पा
नी बंद कर दिया इधर बादशा
ही बंदों ने भी उनके मुक़ाबिले
में कमी न की आख़िर ग़नीम जे
ठ वदी ९ को फ़तह से ना उमेद
हो कर पीछा चला गया तब राजा
राज रूप और नूरुल हसन ने कु
लीच ख़ां से कहा कि तुमभी कुंद
जमें चले जाओ कि "ताल क़ान"
में पानी का भरोसा नहीं है मग
र कुलीच ख़ां ने तो फ़रख़ार
को जाना पसंद किया जिस
से राजा को ही कुंदज़ के बचाने

वगैरह भी ज़ख़्मी हुए तब नाचार
बादशाही अमीर लड़ते भड़ते शहर को लौटे
आगे बाग़ का कूचा आगया राजा के कोतवाल ने
दीवार पर चढ़ कर तीर अंदाज़ी और बंदूकों
की गोलियों से दुश्मनों को राजा और
नूरुल हसन के गर्द से दूर किया और
बाद इसके उज़बकों ने शहर के गर्द
चंद रोज़ तक लड़ाई की और नहर को तोड़
कर पानी बंद कर दिया मगर बादशाही आदमियों
ने लड़ाई में कमी न की आख़िरश
ग़नीम २२ रबीउल अव्वल को फ़तह से
नाउमेद होकर वापस चला गया
तब राजा रूप और नूरुल हसन
ने क़लीच ख़ान से कहा कि तुम भी
कुंदज़ में चले जाओ
में पानी का भरोसा नहीं है मगर
क़लीच ख़ान ने फ़रख़ार
जाना पसंद किया और राजा
इस अंदेशे से कि मबादा
दुश्मन कुंदज़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुछ लोग वाद शाही घोड़ों को लेजा
ने लगे अहदाद महमंदने उनके ऊ
पर हमला किया उस को दुशमनों
ने घेर लिया राजा यह देख कर
फ़ौरन दौड़ा और नूरूल हसन भी
राजा की मदद को गया कुलीचखां
ने कहलाया कि इस वक्त शहर
से दूर जाना मस लिहत नहीं है
लेकिन उन्होंने वहा दुरी के जोश
में कुछ ख़्याल न किया राजा ने
अहदाद को तो बचा लिया मगर
उसके ऊपर चारों तरफ से बहुत
सारे अलमान आ गिरे उस वक्त
बड़ी भारी लड़ाई हुई जिसमें रा
जा का हिरोल ओषा जो राजा की
क़ौम से था काम आया उसके
साथ और भी बहुत से आदमी
राजा के मारे गये राजा के भी ३
ज़ख़्म लगे और उस का घोड़ा ती
र से ज़ख़मी हो कर गिर पड़ा नू
रुल हसन और अहदाद महमंद

کچھہ لوگ بادشاہی گھوڑون کو
لیجانے لگے احداد مہمند نے
اونکے اوپر حملہ کیا راجہ اوسکو
بہت سے دشمنون مین گھرا
ہوا دیکھ کر بلا توقف معہ اپنے
آدمیون کے اوسکی حمایت
وحفاظت کے لئے دوڑا اور نورالحسن
راجہ کی مدد کو گیا قیچ خان نے ان
لوگون کی بہادری اور جسارت پر
آگاہ ہو کر کہدیا کہ اسوقت شہر
سے دور جانا مصلحت نہین ہے
لیکن اونہون نے کچھہ خیال نہ کیا
راجہ نے احداد کو بچایا مگر اوسکے
اوپر چارون طرف سے بہت سے الامان
آگرے اوسوقت بڑی لڑائی ہوئی
راجہ کا ہراول اوپا نامی جو راجہ کا
ہمقوم آدمی تہا معہ اکثر مردمان راجہ
کے جوہر مردانگی دکہلا کر کام آیا راجہ
نے بہی تین زخم کہائے اور اوسکا گہوڑا
پیکان کے زخم سے میدان مین گرا
اور نورالحسن واحداد مہمند

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बदख़शां में लड़ाई

वैसाख सुदी ९ को कुली च ख़ां को ख़बर पहुंची कि कई हज़ार अलमान जेहूं नदी से उतर कर शहर "तालक़ां" के ऊपर आते हैं उस वक़्त राजा राजरूप मिल ने आया हुआ था बहादुर ख़ां ने उस की और दूसरे सरदारों की सलाह से शहर मेंही मोर चा बंदी करके लड़ने का इरादा किया क्यों कि दुशमनों का जियदा ज़ोर सुना गया था-

जेठ बदी ६ को १०-१२ हज़ार तुरकि थाई और क़तग़ान वग़ैरा १०-१२ सरदारों की अफ़सरी में आये राजा राजरूप तो क़िले के बाहर कि जहां उतरा था अपनी फ़ौज सजा कर खड़ा हो गया और दूसरे अफ़सर भी बाहर आये इधर तो लड़ाई शुरू हुई और उधर

بدخشان مین لڑائی

۷ ماہ ربیع الاول کو قلیچ خان کو خبر پہونچی کہ کئی ہزار المان دریائے جیحون سے روانہ ہوکر شہر طالقان کے اوپر آتے ہین اوسوقت راجہ راجروپ قلیچ خان سے ملنے کو آیا ہوا تھا بہادر خان نے راجہ اور دوسرے سردارون سے صلاح کرکے بلحاظ کثرت غنیم کے شہر مین ہی مورچہ بندی کرکے لڑنے کا ارادہ کیا۔

۱۹ کو دس بارہ ہزار ترکیائی اور قطغان وغیرہ دس بارہ سردارون کی افسری مین آئے بادشاہی افسر اونکے مقابلہ کو باہر نکلے راجہ راجروپ قلعہ کے باہر کہ جہان اوسکا ڈیرہ تھا اپنی فوج کو سجے ہوئے کھڑا تھا لڑائی ایک طرف سے شروع ہوئی اور

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जग राम कछ वाहा, और अपने
चचा नेक नाम को अपने २०००
सवारों के साथ उनके मुक़ाबले
पर भेजा येह फ़ौज पिछले दिन
को औक़चे में पहुंचे थी कि अ
लमानों के सेरम और सरपुल
से बहुत से घोड़े ऊंट गाय औ
र बकरी लूटकर जेहूं की तरफ
रवाना होने की ख़बर सुन कर
चल खड़े हुवे २ पहर रात और
ढाई पहर दिन बराबर चलक
र उनके ऊपर जा पहुंचे और
बहुत सों को मार कर गाय और
बकरी वग़ैरा छीन लाये रात
को "जेहूं" के किनारे पर ठहरे
थे कि १ घड़ी रात गये पांच छः
हज़ार सवार अलमानों के फिर नदी
से उतर आये और लड़ने लगे
मगर बहुत से मारे गये
बादशाही बंदे फ़तह पा कर
लौट आये-

جگ راج کچھواہہ اور اپنے چچا نیک نام
کو معہ اپنے دو ہزار سوارون کے اونکی
تنبیہ و تادیب کے لئے بھیجا شام کے قریب یہہ
لشکر القچہ مین پہونچا المانان مذکور جو اشام
نواحی سرپل و سیرم کو لوٹ چکے تھے بہت
سے گہوڑے اونٹ بیل اور بکریان لیکر
جیحون کی طرف چل دیئے بادشاہی آدمی
قراولون سے یہہ حال سنکر اوسیوقت
اونکے تعاقب کو چلے اور دو پہر
رات سے ڈھائی پہر دن تک برابر
چل کر اونکے سر پر جا پہونچے اور بہت
سے آدمیون کو مار کر مویشی چہڑا لائے
رات کو وہین رہے جب ایک
گہڑی رات گئی تو پانچ چہہ ہزار سوار
دوسرے دریا سے اوتر آئے
اور لڑنے لگے مگر لڑائی مین بہت
سے مارے گئے بادشاہی بندے
بعد فتح واپس آئے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ईनात थे बाहर निकल कर उन को भगा दिया वह दुर खाने इस माजरा की ख़बर पाकर राजा जय राम रूप सिंघ, राठोड़, गोकुल दास, सीसोदिया और दूसरे बाद शाही बंदों को अपने चचा नेक नाम और अपने २००० सवारों के साथ अलमानों के ऊपर भेजा जो कलता पहुंच कर मोमन आबाद को रवाना हुवे कि जिधर को वे लोग गये थे और अब इनका आना सुन कर जेहू नदी के पार उतर गये तब येभी बरबल को लोट आये

चैत वदी १२ को बहुत से अलमान जेहू के घाट "नीलगूं" से उतर कर "शेर गंज" के पास से गुजरते हुवे शेरम और सरपुल की तरफ गये बहादुर ख़ांने ख़बर पाकर राजा देवी सिंघ, राजा जय राम, रूप सिंघ राठोड़, राम सिंघ राठोड़, मोतमद ख़ां मीर आतिश, गोकुलदास सीसोदिया, अलावलतरीन, गोपाल सिंघ, महेस दास राठोड़

اوسکے ہمراہ تھے باہر نکلا اور المانون کو قلعہ کلتہ کے پاس سے بھگا دیا بہادر خان نے اس ماجرا کی خبر سنکر راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور گوکل داس سیسودیہ اور دوسرے بادشاہی بندونکو اپنے چچا نیکنام اور اپنے دو ہزار سوارون کے ساتھہ المانون کے دفعیہ کو روانہ کیا یہہ لوگ کلتہ پہونچکر مومن آباد کو گئے کیونکہ المان اوسطرف کو چل دہرے تھے اور اب انکا آنا سنکر جیحون سے اوتر گئے اسلئے یہہ بہی بلخ کو لوٹ آئے۔

۲۵ محرم کو بہت سے المان دریائے جیحون کے گذرنیگون سے جو کلیف سے پائین تر ہے گذر کر شیر غان کے نزدیک ہوتے ہوئے شیرم اور سرپل کی طرف گئے بہادر خان نے خبر پاتے ہی راجہ دیوی سنگہ راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور معتمد خان میر آتش گوکل داس سیسودیہ علاول ترین گوپال سنگہ مہیش داس راٹھور

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसी दिन राजा विठ्ठल दास को ख़ासा तबेले से घोड़ा सुनेहरी ज़ीन का इनायत हुआ-

जेठ वदी ८ को बादशाहने काबुल के पास बाग़ सफा में पहुंच कर राव रतन हाड़ा के बेटे माधो सिंघ, रूप सिंघ राठोड़ और राम सिंघ राठोड को जो बलख़ में थे रूपहरी जीनके घोड़े भेजे-

बलख़ में लड़ाई

फागण सुदी १४ को पहररात रहे बहुत से अलमान एकाएकी क़लते के क़िले पर चढ आये उग्र सेन कछवाहा नरूकाने जो कलते और गुरगान का थाने दार था बलख़ में ख़बर भेजी और बादशाही मन सबदारों व बंदूक चियों के साथ जो उस के पास मदद के वास्ते त

اسیدن راجہ بٹھل داس کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا معہ زین مطلا کے مرحمت ہوا

۲۱ ربیع الاول کو بادشاہ باغ صفا مین جو کابل کے متصل ہے پہونچے راو رتن ہاڈہ کے بیٹے مادہو سنگہ اور روپ سنگہ راٹھور و رام سنگہ راٹھور کو جو بلخ مین تھے نقرہ زین کے گھوڑے بھیجے گئے۔

بلخ مین لڑائی

۱۲ محرم کو پہر رات گئے بہت سے المان ناگہان تہانہ کلتہ کے اوپر آے اوگرسین کچھواہہ نرو کانے جو کلتہ اور جرجان کا تہانہ دار تہا بلخ مین خبر بھیجی اور آپ پائے مردی سے معہ بعضے منصب دارون اور بادشاہی تفنگچیون کے جو مدد کے واسطے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

डेढ हज़ार सवार का कर दिया कि जिस में उस के बाप की ज मैयत बिखर ने न पावे-

बाद शाह का काबुल जाना

बैसाख बदी ४ को बाद शाह लाहोर से काबुल को रवा ने हुवे क्यों कि नज़र मोहम्मद खां के बेटे अब दुल अज़ीज़ खां का बुख़ारा से बलख़ पर आने की ख़बर मश हूर हु ई थी-

जेठ बदी ३ को बाद शाह ने सेवा राम को ख़िलअत दे कर अली मस जिद से किले काबुल की हिफ़ाज़त पर रवा ने किया-

اوسکے پس ماندون کو خلعت
ملے رتن اوسکا بڑا بیٹا جالورمین
تہا بادشاہ نے اوسکو اصل
و اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات
اور پانسو سوار کا منصب عطا
فرمایا تاکہ اسکے باپ کی جمعیت
متفرق نہو پہلے رتن کا منصب
چارصدی ذات اور دوسو
سوار کا تہا-

بادشاہ کا کابل جانا

۱۸ صفر کو بادشاہ لاہور سے
روانہ کابل ہوئے کیونکہ بخارا
سے عبد العزیز خان کے آنے
کی خبر گرما گرم سنی گئی تھی-
۱۶ ماہ ربیع الاول کو
بادشاہ نے سیوارام
گوڑ کو حفاظت قلعہ
کابل کی عنایت فرماکر
مقام علی مسجد سے
روانہ کابل کیا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महेस दास राठोड का मरना

चेत सुदी १० को राजा सूरज सिंघ के भाई दलपत के बेटे महेसदास का इन्तकाल हो गया बादशाहनामे में लिखा है कि यह काम देखे हुवे और लडाईयां किये हुये अच्छे बहादुरों में से था जब दौलत खाने खास में हाजिर होता था तो बादशाह के हुक्म से तख्त के पीछे उस संदली (चोकी) के पास रखा होता था कि जिसपर बादशाह का खासा तरकश और तलवार रखी रहती है और जो तख्त से १० गज के फासिले पर रखी जाती है और सवारी में २० गज के फासिले से बादशाह के पीछे रहता था बादशाह ने फरमाया था कि यह किसी लड़ाई में काम आना चाहिये था कि बहुत आदमी उसके साथ मारे जाते और उस के वारिसों को खिलअत दिये बड़ा बेटा रतन जालोर में था उस का मन सवबढ़ा कर ६०० हजारी

انتقال مہیس داس راٹھوڑ

۹ صفر کو مہیس داس راٹھوڑ کا انتقال ہو گیا یہہ راجہ سورج سنگھ کے بیٹے دلپت راٹھوڑ کا بیٹا بندگان کاردیدہ اور پیکار ورزیدہ سے تھا جب دولتخانۂ خاص مین حاضر ہوتا تھا تو بموجب حکم بادشاہ کے تخت معلے کے پیچھے اوس صندلی کے پاس کہ جس پر شمشیر و ترکش خاصہ رکھا رہتا تھا کھڑا ہوا کرتا تھا یہہ صندلی یعنی چوکی ہمیشہ بادشاہ کے تخت سے دس گز کے فاصلہ پر رکھی جاتی تھی اور بروقت سواری بادشاہ کی بیس گز کے فاصلہ سے بادشاہ کے پیچھے پیچھے چلتا تھا بادشاہ نے فرمایا کہ چاہیے تھا کہ یہہ کسی لڑائی مین کام آتا کہ اوسکے ساتھہ بہت سے آدمی مارے جاتے

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि पिशोर में ठहर कर बहार के मुल्क में
अली मरदान खां राजा राय सिंघ राव शत्रु
साल नज़र बहादुर खेशगी राव रूप
सिंघ चन्द्रावत राजा अमर सिंघ रा
जावत बगैरा के साथ जो बलख और
बदख्शां को छोड़ कर पिशोर में आ
गये थे और जिनके वास्ते अब्क से न
ही उतरने देने का हुक्म था बलख को रा
वाने होवे-

रावत दयाल दास झाला भी शा
हज़ादे के साथ तईनात हुआ और रु
खसत के वक्त उस को भी घोड़ा इना
यत हुआ-

चैत बदी १२ को बादशाह नगरकोट के
ज़मींदार पृथ्वी चन्द को खिलअत
और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर घर
जाने की रुखसत दी-

शाहज़ादे दारा शिकोह के दीवान
राय बिहारी मल को हज़ारी ज़ात और
डेढ़ हज़ार सवार का मन्सब इनायत
हुआ-

اور بہت سا زیور و جواہر
عطا کر کے بلخ کی طرف
روانہ کیا اور حکم دیا کہ پشور
مین ٹھہر کر اوائل بہار مین
معہ علیمردان خان امیر الامرا
اور راجہ رائے سنگھ و
راسترو سال و نظر بہادر خویشگی
و راو روپ سنگھ چندراوت
و راجہ امر سنگھ راجاوت
وغیرہ کے کہ جو بلخ و بدخشان
سے بلا حکم پشور مین آگئے تھے
اور جنکے واسطے اٹک سے
نہین اوترنے دینے کا حکم تھا
بلخ کو روانہ ہو جاوے

راوت دیالداس جھالا بھی بادشاہ
کے ساتھ تعینات ہوا اور وقت
رخصت بادشاہ نے اوسکو بھی گھوڑا عنایت
۲۷ محرم کو راجہ برتی چند جنبہ والہ کو خلعت اور
اسپ معہ زین نقرہ کے عنایت ہو کر گھر
جانیکی رخصت ہوئی - رائے بہاری مل
دیوان شاہزادہ دارا شکوہ کو ہزاری ذات اور

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस वक़्त बुख़ारा में बड़ी मरी पड़रही थी और लाहोर में काल था-

बरस २१वां

फागरा सुदी २ सं. १७०३ से माह वदी दूज सं. १७०४ तक

फागरा सुदी ३ को बाद शाहने ३००) रुपये ग़रीबों को बांटने के वास्ते दिये-

इसी दिन सुजान सिंघ सीसोदिये का मन सब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का हो गया-

चेत बदी १ को बाद शाहने नज़र मोहम्मद ख़ांके बेटे अबदुल अज़ीज़ ख़ां के बुख़ारा से बलख़ पर आने की ख़बर सुन कर शाहज़ादे औरंग ज़ेब को विदा किया और चलते वक़्त उस को बहुत सा ज़ेवर और जवाहर इनायत करके ५ लाख रुपये नक़द भी इनाम में दिया और फ़रमाया

اسوقت بخارا مین بڑی وبا تھی اور لاہور مین قحط تھا

برس اکیسوان

۱۰۵۷ھ

۲۷ جنوری ۱۶۴۷ء سے ۶ جنوری ۱۶۴۸ء تک

غرہ محرم کو بادشاہ نے ۳۰ ہزار روپیہ واسطے امداد قحط زدگان کے تقسیم کئے۔

اسیدن سجان سنگھ سیسودیہ کا منصب پانچسدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا ہوگیا۔

۱۵ محرم کو بادشاہ نے عبد العزیز خان ولد نذر محمد خان کے بخارا سے بلخ پر آنے کی خبر سنکر بادشاہزادہ محمد اورنگ زیب کو پانچ لاکھ روپیہ انعام

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नज़र मोहम्मद खांके बेटे खुसरो को इनायत किया और कुछ दिनों पीछे बलराम को घोड़ा और खिलअत दे कर रुख़सत दी और उस के हाथ राना और राणा के बड़े बेटे राज कुंवर के वास्ते क़ीमती खिलअत और सोने की ज़ीन के घोड़े भेजे-

फागण वदी १० को शाहज़ादा औरंगज़ेब गुजरात से आया-

फागण वदी ११ को बलख और बदख़शां की वलायत शाहज़ादे औरंगज़ेब को इनायत हुई और उस के वास्ते बलख़ में ५० लाख रुपये भेजने ठहरे थे इस लिये पृथ्वीराज को खिलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा इनायत करके हुक्म दिया कि उस ख़ज़ाने को अपनी हिफ़ाज़त में लेकर शाहज़ादे से पहिले रवाने हो जावे-

पेशकश मین भेजा تھا بادشاہ نے نذر محمد خان کے بیٹے خسرو کو عنایت کیا اور بلرام کو بعد چندے گھوڑا اور خلعت دیکر رخصت کیا اور اوسکے ساتھ رانا اور اوسکے بیٹے راج کنور کے واسطے خلعت فاخرہ و اسپ معہ زین طلا کے بھیجا -

۲۳ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب دکن سے آیا -

۲۴ ذی الحجہ کو بلخ اور بدخشان کی ولایت اوسکو عنایت ہوئی اور اوسکے واسطے بلخ مین پچاس لاکھ روپیہ بھیجنے ٹھیرے تھے اسلئے پرتھی راج کو خلعت اور چاندی کے زین کا گھوڑا عنایت ہوکر حکم ہوا کہ اوس خزانہ کو اپنی حفاظت مین لیکر شاہزادہ سے پہلے روانہ ہوجاوے

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दुर खां ने राजा जय राम गोपाल सिंघ राय तिलोक चंद और जग राम वगैरा राज पूत सरदारों और कुछ मुगलों को भेजा इन्होंने उजबकों को मार भगाया फिर अलमानों ने जमा होकर शोर गान के क़िले दार जब्बार कुली को घेर लिया राजा देवी सिंघ और तुर्क ताज़र खां ने जो वगैरे हुक्म रुस्तमखां के इन्द खुद से वलख को रवाने हुवे थे किले दार को मदद पहुंचा कर अलमानों को भगा दिया-

दरबार का हाल

माह सुदी १५ को राजा जगत सिंघ का वकील वल राम नई फतहों की मुबारिक बाद की अरज़ी और पेश कश लेकर हाज़िर हुआ बाद शाह ने राना की पेश कश मेंसे १ घोड़ा सोने के साज

بہادر خان نے راجہ جے رام گوپال سنگھ رائے تلوک چند اور جگرام وغیرہ راجپوتوں کو معہ کچھ مغلوں کے بھیجا جنہوں نے اوزبکوں کو مار کر بھگا دیا پھر المانوں نے جمع ہو کر جبار قلی قلعہ دار شیر غان کو گھیر لیا راجہ دیبی سنگھ و ترکتاز خان نے جو بلا حکم رستم خان اندخود سے بلخ کو روانہ ہوئے تھے قلعہ دار کو مدد پہونچا کر المانوں کو بھگا دیا۔

دربار کا حال

۱۴ ذی الحجہ کو رانا جگت سنگھ کا وکیل بلرام جو فتوحات جدیدہ کی مبارکباد کے واسطے مع عرضے رانا کے آیا تھا دربار میں حاضر ہوا رانا نے جو گھوڑا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पोस वदी ६ को आगरे का अगला किले दार राठोड़ महेस दास वहां से १ करोड़ रुपयों का ख़ज़ाना जो बाद शाह ने मंगवाया था लेकर लाहोर में हाज़िर हुआ

पोस सुदी १० को शाहज़ादे मुराद का मनसब १२ हज़ारी था वह तो बहाल हो गया मगर सवारों में से सिर्फ़ १००० सवार कम हुवे पहिले १०००० थे अब ९००० रहे-

उजबकों के हमले

वज़ीर सादुल्ला खां के चले आने पर उजबकों ने जगह२ लूट मार मचादी बलख का सूबेदार बहादुर खां दो तीन दफ़े जा कर उनसे लड़ा १ दफ़े बहादुरखां ने कुछ आदमी ग़ोरी का ख़ज़ाना लाने के वास्ते भेजे थे उजबकों ने उन का रास्ता रोक लिया तब वहां

۱۹ شوال کو قلعہ آگرہ کا قلعدار سابق راٹھور پرتھی راج ایک کروڑ روپیہ خزانہ عامرہ سے حسب الطلب بادشاہ کے لیکر لاہور میں حاضر ہوا-

۸ ذیقعدہ کو شاہزادہ مراد کا منصب بارہ ہزاری ذات ایکہزار سوار کم ہوکر بحال ہوگیا پہلے سوار دس ہزار تھے اب ۹ ہزار رہے-

اوزبکوں کے حملے

سعد اللہ خان وزیر کے چلے آنے پر اوزبکوں نے جگہہ جگہہ لوٹ مار مچادی بلخ کا صوبہ دار بہادر خان دو تین دفعہ جاکر اون سے لڑا ایکدفعہ بہادر خان نے کچھہ آدمی ... غوری کا خزانہ لانے کیلئے بھیجے تھے اوزبکوں نے اونکا راستہ روک لیا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के ऊपर डेरे हुवे वहां राय काशी दास दीवान सूबे आगरे को बंगाले की दीवानी पर जाने का हुक्म लिखा गया-

मंगसिर वदी १० को चिनाव नही के ऊपर मुकाम हुआ वहांजय राम का मनसब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का हो गया-

मंगसिर सुदी ९ को बादशाह लाहोर में दाखिल हुवे-

राजा विठ्ठल दास का मनसब इज़ाफ़ा हो कर पांच हज़ारी ज़ात और ५००० सवारों का हो गया

गिर धर दास गोड़ का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का हो गया

उस को ख़िलअत भी मिला और आगरे की क़िले दारी पर बाक़ी खां की शामिलात पर भेजा गया-

کے کنارہ پر بادشاہ نے رائے کاشی داس کو خدمت دیوانی صوبہ آگرہ سے بدل کر بنگالہ کی دیوانی پر مقرر کیا۔

۲۳ رمضان کو چناب ندی کے کنارہ پر راجہ جے رام کا منصب پانچ صدی ذات کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور ڈیڑھ ہزار سوار کا ہو گیا۔

۸ شوال کو بادشاہ لاہور میں داخل ہوئے۔

راجہ بٹھل داس کا منصب پورا پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار کا ہو گیا۔

گردھر داس گوڑ کو خلعت اور منصب ہزاری ذات اور آٹھ سو سوارون کا اصل و اضافہ سے عنایت ہوا اور خدمت قلعہ داری دار الخلافہ اکبر آباد کی بھی بشراکت باقی خان کے اوسکو ملی۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजा जय राम का मन सब असल और इज़ाफ़े से डेढ हजारी ज़ात और १५०० सवारों का हो गया-

गोकल दास सीसो दिया पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों के मनसब को पहुंचा-

भोज राज खंगार नरायण दास सीसो दिया केसरी सिंघ महावत ख़ानी और सारंग देव के बेटे पृथ्वी राज के मनसब भी इज़ाफ़े हुवे-

कातक सुदी १४ को पिशोर में बाद शाह ने राजा जय सिंघ के बड़े बेटे राम सिंघ को ख़िलअत और घोड़ा सुनहरी ज़ीन का देकर वतन जाने की रुख़सत दी क्यों कि राजा को दक्खन से बुलाया गया था-

कातक सुदी १० को भटनद्दी

राजा जी राम का منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور پندرہ سو سوارون کا ہو گیا-

گوکل داس سیسودیہ پانچ صدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور ۸۰۰ سوارون کے منصب کو پہونچا-

بھوج راج کھنگار نراین داس سیسودیہ کیسری سنگھ مہابت خانی اور سارنگدیو کے بیٹے پرتھی راج کے منصب بھی بڑھائے گئے-

۱۴ شعبان کو مقام پیشور مین بادشاہ نے راجہ جے سنگھ کے بڑے بیٹے کنور رام سنگھ کو خلعت اور اسپ معہ زین مطلا عنایت کر کے وطن جانے کے واسطے مرخص کیا- کیونکہ راجہ جے سنگھ کے بلانے کا حکم دکھن کو گیا تھا-

۸ رمضان

کو دریاے بہت

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सब के ऊपर निहायत महर बानी-
ओर पर बरिश की-

आसोज सुदी ७ को सादुल्ला खां भी बलख से आ गया-

बाद शाहने ५ लाख रुपये के खर्च से काबुल में दोलत खां ना बनाया ओर पुराने महलों ओर बागों की भी मरम्मत की-

आसोज सुदी ११ को बाद शाह ने काबुल से लाहोर की तरफ़ कूच किया ओर बलख बदखशां का फ़तह नामा शाह ईरान के पास मय १ जड़ाऊ तलवार के भेजी ओर जो अमीर बलख के सूबे में तईनात हुवे थे उन के मनसब बढ़ाय गये जिनमें से राजा किशन सिंघ राठोड़ के पोते रूप सिंघ ओर राम सिंघ राठोड़ पांच पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात ओर २००० सवारों के मनसब दार हो गये-

سب کے اوپر بہت مہربانی اور نوازش کی-

۵ شعبان کو علامی سعد اللہ خان بھی بلخ سے کابل مین آگیا

بادشاہ نے پانچ لاکھ روپیہ کے صرف سے کابل مین دولت خانہ بنایا اور قدیم عمارتون اور باغون کی بھی مرمت کرائی-

۹ شعبان کو بادشاہ نے کابل سے لاہور کی طرف مراجعت کی اور بلخ اور بدخشان کی فتح کا نامہ مع ایک قبضہ شمشیر مرصع کے شاہ ایران کے واسطے بھیجا اور جو امیر بلخ کے صوبہ مین تعینات ہوئے تھے اونکے منصبون مین اضافہ کیا گیا ازانجملہ راجہ کشن سنگھ راٹھور کے پوتے روپ سنگھ اور رام سنگھ راٹھور پانچ پانچ صدی ذات کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوارون کے منصب کو پہونچے-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

किये राजा जगत सिंघ का बेटा
वहा दुर सिंघ भी उसके साथ जा
ने को तईनात हुआ-

आसोज वदी ६ को शाहज़ादा
मुराद बख्श काबुल से आया मग
र बाद शाहने उस को दरबार में
आने से मना कर दिया-

आसोज वदी ३० को नजरमो
हम्मद खां की औरतें बेटियां बे
टे और पोते जो बलख में थे उ
न सब को ले कर राजा बिठ्ठल दा
स गोड़ और महेस दास राठोड़
काबुल में हाज़िर हुये क्यों कि
बाद शाह ने सादुल्ला खां वज़ी
र से कह दिया था कि नज़र मो
हम्मद खां की औरतों और ल
ड़के बालों को राजा बिठ्ठल दास
महेस दास राठोड़ खलीलुल्ला
ह खां और लोह रस्प वगेरा के
साथ हमारे पास भेज देना अब
जो वे आये तो बाद शाह ने उन

کئے راجہ جگت سنگہ کا
بیٹا بہادر سنگہ بھی اوسکے
ہمراہی مین تعینات ہوا-

۲۲ رجب کو شاہزادہ مراد بخش
کابل مین واپس پہونچا مگر بادشاہ
نے اوسکو دربار مین آنے
سے منع کر دیا-

۲۸ رجب کو راجہ بیٹھل داس
گوڑ اور مہیش داس راٹھور
نذر محمد خان کے اون تمام
بیٹون - پوتون - عورتون اور
بیٹیون کو جو بلخ مین تھے لیکر
کابل مین بادشاہ کے پاس حاضر
آئے بادشاہ نے سعد اللہ خان
وزیر کو لکھدیا تھا کہ نذر محمد خان کی عورتو
اور بال بچون کو راجہ بیٹھل داس
مہیش داس راٹھور - خلیل اللہ
خان اور لہراسپ وغیرہ
کے ساتھ ہمارے پاس
بھیجدینا- چنانچہ اب وہ
آئے تو بادشاہ نے اون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

न ने मीर को ठहराकर ईद के दिन (माह सफ़ी ११) उस से मुलाक़ात की-

बाद शाह ने मीर की अरज़ी से नज़र मोहम्मद खां के रिज़ून होने का हाल मालूम करके मीर को लौट आने का हुक्म लिख भेजा ॥

दरबार का हाल

आसोज वदी १ को राजा राज रूप के मनसब में ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे वह दो हज़ारी ज़ात और २०० सवार का मनसबदार हो गया-

आसोज वदी २ को राजा जसवंत सिंघ को खासा तबेले से १ घोड़ा सोने के साज का इनायत हुआ

आसोज वदी ८ को बादशाह ने आक़िल खां के हाथ २५ लाख रुपये बलख को फिर रवाने

ने सफ़ाहान मीर अज़ीज़ को ठहराकर ईद अल्ज़ुहा के दिन उस से मुलाक़ात की

बादशाह ने मीर अज़ीज़ की अरज़ी से नज़र मुहम्मद खान के मुतफ़क़ न होने का हाल मालूम करके मीर अज़ीज़ को वापसी का हुक्म लिख भेजा-

दरबार का हाल

१५ रजब को राजा राजरूप के मनसब में पांसो सवार का इज़ाफ़ा हुआ जिस से वह दो हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवार का मनसबदार हो गया-

१६ रजब को राजा जसवंत सिंघ को खासा तबेले से एक घोड़ा मअ़ साज़ सोने के इनायत हुआ- २१ रजब को बादशाह ने आक़िल खां के हमराह पच्चीस लाख रुपये बलख को फिर रवाना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हिरावल और चन्दावल की हि
फ़ाज़त पर रखा गया था और मो
हम्मद क़ासिम उसीदम रवाने हो
कर ऐन वक्त पर राजा के पास आ
पहुंचा दुशमन उस को देख तेही
भाग गये-

नज़र मोहम्मद खां का निकलजाना

नज़र मोहम्मद खां लड़ाई
हार कर मर्व में गया और वहां
से सफ़ा हां (ईरान) को रवाने हु
आ बाद शाह ने यह सुन कर उसका
उजर माज़रत (सष्टा चारी) करके
लिखा कि तुम्हारे क़बीलो को
जहां कहो वहां तुम्हारे पास भिज
वा देवें और यह तहरीर मीर अब
दुल अज़ीज़ के हाथ भेजी जब
मीर ईरान में पहुंचा तो नज़र मो
हम्मद खां तो वहां से खुरासान
को चल दिया था और शाह ईरा

ہراول اور چنداول کی حفاظت پر
مقرر تھا محمد قاسم اوسی وقت روانہ
ہوکر راجہ کے پاس جا پہونچا دشمن
اوسکو دیکھتے ہی بھاگ گیا۔

نذر محمد خان کا نکلجانا

نذر محمد خان بعد شکست کے
مرو۔ مرو سے صفاہان اور صفاہان
سے خراسان کو چلا گیا بادشاہ نے
یہہ سنکر اوسکو بعد عذر
معذرت کے لکھا کہ تمہارے
اہل حرم کو جہان کہو
وہان تمہارے پاس
بھیجدین۔
میر عزیز یہہ خط لے کر
اوس کی طرف روانہ
ہوا وہ اوس وقت
صفاہان سے خراسان
کو چل دیا تھا شاہ
ایران

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का हाकिम मुकर्रर हुआ था उस
को भी ख्वाजा दो कोह के पास अ
लमानों से मुकाबिला करना पड़ा
उस दिन राजा देवी सिंघ हिरोल
था अलमान उर्दू (लश कर) से
१ कतार बार बरदारी के ऊंटोंकी
पकड़ लेगये राजा ने पीछा करके
वह कतार उनसे छुडाली इस पर
१५०० अलमान जो पहाड़ के पीछे
बैठे थे ३ तरफ़ से राजा के ऊपर
दौड़ पड़े राजा के पास २०० से जि
यादा सवार न थे तो भी उसने ख़ू
ब मुकाबिला किया और बहुत अ
लमानों को मारा उसके भी अक
सर साथी और ख़ास करके रिश्ते
दार मारे गये और राजा की जा
न पर आबनी उसने भी बहा दु
री से मरने की ठान ली थी कि उ
सी वक्त १ सवार उसका दौड़ा हु
आ मोहम्मद क़ासिम के पास प
हुंचा जो रुस्तम ख़ां की तरफ़ से

مقرر ہوا تھا اوسکو قریب
مقام خواجہ دو کوہ کے المانوں
سے اتفاق مقابلہ کا ہوا
اوس دن راجہ دیبی سنگہ
ہراول تھا کچھ المان ایک قطار
شتران باربرداری کو اُردو سے
پکڑ لے گئے راجہ نے تعاقب
کرکے وہ قطار اون سے چھڑالی
اسپر پندرہ سو المان جو پہاڑ کے پیچھے
بیٹھے تھے تین طرف سے راجہ کے
اوپر حملہ آور ہوئے راجہ کے پاس دو
سو سے زیادہ سوار نتھے تو بھی
اُسنے خوب مقابلہ کیا بہت سے
المانوں کو مارا اوسکے بھی اکثر ہمراہی
راجپوت اور رشتہ دار مارے
گئے اور جان پر آبنی تو بھی راجہ
نے ہمت اور بہادری
سے مرنیکی ٹھان لی اوسوقت
ایک سوار اوسکا دوڑا ہوا
محمد قاسم کے پاس پہونچا
جو رستم خان کی طرف سے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बाद शाही अमीरों के आदल और
अहसान से आबाद हो गया था
क्यों कि बदख्शां की बहुत सी रैय
त अलमानों के ज़ुलम से वहां-
आ बसी थी राजाने कुछ अहदि
यों और बंदूकचियों और बुंदेले
पैदलों को तो क़िले की रखवाली प
र रक्खा और राजपूतों को इसका
म पर मुक़र्रर किया कि जिधर
अलमानों की भीड देखें मदद
के वास्ते जावे और आप रात दिन ल
ड़ाई के वास्ते तैयार रहता था-

भादों सुदी ४ को शाह मोह
म्मद वग़ैरा कई शख्स जो क़ोम
क़तान के अफ़सर थे पांच छः
हज़ार सवार लेकर ३ तरफ से श
हर के ऊपर आये और पहर भर
तक तीर मारते रहे मगर फिर भा
ग कर आब ख्वाजा पाक से उत
रे और आस्ताने इमाम को गये-

रुसतम खां जो अंदख़ोद

शहर की हफ़ाज़त जहां बदख्शां
की अक्सर रआया अलमानों के डर से
आ बसे थे मुक़द्दम समझे अहदियों
तफ़ंगचियों और पैदल हाथे बंदेलों को
तो क़िले के ज़ाबिते पर रक्खा और
राजपूतों को इस काम पर मुक़र्रर
किया कि जिस तरफ़ दुश्मन का
हुजूम देखें पहुंचकर मदद करें
और आप रात दिन लड़ाई
के लिये मुस्तैद रहता था-

३ रजब को शाह मुहम्मद और कुल मुहम्मद वग़ैरा
चंद अमीरान क़ौम क़तान
पांच छः हज़ार सवार लेकर तीन
तरफ़ से शहर के ऊपर आये
और पहर भर तक जा बजा खड़े
होकर तीर मारते रहे मगर फिर
भाग कर आब ख्वाजा पाक से
गुज़रे और आस्ताने इमाम
को चले गये-

रुस्तम खां जो हाकिम
अंदख़ोद मुक़र्रर

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जा पहुंची और वे भागते ही नज़र आये राजा ने पीछा किया २ कोस गया था कि उन को दूसरी टुकड़ी ने जो पहाड़ी या और घाटियों में छुपी हुई थी बाहर निकल कर मुकाबिला किया मगर जब उन मेंसे बहुत से आदमी मारे गये तो बाक़ी के भी भाग गये-

राजा जीत पाकर लौटा और २।३ दिन बाद सुना कि वे भागे हुवे अलमान आस्ताने इमाम में गये हैं और कुछ दूसरे भी उन से आमिले हैं और अब फिर उन का इरादा कुंदुज़ के ऊपर आने का है और लशकर के जासूस उनकी तेदाद पांच छः हज़ार सवारों की बता तेथे और राजा के पास जो फ़ौज थी वह थोड़ी लिये उसने मैदान की लड़ाई लड़ना मसलिहत न देखी और शहर का बचाना ज़रूर समझा जो

کے پہونچتے ہی بھاگ گئے راجہ دو کوس تک اون کے تعاقب مین گیا اسنے مین دوسرے لوگ اون مین سے جو پہاڑون اور گھاٹیون مین چھپے ہوئے تھے نکل کر راجہ کے مقابل ہوئے کچھہ تو لڑائی مین مارے گئے اور باقی ماندہ فرار ہوئے۔

راجہ مع ہمراہیون کے فتح پاکر واپس آیا دو تین روز بعد خبر پہونچی کہ المان جو بھاگ گئے تھے آستانہ امام مین جمع ہوئے ہین اور اون سے کچھہ اور بھی لوگ آملے ہین و قندز پر آنا چاہتے ہین جاسوسون نے اون کی تعداد قریب پانچ چھہ ہزار سوار کے بتائی تھی اسلیئے راجہ نے اپنے پاس تھوڑی فوج ہونے سے تدبیر صف جنگ کو قرین مصلحت نہ دیکھکر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

और थानेदार जगह जगह मुकर्रर करके २२ दिन में सारा बंदोबस्त इन नये जीते हुवे मुल्कों का कर दिया-

बदख्शां का हाल

भादों बदी ८ को राजा राज रूप ने कुंदुज़ में सुना कि बहुत से अलमान आब ख्वाजा पाक से जो १ खाड़ी जे हूंनही की है उतर कर इधर आते हैं इस पर फौरन अपने भरोसे के कुछ राजपूतों को आगे हिरोल बना कर रवाने कर दिया और आप क़िलेका बंदोबस्त करके सैयद असद उल्ला सैयद वाकिर और दूसरे अहदियों के साथ हिरोल के पीछे ही चल पड़ा अलमानों ने अभी कई घास कटों को जो जंगलमें सिपाहियों के वास्ते घास लकड़ी लेने को गये थे मारा था कि यह फौज वहां

اور تھانہ دار مقرر کر کے ۲۲ دن مین تمام ممالک مفتوحہ کا انتظام کر دیا -

بدخشان کا حال

راجہ راجروپ کی عرضی سے بادشاہ کو معلوم ہوا کہ ۲۱ جمادی الثانی کو راجہ مذکور کو قندز مین خبر ملی کہ بہت سے المان آب خواجہ پاک سے جو ایک خلیج دریائے جیحون کی ہے اسطرف کو عبور کرتے ہین راجہ نے فوراً اپنی کچھ معتمد راجپوتون کو بطور ہراول کے پیشتر روانہ کیا اور آپ قلعہ کا ضابطہ کر کے مع سید اسد اللہ و سید باقر اور احدیون وغیرہ کے پیچھے سے راہی ہوا المان جو سپاہیون کے کچھ نوکرون کو کہ لکڑی کے واسطے جنگل مین جاتے تھے مار چکے تھے اس فوج

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुल्क से घबरा गया और उस ने
केई अरजियां बादशाह को भेजी
कि मुझ को हुज़ूर में बुलालें जिससे
बादशाह ने नाराज़ होकर भादों व
दी १३ को सादुल्लु खां वज़ीर को र
वाना बख़्ल किया उसने भादों सु
दी ९ को वहां पहुंच कर शाहज़ादे
को समझाया मगर जब वह लोटे
जाने के इरादे से बाज़ न आया तो
वज़ीरने सब अमीरों को उसके डेरे
पर जाने से मने कर दिया बलख़
की सूबे दारी असालत खां और
बहादुर खां को दी और बदख़शां
की कुलीच खां को सुपुरद की रा-
जा पहाड़ सिंघ और चंद्र मणि बुं
देले को तो दूसरे अमीरों के साथ
५०० सवारों से अंद खूद को रवा
ने किया और उग्र सेन कछ वा
हे को कलना और गुर गान की हि
फ़ाज़त और हकूमत पर भेजा इ
सी तरह और भी कई हाकिम

ملک کے قیام سے گھبرا اوٹھا
اور اوس نے مکرر بادشاہ کو عرضی
بھیجی کہ مجھے حضور مین بلا لین
بادشاہ نے ناخوش ہوکر سعد اللہ
خان وزیر کو تاریخ ۲۶ جمادی
الثانی بلخ کی طرف بھیجا شب دوشنبہ
۸ رجب کو اوسنے وہان پہونچکر
شاہزادہ کو بہت کچھ سمجھایا
مگر جب وہ ارادہ واپسی سے
باز نہ آیا تو سعد اللہ خان نے
امیرون کو اوسکے ڈیرہ پر جانے
سے منع کرکے بلخ کی صوبہ داری
اصالت خان اور بہادر خان کو
اور بدخشان کی بلیچ خان کو دی
اور راجہ پہاڑ سنگھ راجہ دیبی سنگھ
و چندرمن بندیلہ کو معہ دوسرے
امیرون کے پانچہزار سوارون سے
اندخود کو روانہ کیا کلنہ اور گرگان کی
حکومت و حفاظت پر اوگرسین
کچھواہہ کو بھیجا اسیطرح اور
بھی کئی جگہہ حاکم

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का हो गया-

राजा गज सिंघ के नायब महेस दास राठोड का मन सब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ६०० सवार का हो गया और उस को ख़िलत भी मिला-

इसी तरह शत्रु साल के बेटे अजब सिंघ, चोहान चतुर भुज, चन्द्र भान नरूका, राजा मान सिंघ के पोते संग्राम सिंघ, वल्लू चोहान, गोयन दास ख़ान दो रानी, के भी मन सब बढे-

भादों वदी १० को राजा राज रूप को जड़ाऊ जमधर मोतियों के कुंडल इनायत हुवे और पांच सदी ज़ात और ५०० सवारों का इज़ाफ़ा भी हुआ जिस से उस का मनसब २ हज़ारी ज़ात और १५०० सवारों का हो गया-

अब शाह ज़ादा मुराद इस

हزاری ذات اور ہزار سوار کا ہوگیا-

راجہ گج سنگہ کے نائب مہیش داس راٹھور کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور چھہ سو سوار کا ہوگیا اور اوسکو بھی خلعت ملا اسی طرح ستروسال کے بیٹے عجب سنگہ چوہان چتر بھوج چندربھان مزد کا راجہ مان سنگہ کے پوتے سنگرام سنگہ بلو چوہان اور گوبند داس خاندروانی کے بھی منصب بڑھے-

۲۲ جمادی الثانی کو راجہ راجروپ کو جمدھر مرصع اور موتیون کے گوشوارہ عنایت ہوکر منصب مین پانصدی ذات اور پانسو سوارون کا اضافہ ہوا جس سے اوسکا منصب دو ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا ہوگیا-

اتنے ہی مین شاہزادہ مراد بخش اوس

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कर अंद खूद को चला गया और कुछ साथी उसके बेटे सुबहान कुली को लेकर "चार जूई" की तरफ चल दिये बाद शाही अमल शेर गान में हो गया-

बाद शाहने सावन सुदी १० को यह ख़बर सुन कर अमीरों के मन सब बढाये उनमें महेस दास राठोड़ को खिलत मिला और ५०० सवारों का ईज़ाफ़ा हुआ जिस से उस का मनसब ३ हज़ारी जात और २५०० सवारों का हो गया॥

राजा जय राम को ख़िलअत मिला और उस का मनसब भी असल और इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और १२०० सो सवारों का हो गया-

रूप सिंह राठोड़ राम सिंघ राठोड़ और राव रूप सिंघ चंद्रावत को ख़िलअत मिले और हरेक का मनसब असल और इज़ाफ़े से डेढ

کر اندخود کو چلا گیا اور کچھ ہمراہی اوس کے اوسکے بیٹے شبحان قلی کو لیکر روانہ "چارجوی" ہوئے - بادشاہی اُمرا نے شیرغان مین عمل کر لیا-

بادشاہ نے ۸ جمادی الثانی کو یہ خبر سُنکر امیرون کے منصب بڑھائے - اون مین مہیش داس راٹھور کو خلعت ملا اور منصب بھی پانسو سوارون کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور ڈھائی ہزار سوارون کا ہو گیا -

راجہ جے رام کو خلعت ملا اور منصب ڈیڑھ ہزاری ذات اور بارہ سو سوارون کا اصل اور اضافہ سے عطا ہوا-

رُوپ سنگہ راٹھور - رام سنگہ راٹھور اور راؤ روپ سنگہ سیسودیہ کو بھی خلعت ملے - اور ہر ایک کا منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑھ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

असालत ख़ां के पास कौल (बीच के लश्कर) में इतने राजपूत सरदार थे

१ राजा जय राम

२ जग राम हिरदे राम कछवाहे का बेटा

३ अजब सिंघ शत्रु साल का बेटा

४ चतुर भुज लखमन सेन चोहान का पोता-

५ चन्द्र भान नरूका

नज़र मौहम्मद ख़ां के पास शेर ग़ान में १०००० उजबक और अलमान थे मगर जब सुना कि बाद शाही लशकर आता है तो बहुत से उनमें से अंद खुद को चले गये तो भी नज़र मौहम्मद ख़ां शेर ग़ान से बढ कर लड़ने को आया मगर मुकाबले के वक्त उस के साथ वाले बान और बंदूक की मारे से घबरा कर भाग निकले और ख़ांन भी मुंह मोड़

اصالت خان بھی قول مین تھا اور اوس کے پاس اتنے راجپوت سردار تھے -

۱- راجہ جے رام

۲- جگ رام ولد ہردے رام کچھواہہ -

۳- عجب سنگہ ولد شترسال

۴- چتر بھوج نبیرہ لکھمن سین چوہان -

۵- چندربھان نروکا -

نذر محمد خان کے پاس شیر غان مین دس ہزار اُزبک اور المان تھے مگر بادشاہی فوج کے آنے کی خبر سُنکر بہت سے تو اندخود کو چلے گئے اور خان مذکور شیر غان سے استقبال کرکے لڑنے کو آیا مگر ہنگام مقابلہ اوس کے ہمراہی بان اور بندوق سے گھبرا کر بھاگ گئے اور خان بھی موہنہ موڑکر

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राज पूतों के साथ हिरावल कि
या और कहा कि वह उन के आगे२
परा बांधे चले राज पूत उस की
दहनी तरफ़ रहें और सैयद बां
ई तरफ़ ये वेही राज पूतथे जो
शाह ज़ादे और अली मरदान
खां से कहे बग़ैर अपनी बहा
दुरी दिख लाने के वास्ते उनके
साथ चल आये थे नाम उनके
यह है

१ महेस दास राठोड़
२ रूप सिंघ राठोड
३ राम सिंघ राठोड़
४ राव रूप सिंघ चन्द्रावत
५ राजा अमर सिंघ राजावत
६ महेश दास दूसरा जो पहिले
राजा गज सिंघ के पास रहताथा
७ राय तिलोक चंद सेखावत
८ संग्राम सिंघ राजा वत
९ गोविंद दास खांन दोरानी
१० बल्लू चोहान

کو مع راجپوتون کے ہراول کیا
اور کہا کہ وہ اوس کے آگے آگے
صف باندھ کر چلا کرے راجپوت
اوس کے دہنی طرف اور سید
بائیں طرف رہین - یہ وہی
بہادر راجپوت تھے کہ جو شاہزادہ
مراد بخش اور امیر الامرا علیمردان خان
سے پوچھے بغیر اپنی بہادری
دکھانے کو اوسکے ساتھ چلے
آئے تھے اور نام اونکے یہ ہین

۱ - مہیش داس راٹھور -
۲ - رُوپ سنگھ راٹھور -
۳ - رام سنگھ راٹھور -
۴ - راؤ روپ سنگھ چندراوت
۵ - راجہ امر سنگھ راجاوت
۶ - مہیش داس دوسرا جو پہلے راجہ
گج سنگھ کے پاس رہتا تھا -
۷ - رائے تلوک چند سیکھاوت
۸ - سنگرام سنگھ راجاوت
۹ - گوبند داس خانزدرانی
۱۰ - بلو چوہان -

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ल्मी सवार दोनों वलायतों के ७००० के क़रीब थे-

सावन सुदी ५ को बख़्ल में बाद शाह के नाम का खुत्बा पढ़ा गया और बाद शाह ने इस फ़तह की खुशी काबुल में ८ रोज़ तक बड़ी धूम धाम से की-

उज़बकों पर फ़तह

सावन सुदी ४ को जब वहा दुर खां और असालत खां गांव ग़ोती में पहुंचे तो उनको मालूम हुआ कि यहां से ७ कोस पर शेर गां में नज़र मोहम्मद खां उज़बकों और अल मानों से मिल कर लड़ने का इरादा कर रहा है इन्होंने भी उससे लड़ने की तैयारी करके अपनी फ़ौज इस तरह पर सजाई कि आप दोनों तो बीच में रहे और नेक नाम को जो वहा दुर खां का चचा था

قریب سات ہزار کے تھے-

بادشاہ کے نام کا خطبہ

۳ جمادی الثانی کو بلخ مین بادشاہ کے نام کا خطبہ اور سکہ جاری ہوا بادشاہ نے اس فتح کی خوشی کابل مین آٹھ روز تک بڑی دھوم دھام سے کی-

اُزبکون پر فتح

دوشنبہ ۴ جمادی الثانی کو جب بہادر خان واصالت خان موضع غوطی مین پہونچے تو معلوم ہوا کہ نذر محمد خان سات کوس پر مقام شیر غان مین قوم اُزبک اور المان کے شامل ہو کر لڑنے کے ارادہ مین ہے بادشاہی لشکر نے بھی لڑنیکے تیاری کر کے صف بندی کی-

بہادر خان تو قول مین رہا اور اپنے چچا نیکنام

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सालत ख़ां के साथ वग़ैर पूछे च
ले गये-

१२ लाख रुपय का माल दा
इ हज़ार घोड़े घोड़िया और
३०० ऊंटनिया और ऊंट
नज़र मोहम्मद ख़ां के ज़बत हु
वे-

बख़ल और बदख़्शां की
पेदा-

बलख़ की वलायत का हासि
ल अमन और आबादी के ज़मा
न में १५ लाख और बदख़्शां
का १० लाख के क़रीब था मगर
वेरानी के सबब से पहिले बरस
क़रीब आधे के और दूसरे बर
स करीब चौथाई के आया और
इतना ही हासिल विलायत मावर
उल- नहर (बुख़ारा समर कंद
वग़ैरा) का भी था जो नज़र मोह
म्मद ख़ां के बेटे अबदुल अज़ी
ज़ ख़ां के पास थी और कुल क

اور اصالت خان کے پاس چلے
گئے۔

بارہ لاکھ کا مال ڈھائی ہزار گھوڑے
گھوڑیان اور تین سو اونٹ نر و مادہ
اموال نذر محمد خان سے ضبط ہوئی

حاصل ولایت بلخ و بدخشان

حاصل ولایت بلخ کا بشرط
امن و آبادی قریب پندرہ
لاکھ - اور حاصل بدخشان
قریب دس لاکھ کے تھا
مگر بوجہ ویرانی کے سال اول
مین قریب نصف کے اور
سال دوم مین قریب
چہارم کے بیٹھا اور حاصل
ولایت ماوراء النہر بھی جو
نذر محمد خان کے بیٹے
عبدالعزیز خان کے
قبضہ مین تھے اسی
قدر تھا اور کل قلمی
سوار دونون ولایتون
کے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

علاوہ دیگر اسباب ہاتھی گھوڑون کے
اوسکو عنایت کرکے چہہ ہزاری ذات
اور دو ہزار سوار کا منصب عطا فرمایا
۲۷۔ کو شاہزادہ بلخ کے قریب
پہونچا اور ۲۸ پنجشنبہ کو اوس نے
بلخ مین عمل کرلیا بادشاہ نے نذر محمد
خان کو لکھا تھا کہ ہمنے شاہزادہ کو
تمہاری مدد کے واسطے بھیجا ہے
مگر جب شاہزادہ نے قلعہ بلخ مین
قبضہ کیا تو نذر محمد خان جو ملاقات
کے لیئے آنے کا اقرار کرچکا تھا متوہم ہوکر
بھاگ گیا۔ شاہزادہ نے بہادر خان
اور اصالت خان کو اوسکے تعاقب
مین بہیجا اور راجہ بٹھل داس کو مع
تمام راجپوتون اور ہراول کے
اپنے پاس رکھ لیا۔ مہیش داس
روپ سنگہ اور رام سنگہ کہ
تینون راٹھوڑ تہے اور کئی دوسرے
راجپوت سردار بہادری اور لڑائی
کے شوق سے بلا رخصت
شاہزادہ کے بہادر خان

اعلاوے دوسرے اسباب اور ہاتھی
گھوڑون کے اوس کو دیکر ۶ ہزاری
ذات اور ۲۰۰۰ سوارون کا منصب
عنایت کیا۔

ساوراون وبدی ۱۰ گورواز کو شا
ہزادے نے بلخ کے قلعے مین قبض
کر لیا نذر محمد خان
جس کو بادشاہ نے لکھا تھا
کہ ہماری فوج تمہاری مدد
کو آتی ہے اور جو شاہزادے
سے ملنے کو تیار بیٹھا تھا ڈ
ر کر بھاگ گیا شاہزادے نے ب
ہادر خان اور اصالت خان
کو اوسکے تعاقب
مین بہیجا اور راجہ بٹھل داس کو مع
تمام راجپوتون اور ہراول کے
اپنے پاس رکھ لیا مہیش داس
روپ سنگہ اور رام سنگہ کہ
تینون راٹھوڑ تہے اور کئی دوسرے
راجپوت سردار بہادری اور لڑائی
کے شوق سے بلا رخصت
شاہزادہ کے بہادر خان

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मीरआ ख़ोंर "क़ि बाद" से लड़ कर सावन वदी ६ को फ़तह किया-

नज़र मोहम्मद खां का बेटा ख़ुसरो कुंदुज में था वह अलमान जाति के लुटेरों से तंग होकर शाह ज़ादे के पास आया और शाह ज़ादे ने उसको बादशाह की ख़िदमत में रवाने किया-

शाह ज़ादा मुराद सावण वदी ८ को कुंदुज़ में पहुंचा अलमान लोग तमाम मुल्क और शहर को लूट कर जामे मसजिद को जला कर चले गये शाह ज़ादे राजा राज रूप को क़िले कुंदुज में छोड़ कर सावन वदी ८ को बलख की तरफ रवाना हुआ और २ लाख रुपया राजा को ख़रच के वास्ते दे गया-

सावन वदी १२ को ख़ुसरो बाद शाह के पास काबुल में पहुंचा बाद शाह ने एक लाख रुपया

میرآخور سے بعد جنگ ۲۰ جمادی الاول کو فتح کیا۔

نذر محمد خان کا بیٹا خسرو قندز مین تھا وہ مفسدان قوم المان کے غلبہ سے تنگ ہوکر شاہزادہ مراد بخش کے پاس آیا اور شاہزادہ نے اوسکو بادشاہ کی خدمت مین روانہ کیا مراد بخش قندز مین پہنچا غارتگران قوم المان کہ جنکی غلبہ سے نذر محمد خان کا بیٹا خسرو شاہزادہ کے پاس آکر بادشاہ کی خدمت مین روانہ ہوا تھا تمام ملک اور شہر کو لوٹ کر اور مسجد جامع کو جلاکر واپس چلے گئے۔

بادشاہزادہ مراد بخش راجہ راجروپ کو قلعہ قندز مین معہ کسیقدر جمعیت کے چھوڑکر ۲۱ جمادی الاول کو بلخ کیطرف روانہ ہوا اور دو لاکھ روپیہ واسطے سامان کے راجہ کو دیگیا۔ ۲۵ جمادی الاول کو خسرو بادشاہ کے پاس کابل مین پہنچا بادشاہ نے ایک لاکھ روپیہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को मज़दूरों के शामिल बरफ उ-
ठाने में लगा कर रस्ता साफ कि
या -

असाढ सुदी ३ को असा
लत खां और

असाढ सुदी ४ को बहादुर
ख़ां और राजा विठ्ठल दास और
असाढ सुदी १० को शाह ज़ादा
मुराद और अली मरदान ख़ां
तूल के घाटे से गुज़रे बाद शाही
अमल दारी यहां तक थी-

शाह जादे ने दहनी वांई
फ़ौजों को कह मर्द और ग़ोरी के
फ़तह के वास्ते भेजा था सो ख़ब-
लील बेगने आषाढ सुदी १२
को कह मर्द का क़िला ख़ोजमम
शकूर से ले लिया मिरज़ा नोज़र
राजा देवी सिंघ और राजा पहा
ड़ सिंघ वग़ैरा गोरी के क़िले पर
गये थे उन में से गज़नफ़र ने
पेश क़दमी करके वह क़िला -

کو مزدورون کے شامل برف
اوٹھانے مین لگاکر راستہ
صاف کیا۔

یکم جمادی الاول کو اصالت
خان اور دوسری کو بہادر خان
اور راجہ بیٹھل داس اور
آٹھوین کو شاہزادہ مراد بخش اور
امیر الامرا طول کے گھاٹی سے
گزرے بادشاہ کی عملداری
یہان تک تھی۔

بادشاہزادہ نے فوج برانغار
وطرح دست چپ والتمش کو واسطے
فتح کھمرو اور غوری کے روانہ
کیا تھا ازانجملہ خلیل بیگ نے
۱۰ جمادی الاول کو خوجم مشکور سے
قلعہ کھمرو کا لے لیا مرزا نودر اور
راجہ پھار سنگھ وراجہ دیبی سنگھ
وغیرہ قلعہ غوری پر گئے
تھے اون مین سے غضنفر نے
سبقت کرکے قلعہ غوری
قباد

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किया-

असाढ वदी १० को बादशाह काबुल में पहुंचे राजा जसवंत सिंघ और सादुल्ला खां वज़ीर पैश बाई को आये क्यों कि यह पहिले पहुंच गये थे-

असाढ वदी १२ को सियादत खां पृथ्वीराज राठोड की जगह दौलताबाद का किलेदार मुक़र्रर हुआ और पृथ्वीराज के नाम लिखा गया कि आगरे पहुंच कर बाकी खां की शामिलात में आगरे के क़िले की रखवाली करे-

राजा जय सिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ को मोतियों की माला इनायत हुई-

असाढ बदी १३ को लश्कर हिरोल गुल बहार में पहुंचा वहां दुरखां और राजा विठ्ठल दास ने अपने तमाम आदमियों

کیا-

۲۲ ربیع الثانی کو بادشاہ کابل مین پہونچے راجہ جسونت سنگہ و علامی سعد اللہ خان پیشوائی کو آئے کیونکہ یہہ پہلے پہونچ گئے تھے-

۲۶ ربیع الثانی کو سیادت خان بتغیر پرتھی راج راٹھور کے قلعدار دولت آباد کا مقرر ہوا اور پرتھی راج کے واسطے حکم صادر ہوا کہ دار الخلافہ اکبر آباد مین آکر باتفاق باقی خان کے وہان کے قلعہ کی حفاظت کرے-

کنور رام سنگہ ولد راجہ جیسنگہ کو موتیون کی مالا عنایت ہوئی-

۲۷ ربیع الثانی کو لشکر ہراول گل بہار مین پہونچا بہادر خان اور راجہ بیٹھل داس نے اپنے تمام آدمیون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

लेना चाहिये-

इसी तरह नक़दी के मनस
व दारों अहदी तीरंदाजों बरक़न
दाज़ सवारों पेदल वंदूक चियों।
और दूसरे शागिर्द पेशों के लोगों
को ३ महीने की तनख़ाह पेशगी
देने का हुक्म हुआ और जिन जा
गीर दारों की आमदनी कि दाग
के बरा बर थी यानी उतनी ही
थी कि जितने उनके घोड़ों के दा
ग़ लगते थे उन को भी उन की आ
मदनी का चोथा हिस्सा कि जो ३
महीने की तनख़ा के बरा बर हो
ता है पेशगी ख़जाने से दिलाया
गया ता कि उन को ख़र्च की तक
लीफ़ न हो-

आसाद वदी चौथ को व
हा दुर ख़ां और राजा विठ्ठल दा
स मय फ़ौज हिरावल के काबुल
से वदख़शां को रवाने हुवे और
३ दिन पीछे शाह जादे ने भी कूच

کر لینا چاہیئے۔
اسیطرح نقدی کے منصبدارون
احدی تیراندازون برقنداز سوارون
پیدل بندوقچیون اور دوسرے
شاگرد پیشہ کے لوگون کو ۳
مہینے کی تنخواہ پیشگی دینے کا
حکم ہوا اور جن جاگیردارون کی
آمدنی داغ کے برابر تھی یعنی
اوتنی ہی تھی جتنی اون کے
گھوڑون کے داغ لگتے تھے
اون کو بھی اون کی آمدنی کا چوتھا
حصّہ کہ جو ۳ مہینے کی تنخواہ کے
برابر ہوتا تھا پیشگی خزانہ
سے دیا گیا تاکہ اون کو خرچ کی
تکلیف نہ ہو۔
۱۸ ربیع الثانی کو بہادر خان
اور راجہ بٹھل داس مع
فوج ہراول کے کابل سے
بدخشان کو روانہ ہوئے اور
۲۱ کو شاہزادہ نے
بھی کوچ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हासिल जागीर	सिह अस्पा	दुअस्पा	इक अस्पा	कुल	کل	یکاسپہ	دوسپہ	سہ اسپہ	حاصل جاگیر
१२ महीने का	३००	६००	१००	१०००	۱۰۰۰	۱۰۰	۶۰۰	۳۰۰	دوازدہ ماہہ
११ महीने का	२५०	५००	२५०	१०००	۱۰۰۰	۲۵۰	۵۰۰	۲۵۰	یازدہ ماہہ
१० " "	०	८००	२००	१०००	۱۰۰۰	۲۰۰	۸۰۰	۰	دہ ماہہ
९ " "	०	६००	४००	१०००	۱۰۰۰	۴۰۰	۶۰۰	۰	نہ ماہہ
८ " "	०	४५०	५५०	१०००	۱۰۰۰	۵۰	۴۵۰	۰	ہشت ماہہ
७ " "	०	२५०	७५०	१०००	۱۰۰۰	۷۵۰	۲۵۰	۰	ہفت ماہہ
६ " "	०	१००	९००	१०००	۱۰۰۰	۹۰۰	۱۰۰	۰	ششماہہ
५ " "	०	०	१०००	१०००	۱۰۰۰	۱۰۰۰	۰	۰	پنجماہہ

और जिस के मनसब के सवार दु अस्पा और सिह अस्पा मुकर्रर हो गये हों तो वह ऊपर लिखे सवारों दु अस्पा और सिह अस्पा से दूने दाग़ करावें जैसे पंच हज़ारी पंच हज़ार दु अस्पा और सिह अस्पा वाला मन सब दार कि जिस की जागीर की आमदनी भी १२ महीनेकी हो ६०० सवार सिह अस्पा और १२०० दु अस्पा और २०० इक अस्पा दाग़ करावे इसी पर बाक़ी के मन सब दारों को समझ

اور جس کے منصب کے سوار دو اسپہ و سہ اسپہ مقرر ہو گئے ہون تو وہ اوپر لکھے سوارون دو اسپہ و سہ اسپہ سے دوچند داغ کراوے جیسی پانچہزاری پانچہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ والا منصب دار کہ جسکی جاگیر کی آمدنی بھی بارہ مہینے کی ہو چھہ سو سوار سہ اسپہ بارہ سو دو اسپہ اور دو سو یک اسپہ داغ کراوے اسی پر باقی کے منصب دارون کا بھی قیاس

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जैसे ३ हज़ारी ज़ात और ३००० स
वार वाला ३००० सवारों का दाग़
करा ता था और जब हिन्दुस्तान
के दूसरे सूबेमें लड़ाई पर जाता
तो चौथा हिस्सा सवारों का दाग़
के वास्ते हाज़िर करता यानी ४ ह-
ज़ारी ज़ात और ४००० सवार का
मन सब दार १००० सवारों के दा
ग़ दिला ताथा मगर अब जो बल
ख़ और बदख़्शाँ पर फ़ौजें भेजी
गईं और ये मुल्क हिन्दुस्तान
से बहुत दूर थे इस लिये बादशा
ह ने यह हुक्म दिया कि जब तक
यह मोहिम रहे मन सब दार पांच
वें हिस्से के सवारों को दाग़ दिला
वें यानी जिस पंच हज़ारी मनसब
दार के ५००० सवार होवें तो वह
हज़ार का दाग़ करावे सिह अ-
स्पा दु अस्पा और इक अस्पा के
दाग़ की यह शरह मुक़र्रर हुई-

جیسے تین ہزاری ذات اور
تین ہزار سوار کا منصب دار
ہزار سوارون کا داغ کراتا
تھا اور جب ہندوستان
کے دوسرے صوبون مین لڑائی
پر جاتا تھا تو چوتھائی حصہ
سوارون کا داغ کے واسطے
حاضر کرتا یعنے چار ہزاری ذات
اور چار ہزار سوار کا منصب دار
صرف ہزار سوارون کو داغ دلاتا تھا
مگر جب بلخ اور بدخشان پر فوجین
بھیجی گئین اور یہ ملک ہندوستان
سے بہت دور تھے اسلئے بادشاہ
نے یہ حکم جاری کیا کہ جبتک یہ مہم قائم
رہے منصب دار پانچوین حصہ کے
سوارون کو داغ دلاوین یعنی جس
پانچہزاری منصب دار کے پانچہزار
سوار ہوین تو وہ ہزار سوارون کا
داغ کرادے دو اسپہ
سہ اسپہ اور ایک اسپہ
کے داغ کی یہ شرح مقرر ہوئی-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

री ज़ात और ५००० सवार का हो
गया जिसमें २००० सवार दुअ-
स्पा और सिह अस्पा थे-

महेस दास राठोड पांच स
दी ज़ात के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ा
त और २००० सवार का मनसब
दार हो गया और उस को नक्का
रा भी इनायत हुआ-

जेठ सुदी १० को बाद शाह
ने पिशावर से कूंच किया और
हुक्म दिया कि राजा जसवंत सिं
घ और कंवर राम सिंघ बादशा
ही लश कर से १ मंजिल आगे च
ला करें ता कि लश कर आसानी
के साथ ख़ैबर के घाटे और दूस
रे तंग रस्तों से गुज़र करे-

यह ज़ाबता था कि जिस म
नसब दार की जिस किसी सूबे में
जागीर होती और वह उसी सूबेमें
तईनात होता तो अपने तीसरे हि
स्से के सवारों का दाग कराता था

پنجہزار سوار کا ہوگیا جس مین دو ہزار
سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے۔
مہیش داس راٹھور پانصدی
ذات کے اضافہ سے تین ہزاری
دو ہزار سوار کے منصب پر پہونچا
اور اوسکو نقارہ بھی عنایت ہوا
۹ ربیع الثانی کو بادشاہ
کا پشاور سے کوچ ہوا اور
راجہ جسونت سنگہ و راجہ
رام سنگہ کو حکم دیا گیا کہ بادشاہی
لشکر سے ایک منزل آگے
چلا کرین تاکہ لشکر کُتل خیبر اور
دوسرے تنگ راستون سے
بآسانی گذر کرے۔
یہ بادشاہی ضابطہ تھا کہ جس
منصب دار کی جس کسی صوبہ
مین جاگیر ہوتی تھی اور وہ
اوسی صوبہ مین تعینات ہوتا
تو اپنے تیسرے حصہ کے
سوارون کا داغ کراتا
تھا۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

टारे समेत और सोने के साज का घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ वदी २ को कंवर राम सिंघ को सुनेहरी ज़ीन का घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ वदी ६ को बाद शाह पिशोर में पहुंचे-

जेठ सुदी १० को शाहजादा मुराद बख़्श जो अब तक पिशोर में ठहरा हुआ था काबुल में पहुंचा राजा विट्ठल दास भी बहुत से रजपूतों के साथ बंगश के घाटे से गुजर कर शाहज़ादे के पास काबुल में हाजिर हुआ-

जेठ सुदी ९ को पिशोर में बाद शाह की साल ग्रह का तुलादान चन्द्र मास के हिसाब से हुआ उस की खुशी में राजा जसवंत सिंघ के फिर १००० सवार हुअस्पा सिह अस्पा हो गये और अब उस का मनसब पंज हज़ार

کٹارہ و اسپ عربی با یراق طلا مرحمت ہوا-

۱۵ ربیع الاول کو کنور رام سنگھ کو اسپ مع زین مطلا کے عطا ہوا-

۵ ربیع الثانی کو بادشاہ پشاور مین پہونچے-

شاہزادہ مراد بخش جو ابتک پشاور مین ٹھہرا ہوا تھا روانہ ہوکر ۹ ربیع الثانی کو کابل مین پہونچا-

راجہ بٹھل داس بھی معہ بہت سے راجپوتون کے بنگش کے راستہ سے گزر کر کابل مین بادشاہ زادہ مراد بخش کے پاس حاضر ہوگیا-

روز پنجشنبہ ۸ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین ہزار سوار اور راجہ جسونت سنگھ کے منصب سے دو اسپہ و سہ اسپہ ہوگئے جس سے اب اوسکا منصب پنجہزاری

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

खां पहुंचा तो क़िला उस के हवाले करके अपनी जगह पीछा चला गया बादशाहने यह ख़बर सुन कर तारा गढ की क़िले दारी पर बहादुर कंबोह को भेजा

बादशाह का काबुल जाना

बेसाख बदी ४ गुरवार को बादशाह लाहोर से काबुल को रवाने हुवे-

बेसाख बदी १० को राजा जयसिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ ने ५०० सवारों के साथ अपने वतन से दरबार में हाजिर हो कर ३ हाथी नज़र किया बादशाह ने खिलअत हज़ारी जात और १००० सवार का मनसब उस को इनायत फ़रमाया-

बेसाख सुदी ५ को चिनाब नदी के किनारे पर राजा जसवंत सिंघ को जडाऊ जमधर फूलक

قلعہ اوس کے حوالہ کرکے واپس اپنے مقام کو چلا گیا۔ بادشاہ نے یہ خبر سن کر بہادر کمبو کو واسطے قلعداری تاراگڈھ کے بھیجا۔

بادشاہ کا کابل جانا

۱۸ صفر روز پنجشنبہ کو بادشاہ لاہور سے کابل کو روانہ ہوئے

۲۴ صفر کو مقام جہانگیر آباد مین راجہ جے سنگھ کے بیٹے کنور رام سنگھ نے پانسو سوارون کے ساتھ وطن سے حاضر ہو کر ایک ہاتھی پیشکش کیا بادشاہ نے اوسکو خلعت اور ہزاری ذات و ہزار سوار کا منصب عنایت فرمایا۔

۳ ربیع الاول کو چناب ندی کے کنارے پر راجہ جسونت سنگھ کو جمدھر مرصع معہ پھول

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ग़ात हिन्दुस्तान की देकर दूरा
न को रवाना किया -

तारा गढ में क़ब्ज़ा

बाद प्राइने बाद मरन राजा
जगत सिंघ के कांगड़े पहाड़ की
तलहटी के फ़ौज दार मुरशिद
कुली ख़ांको हुक्म लिखा था कि
राजा के वारिसों को ख़बर होने
से पहिले २ तारा गढ के क़िले
में अमल करले क्यों कि ऐसे
मज़बूत क़िले का फ़सादी ज़मी
दारों के हाथ में रहना मुनासिब
नहीं है और वैसाख वदी ३ को
फ़िदाई ख़ां के नाम भी हुक्म
गया कि बहुत जलदी वहां पहुं
च कर इस काम में कोशिश क
रे मगर मुरशिद कुली ख़ांने
फ़िदाई ख़ांके पहुंचने से १२
दिन पहिले तारा गढ़ में कब्जा
कर लिया था और जब फ़िदाई

تحفے ہندوستان کے بھیجے -

فتح قلعہ تاراگڈھ

بادشاہ نے بعد انتقال راجہ جگت سنگھ
کے مرشد قلیخان فوجدار دامن
کوہ کانگڑہ کو حکم لکھا تھا کہ
راجہ کے وارثون کو خبر ہونے
سے پہلے پہلے قلعہ تاراگڈھ
مین عمل کرلے کیونکہ ایسے مضبوط
قلعہ کا زمینداران قابو جو کے
ہاتھ مین رہنے دینا طریقہ حزم
و احتیاط سے بعید تھا اور تاریخ
۱۷ صفر کو فدای خان بھی مامور ہوا
کہ بہت جلد وہان پہونچکر اس
کام مین کوشش کرے مگر مرشد
قلیخان فدای خان کے پہونچنے
سے بارہ دن پہلے اوس
قلعہ پر قابض ہوگیا
تھا اور بعد پہونچنے
فدای خان کے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

राव रूप सिंघ चन्द्रावत का मनसब हज़ारी ज़ात और १००० सवार का और राव सिंघ झाला का हज़ारी ज़ात और ७०० सवार का असल और इज़ाफ़े से हो गया -

बीसवां बरस

फागण सुदी २ सं. १७०२ से फागन सुदी २ सं. १७०३ तक

लाहोर में काल के मारे लोग अपने बेटों को बेचते थे बादशाहने हुक्म दिया कि जो कोई अपना बेटा बेचे उस की कीमत सरकार से उस को देदें और बेटा भी उस के हवाले करदें और २००) रुपये रोज़ का खाना हर रोज़ १० जगह ८ तयार करके गरीबों को खिलावें

बैसाख बदी ४ को बादशाहने जानिसार खां को ख़त और सादे तीन लाख रुपये की सो

राव रूप सिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का और राये सिंघ जहालाका मनसब हज़ारी ज़ात और सात सो सवारों का असल व इज़ाफ़ा से हो गया -

बरस बीसवां
सन १०५६

१ फ़रवरी सन १६४६ से २६ जनवरी सन १६४७ तक लाहोर मेंन क़हत सालीसे लोग अपने बच्चों को बेचते थे बादशाहने हुक्म दिया कि जो अपना बेटा बेचे उसकी क़ीमत ख़ज़ाने से देदेंन और बेटा भी उसके हवाले करदेंन और दो सौ रुपैया रोज़ का खाना हर रोज़ गरीबों को दस जगह खिलादेंन

१८ सफ़र को बादशाहने जान निसार खां को बहम रसालत रवाना ईरान करके शाह अब्बास के लिये ख़त और साढ़े तीन लाख रुपैये के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

२ राजा जय राम राजा अनूप सिंघ का बेटा

३ राजा राज रूप ४ जग राम

५ राजा बहरोज ६ चत्रभुज चोहान

७ अजब सिंघ राव शत्रुसाल का बेटा-

८ किशन सिंघ कछवाहा-

बांये हाथ की मदद गार फ़ौज में २७५ अमीर और मनसब दार थे उन में रज पूत सरदार राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला चन्द्र भाणि बुंदेला और भोज राज थे-

विदा होती वक्त राव शत्रु साल को ख़वासा ख़िलत जड़ाऊ जमधर और घोड़ा इनायत हुआ सेवा राम गोड़, रूप सिंघ राठोड़, राम सिंघ राठो, गोकुल दास सीसो दिया, गिरधर दास. राजा अमर सिंघ नर बरी, राय सिंघ झाला, और अरजुन गोड़ को खिलत और घोडे मिले-

۳ - راجہ جی رام ولد راجہ انوپ سنگھ

۴ - جگرام - ۵ - راجہ بہروز

۶ - عجب سنگھ ولد ستر دسال

۷ - چتر بھوج چوہان

۸ - کشن سنگھ کچھواہا

طرح دست چپ مین دو سو پانچ امیر اور منصب دار تھے اونمین راجپوت سردار راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ - چندرمن بندیلہ اور بھوج راج تھے -

رخصت کے وقت راجہ ستر دسال باڈا کو خلعت خاصہ جمدہر مرصع اور گھوڑا عنایت ہوا -

سیوا رام گوڑ - روپ سنگھ راٹھور - رام سنگھ راٹھور - گوکل داس سیسودیہ - گردھر داس - راجہ امر سنگھ نروری رائے سنگھ جھالا اور ارجن گوڑ کو خلعت اور گھوڑے عطا ہوئے -

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस हरोल में कुल ४८० अमीर और मनसबदार थे और अफसर कुल का राजा बिठ्ठल दास था ॥

दहने हाथ की फौज में ४६० अमीर और मनसबदार थे और हिन्दू राजों में से सिर्फ राजा देव सिंघ बुंदेला था ॥

बांये हाथ की फौज में २५० अमीर और मनसबदार थे इस में कोई हिन्दू सरदार नहीं था

क़ौल याने बीच की फौज में शाहजादा और ४०० अमीर थे उनमें भी कोई हिन्दू अमीर नहीं था

तरह याने दहने हाथ की मददगार फ़ौज में ३६९ अमीर और मनसबदार थे उनमें हिन्दू अमीर

१ राजा राय सिंघ महाराजा भीम का बेटा

ان سب کا افسر راجہ بٹھلداس مقرر ہوا اس ہراول میں کل ہندو مسلمان امیر اور منصبدار ۴۷۰ تھے۔

براغار میں ۴۶۰ امیر اور منصبدار تھے جن میں ہندو صرف راجہ دیبی سنگھ بندیلہ تھا۔

جو انغار میں ڈھائی سو امیر اور منصبدار تھے جنمیں ہندو سردار ایک بھی نہیں تھا

قول میں شاہزادہ اور چار سو امیر تھے اُنمیں بھی کوئی ہندو امیر نہیں تھا۔

طرح دست راست میں تین سو اُنہتر امیر اور منصبدار تھے اُنمیں راجپوت سردار اتنے تھے۔

۱ راجہ رانے سنگھ ولد مہاراجہ بھیم

۲ راجہ راج روپ

۳ راجہ جے رام ولد راجہ انوپ سنگھ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१३	राय सिंघ झाला	२४	संग्राम कछवाहा
१४	अरजुन गोड़	२५	हमीर सिंघ सीसोदिया
१५	महेशदास राठौड़ दूसरा	२६	पृथ्वी सिंघ कछवाहा
१६	सुजान सिंघ सीसोदया	२७	पेमचंद राय मनोहर का पोता
१७	किशन सिंघ तंवर		
१८	राव रूप सिंघ चंद्रावत	२८	डाणी दास मेड़तिया
१९	कृपाराम गोड़	२९	मोयन दास खान दोरानी
२०	उग्रसैन	३०	बल्लू चौहान
२१	इंद्रसाल	३१	राव नारायण दास सीसोदिया
२२	तिलोक चंद		
२३	चंद्रभान नरूका		

७	राम सिंघ राठौड़	८	मुकुंद सिंघ	९	गोपाल दास
१०	गोकल दास सीसोदिया	११	गरदहर दास गौड़	१२	राजा अमर सिंघ नरूरी
१३	राये सिंघ जहाला	१४	अरजुन गौड़	१५	महेश दास राठौर दूसरा
१६	सुजान सिंघ सीसोदिया	१७	किशन सिंघ तंवर	१८	राव रूप सिंघ चंदरावत
१९	कृपाराम गौड़	२०	उग्रसेन		
२२	तिलोक चंद	२३	चंदरभान नरूका	२४	संग्राम कछवाहा
२५	हमीर सिंघ सीसोदिया	२६	पृथ्वी सिंघ कछवाहा	२७	प्रेमचंद राय मनोहर का पोता
२८	डाणीदास मेड़तिया	२९	गोयन दास खान दोरानी	३०	बल्लू चौहान
३१	राव नारायण दास सीसोदिया				

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खज़ाने पर लिख दी ॥

बलख़ और बदख़शां की मोहिम

फागण सुदी २ को बादशाह ने शाहज़ादे मुराद को ५०००० सवार और १०००० पैदल तोपची और बरक़ंदाज़ वगैरा और ७ लाख रुपये का खज़ाना देकर लाहोर से बहुत से अमीरों और राजों के साथ बलख़ और बदख़शां फ़तह करने के लियेरवाने किया इस फौज में इतने राजपूत सरदार थे॥

۳۰- ذی الحجہ کو بادشاہ نے شاہزادہ مراد بخش کو پچاس ہزار سوار اور دس ہزار پیادون کے ہمراہ واسطے فتح بلخ و بدخشان کے لاہور سے روانہ کیا اس فوج میں راجپوت منصب دار حسب مندرجہ ذیل تھے۔

ہراول میں

۱	راجہ بٹھل داس	۲	راؤ شترسال ہاڑا
۳	مادھوسنگھ ہاڑہ	۴	مہیش داس ولد دلپت راٹھور
۵	سیوارام گوڑ	۶	روپ سنگھ نبیرہ کشن سنگھ راٹھور

१	राजा बिठ्ठल दास गोड़		राठौड़ का पोता
२	राव शत्रूसाल हाडा	७	रामसिंघ राठौड़
३	माधोसिंघ हाडा	८	मोहकमसिंघ
४	महेशदास दलपत राठौड़ का बेटा	९	गोपाल दास
		१०	गोकुलदास सीसोदिया
५	सेवाराम गोड़	११	गिरधरदास गोड़
६	रूपसिंघ किशनसिंघ	१२	राजा अमरसिंघ नरवरका

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सवारों का होगया॥

राजा बिट्ठलदास के बेटे अनिरुद्ध का मनसब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से सिह हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का होगया

फागण बदी ११ को अरज़ हुई कि राजा जगत सिंघ पिशोर में मरगया बादशाह ने उसके बड़े बेटे राजरूप को खिलअत भेजकर उसका मनसब असल और इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का कर दिया राजा का ख़िताब और वतन भी उसको बख़्शा और जो लकड़ी का क़िला उसके बाप ने सुराब और इंद्राब में बनाया था उसका इन्तज़ाम भी उसी के हवाले रक्खा और जो १५०० सवार और २००० पैदल उसके बाप को दिये गये थे उनमें से ५०० सवार और २००० पैदल की तनख़ाह काबुल के

२४- ज़ी हिज्जह को बादशाह से अर्ज़ हुई कि राजा जगत सिंघ पेशावर मेंमर गया बादशाह ने उसके बड़े बेटे राजरूप को ख़िलअत और मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का असल और इज़ाफ़े से राजा का ख़िताब और वतन जागीर मेंइनायत फ़रमाया और ख़िलअत के साथ घोड़ा भी भेजा। और क़िलाह चोबीन का बन्दोबस्त भी जो उसके बाप ने दरमियान सुराब और इंद्राब के बनाया था उसके मुतअल्लिक़ करके यह हुक्म दिया कि डेढ़ हज़ार सवार और दो हज़ार पैदल जो उसके बाप की मदद के वास्ते मुक़र्रर हुए थे उनमें से पांसो सवार और डेढ़ हज़ार पैदल की तनख़ाह ख़ज़ाना काबुल से मिलती रहे।

मुहिम बलख़ व बदख़शान

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ख़ां का एलची ३००००) की पेश
कश लेकर बलख़ से आया।

सादुल्ला ख़ां का मनस
ब ६ हज़ारी ज़ात और दो हज़ार
सवारों का होगया॥

माह सुदी १५ को तुलादा
न के दरबार में जो इज़ाफ़ा अ
मीरों के मनसब का हुआ उस्में
राजा बिठ्ठलदास गोड. का मन
सब ७०० सवारों के इज़ाफ़े से ५
हज़ारी ज़ात और ४ हज़ार सवा
रों का होगया॥

राजा पहाड. सिंघ बुंदेले
के हज़ार सवार दो अस्पा और
सिह अस्पा हो गये जिससे उस
का मनसब ३ हज़ारी ३००० सवा
र दु अस्पा और सिह अस्पा का
हो गया॥

महेश दास गोड. का मन
सब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े
से ढाई हज़ारी ज़ात और २ हज़ार

वज़न शमसी बादशाह मेंन मन्दरजह
ज़ील तरक़ियां हुईं

१ राजा बिठ्ठल दास गोड़
पांचसो सवार के इज़ाफ़े से
पांचहज़ार सवारों के मनसब
पर तरक़ी याब हुआ।

२- राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले
के मनसब सहज़ारी ज़ात
और सहज़ार सवारों में से एक
हज़ार सवार दो अस्पा और
सहअस्पा हो गये।

३ महेश दास राठोड़ का
मनसब पांचसदी ज़ात के
इज़ाफ़े से ढाई हज़ारी ज़ात
और दो हज़ार सवारों
का होगया।

४ राजा बिठ्ठल दास के
बेटे इन्द्रभान का मनसब
पांचसदी ज़ात के इज़ाफ़े
से हज़ारी ज़ात और सात सौ
सवारों का होगया।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२५० सवारों के मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

पोस बदी ५ को राजा जयराम का मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का होगया ॥

रूप सिंघ राठोड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का होगया ॥

गोकुल दास सीसोदिये का मनसब हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का होगया ॥

पोस बदी ६ को महेशदास राठोड़ असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसबदार होगया ॥

पोस सुदी १ को जहांगीर बादशाह की मशहूर बेगम नूरजहां का लाहोर में इन्तक़ाल होगया इस को २ लाख रुपये सालाना मिलता था ॥

माह सुदी ६ को नज़र मुहम्मद

सवारों के मनसब से मशरफ़ हुआ-

२२-शवाल को महेश दास राठोड़ अस्ल और इज़ाफ़ा से हज़ारी ज़ात और पांसो सवारों के मनसब को पहुंचा-

२९-शवाल को नूरमहल उर्फ़ नूरजहां बेगम का लाहोर मेंन इन्तक़ाल होगया इस को दो लाख रुपये सालाना बाद वफ़ात जहांगीर बादशाह के मिलता था-

४-ज़ी अल्हिज्जा को नज़र मुहम्मद खान का एलची तीस हज़ार रुपये की पेशकश लेकर बलख से आया

अल्लामी सअदुल्लाह खान वज़ीर का मनसब छह हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवार का होगया-

१४-ज़ी अल्हिज्जा जश्न

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मिली ॥

मंग सिर बदी १ को बाद शाह लाहोर में पहुंचे शाह ज़ादे मुराद मुलतान से आगया था और राजा जसवंत सिंघ ने जोधपुर से हाज़िर हुआ था और लाहोर के क़िले दार महेस दास राठौड़ ने हाज़िर हो कर मुजरा किया ॥

मंग सिर सुदी १० को राय सिंघ झाला को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब मिला

पोस बदी ३ को राये बेडर मल पांच सदी ज़ात और २०० सवार दो अस्पा और सिह अस्पा के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और १२०० दो अस्पा और सिह अस्पा सवारों का मनसब दार होगया और सहरंद को रुख़सत हुआ

राजा मान सिंघ का पोता किशन सिंघ पांच सदी ज़ात और

اور چھ سو سوارون کے منصب سے سربلند ہوا

۱۴- شوال کو رائے ٹوڈرمل پانصدی ذات اور دو سو سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کے اضافہ سے منصب ڈیڑھ ہزاری ذات اور بارہ سو سوار دو اسپہ و سہ اسپہ کو پہنچکر سرہند کی طرف رخصت ہوا-

راجہ مان سنگھ کا پوتہ کشن سنگھ پانصدی ذات اور ڈھائی سو سوار کے منصب سے سرفراز ہوا-

۱۸- شوال کو راجہ جے رام کا منصب ڈیڑھ ہزاری ذات اور ایک ہزار سواروں کا ہوگیا

گوکل داس سیسودیہ ہزاری ذات اور آٹھ سو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कहीं रास्ता न रोकलें भाग करअ
पने२ घरों को चले गये इस लड़ा
ई में कुछ राज पूत और दूसरे
आदमी काम आये उस दिन
तो राजा ने क़िले के नीचे डेरा किया
दूसरे दिन तूल के रस्ते से र
वाने होकर घाटी से उतर आया
और सुबह बरफ़ के पहाड़ से
कि जिसका बर्फ दोती नदिन
से कम होगया था गुज़र कर पं
च शेर की सरहद में पहुंचा॥

दरबार का हाल

असोज सुदी ६ को बादशा
ह काश्मीर से लौटे

आसोज सुदी १० को मुका
म हीरा पुर में किस्टवार के रा
जा कं वर सैन का मनसब अ
सल और इज़ाफे से हजारी जा
त और ४०० सवारों का होगया
और उसे घर जाने की रुख़सत

کے نیچے رہا اور دوسرے دن براہ
طول روانہ ہوکر گھاٹی کے نیچے ٹھہرا
جب برف کچھ کم ہوئی تو پنج شیر
کی سرحد میں پہنچا۔

دربار کا حال

۴۔ شعبان کو بادشاہ نے
کشمیر سے مراجعت کی۔

۸۔ شعبان کو مقام ہیرا پور میں
بادشاہ نے راجہ کورسین کشتواری
کو ہزاری ذات اور چار سو سوارون
کا منصب دیکر وطن جانے کی رخصت
عنایت فرمائی۔

۱۵۔ رمضان کو بادشاہ لاہور
میں پہونچے شاہزادہ مراد بخش
نے جو ملتان سے آگیا تھا اور
راجہ جسونت سنگھ نے جو وطن سے
حاضر ہوا تھا اور لاہور کے قلعہ دار
مہیش داس راٹھوڑ نے حاضر
ہوکر مجرا کیا۔

۸۔ شوال کو رائے
سنگھ جھالا ہزاری ذات

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और हवा की तकलीफ़ से बहुत
से आदमी और घोडे मरगये औ
र लशकर घाटी से न गुज़र सका
लाचार वह रात रस्ते में ही बड़ी
तकलीफ़ से तेर कर नीप
ड़ी तड़के ही वहां से लौट कर१
एसी जगह कि जहां लकड़ी ब
हुत थी मुक़ाम किया यहां दूस
रे तईनातयों से पहिले अलीम
रदान ख़ां का ग़ुलाम फरेदूंअ
ली मरदान ख़ां के आदमियों
को लेकर राजा से आमिला उज़
बक मौक़ा देख कर लड़ने को
आये राजा आप तो फ़ौज के बी
च में रहा और अपने बड़े बेटेरा
जरूप और फरेदूं को हिरावल
किया लड़ाई में बहुत से उज़ब
क मारे गये और बाक़ी मैदान
छोड़ भागे बादशाही लशकर
ने २कोस तक पीछा किया उज़
बक क़िले वालों के डरसे किवे

پاس پہنچا اُزبک جو قابو ڈھونڈ رہے
تھے راہ بند ہوجانے اور راجہ کی قراحت
کرنیکی خبر سنکر پھر چڑھ آئے۔ راجہ
خود تو قول مین رہا اور اپنے
بیٹے راج روپ اور فریدوں
کو معہ ایک جماعت کے ہراول
کیا بعد گرم ہونے ہنگامہ
جنگ کے بہت سے اُزبک
مارے گئے اور کچھ بادشاہی
لشکر کے آدمی اور راجہ کے
راجپوت بھی کام آئے اُزبک
پھر لڑائی کی تاب نہ لاکر میدان
چھوڑ بھاگے اہل لشکر دو
کوس تک اونکے تعاقب مین
گئے چونکہ اُنکو یہ خوف تھا کہ
کہین مردم قلعہ ہمارا رستہ نہ
روک لین اور تعاقب کرنے
والے آگے آکر نہ مار ڈالین
اس لئے پہاڑ سے نیچے اُتر
کر اپنے اپنے گھرون کو چلے
گئے راجہ اوس رات تو قلعہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वक्त उज़बकों के २००० स
वार और क़ौम हज़ारा के ब
हुत से पैदल और कफ़शक़
ल माक़ उन लोगों के ऊपर
आ गिरे कि जिन को राजा नेर
स्ते की निगहबानी के वास्ते
घाटे की हिफ़ाज़त पर रक्खा
था इस लड़ाई में भी कुछ ब
हादुर आदमी दोनों तरफ़ों के
काम आये और उज़बक फ़ि
र लड़ाई हार कर बड़ी घबरा
हट से भाग गये॥

फिर राजा अपने लकड़ी
के क़िले की हिफ़ाज़त और र
सद वग़ैरा का बंदोबस्त कर
के अपने भरोसे के रजपूतों को
५०० बंदूक़ची और ४०० रजपू
तों से क़िले की रखवाली पर
छोड़ कर असाढ बदी १० कोप
रंदे की घाटी से पंचशेर की
तरफ़ रवाने हुआ मगर बरफ़

راجہ نے اپنے قلعہ چوبین
کی استواری اور فراہمی اذوقہ
وغیرہ لوازم قلعداری سے
دلجمعی حاصل کرکے اپنے معتمد
راجپوتون کو معہ پانسو تفنگچی اور
چارسو راجپوت کے حفاظت پر
چھوڑا اور آپ ۲۵ رمضان کو راہ
کُتل پرندہ سے پنج شہر کی
طرف روانہ ہُوا اثنائے راہ
نوردی مین برف و باد سے بہت
سے آدمی اور گھوڑے مرگئے
اور مارے برف کے لشکر گھاٹی
سے نہ اُتر سکا اس لئے راجہ کو
رات بھر راستہ مین ہی تکلیف
تمام قیام کرنا پڑا اور صبح ہی
ایک ایسی جگہہ پر کہ جہان
لکڑی بکثرت تھی مراجعت کرکے
مقام کیا یہان امیرالامرا کا
غلام فریدون معہ تابعینان
امیرالامرا کے اور سب کمکیون
سے سبقت کرکے راجہ کے

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri.

कर एक दम से मय तमाम फौ
ज के हमला किया खूब लड़ा
ई हुई जिस में बहुत से आदमी
ग़नीम के मारे गये और कुछ
बादशाही बंदे भी काम आये
उज़बकों ने जब इन बहादुरों
की यह बहादुरी देखी तो लड़
ने में फायदा न देख कर अपने
२ घरों को लोट गये राजा ने य
ह हाल अली मरदान ख़ां को।
लिख कर अपने क़िले के वा
स्ते सीसा बारूद मंगाई और
कुछ मदद भी मांगी अलीमर
दान ख़ां ने सीसा बारूद उसी
के बेटे राज रूप के हाथ भेज
कर तीन चार हज़ार सवार भी
सूबे काबुल के मदद गारों औ
र अपने नौकरों मेंसे ज़ुलक़द
र और अलीबेग वग़ैरा के साथ
रवाने किये॥

असाढ़ बदी ८ को रात को।

राजा ने इस माजरे की हकीकत
अमीरुलामरा को लिखकर मदद सीसा और
बारूद की तलब की अमीरुलामरा
ने सीसा और बारूद उस के
बेटे राज रूप के हाथ भेजा
और तीन चार हजार सवार भी अपने
तابعینون اور صوبہ کابل کے
ممکیون مین سے ہمراہ ذوالقدر
علی بیگ اسحاق بیگ اور اپنے
غلام فریدون کے تعینات
کئے۔

۲۳ - رمضان کی رات
کو دو ہزار سوار اُزبک اور
پیادہ ہائے ہزارہ کفش
قلماق کے ساتھ اوس جماعت
کے اوپر کہ جسکو راجہ نے راستہ
کی حفاظت کے واسطے درہ کے
دہانہ پر تعینات کیا تھا حملہ
آور ہوئے اور اسدفہ بھی
ہزارون خرابی کے ساتھ
شکست کھاکر بھاگے۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

مقابلے پر روانے کیے جو پہاڑ کے اوپر چڑھ گئے تھے جب اوزبکوں کے تینوں لشکر تین طرف سے آ پہنچے تو راجہ اور اُس کے بیٹے نے ۲ طرف سے تیر اور بندوق اُن کے اوپر مارنا شروع کیا اوزبکوں کو ہندوستانیوں کے مقابلے کی تاب نہ آئی ہار کر بھاگ گئے اور جو بندوقچی پہاڑ کے اوپر گئے تھے اُنہوں نے بھی بندوق کے ضرب سے اُس سرکوب قلعہ کو پیادہ ہائے ہزارہ کے ہاتھ سے چھین لیا اور تعاقب کر کے اُنکو پہاڑ سے نیچے اوتار دیا۔ اوزبک اُس جگہہ پر کہ جہاں گولی بندوق کی نہیں پہونچتی تھی راجہ کے مقابل خیرہ چشمی سے جمع ہو کر کھڑے ہوئے راجہ نے سوار و پیادہ کی اُن دونوں فوجوں کو اپنے پاس بلا کر معہ تمام سپاہ کے اوزبکوں پر حملہ کیا لڑائی شروع ہوئی اور دونوں طرف کے کچھ کچھ آدمی مارے گئے اوزبکوں نے ان ناموس پرستوں کے مقابلہ میں سوائے خسارہ کے فائدہ نہ دیکھ کر راہ فرار اختیار کی

مقابلے پر روانے کیے جو پہاڑ کے اوپر چڑھ گئے تھے جب اوزبکوں کے تینوں لشکر تین طرف سے آ پہنچے تو راجہ اور اُس کے بیٹے نے ۲ طرف سے تیر اور بندوق اُن کے اوپر مارنا شروع کیا اوزبکوں کو ہندوستانیوں کے مقابلے کی تاب نہ آئی ہار کر بھاگ گئے اور جو بندوقچی پہاڑ کے اوپر گئے تھے اُنہوں نے بھی بندوق کے ضرب سے اُس سرکوب قلعہ کو پیادہ ہائے ہزارہ کے ہاتھ سے چھین لیا اور تعاقب کر کے اُنکو پہاڑ سے نیچے اوتار دیا۔ اوزبک اُس جگہہ پر کہ جہاں گولی بندوق کی نہیں پہونچتی تھی راجہ کے مقابل خیرہ چشمی سے جمع ہو کر کھڑے ہوئے راجہ نے سوار و پیادہ کی اُن دونوں فوجوں کو اپنے پاس بلا کر معہ تمام سپاہ کے اوزبکوں پر حملہ کیا لڑائی شروع ہوئی اور دونوں طرف کے کچھ کچھ آدمی مارے گئے اوزبکوں نے ان ناموس پرستوں کے مقابلہ میں سوائے خسارہ کے فائدہ نہ دیکھ کر راہ فرار اختیار کی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

क़िले में खुदाये इस अरसे में क
फ़श ज़ाति के क़लमाक़ और कुछ
उज़बक कि जिनको नज़र मोहम्म
द खां ने राजासे लड़ने के वास्ते
भेजाथा आ पहुंचे और २ तुंग होगये
१ में सवार थे और १ में पैदल जब
राजा के क़िरावलों ने यह ख़बर
दी तो राजा ने भी क़िले से निक
ल कर अपनी फ़ौज के ३ हिस्से
किये और घाटे के दोनों नाकों
को कि जहां से ग़नीम दाख़िल
होसकता था बड़े २ लक्कड़ों
से बंद करके इतनी सी गलीर
ह नेदी कि जिसमें से १ सवार मुश
किलसे गुज़र सके और उन लक्क
ड़ों के पीछे दोनों तरफ़ बंदूक़ची
और तीर अंदाज़ तईनात करके
एक तरफ़ आपलड़नेकेवास्ते खड़ा
हुआ और दूसरी तरफ़ अपनेबे
टे भाऊ सिंघ को भेजा कुछ बंदू
क़ची हज़ारा ज़ाति के पैदलोंके

مقابلہ کے واسطے بھیجا تھا اپنی فوج
کے تین گروہ کئے دو سوارون
کے - اور ایک پیدلون کا جب
قراولون نے یہ خبر راجہ کو پہنچائی
تو راجہ نے بھی قلعہ سے نکلکر اپنے
لشکر کے تین حصہ کئے اور درہ
کے دونون دہانون پر کہ جہان
راستہ غنیم کے داخل ہونے کا
تہا راستہ بند کرنے کے لئے
بڑے بڑے لٹھ ڈال دئے
جنکے پیچھے تفنگچی اور تیر انداز پیادون
کو تعینات کیا پھر ایک طرف خود
معہ ایک فوج کے اور دوسری
طرف بہاؤ سنگھ اوسکا بیٹا - معہ
دوسری فوج کے لڑنے کے
واسطے کھڑا ہوا کچھ بندوقچیون کو
پیادہ ہائے ہزارہ کے مقابلہ
پر بھیجا کہ جو پہاڑ کے اوپر چڑھ
گئے تھے - جب اُزبک کا لشکر
تین طرف سے پہونچا تو راجہ
اور اسکے بیٹے نے دونون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जा का भी यही मत लब्ध था इस
लिये उस ने वहां था ना बैठा कर
डेरा कर दिया और उन लोगों को
बादशाही परवरिश का उम्मेद
वार करके किला बनाने के वास
ते जगह पूंछी तो उन्हों ने कहा
कि जो सुराब और इंद्राब के बी
च में क़िला बनाया जावे तो य
ह दोनों भी ख़ोसत समेत मज़
बूत हो जावेंगे दूसरे दिन राजा कूं
च करके उन के साथ सुराब को
गया वहां के लोगों ने भी हा
जिर हो कर बंदगी क़बूल कर
ली राजा बरफ़ बरसने से ३ दि
न वहां ठहर कर चौथे दिन इं
द्राब की रवाने हुवा जहां उस
ने सुराब और इंद्राब के बीच
में १ मज़बूत क़िला लकड़ियों
का बनाया जो वहां बहुत
यत से थी और उसके ऊपर पत्थ
र के बुर्ज बना कर २ बड़े कुंवे

اوسنے اوسی جگہہ ڈیرہ کردیا اور اُن
لوگون کو بادشاہی عنایات کا اُمیدوار
کرکے قلعہ بنانے کے واسطے صلاح
پوچھی اُنہون نے کہا کہ جو سراب اور
اندراب کے درمیان قلعہ بنایا جاوے
تو یہ دونون مقام بھی معہ خوست
کے مضبوط ہوجاوینگے دوسرے
دن راجہ نے کوچ کیا اور ان
لوگون کو بھی ساتھ لیا سراب کے
ارباب اور اہل شہر بھی پیشوائی کو
آئے اور فرمان پذیر ہوئے راجہ
نے اُنکو تسلی دی اور برف برسنے
سے سراب مین قیام کیا چوتھے دن
اندراب کو روانہ ہوکر سراب اور
اندراب کے بیچ میں ایک مضبوط
قلعہ لکڑی کا جو اوس سرزمین
بہت تھی بنایا اور پتہر کے بُرج
بناکر دو بڑے کنوئین بھی کھودے
اس عرصہ مین کفش قلماق
اور دوسرے اُزبکون نے کہ
جنکو نذر محمد خان نے راجہ کے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१५०० सवार और २००० पैदलोंकी
तनख़ाह जो ज़ियादे थे काबुलके
खज़ाने से मुक़र्रर करदी राजा फ़ौ
ज का सामान और दूसरी ज़रूरी
बातों का बंदोबस्त करके कातक
सुदी ६ को अली मरदान ख़ां से विदा
ऊवा और "तूल" की घाटी से गुजर
कर अपने लशकर के २ हिस्से
किये १ हिस्से को तो अपने बे
टे भाव सिंघ के साथ हरोलक
रके रवाने किया और दूसरेको
खुद लेकर ख़ोसत के लूटनेको
रवाने ऊवा जब यहां के सरदारों
को यह हाल मालूम ऊवा तो ३-४ को
स सामने आकर राजा से मिले और
बंदगी क बुल करके अर्ज़ किया
कि अगर कोई बादशाही बंदा
यहां क़िला बना कर रहना शु
रू करे तो हम लोग बंदगी करने
को तैयार हैं जो बंदगी न करें तो
बेशक वह हमारे घर लूट लेरा

کی تنخواہ جو وہ زیادہ لایا تھا خزانہ
کابل سے مقرر کر دی تھی بعد اسکے
۵ رمضان کو راجہ امیر الامرا سے
رخصت ہو کر اپنے کام پر روانہ ہوا
اور طول کی گھاٹی سے گذر کر اپنے
لشکر کو دو حصہ کیا ایک حصہ تو اپنے
بیٹے بھاؤ سنگھ کے ہمراہ بطور
منقلا یعنے پیشرو کے بھیجا اور دوسرا
خود لے کر اوسکے پیچھے خوست
لوٹنے کے ارادہ سے روانہ ہوا
جب ارباب اور کلانتران خوست
اوسکے اس ارادہ سے مطلع ہوئے
تو تین چار کوس پیشوائی کو آکر راجہ
سے ملے اور اظہار اطاعت
کرکے بولے کہ اگر کوئی بادشاہی
بندون مین سے یہان ایک مضبوط
قلعہ بنا کر رہے اور ہمسے سوائے
بندگی اور جانسپاری کے کوئی
دوسرا امر ظہور مین آوے تو
لوٹ مار کرنے کا اختیار ہے چونکہ
راجہ کا بھی یہی مقصد تھا اس لئے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अटक पर जाकर जाड़ा तैर करो
इसी तरह दूसरे लशकर के लिये
जगह जगह ठहरने का हुक्म हुआ

राजा जगतसिंघ काब
लख़ के ऊपर बढ़ना

राजा जगत सिंघ ने बादशाह
से यह अर्ज़ की थी कि मैं चाहिताहूं
कि कोई बंदगी बजा लाऊं और तू
ल के रस्ते से जो सेब में अच्छा रस्ता
बदख़शां का है वहां पहुंच कर।
"ख़ोसत" सुराब और इंद्राब के क़ि
लों को फ़तह और उस विलायत
की क़ोमों को सर करूं और जो को
ई हुक्म न माने उसको सज़ा दूं और
इसी वास्ते मैं ने बहुत से सवार औ
र पैदल अपने वतन से बुला लिये
हैं इनमें से जितने कि मेरे मनसब
से जियादा हों उनका रोज़गार सर
कार से मिलना चाहिये बादशा
ह ने यह अर्ज़ उस की अली मरदा
नरवां की सिफारिश से मंज़ूर करके

اوپر چڑھنا

راجہ نے کار طلبی اور خدمت
پزوہی سے بادشاہ کی خدمت مین
یہ عرض کی تہی کہ کمترین یہ آرزو رکہتا
ہے کہ کوئی خدمت بجالائے اور چاہتا
ہے کہ "طول" کے راستہ سے - جو
بہترین راستہ بدخشان کا ہے اُس
ملک مین داخل ہوکر خوست سراب
اور اندراب کو ضبط کرے اور اس
سرزمین کے اُلوسون اور ایماقون سے
بندگی کرائے اگر کوئی جہالت سے
نہین مانے تو اسکو سزا دے - اور
اسے واسطے مین نے بہت سی -
جمعیت اپنے وطن سے بلائی ہے
اُمید کہ علوفہ اُس جمعیت کا جو ظالبہ
منصب بندہ سے زیادہ ہو سرکار
بادشاہی سے عنایت فرمایا جاوے
اور یہ عرض اوسکی امیر الامرا کی
سفارش سے منظور ہوئی تھی اور
ڈیڑہ ہزار سوار اور دو ہزار پیادہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

اول تو قلعہ کہمرد کے فتح کرنے کو
کوچ کیا اور پہر جب راستہ کی تکالیف
اور نذر محمد خان کے قریب ہونے کا
حال سنا تو واسطے فتح بدخشان کے
عنان عطف کی لیکن پہر وہان کے
راستہ کی تنگی اور دشواری کا بھی
حال سنکر بخشی کو معہ دس ہزار
سوارون کے بہیجا وہ چند منزل
تک تاخت وتاراج کرکے واپس چلا
آیا بادشاہ نے اس کارروائی کو
پسند نہ کیا اور علیمردان خان کو
لکہا کہ بیلدار کہاتی اور سنگتراش واسطے
کشادہ کرنے راستہ کے بہیجے اور
اصالت خان کو معہ سخاوت خان
کے واپس بلایا اور راجہ رای سنگہ
کو حکم دیا کہ معہ راجپوتوں کے اٹک
پر جاکر جاڑا تیر کرے اور اسی طرح
اور لشکر کے لئے بہی جابجا قیام کرنے
کا حکم فرمایا۔

راجہ جگت سنگہ کا بلخ کے

مردان خاں نے میر بخشی اصالت خاں کو ساتھ لیکر کہہ
مرد کے اوپر جانے کے ارادے سے
کوچ کیا مگر پہر رستے کی
تکلیف اور نزدیک محمد خان کے
پہونچنے کا حال سنکر بدخشاں کے
فتح کرنے کو باگ موڑ لی لیکن پہر وہاں کے
راستے کی تنگی اور دشواری کا بھی
حال سنکر بخشی کو معہ دس ہزار
سوارون کے بہیجا وہ چند منزل
تک تاخت وتاراج کرکے واپس چلا
آیا بادشاہ نے اس کارروائی کو
پسند نہ کیا اور علیمردان خان کو
لکہا کہ بیلدار کہاتی اور سنگتراش واسطے
کشادہ کرنے راستہ کے بہیجے اور
اصالت خان کو معہ سخاوت خان
کے واپس بلایا اور راجہ رای سنگہ
کو حکم دیا کہ معہ راجپوتوں کے اٹک
پر جاکر جاڑا تیر کرے اور اسی طرح
اور لشکر کے لئے بہی جابجا قیام کرنے
کا حکم فرمایا۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़ात और २०० सवारों का मनस
ब दार हुआ॥

शाहज़ादे शुजाअ का बेटा ब
लंद अख़्तर बंगाले में कि स्वा
र के राजा कंवर सैन की बेटी से
पैदा हुआ॥

बलख़ की मुहिम

दो महीने पहिले ग़ोर बंद
के थाने दार ख़लील बेग ने बल
ख़ के मालिक नज़र मुहम्मद
ख़ां और उसके बेटे अबदुल अ
ज़ीज़ ख़ां के आपस में लड़ाई च
लते देख कर काबुल के सू
बेदार अली मरदान ख़ां की इ
जाज़त से कहमुर्द का क़िला
फतह कर लिया था जिस्को१
महीने पीछे ही नज़र मुहम्मद
ख़ां के आदमियों ने बादशाही
क़िलेदारों को क़तल करके वा
पिस ले लिया तब पहिले तो अली

اور شش ہزار سوار سربلند کرکے کشمیر
سے ملک دکن کے چارون صوبون
کی نظامت پر روانہ کیا۔
۸۔ جمادی الثانی کو گوبند داس
راٹھوڑ ملازم خان دوران بہادر
نصرت جنگ کو منصب پانصدی
ذات اور دو سو سوار کا عنایت ہوا
شاہزادہ شجاع کا بیٹا بلند اختر
راجہ کورسین کسٹواری کی لڑکی سے
بنگالہ مین پیدا ہوا۔

بلخ کی مہم

قبل اسکے ماہ ربیع الثانی مین
خلیل بیگ تہانہ دار غور بند نے نذر محمد خان
والی بلخ کو اوسکے بیٹے عبد العزیز خان
والی بخارا کے مقابلہ اور مدافعہ مین
مصروف دیکھ کر امیر الامرا علیمردان خان
کی اجازت سے قلعہ کہمرد فتح کرلیا تہا
اور ماہ جمادی الاول مین نذر محمد خان
کے آدمیون نے قلعداران بادشاہی
کو قتل کرکے وہ قلعہ پھر لے لیا تہا
امیر الامرا اور بخشی اصالت خان نے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

असाढ सुदी ६ को राजा जसवंत सिंघ के नाम हुक्म लिखवा गया कि लाहोर में बादशाह के पहुंचने तक हाज़िर होजावे॥

असाढ सुदी १४ को दूदासी सोदिया का पोता ईसर दास का बेटा हमीर सिंघ जो राना जगत सिंघ के रजपूतों में से था नोकरी कीउ मेद में राना के पास बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हुआ और बादशाह ने उसको खिलअत देकर पांच सदी ज़ात और ३०० सवारों का मनसब इनायत फरमाया॥

भादों सुदी २ को बादशाह ने इसलाम खां को ६ हज़ारी ६००० सवार का मनसब देकर कशमीर से दकखन के चारों सूबों की हुकूमत पर रवाने किया॥

भादों सुदी ६ को खानदोरां बहादुर नुसरत जंग का नोकर राठोड गोयन दास पांच सदी

सालाना की थी और वह दकहन के चारों सूबे यानि दौलत आबाद-बराड़-खानदेस और तलंगाना का हाकम तहा उसके बेटे सैद मुहम्मद व महमूद को मनसब हज़ारी हज़ार सवार और अब्दुलनबी को पांसदी और दो सो सवारों के इनायत हुए उसकी जगह इसलाम खां सूबेदार दकन मुकर्रर हुआ और राजा जसवंत सिंघ को जो उसकी गैरहाज़री में बतौर क़ायमक़ाम के काम करता तहा खिलअत खास भेजा गया।

७ जमादी अलावल को राजा जसवंत सिंघ के नाम हुक्म लिखा गया कि बादशाह के पहुंचने तक लाहोर में हाज़िर होजावे

१२ जमादी अलावल को हमीर सिंघ वलद ईसरदास बिन दूदा सीसोदिया जो राना जगत सिंघ के राजपूतों में से तहा बारादह अबूदीत दरगाह वाला के हाज़िर हुआ बादशाह ने उसको खिलअत इनायत करके पांसदी ज़ात और तीन सो सवारों के मनसब से मुशर्रफ फरमाया

२३ जमादी अलसानी को बादशाह ने इसलाम खां को मनसब षशहज़ारी ज़ात

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खाफ़ीखां बहादुर नुसरत जंग जो बादशाह के पास से अपने काम पर दकखन के सूबे को रवाने हुआ था लाहोर में १ कशमीरी ब्राह्मण के हाथ से मारा गया जिसको उसने मुसलमान करके अपना ख़िदमतगार बनाया था उसके माल असबाब में से उसकी वसीयत के माफ़िक़ उसकी औलाद को देने के पीछे ६० लाख रुपया बादशाही ख़ज़ाने में दाख़िल हुआ उसका मनसब ७ हज़ारी ७ हज़ार सवार का था जिसकी तनख़ाह सालाना ३० लाख रुपये की थी और दखन के चारों सूबों (दौलताबाद, बराड, ख़ानदेस, तिलंगाना,) का हाकिम था उसकी जगह इसलाम ख़ां मुकर्रर हुआ और राजा जयसिंघ को जो उसकी ग़ैर हाज़िरी में कायम मुक़ाम के तौर पर काम करता था ख़िलअत रवाना भेजा गया॥

جس سے اوسکا منصب بیس ہزاری ذات اور بیس ہزار سوار دو اسپہ وسہ اسپہ کا ہوگیا وشایستہ خان صوبہ دار الہ آباد مالوہ مین مقرر ہوا اور سردار خان صوبہ دار مالوہ کو دہامونی اور جوراگڈہ کی جاگیر داری دیگئی۔ روز سہ شنبہ ۶ جمادی الاول کو خان دوران بہادر نصرت گنج لاہور سے دکھن کو روانہ ہوا مگر اوسی رات کو ایک کشمیری برہمن کے ہاتھ سے مارا گیا کہ جسکو اوس نے مسلمان کرکے اپنے خدمتگارون مین رکھا تہا اوسکے مال واسباب مین سے اوسکی وصیت کے موافق اوسکی اولاد کو دینے کے بعد مبلغ ساٹھ لاکھہ روپیہ بادشاہی خزانہ مین داخل ہوا اوسکا منصب سات ہزاری ذات اور سات ہزار سوار کا تھا جسمیں پانچہزار سوار دو اسپہ وسہ اسپہ تھے اور ایک کروڑ دام انعام کے مقرر تھے کہ کل کی جمع بارہ کروڑ دام یعنے ۳۰ لاکھہ روپیہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की ज़ीन का देकर उस तरफ़ कोर
वाने किया और कई मनसबदारों
के नाम हुक्म लिखा कि १००० स
वार और २००० पैदल लेकर लाहो
र से काबुल कोर वाने हों उन मेंरा
जा राय सिंघ पहाड़ सिंघ और मा
धो सिंघ हाडा भी थे राजा रायसिं
घ के हुक्म में इतनी बात ज़ियादा
थी कि नक़दी पाने वाले बंदों की
तनख़ाह के वास्ते २० लाख रुप
या भी लाहोर के ख़ज़ाने से लेता
जावे ॥

असाढ़ सुदी ३ को बादशा
ह ने इलाहाबाद का सूबा चिना
र और रुहितास के किलों समेत
शाहज़ादे दारा शिकोह को इना
यत करके उस का मनसब २० ह
ज़ारी २०००० सवार का असल और
इज़ाफ़े से कर दिया जिसमें २०००
दो अस्पा और सिह अस्पा थे ॥

असाढ़ सुदी ८ मंगल वार को

کرکے اوسطرف کو رخصت کیا اور
حکم صادر فرمایا کہ بہادر خان اپنی
جاگیر سے وقلیچ خان ونجابت خان
وراجہ رائے سنگہ وراجہ پہاڑ سنگہ
وبادہو سنگہ ہاڈا ومیرزا خان
نبیرہ عبدالرحیم خان خانخانان
ونظر بہادر خویشگی وسرانداز خان
شمس الدین خان وغیرہ منصبدار
اور ہزار سوار برقنداز ودو ہزار پیادہ
تفنگچی لاہور سے کابل کو روانہ ہوں
اور راجہ رائے سنگہ بیس لاکھ روپیہ
واسطے مواجب بندہائے نقدی
کے خزانہ عامرہ دارالسلطنت لاہور
سے اپنے ہمراہ کابل کو امیرالامرا
کے پاس لیتا جاوے ۔

غرہ جمادی الاول کو بادشاہ
نے الہ آباد کا صوبہ معہ قلاع
رہتاس وچنار کے بادشاہزادہ
محمد دارا شکوہ کو عنایت کرکے
پانچہزار سوار اور اوسکے تابعینوں
میں سے دو اسپہ وسہ اسپہ کردی

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

अली मरदान खां दोनों बलख़ और बदख़शां की मुहिम का सामान तैयार करें ॥

चैत सुदी १४ को ख़ानदोरां ख़ां बहादुर नुसरत जंग की अरज़ से जो लाहोर में हाज़िर होगया था पृथ्वी राज राठोड़ क़िलेदार दौलताबाद का मनसब २ हज़ारी २००० सवार का होगया ॥

बैसाख सुदी ३ को बादशाह कशमीर में पहुंचे कुतुबुलमल्क और आदिलख़ां के वकील अपने २ मुल्क से सालाना पेशकश लेकर हाज़िर आये ॥

जेठ बदी ७ को अली मरदान ख़ां की अरज़ी काबुल से बलख़ और बदख़शां की मुहिम के वास्ते मदद भेजने के बारे में आई जिस पर बादशाह ने राजा जगत सिंघ को ख़िलअत तलवार मीनाकार साज़ की और घोड़ा चांदी

علیمردان خان کے بلخ اور بدخشان کی مہم کا سامان تیار کرے۔

۱۲۔ صفر کو خاندوران بہادر نصرت جنگ کی عرض سے جو دارالسلطنت لاہور مین حاضر ہوگیا تہا پرتھی راج راٹھوڑ قلعدار دولت آباد کے منصب مین اصل اور اضافہ سے دوہزاری ذات اور دوہزار سوار ونکا اضافہ ہوگیا

غرہ ربیع الاول کو بادشاہ کشمیر جنت نظیر مین پہونچے قطب الملک اور عادلخان کے وکیل اپنے اپنے ملک سے سالانہ پیشکش لیکر حاضر درگاہ والا ہوئے

۲۰۔ ربیع الثانی کو امیرالامرا علیمردان خان کی عرضی کابل سے واسطے طلب کمک مہم بلخ اور بدخشان کی آئی بادشاہ نے ۲۹۔ ماہ مذکور کو راجہ جگت سنگہ کو خلعت و شمشیر معہ یراق طلا مینا کار و اسپ بازین نقرہ عنایت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भेजा ॥

बरस १९ वां

फागणसुदी ३ सं·१७०१ से फागणसुदी २ सं·१७०२ तक

चैत बदी ८ सोमवार को नौरोज़ के दरबार में राय टोडरमल को खिलअत हथनी समेत इनायत हुआ ॥

चैत सुदी ४ को बादशाह ने लाहोर पहुंच कर बाग़ फ़ैज़ बख़्श और फरह बख़्श में डेरा किया और क़िले दारी का खिलअत राय गौड़ महेशदास को दिया ॥

लाहोर में कुछ अरसे से दरिया के किनारे पर संगमरमर की इमारत तैयार होरही थी बादशाह उसको देख कर चैत सुदी ८ को कश्मीर को रवाने होगये और असालत ख़ां मीर बख़्शी को हुक्म हुआ कि काबुल में जाकर वहां और

عنایت کرکے صوبہ گجرات کی حکومت پر روانہ کیا۔

انیسوان برس

سنہ ۱۰۵۵ ہجری

۸ فروری سنہ ۱۶۴۵ء سے لغایت ۷ فروری سنہ ۱۶۴۶ء تک

دوشنبہ ۲۱۔ محرم کو نوروز کے دربار میں رائے ٹوڈرمل کو خلعت معہ ہتھنی کے عنایت ہوا

۲۔ صفر کو بادشاہ نے لاہور پہنچکر باغ فیض بخش اور فرح بخش میں قیام کیا دریا کے اوپر جو عمارت سنگ مرمر کی تیار ہورہی تھی اوسکو ملاحظہ کرکے کشمیر جانے کی تیاری کی۔

مہیش داس راٹھوڑ کو دارالسلطنت لاہور کی قلعداری معہ خلعت کے عنایت ہوئی۔

۶۔ صفر کو بادشاہ کشمیر کی طرف روانہ ہوئے اور اصالت خان میر بخشی کو کابل میں بھیجا کہ باتفاق رائے امیرالامرا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हुआ था रुपयों में तोल कर और ३ गांव देकर रुख़सत किया उसवक्त हाथी घोडे और ख़िलअत के सिवाये उसको बहुत सा ज़ेवर और जवाहरात भी बादशाह की शाहज़ादों की और बेगमसाहब की सरकार से मिला और अमीरों ने भी बहुत कुछ दिया ॥

माह सुदी ११ को बादशाह ज़नाने समेत मथुरा से किशतियों में बैठ कर फागण बदी ७ को दिल्ली में पहुंचे और अपने नये बनाये हुये क़िले में उतरे दस्तूर के माफ़िक ५०००) हुमायूं बादशाह के रोज़े में ख़ैरात किये ॥

फागण बदी ३० को बादशाह ने शाहज़ादे औरंगज़ेब और उस के बेटे मोहम्मद सुलतान और मोहम्मद मोअज़्ज़म को भारी २ ख़िलअत हाथी और घोडे इनायत करके गुजरात की सूबेदारी पर

گدا رے بنیوا کو کہ جسکی دہوتی بیگم صاحبہ کے زخمون پر اعجاز کا اثر دکہلایا تہا روپیون میں تولکر - اور ایک گانو عنایت فرماکر رخصت کیا رخصت کے وقت ہاتھی گہوڑے اور خلعت کے علاوہ اوسکو بہت سا زیور اور جواہرات بھی بیگمصاحبہ بادشاہ - شاہزادون اور امیرون کی سرکار سے ملا جس سے اوسکا جنم بہر کا دلدر دور ہوگیا -

۱۰ - ذی الحجہ کو بادشاہ متہرا سے معہ اہل حرم کے شاہانہ کشتیون مین سوار ہوکر ۲۱ - کو دہلی مین پہونچے اور اپنے نو تیار قلعہ مین فروکش ہوئے اور حسب دستور مبلغ پانچ ہزار روپیہ ہمایون بادشاہ کے روضہ مین اہل استحقاق کو خیرات کیے

۱۹ - ذی الحجہ کو بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ زیب اور اُسکے بیٹون محمد سلطان اور محمد معظم کو خلاع فاخرہ اور ہاتھی گہوڑے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सिंघ ने १ हाथी नज़र किया॥

लाहोरजाना

माह बदी १२ बुधवार को बादशाह आगरे से लाहोर कोरवाने हुवे॥

माह सुदी २ को मुक़ाम रूप बास में बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को रिवलअ़त ख़ासा देकर नये सूबेदार शेख़ फ़रीद पहुंचने तक आगरे की हिफ़ाज़त करने का हुक्म दिया॥

राय काशी दास को रिवलअ़त इनायत करके आगरे की दीवानी पर भेजा॥

सूबे बिहार के दीवान बेनी दास का भेजा हुआ हाथी बादशाह की नज़र से गुज़रा॥

मथुरा में बादशाह ने हामूं फ़क़ीर को कि जिसकी धूनी से बेगम साहिब के ज़ख्मों को आराम

معہ فرجی کے عطا ہوا

۲۵- ذیقعدہ کو راجہ پہاڑ سنگھ نے ایک ہاتھی پیشکش کیا۔

روانگی لاہور

چارشنبہ ۲۶- ذیقعدہ کو بادشاہ آگرہ سے لاہور کو روانہ ہوئے۔

غرہ ذی الحجہ کو مقام روپ باس مین راجہ جسونت سنگھ کو خلعت خاصہ عنایت کرکے حکم دیا کہ شیخ فرید ولد قطب الدین خان کے پہونچنے تک جو ناظم صوبہ دارالخلافہ مقرر ہوا ہے دارالخلافہ کی حفاظت کرے اور پھر روانہ درگاہ ہو جاوے۔

رائے کاسیداس مرحمت خلعت اور خدمت دیوانی دارالخلافہ سے مفخر ہوکر اُوسطرف کو رخصت ہوا۔

ایک ہاتھی جو بینی داس دیوان صوبہ بہار نے بطور پیشکش بھیجا تھا۔ بادشاہ کی نظر سے گذرا۔

متھرا مین بادشاہ نے ہامون نام

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जो काबुल और कंधार की सरहद में आकर फ़िसाद करने लगा था॥

पोस बदी ४ को अमर सिंघ के बेटे राय सिंघ ने हाज़िर होकर ४ हाथी नज़र किये बादशाह ने उस को बेगुनाह समझ कर ख़िलअत हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का मनसब इनायत किया॥

पोस सुदी १३ को बादशाह दारा शिकोह के मकान पर उसके बेटे सिफ़रशिकोह के देखने को गये साथ के अमीरों को शाहज़ादे ने बादशाह के हुक्म से ख़िलअत दिये जिसमें फ़रज़ी समेत ख़िलअत राजा बिट्ठल दास को भी मिला-

पोस बदी ३० को बादशाह का तुलादान "सौरमास" के हिसाब से हुआ जिसमें भी राजा बिट्ठल दास गोड. को फ़रज़ी समेत ख़िलअत मिला॥

माह बदी ११ को राजा पहाड.

مقصد و فساد ہوا تھا فتح پائی-

۱۷- شوال کو عبدالله خان بہادر فیروز جنگ شیر برس کا ہوکر مرگیا-

۱۲- ذیقعدہ کو راؤ امر سنگھ کا بیٹا رائے سنگھ وطن سے آکر بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا- بادشاہ نے اُوسکے باپ کا جرم نظر مین نہ لاکر اُسکو عطاء خلعت اور منصب ہزاری ذات اور سات سو سوار سے سرفراز فرمایا-

۱۴ ذیقعدہ کو بادشاہ شاہزادہ دارا شکوہ کے مکان پر اُسکے لڑکے سپہر شکوہ کو دیکھنے کے واسطے گئے شاہزادہ نے ہمراہی امیرون کو بادشاہ کے حکم سے خلعت دئے ازانجملہ خلعت سعہ فرجی راجہ ٹیہلداس گوڑ کو بھی ملا-

۲۴- ذیقعدہ کو جشن وزن شمسی بادشاہ مین بیگم صاحبہ کی طرف سے بھی راجہ ٹیہلداس کو خلعت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मिला॥

१००० आदमियों को खिलअत मिले और मनसब भी इज़ाफ़ह हुवे

राजा बिट्ठलदास को खिलअत और ख़ासा घोड़ा सुनहरी ज़ीन का मिला और ५०० सवारों का इज़ाफ़ा भी हुआ जिससे उसका मनसब ५ हज़ारी ज़ात और ३५०० सवारों का हो गया॥

हरी सिंघ के भतीजे रूपसिंघ को खिलअत हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का मनसब मिला॥

सुजान सिंघ सीसोदिये को खिलअत हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसब इनायत हुआ॥

काबुल से खुश ख़बरी पहुंची कि वहां के सूबेदार अली मरदान ख़ां के आदमियों ने बलख़ और बुख़ारा के ख़ान नज़र मोहम्मद ख़ां के नोकर तरुद्दी अली ख़ां कतग़ान "उज़बक" के ऊपर फ़तह पाई

को خلعت ملے اور منصب مین بھی اضافہ ہوا۔

راجہ بٹھل داس کو خلعت اور پانسو سوارون کا اضافہ ہوکر ایک گھوڑا بھی خاصہ طویلہ سے مطلا زین کا ملا اور اب اوس کا منصب پانچہزاری ذات اور ساڑھے تین ہزار سوارون کا ہوگیا۔

ہری سنگھ کے بھتیجے رُوپ سنگھ کو خلعت اور ہزاری ذات اور سات سو سوار کا منصب عطا ہوا۔

سجان سنگھ سیسودیہ کو منصب ہزاری ذات اور پانسو سوار کا ملا

کابل سے خوشخبری پہونچی کہ وہان کے صوبہ دار علیمردان خان کے آدمیون نے تردی علی خان قطغان قوم ازبک ملازم نذر محمد خان والی بلخ و بخارا کے اوپر جو کابل و قندھار کی سرحد مین

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हुआ और उसको खिलअत भी मिला ॥

कातिक बदी १० को राजा बिट्ठल दास अपने वतन से हाज़िर आया ॥

मंगसिर बदी ७ को बेगम साहिब अच्छी होकर नहाई बादशाह ने इस खुशी में ८ दिन तक बड़ी धूम धाम की मजलिस करके खूब सोना और जवाहिर लुटाया और अपने बेटों बेटियों और बेगमों दौरा को भी बहुत कुछ माल असबाब दिया इस खुशी में २० लाख रुपया उठा और जो हज़ार रुपया रोज़ खैरात हुआ करता था २ लाख से ज़ियादा वह हुआ ॥

बेगम साहिब की सिफ़ारिश से औरंग ज़ेब के क़सूर माफ़ हुवे और मनसब भी बहाल होगया जो १५ हज़ारी ज़ात और १०००० सवारों का था और १ भारी खिलअत भी

बैठ हुआ उस गोड़ अपने वतन से हाज़िर आकर शरफ़याब मुलाज़मत हुआ।

५ शवाल को ग़ुसल सेहत बेगम साहिबा जहान आरा बेगम का हुआ बादशाह ने इस खुशी मेंन आठ रोज़ तक बड़ी दहूम दहाम से मजलिसें आरास्ता करके खूब ज़र व जवाहिर लुटाया और अपने बेटों बेटियों और बेगमों वग़ैरह को बहुत कुछ दिया इस मेंन कुल बीस लाख रुपया खर्च पड़ा और जो हज़ार रुपया रोज़ खैरात हुआ करता था दो लाख से ज़ियादा वह हुआ।

बेगम साहिबा की सिफ़ारिश से बादशाहज़ादा मुहम्मद औरंग ज़ेब की खता माफ़ होकर उसका मनसब बदस्तूर बहाल होगया जो पन्द्रह हज़ारी ज़ात और दस हज़ार सवारों का था और एक खिलअत गरां बहा भी इनायत हुआ।

इसके सिवा एक हज़ार आदमियों

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और सुनहरी काम की जीन के राना के वास्ते भेजे गये ॥

आसोज सुदी ११ को बादशाह ने गोरधन राठौड़ को जो राजा गजसिंघ के लायक़ और कारगुज़ार नोकरों में से था घोड़ा और सिरोपाव देकर आसेर की क़िलेदारी पर शिवराम गोड़ की जगह भेजा ॥

कातिक बदी २ को राजा जयसिंघ के नाम हुक्म लिखा गया कि वतन से दक्खन में जा कर ख़ानदेशां के वापिस पहुंचने तक जो दरबार में बुलाया गया है उस मुल्क की हिफ़ाज़त करे ॥

कातिक बदी ६ को अलफ़ ख़ां का बेटा दोलत ख़ां पांचसदी ज़ात और २०० सवारों के इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवार का मनसबदार हो कर नागोर की जागीरदारी पर रुख़सत

१०-शबान को गोरधन राठौड़ को कि राजपूतान मक़रर्री कारकरदा राजा गजसिंघ से था ख़िदमत हिरासत क़लाए आसेर की सेवाराम गोड़ के तग़ैर से इनायत हुई और वह ख़िलअत व अस्प के इनायत से सरबुलन्द हो कर उस तरफ़ को रुख़सत हुआ।

१६-शबान को राजा जयसिंघ के नाम फ़रमान भेजा गया कि दकन जा कर ता वापसी ख़ान दौरान बहादुर नुसरत जंग के जो हुज़ूर में तलब हुआ था उस मुल्क की हिफ़ाज़त करे।

२०-शबान को दौलत ख़ान वलद अलफ़ ख़ान इनायत ख़िलअत व इज़ाफ़ा पांचसदी ज़ात और दोसो सवारों से जागीरदारी नागोर पर नवाज़िश पा कर उस तरफ़ को रुख़सत हुआ।

२४-शबान राजा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दी ज़ात और १०० सवार के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसबदार होगया॥

द्वारका दास के बेटे नरसिंघ दास को काबील गढ़ की क़िलेदारी जो बराड़ का मज़बूत और मशहूर क़िला है इनायत हुई॥

आसोज सुदी ६ को रावशत्रुसाल हाडा को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा इनायत होकर वतन जाने की रुख़सत मिली॥

कल्याण झाला को जो कुछ दिन पहिले राना जगत सिंघ की अरज़ी लेकर हाज़िर हुआ था ख़िलअत सुनहरी ढाल तलवार मीनाकार साज़ से चांदी की ज़ीन का घोड़ा और हाथी इनायत होकर वापिस जाने की रुख़सत मिली और उस के हाथ ख़िलअत ख़ासा जड़ाऊ कमर पेटी २ ख़ासा घोड़े सोने की

ڈیڑھ ہزاری ذات اور ۶۰۰ سوار کے منصب کو پہونچا۔

دوارکا داس کا بیٹا نرسنگداس قلعہ کاویل کی قلعداری سے جو بہترین قلعہ ولایت براڑ کا ہے اور بلندی اور مضبوطی مین شہرت رکھتا ہے سربلند ہوا۔

۸۔ شعبان کو راؤ شترسال عنایت خلعت واسپ سے معززین نقرہ کے سربلندی پاکر اپنے وطن کو مرخص ہوا۔

کلیان جھالا کو جو چند روز پیشتر رانا جگت سنگھ کی عرضی لے کر حاضر درگاہ ہوا تھا خلعت سپر و شمشیر معہ یراق طلائی مینا کار کے واسپ بازین نقرہ و فیل عنایت ہوکر واپس جانے کی رخصت ملی اور اُسکے ساتھ رانا کے واسطے خلعت خاصہ کمر مرصع اور دو گھوڑے طویلہ خاصہ سے معززین طلا اور مطلا کے بھیجے گئے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बहुत ही छोटा था कुछ मनसब जो उसके लायक़ था दिया और अबदुल रसूल का मनसब जो चारसदी ज़ात और १०० सवारों का था वह उसके ४ बेटों पर बांट दिया और गुलाम मोहम्मद के कोई बेटा न था इसलिये उसका मनसब उसके छोटे भाई अली अकबर के नाम मुक़र्रर किया ॥

दरबारके हालात

सावन सुदी २ को अरजुनगोड़ असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसबदार होगया ॥

सावन सुदी ३ को राजा मनरूप के बेटे गोपाल सिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का होगया ॥

असोज बदी १३ को करमसी राठौड़ का बेटा शाम सिंघ पांचस

فراخور سے مختص کیا اور صلابت خان کے بیٹے محمد مراد کو جو چار برس کا تھا چارصدی ذات اور سو سوار کے منصب سے اور میر خاں کے بیٹے کو جو نہایت چھوٹا تھا اوسکے لایق منصب سے سرفراز فرمایا اور سید عبدالرسول کا منصب چارصدی ذات اور سو سوارون کا اوسکے چارون بیٹون کو اور غلام محمد کا منصب بسبب لاولدی کے اوسکے چھوٹے بھائی علی اکبر کو دیدیا۔

وقایع دربار

غرہ جمادی الثانی کو ارجن کا منصب اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوار کا ہوگیا۔

۲۔ جمادی الثانی کو من روپ کے بیٹے گوپال سنگہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوار کا ہوگیا۔

شب ۲۷۔ رجب کو سیام سنگہ ولد کرم سی راٹھوڑ پانصدی ذات اور سو سوارون کے اضافہ سے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के पास पहुंचावें जब यह उस जग
ह पहुंचे कि जहां वे लोग इकट्ठे
होरहे थे तो उन्हों ने इन को देख
ते ही तलवार की धार को अम्
त की धारा समझ कर लड़ाई शु
रू कर दी और जबतक बदन हा
थ और सांस चलता रहा लड़ते
रहे आखीर में सबके सब बल्लू
और भाव सिंघ समेत मारे गये
अरदली के आदमियों मेंसे सै
यद अबदुल रसूल जो मरदाना
जवान था और सब आदमियों से
आगे बढ़कर मय अपने भतीजे
सैयद गुलाम मोहम्मद और दूस
रे भाई बंदों के पैदल होके लड़ा
था अपने साथियों समेत काम
आया बादशाह ने सलाबत खां
के बेटे मोहम्मद मुराद को जो ४
बरस का था चार सदी ज़ात और
२०० सवार का मनसब बख़्शा
और मीर खां के बेटे को भी जो

معہ مردم جلو کے اور رشید خان
انصاری کہ جنکے پہرے کی
نوبت تھی جاکر ان مقہورون
کو بھی انکے سردار کی جگہہ پہنچاوین
جب یہ لوگ اُس جگہہ پہونچے کہ
جہان وہ راجپوت جمع ہورہے تھے
تو اُنہون نے تلوار کے ناگوار
پانی کو آبحیات جانکر تلوارون اور
برچھون سے جنگ شروع کی اور
جبتک کہ اُنکے تن مین کچھ بھی
توانائی اور رمق زندگانی کی باقی
رہی لڑتے رہے آخرکار سب معہ بلّو
اور بھاؤسنگہ کے مارےگئے اور مردم جلو
سے سید عبدالرسول بارہہ کہ جوان
مردانہ تھا اور تمام ہمراہیون سے
پیشدستی کرکے معہ سید غلام محمود
اپنے بھائی بھتیجے اور پانچ دوسرے
بھائیون اور رشتہ دارون کے پیادہ
ہوکر لڑائی مین مشغول ہوا تھا معہ اپنے
رفیقون کے شہید ہوا بادشاہ نے ان
جانبازون کے پس ماندون کو عنایات

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

होकर लड़ने मरने को तैयार हुवे
वे जब यह खबर बादशाह को
पहुंची तो मेहरबानी से फरमा
या कि इन बेवकूफों को समझा
वो कि अमर सिंघ और उस के दू
सरे शरीक जो इस जुर्म में थे अपनी
सज़ा को पहुंच गये और तुम ने
तो कोई क़सूर भी नहीं किया है
फिर क्यों अपनी जान और माल
को ख़राब करते हो और हम इ
नसाफ़ से हुक्म देते हैं कि कोई
तुम से रोक टोक न करेगा तुम
अपने जोरू बच्चे और मा
ल असबाब लेकर अपने घरों को
चले जाओ मगर जब देखा कि
अपनी जहालत और ज़िद के ऊ
पर जमे हुवे हैं तो हुक्म दिया कि
सैयद ख़ान जहां अरदली के आ
दमियों के साथ और रशीद ख़ां
कि जिनके पहरे की बारी है जा
कर उन लोगों को भी उनके सरदार

ہو کر لڑنے مرنے کو تیار ہو گئے
جب یہ خبر بادشاہ کو پہونچی - تو
بادشاہ نے ازراہ عطوفت جبلی
جہان کہ قہر کرنا چاہیے تھا اس
گروہ کی نادانی و گمراہی کو معاف
کر کے اپنے ایک دو تنخواہ سے
فرمایا کہ ان جاہلون سے براہ نصیحت
کہین کہ امر سنگھ اور جو کوئی کہ
اس جرم خطیر مین اوسکا شریک
تھا اپنی سزا کو پہونچ گیا اور تم نے
تو کوئی قصور نہین کیا ہے پھر کسواسطے
اپنی جان و مال کی خرابی کے
باعث ہوتے ہو ہم بمقتضائے
عدالت حکم فرماتے ہین کہ کوئی آدمی
تم سے مزاحم نہوگا اور تمہاری
بہتری اسی مین ہے کہ معہ اپنے
عیال و اطفال و مال و اسباب
کے اپنے گھرون کو چلے جاؤ
مگر جب ظاہر ہوا کہ وہ اپنے ہٹھ
اور جہالت پر جمے ہوئے ہین
تو حکم دیدیا کہ سید خانجہان

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बरदार अहदी पहरे पर थे उन्हों ने यह हाल देख कर उन लोगों को मार डाला मगर उन में से भी ६ गुर्ज़ बरदार तो मारे गये और ६ ज़ख़मी हुवे यह दिलेरी उनकी बादशाह के दिल को बुरी लगी जिस से अमर सिंघ के नोकर जो कुछ भी अक़्ल रखते थे वे तो रातों रात अपने वतन को चल दिये और जो फ़सादी थे उन्हों ने यह बात ठहराई कि अर्जुन गौड़ के घर पर जो अमर सिंघ के डेरे के पास था जाकर उस्को मार डालें ॥

बल्लू राठौड़ और भाव सिंघ राठौड़ भी जो पहिले अमरसिंघ के और उस्के बाप के नोकर थे और अब बादशाही बंदों में दाख़िल थे सिर्फ़ इस बहाने से कि उनके घर उन लोगों के पास थे इस इरादे में उनके शामिल

اُن لوگون کو مار ڈالا مگر اُنمین سے چھہ احدی بھی مارے گئے اور چھہ زخمی ہوئے یہ دوسری جسارت تھی جو بادشاہ کے دلپر بہت گران گذری جس سے امرسنگہ کے نوکرون مین سے وہ لوگ کہ جو کچھ عقل رکھتے تھے راتون رات اپنے وطن کو چلے گئے اور جو فسادی تھے اُنھون نے یہ بات ٹھہرائی کہ ارجُن کے گھر پر جو امرسنگہ کے احاطہ سے نزدیک تھا جاکر اُسکو مار ڈالین اور چونکہ جاہل راجپوت لڑائی کے واسطے بہانہ ڈھونڈھا کرتے ہین اس لئے بلوّا اٹھوڑ جو امرسنگہ کا نوکر تھا اور بھاؤ سنگہ جو اُوسکے باپ کا ملازم تھا اور اب دونو بادشاہی بندگان مین منسلک تھے صرف اس وجہ سے کہ اُنکے گھر اُن لوگون کے نزدیک تھے اس اندیشہ ناپسندیدہ مین شریک

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं कि जो अमर सिंघ ने कि जि
से उस वक़्त रख़्फ़ क़ान हो रहा था
इस बात की सलावत ख़ां की त
रफ़दारी से समझ कर ऐसा ख़्व
राब काम किया हो॥

बाद उस वारदात के बाद
शाह के हुक्म से मीर ख़ां मीरतु
ज़क और मलूक चंद मुशरफ़
ने अमर सिंघ की लाश को रिव
लवत ख़ाने के बाहर दहलीज़
के आगे रख कर उसके आद
मियों को बुलाया ताकि लाश
को अपने डेरे लेजा कर जो कर
ना हो सो करें इस पर १५ रिव
दमतगार अमर सिंघ के आये
और जब वे उस हाल से वाक़ि
फ़ हुवे तो कटारें और तलवा
रें निकाल कर भिड़ गये मलू
क चंद तो मारा गया और मीर ख़ां
ज़ख़मी होकर दूसरी रात को
मरा दरवाज़े के बाहर जो गुर्ज़।

اُسوقت کہ خبطی ہو رہا تھا اسبات
کو صلابت خان کی حمایت پر
حمل کرکے اس کارنا شائستہ
کی جرأت کی ہو۔

غرض کہ بعد اس واردات
کے بادشاہ کے حکم سے میرخان
میر توزک و ملوک چند مشرف
دولتخانہ خاص نے امر سنگھ
کی نعش کو دہلیز بیرون
خلوتخانہ پر رکھکر اوسکے آدمیونکو
بلایا تاکہ اُسکو منزل پہ لیجاکر مراسم
ناگزیر ادا کرین مگر جب پندرہ
آدمی اوسکے وہان آئے
اور اُوسکے حال سے واقف
ہُوئے تو انہون نے جمدہر اور
تلوارین نکالکر ملوک چند کو تو مار ڈالا
اور میرخان کو زخمی کیا جو دوسری
رات کو مرگیا گرز بردار احدی
جو دروازہ کے باہر پہرہ دے
رہے تھے اُنھون نے جب یہ
حال دیکھا تو تلوارون سے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर था और वहां जागीरों की सरह
द पर तकरार होकर उन के आद
मियों में लड़ाई हो गई राव करन
के आदमियों के पास बंदूकें ज़िया
दा थीं इस से अमर सिंघ के कुछ का
जू राजपूत मारे गये थे और अमर सिं
घ ने यह खबर पाकर अपने आद
मियों को लिखा था कि फिर खे
ड करके राव करन के नोकरों से
लड़ने को जावें राव करन ने जब
यह सुना तो सलाबत खां को लि
खा कि अमर सिंघ के आदमियों
ने पहिले लड़ाई छेड़ी थी सो वह तो
जो होना था सो हो गया मगर अब
फिर उस ने अपने नोकरों को फ़िसा
द करने के वास्ते कहला या है औ
र इस झगड़े का नबेड़ा जब तक
न होगा कि आप दरगाह में अर्ज़ क
रके १ अमीन सरहद निकालने के
वास्ते न ले लोगे और सलाबत खां
ने अर्ज़ करके अमीन ले लिया अजब

की पहुंच गई थी राव करन के मुलाज़मों
के पास बंदूकें बहुत थीं इस
सबब से बहुत कारामदी राजपूत
राव अमर सिंघ के मारे गये और अमर सिंघ
ने यह खबर पाकर अपने आदमियों को
लिखा था कि फिर जमईयत फ़राहम करके
राव करन के नोकरों पर जावें राव
करन ने जो सूबा दकन में तैनात
था यह बात सुनकर सलाबत खान
को लिखा कि अमर सिंघ के नोकर बानी फ़साद
हो गये थे खैर वह तो जो होना था
हो गया अब उस ने फिर अपने
आदमियों को कहला या है कि जमा
हो कर फ़साद करें और अब इस
क़ज़िया का फ़ैसला जब तक कि आप
हुज़ूर में अर्ज़ करके एक
अमीन वास्ते तशख़ीस सरहद के
न लें मुमकिन नहीं है सलाबतखान
ने उस का मतलब बादशाह से
अर्ज़ करके अमीन ले लिया था
अजब नहीं है कि अमर सिंघ ने

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जवान कि जो बादशाह की तरबिय
त से बड़े२कामों के करने लायक़
था और अमर सिंघ जैसा जोधा कि
जो राज पूतों में बहुत असील औरब
हादुर था और बादशाह उस्से उम्मेद
रखते थे कि किसी बड़ी लड़ाई में भा
ई बंदों समेत हमारे काम आकरअप
ना नाम रोशन करेगा ये दोनों यों अ
कारथ मारे गये बादशाह ने सलाब
त खां की नो जवानी पर अफ़सोस
करके इस वारदात का सबब बहु
त दरयाफ़त किया मगर अमरसिंघ
के हमेशा नशा करने और उस्के ऊप
र कुछ दिनों बीमार रहने के सिवाये
और कुछ पता न लगा और यह भीहो
सक्ता है कि जो सबब इस का यहहो
कि अमर सिंघ की जागीर नागौरकी
सरहद बीकानेर से मिली हुई थी
राव अमर सिंघ तो दरगा
ह में हाज़िर था और बीकानेर कारा
व करन दकखन में अपनी नोकरी

ہے صلابت خان جیسا شائستہ
جوان جو بادشاہ کی تربیت سے
خدمات بزرگ کے انجام دینے کے
واسطے مستعد تھا اور امر سنگھ کی مانند جنگجو
جوان کہ جو فرقہ راجپوتوں میں اصالت
اور بسالت کے ساتھ امتیاز رکھتا
تھا اور بادشاہ کو اوسکی طرف سے
یہ گمان تھا کہ کسی بڑی لڑائی میں
معہ اپنی قوم و قبیلہ کے جان نثار
ہوکر باعث اپنی بلند نامی کا ہوگا
دونو ایک آن میں بے سبب جان
سے گذر گئے بادشاہ نے حسن خدمت
و حداثت سن صلابت خان پر افسوس
کرکے ہرچند کہ سبب اس وقوعہ کا تفحص
کیا مگر کوئی امر سوائے دوام ارتکاب
نشہ و بیماری چند روزہ امر سنگھ کے
ظاہر نہوا اور شاید یہ سبب ہو کہ ناگور
اور بیکانیر کی سرحد ملی ہوئی ہے
اور امر سنگھ کے نوکروں اور راؤ کرن سنگھ
والی بیکانیر کے ملازموں میں سرحد
زمین پر تکرار ہوکر نوبت کشت و خون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भी अपने दिल में नहीं कर सक्ता था
तो ख़लील उल्ला ख़ां और बिट्ठल
दास का बेटा अर्जुन गोड· दोनों उ
स्से वाक़िफ होकर अमर सिंघ के
ऊपर दोडे· और बड़ा शोर हुवा तब
बादशाह ने लिखते २ सिर उठाक
र उस तरफ़ नज़र की तो देखा कि
अमर सिंघ अर्जुन गोड· से लड· रहा
है अमर सिंघ ने दो तीन वार कटा
री के अर्जुन पर किये उसने ढाल
पर रोक लिये मगर फिर कटारी फि
सल कर अरजुन की गरदन पर ल
गी तब ख़लील उल्ला ख़ां ने अम
र सिंघ पर तलवार मारी और अर
जुन ने भी हिम्मत करके २ वार त
लवार के किये और इसके साथही
सैय्यद सालार और सात आठ दूसरे
गुर्ज़ बरदार मन सब दारों ने दायेंबा
यें से दोड· कर मारे तलवारों के अमर
सिंघ का काम तमाम कर दिया दैव
गति से सलाबत ख़ां जैसा लायक़।

چونکہ ایسی بے ادبی کہ جسکا کوئی
خیال بھی نہیں کر سکتا تھا بادشاہ
کے حضور میں کی تھی اس لیئے پہلے خلیل اللہ
خان اور ارجن ولد راجہ بٹھل داس
آگاہ ہو کر اوسکے اوپر دوڑے پھر جب شور
غل ہوا تو بادشاہ نے لکھتے لکھتے اوہر
توجہ کی تو دیکھا کہ امر سنگھ ارجن گوڑ سے
لڑ رہا ہے ارجن نے دو تین وار
اوسکے جمدہر کے تو ڈھال پر روک لیئے
تھے اور ایک بار جو جمدہر پہلا تو اوسکا
کچھ زخم ارجن کی گردن پر لگا کہ اتنے
میں خلیل اللہ خان نے راؤ امر سنگھ
کے اوپر تلوار ماری پھر ارجن نے
بھی دلیری کر کے دو وار تلوار کے
امر سنگھ پر کیئے اسکے ساتھ ہی سید سالار
نے سادات بارہ میں سے اور چھ سات
دوسرے گرز بردار منصبداروں نے
میان دلیاں سے دوڑ کر یکبارگی ماری
تلواروں کے امر سنگھ کا کام تمام کر دیا
فعبدہ بازی قضا و قدر سے کہ جسکا
بھید کوئی سوائے خدا کے نہیں جانتا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

خلوت خانے میں کہ جہاں بادشاہ بیراجتے تھے سلام کرانے کو لے گیا راو بانڈ مسل میں اپنی جگہ پر کھڑا ہو گیا اور سلابت خان کی داہنی طرف جا کھڑا ہوا جب بادشاہ شام کی نماز پڑھ کر اپنے ہاتھ سے کسی امیر کے نام حکم لکھنے لگے تو سلابت خان نیچے اتر آیا اور "چار شاخہ شمعدان" کے پاس ۱ آدمی سے کچھ باتیں کر رہا تھا کہ امر کٹاری نکال کر ایک دم سے دوڑا اور اس غافل کی بائیں پسلی پر اس زور سے ماری کہ اسکا وہیں کام تمام ہو گیا جب امر سنگھ سے ایسی بے ادبی کی حرکت بادشاہ کے حضور میں ہوئی کہ جس کا کوئی خیال

جہان بادشاہ ایک[1] باعث سے تشریف رکھتے تھے سلام کرانے کو لے گیا بعد سلام کے راؤ امر سنگھ صف دست چپ میں اپنی جگہ پر جا کر کھڑا ہو گیا اور صلابت خان بطرف دست راست تخت بادشاہ کے کھڑا رہا اس اثنا میں بادشاہ بعد ادائے نماز شام کے کسی بڑے امیر کے نام منشور لکھنے میں مشغول ہو گئے اور صلابت خان کسی کام کے واسطے ایوان سے اتر کر شمعدان چار شاخہ کے پاس کسی سے باتیں کرنے لگا کہ ناگاہ امر سنگھ جمدھر کھینچکر دوڑا اور غفلت کی حالت میں صلابت خان کے سینہ پر ایسا مارا کہ قبضہ تک گھس گیا اور دل پر ضرب پہونچنے سے صلابت خان اسیوقت مر گیا امر سنگھ نے

(۱) بادشاہ ۵ دن سے جہاں آرا بیگم کو لے کر ہوا بدلنے کے لیے شاہزادہ دارا شکوہ کی حویلی پر رہتے تھے جو جمنا کے کنارے پر تھا ۱۲

[1] بادشاہ جہاں آرا بیگم کو تبدیل آب و ہوا کے لیے تاریخ ۲۵ جمادی الاول سے بادشاہزادہ دارا شکوہ کے مکان پر لے آئے تھے جو جمنا کے کنارہ پر تھا ۱۲

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गढ़ की क़िले दारी पर मुक़र्रर किया ॥

शाहज़ादे मुराद को मुलतान जाने की रुख़सत हुई ॥

जेठ सुदी ७ को जहां आराबेगम के तुलादान का दरबार हुआ उसमें राजा बिट्ठल दास गोड़ को ख़िलअत इनायत होकर वतन जाने की रुख़सत मिली ॥

राव अमर सिंघ का मीर बख़्शी सलाबत ख़ां को मारकर ख़ुद भी मर जाना

तफ़सील इस अजीब किस्से की यह है कि अमर सिंघ बीमारी में से कुछ दिन तक दरबार में हाज़िर न हो सका था अब जो सावण सुदी १ बृहस्पत वार को पिछले दिन से दरबार में आया तो सलाबत ख़ां उसको शाहज़ादे दारा शिकोह के

ख़िदमत क़िलेदारी दौलत आबाद पर और सीवाराम वलद बलराम गौड़ को क़िलेदारी आसीर पर मुक़र्रर व मुईन किया -

शाहज़ादा मुराद बख़्श को मुलतान जाने की रुख़सत बाद अताये ख़िलअत फ़ाख़िरा के हुई -

७ - रबीउ़ल सानी को बेगम साहब यानी जहां आरा बेगम के वज़न की जश्न थी उसमें राजा बिट्ठल दास अताये ख़िलअत से मफ़ख़र होकर अपने वतन को रुख़सत हुआ -

राव अमर सिंघ राठौर का मीर बख़्शी सलाबत ख़ां को मारकर ख़ुद भी मारा जाना

बयान इस माजरे अजीब का यह है कि अमर सिंघ बीमारी के सबब से चंद रोज़ दरबार में हाज़िर नहीं हुआ था अब जो आख़िर रोज़ पंजशंबा सलख़ जमादी उलावल को हाज़िर आया तो सलाबत ख़ां मीर बख़्शी उसको शाहज़ादे दारा शिकोह की हवेली पर कि

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

के दरबार में हाज़िर हुआ हटीसिं
घ की जगह मुक़र्रर किया नो सदी
ज़ात और ९०० सवारों का मनसब औ
र राव का ख़िताब देकर रामपुरा भी
जो उसका वतन था जागीर में बख़्शा
हटीसिंघ रावदूदा का बेटा और रा
व चांदा का पोता था ॥

जेठ बदी १३ को शाहज़ादा मु
राद मुलतान से अपनी बहन जहां
आरा बेगम के देखने को आया ॥

जेठ सुदी २ को बादशाहने औरंग
ज़ेब के फ़क़ीर होने के इरादे और उस
की दूसरी हरकतों से नाराज़ होकर
उसको मनसब और दकखन की हकू
मत से दूर किया और मालवे के सूबे
दार ख़ानदोरां को ८ हज़ारी ज़ात ७००
सवारों का मनसब और १ किरोड़ दाम
इनाम देकर मालवे से दकखन जाने
का हुक्म भेजा पृथ्वीराज राठौड़ को
दौलताबाद की क़िलेदारी पर और बू
लराम के बेटे शिवराम गौड़ को आसेर

پوتہ اور روپ سنگھ کا بیٹا تھا اور
بعد وفات راؤ ہٹی سنگھ کے
بامید پرورش درگاہ مین حاضر آیا
تھا عنایت کردی اور ہفصدی
ذات اور ۹۰۰ سوار کا منصب
اور خطاب راؤ کا دیکر پرگنہ رامپورہ
جو ہٹی سنگھ کا وطن تھا اوسکی جاگیر
مین عطا فرمایا۔

۲۷۔ ربیع الاول کو شاہزادہ
مراد بخش ملتان سے اپنی بہن
جہان آرا بیگم کی عیادت کے لئے آیا

غرہ ربیع الثانی کو بادشاہ نے
بسبب ارادہ گوشہ نشینی اور دوسری
حرکات ناملایم اورنگ زیب کے
ناخوش ہوکر اوسکو منصب اور
عہدہ نظامت دکھن سے معزول
کیا اور خاندوران صوبہ دار مالوہ
کو ہفت ہزاری ذات اور ہفت ہزار
سوار کا منصب دیکر ایک کروڑ
دام انعام عطا کرکے دکھن جانے
کا حکم بھیجا اور پرتھی راج راٹھوڑ کو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़ई किकिशन सिंघ राठौड़ का बेटा हरी सिंघ मर गया उस्के कोई बेटा न था इस लिये बादशाह ने उस्के भतीजे रूप सिंघ को खिलअ़त और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर कुछ मनसब भी बढ़ाया और किशन गढ़ जो उस्के चचा का वतन था उस्की जागीर में इनायत फरमाया॥

बैसाख सुदी ६ को औरंग ज़ेब दकखन से आया॥

बैसाख सुदी १० को राजा सूरज सिंघ का बेटा सबल सिंघ जो सूबे गुजरात के मददगारों में तईनात था पांच सदी ज़ात और २०० सवारों के इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १२०० सवारों का मनसबदार होगया॥

जेठ बदी १ को बादशाह ने राव हदी सिंघ के लावलद मरने पर उसके चचा के बेटे रूप सिंघ को जो रूपमुकंद का बेटा और राव चांदा का पोता था और बाद मरने हदी सिंघ

بادشاہ سے عرض ہوئی کہ راجہ سورج سنگہ کے چھوٹے بھائی کشن سنگہ کا بیٹا ہری سنگہ مرگیا اُوسکے کوئی بیٹا نہ تھا اسلئے بادشاہ نے اُوسکے بھتیجے روپ سنگہ کو عطائے خلعت اضافہ منصب و مرحمت اسپ سے معہ زین نقرہ کے سربلند کرکے کشن گڈھ جو اُوسکے چچا کا وطن تھا اُوسکی جاگیر مین مقرر کردیا۔

۵ ربیع الاول کو شاہزادہ اورنگ زیب دکھن سے آیا۔

۹۔ ربیع الاول کو راجہ سورج سنگہ کا بیٹا سبل سنگہ جو کمکیان صوبہ گجرات سے تھا پانصدی ذات اور دو سو سوارون کے اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور بارہ سو سوارون کے منصب کو پہنچا۔

۱۵۔ ربیع الاول کو بادشاہ نے راؤ چاندا کے پوتے اور راؤ دودا کے بیٹے ہٹی سنگہ کے لاولد مرنے کی خبر سنکر اُوسکی جگہہ اُوسکے چچازاد روپ سنگہ کو جو راؤ چاندا کا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रथ्वीराज राठौड़ रामपुरे से और जां
सुपार खां मंदसोर सेरवाने ऊवे ॥
चैतबदी ५ सं॰१७०० को इतवा
रके दिन तड़के ही बादशाही फ़ौजों
ने हल्ला करके वह दीवार गोंडों
से छीन ली और क़िले के नीचे का
हिस्सा फ़तह कर लिया फिरवेदो
नों तोपें भी पहुंच गईं और दम दमें
भी बन गये उधर क़िले के तलावखा
ली होगये जिससे मारू ने माफ़ीमां
ग कर इस बरस के आख़िरी मोहर्र
म अर्थात चैतद्वितीय बदी में ख़ानसे
मिलने को आया ख़ान ने क़िलेपर
चढ़ कर वहां की सब बुर्जों और मो
र्चों को देखा और अपने भाई सला
हउद्दीन को ५०० सवार और ३०० बंदू
कचीयों से क़िले में रख कर बादशा
ह को अर्ज़ी भेजी ॥

दरबारकेहालात

वैसाख बदी १ को दरबार में अ

بندیلہ اپنی جاگیر سے پرتھی راج
راٹھوڑ رامپور سے اور جانسپار خان
مندسور سے روانہ ہوئے۔
بعدہ صبح یکشنبہ ۱۹ ذی الحجہ
کو بادشاہی افواج نے حملہ کرکے
وہ دیوار دشمنوں سے چھین لی
اور قلعہ کا زیرین طبقہ بھی فتح کرلیا
اتنے مین وہ دونون توپین بھی
پہونچگئین اور دمدمے بنگئے اُدھر
قلعہ کے تالاب خالی ہوگئے اسلئے
ماروگونڈ نے پناہ مانگی آخیر محرم
سنہ ۵۴ کو وہ خان سے ملنے کو
آیا خان نے قلعہ پر چڑھکر برج اور
بارہ کو دیکھا اور محمد صلاح اپنے
بھائی کو معہ پانسو سوار اور سات سو
بندوقچی کے وہان رکھ کر مفصل
حقیقت اُسکی درگاہ مین عرض کی

وقایع دربار

۲۳۔ صفر سنہ ۵۴ کو

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मोरचा बनाऊवाया उसको गोंडोंसे
छुड़ालिया गुन्नौर का किलाऊंचे
नीचे चढ़ाव उतार में १ पहाड़ के ऊ
पर १ ही पत्थर का कटाऊवा है औ
र किसी तरफ से उस के ऊपर चढ़ना
मुमकिन नहीं है और किसी जगह
दीवार नहीं बनानी पड़ी है सिर्फ़ १
जगह कुछ ज़रूरत दीवार बनाने की
थी सो वहां संग्राम ने १ मज़बूत दीवा
र बना दी थी गोंड अब बुर्जों और दमदमों
को तोप और बंदूक़ से मज़बूत कि
ये ऊवे थे जिन को रवान दोरां ने ल
ड़ाईसे फतह करना आसान देख
कर बादशाह को अरज़ी लिखी औ
र २ बड़ी तोपें मय कुछ अमीरों के मं
ग वाईं बादशाह ने तोपें तो आगरे के
क़िले से रवाने कीं और मदद के वा
स्ते आस पास के अमीरों को ऊक्मलि
खा जिस पर रशीद खां और कुछ म
नसबदार बुरहानपुर से राजा पहा
ड़ सिंघ बुंदेला अपनी जागीर से ।

دشمنون کے ہاتھ سے چھوڑا لیا
قلعہ گنور دو لیت و بلند زینون
میں ایک پہاڑ کے اوپر سراپا
یک لخت پتھر کا تراشا ہوا ہے اور
کسی طرف سے اوسکے اوپر چڑھنا
ممکن نہین ہے اور کسی جگہہ دیوار
کی حاجت بھی نہین ہے اور جو
ایک جگہہ کچھ ضرورت تھی تو وہان
سنگرام نے ایک مضبوط دیوار بنوا
دی تھی دشمن برج اور بارہ کو
توپ و تفنگ سے مستحکم کئے ہوئے
تھا خان دوران نصرت جنگ
نے لڑائی کے ذریعہ سے اسکی
فتح آسان نہ دیکھکر بادشاہ کو عرضی
لکھی اور دو بڑی توپین معہ کسیقدر
امیرون کے طلب کین بادشاہ
نے قلعہ آگرہ سے دو بڑی توپین
روانہ کین اور مدد کے واسطے کچھ
امیرون کو حکم لکھا چنانچہ رشید خان
انصاری معہ چند منصب دارون
کے برہان پور سے راجہ پہاڑ سنگہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

माल गुज़ारी में ढील करने लगे तब
ख़ान नुसरत जंग ने पिछले साल
के बैसाख में अपने नोकरों, माल
वे के तईनातयों, और कुछ ज़िमींदा
रों के साथ क़िले रायसैन से जंगल२
रवाना हुवा १६ सफर (जेठबदी ३
सं. १७००) को गुन्नोर के घाटे पर
५००० पैदल गोंडों और सात आठ सो
बंदूकचियों को जो रस्ता रोके हुवे थे
शिकिस्त देकर गुन्नोर के पास पहुंच
गया मारू ने डरकर ख़ान के नोकरगो
यन दास राठोड़ और मिरज़ा वाली
को अपना तरफ़दार बनाया और भो
पत को क़ैद से छोड़ कर संग्राम के क
ई मोतबर नोकरों के साथ ख़ान के
पास भेजा ख़ान ने भोपत को नज़र
बंद करके उस्के साथियों को क़ैद क
रदिया क्योंके उसने सुन लिया था
कि भोपत को भगा ले जाने का इरा
दा होरहा है और लश्करे पहाड़ के
ऊपर चढ़कर वहां जो एक पुख़्ता

मेंन तअल्लुक़ करने लगे तब ख़ान
नुसरत जंग सहे कुमकियान सूबे
मालवा अपने नोकरों और कुछ ज़मींदारों
के आख़िर मुहर्रम सन् १०५३ हि. मेंन क़िलहे
रायसेन से बराह जंगल रवाना हुवा
और १६ माह सफ़र को पांच हज़ार पियादे
गोंड़ और सात आठ सो तफ़ंगची को जो रास्ते
रोके हुवे थे क़रीब कुंडल गुन्नोर
के शिकस्त देकर गुन्नोर पहुंच गया मारू
ने ख़ौफ़ खाकर मिरज़ा वाली और
गोबिन्द दास राठोड़ मुलाज़िम ख़ान
को अपना मुतवस्सिल बनाया और भोपत को
क़ैद से रहा करके सहे चंद मुलाज़मान
मोतबर संग्राम के ख़ान के
पास भेजा ख़ान ने भोपत को
नज़रबंद करके उसके हमराहियों
को भी क़ैद कर दिया क्योंकि उस ने
सुन लिया था कि भोपत के भगा
ले जाने का इरादा हो रहा है और
लश्कर पहाड़ के ऊपर चढ़कर वहां जो एक पुख़्ता

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कर पटने में पहुंचे प्रताप एतक़ाद ख़ां के वास्ते भी हाथी लाया था फिर उसने १ लाख रुपया बादशाही ख़ज़ाने में दाख़िल करने का इक़रार किया ज़बरदस्त ख़ां ज़ामिन हुआ एतक़ाद ख़ां ने उस्के वास्ते मनसब की अरज़ी लिखी बादशाह ने प्रताप की ख़ता माफ़ करके हज़ारी ज़ात और १००० सवार का मनसब उस को दिया और रयासत पलामूं की जमा १ किरोड़ दाम की मुक़र्रर की और वह उस्के क़बज़े में बहाल रक्खी ॥

पھر دونون متفق ہوکر پٹنہ مین پہونچے پرتاپ اعتقاد خاں کے واسطے بھی ہاتھی لایا تھا اور وہان اُسنے ایک لاکھ روپیہ خزانہ بادشاہی مین بھی داخل کرنے کا اقرار کیا اور زبردست خان اُوسکا ضامن ہوا اعتقاد خان نے درگاہ معلے مین پرتاپ کے واسطے منصب کی درخواست کی بادشاہ نے پرتاپ کی خطا معاف کرکے اُسکو ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب دیا اور ولایت پلامون کی جمع ایک کروڑ دام کی مقرر کرکے اوسکی جاگیر مین بخشدی -

गुन्नोर के क़िले की फ़तह

संग्राम गौंड ज़मींदार गुन्नोर के मरने पर मारू गौंड जो उस्का ग़ुलाम था उस्के बेटे भोपत को क़ैद करके ख़ुद मालिक बन बैठा और मालगुज़ारी भी बंद कर दी उस्की देखा देखी उस्के पड़ोसी भी

فتح قلعہ گنور

بعد انتقال سنگرام زمیندار گنور کے مارو نام اُوسکا غلام اوس کے خوردسال بیٹے بھوپت کو بیدخل کرکے خود مالک بن بیٹھا اور مالگذاری دینا بند کردیا اوسکی دیکھا دیکھی اوسکے پڑوسی زمیندار بھی ادائے مالواجب

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वह सुलह करके और नज़राना ले
के चलागया और अब तुम से तोमें
मुलाक़ात करताहूं मगर पटने जा
नेका क़ौल नहीं करसकता क्यों
कि मेरे बाप दादों मेंसे कभी कोई
पटने नहीं गयाहै लेकिन ज़बरदस्त
ख़ां ने नहीं माना और उससे बहुत ही
ज़िद एतक़ाद ख़ां के पास पटनेमें
चलने के वास्ते की प्रतापने भीला
चार होकर उससे नुक़सान न पहुंचा
नेका बचन लेकर मुलाक़ात कीऔ
र१ हाथी भी उसको दिया ज़बरदस्त
ख़ां ने एतक़ाद ख़ां को लिख कर
अहद नामां मंगवा दिया और बख़
शी को लिखा कि जहां पहुंचा हो व
हीं ठहर जावे कि मैं भी लौटकर आ
ताहूं ॥

मंगसिर बदी ४ को ज़बरदस
त ख़ां प्रताप को लेकर रवाने हुआ
और मंगसिर बदी ६ को देवकनमें
बख़शी से मिला फिर दोनों मिल

ملاقات کرتا ہون مگر میرے
بزرگوں میں سے جو سردار ہوئے
وہ کبھی پٹنہ مین نہین گئے۔
اس لئے مین پٹنہ جانے کا
اقرار نہین کرسکتا مگر جب
زبردست خان نے اُس سے
بہت ہی اصرار پٹنہ مین چلنے
کے واسطے کیا تو اُسنے اپنی
حفاظت کرنے اور ضرر نہ
پہنچانے کا عہد وپیمان لے کر
زبردست خان سے ملاقات
کی اور ایک ہاتھی اُسکو دیا
اور پٹنہ چلنے کا اقرار کیا تب
زبردست خان نے اعتقاد خان
کو لکھ کر عہدنامہ منگوا دیا اور بخشی
کو لکھا کہ جہان پہنچا ہو وہان ٹھہر
جاوے کہ مین بھی لوٹ کر آتا ہون۔
۱۷۔ رمضان کو زبردست خان
معہ پرتاپ کے روانہ ہوا اور
تاریخ ۲۳۔ رمضان کو دیوکن مین
بخشی عبدالله خان نجم ثانی سے ملا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रात को भाग गया ज़बरदस्त ख़ां
इस हाल से वाकिफ़ होकर।
धरनी धर उज्जैन या और अपने नो
करों को देव कन के क़िले में छो
ड़ के पलामूं कोर वाने हुआ और
बड़ी मुशकिलों से जंगलों में होता
हुआ दुशमनों से लड़ता भिड़ता
मान गढ़ में पहुंचा तब तो प्रताप ने
डर कर लिखा कि बंदगी करने
— को तैयार हूं हुक्म हो तो हाज़िर
हो जाऊं ज़बर दस्त ख़ां ने पलामूं से
३ कोस गांव बारी में ठहर कर ज
वाब भेजा कि तेरा आना इस सूरत
में बहतर है कि मेरे साथ एत क़ाद
ख़ां के पास चले नहीं तो पटने का
बख़शी आता है उस वक्त तू अपना
किया पायेगा उसने कहलाया कि
शायस्ते ख़ां ने बहुत सी फौज से कि
ले के नीचे आकर बड़ी मेहनत औ
र कोशिश मेरी हाज़िरी के वास्ते की
थी मगर मैं उसके पास नहीं गया तब

जब यह माजरा सुना तो क़लाह दीकन अपने
नोकरों और धरनी धरा उज्जैनिया को
सोंपा और आप पलामों को रवाना
हुआ बदशवारी जंगल से गुज़रा और
दुशमनों को हटाता हुआ मान गढ़ में
पहुंचा प्रताप ने डर कर लिखा
कि मैं इताअत करने को तैयार
हूं अगर कहो तो हाज़िर हो जाऊं
ज़बरदस्त ख़ां ने पलामों
से ३ कोस मौज़ा बारी
में क़ियाम करके जवाब भेजा कि
तेरा आना इस सूरत में बहतर
है कि मेरे साथ एतक़ाद ख़ां
के पास चले वरना पटने का बख़शी
आता है उस वक्त तू अपना
किया पायेगा उसने जवाब दिया कि शाइस्ता ख़ां
ने हर चंद क़लाह के नीचे आकर हद
से ज़ियादा जद्दोजहद की थी मगर बग़ैर
इस अमर के कि मैं उसको जाकर
देखूं सुलह करके और पेशकश
ले कर चला गया और अब मैं तुम से

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और वह छापा मारने के इरादे में
है इसपर ज़बरदस्त ख़ांने कुछ
फौज भेज कर उस को भगा दि
या जब एतक़ाद ख़ां ने यह हा
ल सुना तो अबदुल्ला ख़ांबख़
शी और दरिया राय को ज़बरद
स्त ख़ां की मदद पर भेजा ॥
कातक सुदी ५ को तेज
राय पलामूं के किले से निकल
कर शिकार खेलने को गया पीछे
से उसके वकील के बेटों सूरतसे
न और सबल सैन ने दूसरे किले
वालों से मिल कर प्रताप को क़ैद
से छोड़ दिया जिससे प्रताप का
अमल क़िले में होगया यह सुन
कर बहुत से आदमी तेजराय के
प्रताप के पास चले आये और ते
जराय जंगल में चला गया मद
न सिंघ जो फ़ौज समेत बादशा
ही अमीरों का मुक़ाबिला कर
रहा था इस ख़बर के सुनते ही

بھگا دیا ۔
اعتقاد خان نے جب یہ
ماجرا سنا تو بخشی عبداللہ خان بخم
ثانی کو معہ دریا رائے کے
اوس کی مدد پر بھیجا ۔
۳ ۔ رمضان کو تیج رائے
شکار کے واسطے قلعہ پلامون
سے نکلا اوسکے وکیل بدن سنگھ
کے بیٹون صورت سین اور
سبل سین نے باتفاق
دیگر اہل قلعہ کے پرتاپ
سے سازش کرکے اس کو
قید سے چھوڑ دیا قلعہ مین
پرتاپ کا عمل ہوگیا یہ حال
سنکر تیج رائے کے بہت
سے آدمی اسکے پاس چلے
آئے اور تیج رائے جنگل
مین چلا گیا اوسکا وکیل
بدن سنگھ جو بادشاہی امرا
کا مقابلہ کر رہا تھا یہ خبر سنکر
رات کو بھاگ گیا زبردست خان

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि जो फ़ौज भेजो तो देवकन के क़िले में जो पलामूं का बड़ा थाना है अमल करा दूं ख़ान ने ज़बरदस्त ख़ां को भेजा वह कातिक सुदी २ सं. १७०० को क़िले के पास पहुंचा दरिया राय आकर उससे मिला देवकन के क़िलेदार भवाल और चंपत भी साथ थे उसने वह क़िला ज़बरदस्त ख़ां को सौंप दिया ज़बरदस्त ख़ांने उसको तो रुस्तम ख़ां के पास भेजा और आप वहां रहकर लोगों को राज़ी करने, जंगल काटने और क़िले को मज़बूत करने में लगा ॥

आसोज सुदी १० को ख़ान ने सुना कि तेजराय ने अपने वकील मदन सिंघ ठकराई को ५०० सवार और ७००० पैदलों से गांव बावली जून की तरफ़ जो देवकन से ५ कोस दकखन में है भेजा है

بڑا تھانہ پلاموں کا ہے عمل کرا دوں خان نے زبردست خاں کو بھیجا وہ غرہ شعبان سنہ ۱۰۵۳ کو اُس قلعہ کے پاس پہنچا دریا رائے نے معہ اپنے بیٹوں اور قلعداروں بھوال و چنپت کے اُس سے ملاقات کی اور قلعہ سونپ دیا زبردست خان نے دریا رائے کو اعتقاد خان کے پاس بھیجدیا اور آپ وہاں رہکر لوگوں کو مطیع کرنے جنگل کٹوانے اور قلعہ کو مضبوط کرنے مین مشغول ہُوا۔

۱۱۔ شعبان کو خان نے سُنا کہ تیج رائے نے اپنے وکیل۔ مدن سنگھ کو معہ ۵۰۰ سوار اور سات ہزار پیدلوں کے موضع باولی جون کی طرف جو دیوگن سے پانچ کوس دکھن مین ہے بھیجا اور وہ ارادہ شبخون کا کر رہا ہے اس لئے خان نے کچھ فوج بھیجکر اُس کو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

राज़ कर दिया जिससे उस्के च
चा दरिया राय और तेजराय बि
हार के सूबेदार एतक़ाद ख़ांके
पास आये ख़ान ने उनको तसल
ली दी जिसपर उन्हों ने इक़रार
किया कि हम प्रताप को पकड़
लावेंगे और जाकर उसको क़ैदक
र लिया और तेजराय उसकी म
का सरदार होगया मगर जबख़ा
न ने ख़बर पाकर उनको लिखा
कि प्रताप को यहां हाज़िर करो
तो तेजराय ने अपने वकील को
भेजकर उज़र किया इस तरह
प्रताप बहुत दिनों उनकी क़ै
द में रहा फिर दरिया राय क़ौम
चेरू के दूसरे सरदार जो तेजराय
को अपना सरदार बनाया चाह
ते थे दरिया राय से बाग़ी होगये
एतक़ाद ख़ां ने उसको दिलासा
देकर बंदगी पर राज़ी किया इस
पर दरिया राय ने कहला भेजा

और

चचा दریا رائے اور تیج رائے اعتقاد خان
صوبہ دار بہار کے پاس آئے
خان نے انکو دلاسا دیکر رکھ لیا
جس سے انہون نے کہا کہ ہم
پرتاپ کو قید کر لاینگے اور جاکر
اسکو قید کر لیا پھر تیج رائے اس
قوم کا سردار ہو گیا مگر خان نے
اس بات سے آگاہ ہو کر اسکو لکھا
کہ پرتاپ کو یہان بھیجدو تو اسنے
اپنے وکیل کو بھیجکر چند در چند
عذرات غیر مسموع تحریر کئے
پرتاپ ایک عرصہ تک انکی
قید مین رہا۔
بعدہ تیج رائے کے بڑے
بھائی دریا رائے اور دوسرے
عمائد قوم چیرو سے جو تیجرائے کو
سردار رکھا چاہتے تھے مخالفت
ہوگئی اعتقاد خان نے انکو دلاسا
دیکر اطاعت پر راضی کیا دریا رائے
نے خان سے کہلا بھیجا کہ اگر
فوج بھیجو تو قلعہ دیوگن مین جو

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कर काबुल के सूबे में तईनात किया ॥

बैसाख बदी १४ को रातके वक्त बादशाह की बड़ी बेटी जहां आरा बेगमके कपड़ों में आग लग जानेसे जल गई बादशाह ने ३ दिन तक ५००० मोहर और ५००० रोज़ खैरात कियेफिर १ महीने तक २००० रोज़ बांटे और दूसरे महीने से हर रोज़ १००० खैरात करनेका हुक्म फ़रमाया और दीवानी के दयों को छोड़ कर ८ लाख रुपया एनुलमाल" से उनको बख़्शिश दिया और मदद मुआश (पुन्यार्थ) की जमां जो थोड़े दिनों से सनदों की तहक़ीक़ वग़ैरा के वास्ते अटकाई थी वह पीछे दिलवादी॰

पलामूं

पलामूं के ज़िमींदार प्रताप उज्जैनये ने अपनी क़ौम को ना

اس لئے راجہ کو قلعداری قلات متعلقہ قندھار سے بدل کر صوبہ کابل کے ملکیون مین مقرر کیا۔

۲۷۔ محرم کو وقت شب بادشاہ کی بڑی بیٹی جہان آرا بیگم کپڑون مین آگ لگجانے سے جل گئی۔ بادشاہ نے تین دن تک ہر روز پانچہزار مہر اور پانچہزار روپیہ خیرات کئے پھر مہینے بھر تک دو ہزار روپیہ روز خیرات ہوئے دوسرے مہینے سے ہزار روپیہ روز خیرات کرنے کا حکم ہوا اور دیوانی قیدیون کو آزاد کرکے سات لاکھ روپیہ انکو عین المال سے بخشدیا اور مدد معاش والون کی جمع جو کچھ دنون سے واسطے تحقیق اسناد وغیرہ کے روکی ہوئی تھی وہ انکو واپس دیدی

پلامون

پلامون کے زمیندار پرتاپ نے اپنی قوم کو ناراض کر دیا اسکو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस साल में पिछले साल से ज़्यादा अकसर बड़े·२ आदमी ईरान तूरान अरब व काशग़र वग़ैरा से नोकरी के वास्ते हिन्दुस्तान में आये और जैसा कि मा सूल था सब अपने २ दरजों के मा फ़िक़ नोकर होगये आदिल ख़ां और क़ुतब शाह के नज़राने भी दस्तूर के माफ़िक़ आये॥

१८ वांबरस

प्रथम चैत सुदी ३ संबत १७०१ से चैत सुदी २ सं· १७०२ तक ॥ ॥

पहिले चैत की ३ को बाद शाह ने सफ़दर ख़ां सूबेदार क़ंधार की शिकायत सुनकर उस को तो मोक़ूफ़ किया और उसकी जग ह पंजाब के सूबेदार सईद ख़ां को भेजा उससे और राजा जगत सिंघ से नाराज़ीथी इस लिये राजा को क़िलात की क़िलेदारी से बदल

اس سالمین اکثر نامی گرامی اشخاص ایران توران عرب اور کاشغر وغیرہ کی نوکری کے واسطے سالہائے دیگر سے زیادہ ہندوستان مین آئے اور بادشاہ نے حسب معمول سب کو علی قدر مراتب ملازم رکھ لیا۔ عادل خان اور قطب الملک کی پیشکشیں بھی بدستور بیجاپور اور گولکنڈہ سے آئین ۔

اٹھارہوان برس

سنہ ۱۰۵۴

یکم مارچ سنہ ۱۶۴۴ سے ۱۷ فروری سنہ ۱۶۴۵ تک

غرہ محرم کو بادشاہ نے صفدر خان صوبہ دار قندہار کی شکایت سنکر اسکو معزول کیا اور اسکی جگہہ سعید خان ظفر جنگ صوبہ دار پنجاب کو بھیجا چونکہ اوسکے اور راجہ جگت سنگھ کے درمیان کدورت تھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नायत करके मनसब भी उसका पांच सदी ज़ात और ५०० सवारों के इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारों का कर दिया॥

पोस सुदी ३ को नाहर सोलंखी ने २ हाथी नज़र किया॥

माह बदी २ को बादशाह आगरे में पहुंचे॥

माह सुदी ६ को तुलादान के दरबार में सुजान सिंघ सीसोदिया को हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का मनसब इनायत हुआ

राजा बदन सिंघ भदोरिया को हाथी इनायत हुआ॥

फागण सुदी ६ को आगरे में हैज़ा शुरू हुवा और बादशाह शिकार के वास्ते सोकर की तरफ़ चले गये॥

चैत बदी १३ को बादशाह वापिस आये और फिर चले गये क्योंके हैज़ा अभी बाक़ी था॥

सवारे मनसब हज़ारी ज़ात اور ہزار سوار پر پہنچا کر راجگی کا خطاب عنایت کیا اور گھوڑا بھی مرحمت فرمایا۔

غرہ شوال کو ناہر سولنکھی نے ایک ہاتھی پیشکش کیا

۵ شوال کو بادشاہ آگرہ مین پہونچے۔

۸۔ ذیقعدہ کو جشن وزن شمسی تھا جسمین سجان سنگھ سیسودیہ کو ہزاری ذات اور چار سو سوار کا منصب عطا ہوا۔

راجہ بدن سنگھ بھدوریہ کو ہاتھی عنایت ہوا۔

۷۔ ذی الحجہ کو آگرہ مین وبا شروع ہوئی جس سے بادشاہ سیر اور شکار کے لئے سوکر کی طرف تشریف لے گئے۔

۲۶۔ ذی الحجہ کو بادشاہ آگرہ مین واپس آئے اور پھر چلے گئے کیونکہ ہیضہ ابھی باقی تھا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मीनाकार साज़ के २ घोड़े·१ अर
बी सुनहरी ज़ीन का और दूस
रा इराक़ी सुनहरी ज़ीन का भे
जा गया ॥

पोसबदी १० को बादशाह की
सवारी इलाक़े मालपुरे में पहुंची
यह राजा बिट्ठल दास की जागीर
में था राजा ने १ हाथी और १ हयनी
नज़र की बादशाह ने हयनी पसं
द की ॥

पोस सुदी २ को बाड़ी में डेरे
डंडे वहां राजा किशन सिंघ भदो
रिया के मरने की अर्ज़ हुई उसके
कोई लड़का सिवाय १ छोकरी के
बेटे के न था और बाह्मण लोग ए
से लड़के को ग़ुलाम के माफ़िक
रखते हैं और उसके साथ खाना
नहीं खाते हैं इस लिये बादशा
ह ने राजा किशन सिंघ के चचा
के पोते राय बदन सिंघ को ख़ि
लअत और राजा का ख़िताब दु

भेजे गये अरबी घोड़ा
मअ ज़ीन मुल्ला के था और
इराक़ी की ज़ीन मुल्ला
थी +

२४ - रमज़ान को बादशाह
की सवारी मालपूरा वाक़ेअ जागीर राजा
बिट्ठल दास में पहुंची उसने एक
हाथी और एक हथनी पेशकश की
बादशाह ने हथनी क़बूल करके
रखली -

सलख रमज़ान को मक़ाम बाड़ी में
बादशाह से अर्ज़ हुई कि राजा
किशन सिंघ बहादुर मर गया उसके
एक लड़का छोकरी से था और
ब्राह्मन जो हिन्दुओं के मुक़द्दा
में छोकरी की लड़की को मिस्ल ग़ुलाम
के रखते हैं और उसके साथ
खाना नहीं खाते हैं इसलिये
बादशाह ने उसके चचा के पोते
बदन सिंघ को ख़िलअत
इज़ाफ़ा पांसदी ज़ात व पांसो

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का अजमेर से आगरे को कूंच हुआ राजा जय सिंघ और राजा जसवंत सिंघ को खासे खिलअत और वतन जाने की रुखसत मिली राजा जय सिंघ के बेटे रामसिंघ और कीरत सिंघ भी घोड़े और सिर पांव पाकर अपने बाप के साथ रुखसत हुवे ॥

पोस बदी २ को राना जगत सिंघ के बेटे राज कंवर को खिलअत तलवार और ढाल ॥ ॥ ॥ सोने के मीना कार साज़ के हाथी घोड़े और कुछ जड़ाऊ ज़ेवर जो राजपूत पहना करते हैं इनायत होकर वतन जाने की इजाज़त हुई और उसके बाप के २ बड़े राजपूतों को घोड़ा खिलअत और ८ दूसरे आदमियों को खिलअत इनायत हुवे और कंवर के हाथ राना के वास्ते मोतियों की माला ढाल तलवार सुनहरी

बादशाह का कूच आगरे की तरफ हुआ राजा जसवंत सिंघ राजा जे सिंघ खिलअत खासे से नवाज़िश पाकर अपने अपने वतनों को रुखसत हुवे राजा जे सिंघ के बेटे राम सिंघ और कीरत सिंघ भी खिलअत और इस से सरफराज़ होकर अपने बाप के हमराह गये ॥

१६ - रमज़ान को राना जगत सिंघ के बेटे राज कंवर को खिलअत शमशीर सपर ویراق طلائی मीनाकार اسپ و فیل اور कुछ जड़ाऊ ज़ेवर जो राजपूत पहनते हैं बादशाह ने इनायत करके रुखसत किया उसके बाप के दो बड़े राजपूतों को खिलअत और घोड़े और २८ दूसरे आदमियों को खिलअत मरहमत हुवे और राना जगत सिंघ के वास्ते मोतियों की माला ढाल तलवार और ویراق طلائی मीनाकार और दो घोड़े अरबी और अराकी राज कंवर के हाथ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शाह अजमेर के दौलतखानेमें जो आना सागर तलाव के ऊप रहै दरिवल डवे और ख़ाजे साहिब की ज़ियारत करके १०००) वहां के ख़ादिमों और ग़रीबों को तक़सीम फ़रमाया॥

राजा जसवंत सिंघ ने अपने वतन से हाज़िर होकर मुजरा किया॥

इसी दिन राजा जय सिंघ ने अपना निशान दिखलाया ५००) सवार गिने गये॥

मंगसिर सुदी १३ को बादशाह पिछले दिन से फिर ख़्वाजासाहिब की दरगाह में गये और हुक्म दिया कि तांबे की बड़ी देग में जो जहांगीर बादशाह चढाई हुई है ख़ासा शिकार की नील गायों का गोशत और चांवल पकवा कर ग़रीबों को बांट देवें १५० मण गोशत चांवल घी और दूसरा मसाला उस देग में पका॥

पोस बदी १ को बादशाह

के कनारे पर वाक़ए है दाख़ल हुए - और फिर ख़्वाजा साहब की ज़ियारत करके दसहज़ार रुपैया वहां के ख़ादमों और मसकीनों को तक़सीम फ़रमाये -

राजा जसवंत सिंघ ने अपने वतन से हाज़िर होकर मुजरा किया -

उसी दिन राजा जे सिंघ ने अपना निशान दिखलाया पांचहज़ार सवार गिने गये -

१४ - रमज़ान को पिछले दिन से बादशाह ने ख़्वाजा साहब की दरगाह मेंं जाकर हुक्म दिया कि तांबे की बड़ी देग जो जहांगीर बादशाह की चढ़ाई हुई है ख़ासा शिकार की नीलगायों का गोशत और चांवल पकवा कर ग़रीबों को बांट देवें १५० मण गोशत चांवल घी और दूसरा मसाला उस देग में पकाया -

१५ - रमज़ान को अजमेर से

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जगत सिंघ का बड़ा बेटे राजकुं
वर ने हाज़िर होकर १ हाथीन
ज़र किया बादशाह ने उस को
खिल्लअत जड़ाऊ सरपेच जड़ा
ऊ जमधर तप चाक़ घोड़ा सोने
की ज़ीन का इनायत फ़रमाया
बादशाह नामे में लिखा
है जब बादशाह राना अमरसिं
घ की मोहिम ख़तम करके अ
पने बाप जहांगीर बादशाह के
साथ कशमीर की सैर को गये
थे तो राणा जगत सिंघ सवारी के
साथ था इसी तरह दक्खन की
हरेक मोहिम में बादशाह के
साथ रहा था और अब इस सफ़
र में उसने अपने बड़े बेटे को
जो राठोड़ों के सिवाय जैसा कि
लिखा जा चुका है और सबरा
जपूतों में बाप की जगह बैठता
है और जिसको यह लोग टीका
ई कहते हैं अपनी अवजी में भे
जा ॥

मंगसिर सुदी ६ को बाद

پیشکش کیا بادشاہ نے اوسکو
خلعت فاخرہ سرپیچ مرصع جمدہر
مرصع اور اسپ تپچاق معہ زین
طلا کے عنایت فرمایا +

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے
کہ جب بادشاہ ایام شاہزادگی مین
بعد انصرام مہم رانا امرسنگھ کے اپنے
باپ جہانگیر بادشاہ کے ساتھ کشمیر کو
گئے تھے تو رانا جگت سنگھ ہمرکاب
تہا اور دکہن کی ہر ایک مہم مین
جب جب بادشاہ معہ فوج کے
تشریف لے گئے تو بہی رانا
جگت سنگھ معہ ایک ہزار سوار
کے سواری مین حاضر رہا اور اس
سفر مین اُسنے اپنے بڑے بیٹے کو
بجاے خود بہیجا جو قوم راجپوت مین
سواے راٹھوڑون کے مستحق اور
مخصوص جانشینی ہوتا ہے جیسا کہ
پہلے لکھا جا چکا ہے اور جس کو یہ
لوگ ٹیکائی کہتے ہین جسکے معنی
فرزند جانشین کے ہین +

۸ - رمضان کو بادشاہ
دولتخانہ اجمیر مین جو آنا ساگر تالاب

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दूसरे दिन ज़ीनत उल निसा बेगम पैदा हुई॥

कातिक सुदी ६ को रायरायां ने १ हाथी नज़र किया उसके दिल में बहुत दिन से काशी सेवन की लोलगर ही थी इस लिये बादशाह ने उसको रुख़सत दी॥

मंगसिर बदी ३ को इतवार की रात को बादशाह आगरे से अजमेर की ज़ियारत के वास्ते रवाने हुवे॥

मंगसिर सुदी २ को चाटसू के पास राजा जयसिंघ ने अपने बेटों समेत वतन से हाज़िर होकर सलाम किया वहां से उसका वतन पास था इस लिये उसने तीसरे दिन मंगसिर सुदी ४ को १ हाथी और ६ घोडे नज़र किये॥

मंगसिर सुदी ८ को जोगी तलाव पर डेरे हुये यहां राना

بیگم پیدا ہوئی۔

۸۔ شعبان کو رائے رایان نے ایک ہاتھی نذر کیا اُس کے دلمین بہت دنون سے بنارس مین گوشہ نشینی کی آرزو تھی اس لئے بادشاہ نے اُسکو وہان جانے کی اجازت دی

شب دوشنبہ ۱۸۔ شعبان کو بادشاہ آگرہ سے زیارت کے واسطے اجمیر کو روانہ ہوئے۔

غرہ رمضان کو حوالی پرگنہ چاٹسو مین راجہ جے سنگہ نے معہ اپنے بیٹون کے وطن سے آکر دولت ملازمت حاصل کی۔

۳ رمضان کو راجہ جے سنگہ نے بوجہ قرب وطن کے نو گھوڑے اور ایک ہاتھی نذر کیا۔

۷۔ رمضان کو بادشاہ کے ڈیرے تالاب جوگی پر ہوئے وہان رانا جگت سنگہ کے بڑے بیٹے راج کنور نے حاضر ہوکر ایک ہاتھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दाराशिकोह के लड़के मुमताज़ शिकोह का मुंह देखने को उस की हवेली पर गये शाहज़ादे ने पग मंहेंभौर नज़र निछावर करके किस्म २ के जवाहर पेशकश किये जिनमें से १ लाख रुपये का जवाहर बादशाह ने क़बूल किया और मुमताज़ शिकोह को १ माला मोतियों की मुंहदिखाई में दी जिसमें कई लालमी लगे थे शाहजादे ने बादशाह के हुक्म से कई अमीरों को ख़िलअत दिये जिनमें १ ख़िलअत फरज़ी समेत राजा बिट्ठलदास गोड़ को भी मिला ॥

कातिक बदी ११ को राव शत्रूसाल को १ ख़ासा हाथी इनायत हुआ ॥

कातिक सुदी १ को शाहज़ादे औरंगज़ेब का दूसरा बेटा मोहम्मद मोअज़्ज़म पैदा हुवा और

شاہ بلند اقبال دارا شکوہ کے بیٹے ممتاز شکوہ کا موہنہ دیکھنے کے لئے جو نیا پیدا ہوا تھا شاہ موصوف کی حویلی پر گئے شاہ نے بعد ادائے مراسم پا انداز اور نثار کے اصناف جواہر اور اقسام نفائس پیشکش کئے اُنمین سے ایک لاکھ روپیہ کا متاع بادشاہ نے پسند کرکے قبول کیا اور ممتاز شکوہ کو رونمائی مین ایک موتیون کا ہار جس مین کئی لعل بھی لگے تھے عنایت فرمایا شاہ بلند اقبال نے بادشاہ کے حکم سے کئی امیرون کو خلعت دئے از انجملہ راجہ بیٹھل داس کو بھی ایک خلعت معہ فرجی کے ملا تھا۔

۲۴- رجب کو راؤ شترسال کو ایک فیل حلقہ خاصہ سے عنایت ہوا +

۳۰- رجب کو شاہزادہ اورنگ زیب کا دوسرا بیٹا محمد معظم پیدا ہوا- اور دوسرے دن زینت النسا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हुआया और इस रोज़े की इमारत (जिसको अब ताज गंज कहतेहैं) इस साल में ५० लाख रुपये की लागत से तैयार होगई जो १२ बरस से बनरही थी इस्के ख़रच के वास्ते १ लाख रुपये की आमदनी के गांव दिये गये थे और २ लाख रुपये सालाना भाडे· केआते थे ॥

फागण बदी ९ को राजाबिठलदास को १ खासा हाथी इनायत हुआ ॥

१७ वां बरस

चैत सुदी २ सं· १७०० से प्रथम चैत सुदी २ सं· १७०१ तक

जेठ सुदी ४ को राजा बिठलदास को ख़ासा घोड़ा सोने की ज़ीन का इनायत हुआ

भादों सुदी १४ को बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअ़त ख़ासा इनायत करके वतन जाने की रुख़सत दी ॥

असोज बदी १२ को बादशाह

ताज गंज कहते हैं اس سال میں بارہ برس بعد پچاس لاکھ روپیہ کی لاگت سے تیار ہوگئی جسکے خرچ کے واسطے ایک لاکھ روپیہ کا علاقہ معہ کرایہ دو لاکھ روپیہ سالانہ کے وقف کیا گیا تھا

۲۳- ذیقعدہ کو راجہ بیٹھل داس کو ہاتھی حلقہ خاصہ سے عنایت ہوا-

سترھوان برس

سنہ ۱۰۵۳ھ

۱۲- مارچ سنہ ۱۶۴۳ء سے ۳۱ مارچ سنہ ۱۶۴۴ء تک

۱۸- صفر راجہ بیٹھل داس کو گھوڑا طویلہ خاصہ سے معہ زین مطلا کے عنایت ہوا-

۱۲- جمادی الثانی کو جشن وزن قمری میں راجہ جسونت سنگھ کو خلعت خاصہ عنایت ہوا اور وطن جانے کی رخصت ملی-

۲۵- جمادی الثانی کو بادشاہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हज़ारी ज़ात और ७००० सवारों का मनसब जिनमें ५००० सवार दो अस्पा और ती अस्पा थे और अमीर उल उमरा का ख़िताब इनायत हुआ १२ किरोड़ दाम की तनख़ाह मुक़र्रर हुई जिसके ३ लाख रुपये सालाना होते थे ११ किरोड़ दाम तो मनसब की तलब थी और १ किरोड़ दाम इनाम के थे आसिफ़ ख़ां के पीछे यह आख़िरी मनसब अमीरों के वास्ते थे ॥

माह सुदी २ को तुलादान के दरबार में राजा बिठ्ठलदास का मनसब हज़ारी ज़ात के इज़ाफ़े से पांच हज़ारी ३००० सवारों का हो गया ॥

फागण बदी ३ को बादशाह ने मुमताज़-उल ज़मानी बेगम (ताजबीबी) की क़बर पर सोने के कटहरे की जगह संगमरमर का कटहरा लगाया जो १० बरस में ५०००) की लागत से तैयार

حاضر آیا تھا منصب ہفت ہزاری ہفت ہزار سوار کا معہ خطاب امیر الامرا کے عنایت ہوا منجملہ ہفت ہزار سوارون کے پانچہزار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے اور تنخواہ بارہ کروڑ دام کی مقرر ہوئی جسکے ۳۰ لاکھ روپیہ سالانہ ہوتے تھے گیارہ کروڑ دام تو منصب کی طلب تھی اور ایک کروڑ دام انعام کے تھے آصف خان کے بعد یہ آخری منصب امرا کے واسطے تھا۔

غرہ ذیقعدہ روز جشن وزن شمسی تاریخ ۳ بہمن کو راجہ بٹھل داس کو ہزاری ذات کے اضافہ سے پانچہزاری ذات اور تین ہزار سوار کے منصب کو پہنچا۔

۱۷۔ ذیقعدہ کو بادشاہ نے ممتاز الزمانی بیگم کی تربت پر سنگ مرمر کا مجمر بجائے مجمر طلا کے نصب کرایا جو دس برس میں پچاس ہزار روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا اور اس روضہ کی عمارت جسکو اب روضہ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हाल जो देखा था अरज़ किया ॥

मंगसिर सुदी १५ को गिर धर दास गोड़ असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसबदार होगया ॥

पोस बदी ६ को सहरंद के दौलत खाने में मुक़ाम हुआ जहां सरकार सहरंद का दीवान अमीन और फ़ौजदार राय टोडर मल उमदा काम करने से असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार दो अस्पा और तिअस्पा का मनसबदार होगया ॥

पोस सुदी १५ को बादशाह ने दिल्ली में पहुंचकर क़िले की देखा जो बन रहा था ॥

माह बदी १० को बादशाह आगरे में दाख़िल हुवे आगरे के क़िलेदार राजा बिट्ठलदास ने हाज़िर होकर मुजरा किया ॥

अली मर्दान ख़ां को ७

(گانو) واہن مین حاضر ہوا اور جو کیفیت دشواری اور استواری قلعہ تارا گڈہ کی سمجھی تھی وہ بادشاہ سے عرض کی -

۱۴- رمضان کو گردہر داس گوڑ کو اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا منصب عنایت ہوا -

۲۰ رمضان کو دولتخانہ سہرند مین بادشاہ نے رائے ٹوڈرمل دیوان و امین و فوجدار سرکار سہرند کے حسن خدمت سے خوش ہوکر اسکو اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ کا منصب عنایت فرمایا -

۱۴- شوال کو بادشاہ کی سواری دہلی مین پہونچی اسوقت قلعہ دہلی (لال قلعہ) تعمیر ہو رہا تھا

۲۴- شوال کو بادشاہ دارالخلافہ اکبرآباد مین داخل ہوئے راجہ بٹھل داس جو قلعدار تھا حاضر خدمت ہوکر آداب بجالایا -

علیمردان خان ناظم کابل کو جو حسب الحکم پیشاور سے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसबाग़ और महल में खर्च हुवे थे और १ लाख रुपया नहर में पहिले लगा था और १ लाख अब लगा ॥

कातक सुदी ३० को राव शत्रू साल हाडा हाज़िर हुआ ॥

मंगसिर बदी ५ को बादशाह लाहोर से आगरे को लौटे ॥

मंगसिर बदी ६ को ख़्वाजा शमसुद्दीन की सराय में राजा जयसिंघ को ख़ासा ख़िलअत इनायत होकर घर जाने की रुख़सत मिली ॥

मंगसिर सुदी २ को शाहज़ादे दाराशिकोह को हुक्म हुआ कि नूरपुर और तारागढ़ वग़ैरा को जो पहाड़ी इलाक़े राजा जगतसिंघ के हैं जाकर देखे शाहज़ादा उसको देखकर गांव बाहन में बादशाह के पास हाज़िर हुआ और रस्ते की मुश्किलों और तारागढ़ की मज़बूती का

मरतबा सैर बाग़ को गये जो लाहोर मेंन नहर के किनारे पर तैयार हो गया था इस बादशाही बाग़ मेंन संगमरमर की इमारतेंन भी जा बजा तैयार हो गईन थीन छ लाख रुपैया इसकी तैयारी मेंन सर्फ़ हुआ था और एक लाख रुपैया सिवाये एक लाख सबक़ के नहर मेंन लगा था -

८ - शाबान को राव शत्रुसाल हाडा दरगाह मेंन हाज़िर हुआ

१८ शाबान को बादशाह लाहोर से आगरे को रवाना हुये

२२ शाबान को ख़्वाजा शमसुद्दीन की सराय मेंन राजा जयसिंघ को ख़ासा ख़िलअत इनायत होकर घर जाने की रुख़सत मिली -

ग़ुर्रा रमज़ान को बादशाहज़ादे दाराशिकोह को हुक्म हुआ कि नूरपुर व तारागढ़ वग़ैरा मुहालात कोहस्तान मुतअल्लिक़ राजा जगतसिंघ मेंन जाकर वहां के क़िलाजात को देखे चुनांचे बादशाहज़ादे ६ रमज़ान को बअद मुलाहिज़ा क़िलाजात मज़कूरा बादशाह के पास मौजूद

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और जालोर का परगना भी उस
के वतनबनानेके वास्ते इनायतहुआ
आसोजबदी ३ को शाहज़ादा दारा
शिकोह लाहोरमेंपहुंचकर बादशाहके
पासहाजिरहुआ और बादशाहने उसको शा
हबुलंदइक़बालका ख़िताब दिया उस
केसाथ जो अमीर गयेथे वे भीसबआगये
बादशाहने ५०००० कशमीरके ज़मी
दारोंको इनायतकिया ॥
असोजबदी ७ को रामसिंघराठोड़ अ
सलऔर इज़ाफ़ेसे डेढ़हज़ारी ज़ात और ८०० सवारोंका मनसब दारहुवा
आसोजसुदी ६ को रायमुकंददासदी
वान "बयूतात" (कारखानों) का हुआ ॥
कातिकबदी ८ को राजा जयसिंघऔ
रराव अमरसिंघ राठोड़ कंधारसे आकर
हाज़िरहुवे ॥
कातकसुदी ६ को बादशाह पहिली
दफे बाग़की सैरको गये जो लाहोरमेंनहर
केकिनारेपर नयातैयारहुवा था उसके अं
दरसंगमरमरके महल बनेथे ६ लाख रुपये

१७- जमादी الثانی کو شاہزادہ
دارا شکوہ لاہور مین پہنچکر بادشاہ کے پاس
حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکو فرط
عنایت سے شاہ بلند اقبال کا
خطاب دیا اور جو امیر اُسکی تعیناتی
مین تھے وہ بھی سب حاضر
ہوگئے -
بادشاہ نے پچاس ہزار
روپیہ کشمیر کے زمیندارون کو
بطور پرورش عنایت فرمائے -
۲۱- جمادی الثانی کو رام سنگھ
راٹھوڑ اصل اور اضافہ سے
ڈیڑھ ہزاری ذات اور آٹھ سو
سوارون کے منصب سے
سرفراز ہوا -
۴- رجب کو رائے مکند داس
عہدہ دیوانی بیوتات سے سربلند ہوا
۲۱- رجب کو راجہ جے سنگھ
اور راؤ امر سنگھ ولد راجہ گج سنگھ
قندھار سے آکر حاضر درگاہ ہوئے
۷- شعبان کو بادشاہ اول

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बादशाह ने हुक्म दिया कि चंपत जिस तरह पहिले राजा पहाड़ सिंघ और उसके बड़े भाईकी नौकरी करता था उसी तरह अब भी राजा पहाड़ सिंघ की नौकरी करे चंपत कई दिन तक तो पहाड़ सिंघकी नौकरी में रहा फिर अपने भाईयों समेत बड़े शाहज़ादे का नोकर होगया ॥

दरबार के हालात

भादों सुदी १४ को माधो सिंघ हाडा ५०० सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों का मनसब दार होगया

असोज बदी १ को महेश दास राठोड़ हजारी ज़ात और १००० सवारों के इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का मनसब दार होगया ॥

بڑے بھائی کا نوکر تہا اوسی طرح اب بھی پہاڑ سنگہ کا نوکر رہے چنپت کچھ عرصہ تک تو راجہ کا نوکر رہا مگر پھر بڑے شاہزادہ کا متوسل ہوکر معہ سبحانی وغیرہ اپنے بھائیون کے اوسکا نوکر ہوگیا۔

وقایع دربار

۱۲- جمادی الثانی کو مادہو سنگہ ہاڈا پانسو سوار کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا۔

۱۵- جمادی الثانی کو مہیشداس راٹھوڑ کا منصب ہزاری ذات اور ہزار سواروں کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور دو ہزار سواروں کا ہوگیا اور جالور کا پرگنہ بطریق وطن اوسکی جاگیر مین عنایت ہوا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुहिम बुंदेला

अबदुल्ला खां बहादुर फ़ीरोज़ जंग से चंपत और उसके साथियों की सज़ा देने की तामील जैसी कि चाहिये थी नहीं होसकी थी और अब जेठसुदी ८ को राजा पहाड़ सिंघ ने जो उस मुल्क का ज़िमींदार था चंपत और उसके भाईयों की सज़ा का ज़िम्मा किया इस लिये बादशाह ने अबदुल्ला खां की जगह पहाड़ सिंघ को मुक़र्रर करके उसके मनसब में १००० सवार दो अस्पा का इज़ाफ़ा कर दिया॥

आसाढ सुदी ५ को शाहज़ादा मुराद बमूजिब हुक्म के हसन अबदाल से पीछा आगया

सावन बदी १ को अर्ज़ हुई कि जब राजा पहाड़ सिंघ इसलामाबाद में पहुंचा तो चंपत लाचार होकर उसके पास हाज़िर होगया

चंपत اور اوسکے بھائیون کی سزا دہی عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ سے جیسی کہ چاہئے تھی نہو سکی اسلئے بادشاہ نے ۷ ربیع الاول کو راجہ پہاڑ سنگھ کو جو اوس ملک کا زمیندار تھا خان مذکور کے تغیر سے اس خدمت پر مامور فرمایا کیونکہ اوس نے چنپت اور اوسکے بھائیون کی تنبیہہ اور تادیب کا ذمہ کیا تھا اور اوسکے منصب مین ایک ہزار دو سو سوارون کا اضافہ بھی کر دیا۔

۴ ربیع الثانی کو شاہزادہ مراد بخش حسن ابدال سے بموجب حکم کے واپس آگیا۔

۱۵ ربیع الثانی کو بادشاہ سے عرض ہوئی کہ جب راجہ پہاڑ سنگھ اسلام آباد مین پہنچا تو چنپت مجبور ہو کر چار و ناچار اوسکے پاس حاضر ہو گیا بادشاہ نے حکم دیا کہ چنپت جسطرح سے کہ پہاڑ سنگھ کے باپ اور اوس کے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर हिरात और सीरतां के फ़त ह करने का इरादा किया मगर बाद शाह ने मुनासिब और मुरव्वत न समझ कर शाहज़ादे की वापिस हाज़िर होजाने का हुक्म लिख भेजा॥

ईरान के अमीरों ने का शान से "कज़्वीन" में जाकर शाह सफ़ी के बडे· बेटे सुलतानमोहम्मद मिरज़ा को तख़्त परबैठा कर शाह अब्बास का ख़िताब दिया॥

اُدہر ایران کے امیرون نے شاہ صفی کے بڑے بیٹے سلطان محمد مرزا کو شاہ عباس نام رکھکر تخت سلطنت پر بٹھایا ادہر شاہزادہ دارا شکوہ نے موقع دیکھکر ہرات اور سیستان کے فتح کر لینے کا ارادہ کیا مگر بادشاہ نے اوسوقت یہ بات مناسب اور مروّت نہ دیکھکر شاہزادہ کو واپسی کا حکم لکھ بھیجا۔

दरबारके हालात

बैसाख सुदी ३ को चम्बे के राजा प्रथ्वी चंद को हाथी इनायत हुआ॥

गिरधर दास गोड· कामनसब हज़ारी ज़ात और ४००सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया

واقعات دربار

۲ صفر کو راجہ پرتھی چند زمیندار چنبہ عطائے فیل سے سربلند ہوا

گردھر داس گوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور چارسو سوار دن کا ہوگیا۔

مہم بُندیلہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़ादे मुरादबख़्श को ख़िलअ़त
वग़ैरा देकर फ़रमाया कि नीला
ब दरिया के किनारे पर जहांमु
नासिब समझे मुक़ाम करे और
जब ज़रूरत पड़े भाई की मदद
को रवाने हो जावें और काबुल
के हाकिम अली मरदान ख़ां को
लिखा गया कि वह बलख़ और
बुख़ारा के हाकिम नज़र मोहम्म
द ख़ां के मुक़ाबिले के वास्ते तै
यार रहै॥

शाह सफ़ी का शान में प
हुंच कर बैसाख सुदी १२ को ज़्या
दा शराब पीने से मर गया शाह
ज़ादा दारा शिकोह जब नीला
ब से उत्तरा तो उसको यह ख़बर
लगी तो उसने बाद शाह को अरज़ी
लिखी और हुक्म आने तक ग़ज़
नी में ठहर कर ३०००० सवार ख़ा
न दौरां और सईद ख़ां के साथ
कंधार को भेजे और मोक़ा देख

کو بھی خلعت و انعام وغیرہ سے
سرفراز کرکے روانہ کیا تاکہ دریائے
نیلاب کے کنارے پر جہاں
مناسب سمجھے فروکش ہوجاوے
اور جب ضرورت پڑے تو جاکر
بھائی کی مدد کرے۔

علیمردان خان حاکم کابل
کو لکھا گیا کہ اگر نذر محمد خان اُزبک
حاکم بلخ کچھ ارادہ شر و فساد کا
کرے تو اُوسکے مقابلہ کے واسطے
تیار رہے۔

شاہ صفی کا شان میں پہنچکر
تاریخ ۱۲۔ صفر کو کثرت مے نوشی
سے مرگیا بادشاہ شاہزادہ داراشکوہ
جب نیلاب سے اُترا تو اُس کو
یہ خبر پہونچی اُوسنے بادشاہ کو
عرضی لکھی اور حکم آنے تک غزنین
ٹھہر کر ۳۰ ہزار سوار خانہ دوران بہادر
نصرت جنگ اور سعید خان بہادر
ظفر جنگ کے ہمراہ قندھار کو
روانہ ہوگئے۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ल अत और घोड़ा मिला ॥

हरी सिंघ और महेशदास को रिवलअत घोड़ा और झंडा मिला ॥

राम सिंघ राठोड़ को रिवलअत और घोड़ा इनायत हुआ॥

चंद्र मरिग बुंदेले को रिवलअत घोड़ा और झंडा मिला

राजा अमर सिंघ नरवरीगो कुलदास सीसोदिया और राय सिंघ झाला को रिवलअत और घोड़ा दिया गया और हुकम हुआ कि तमाम अमीरों को १०० सवार पीछे १००० कि १००० सवारों के १००००० मनसब के हिसाब से होते हैं मनसब की तनख़ाह के सिवाय मदद खर्च के तौर पर देदेवें अहदियों तोपचीयों और बंदूकचियों की ३ महीने की तनख़ाह पेशगी तक़सीम करें सो खर्च से तंग नहों और उस दिन शाह

हरी सिंघ और महेश दास को खलअत घोड़ा और झंडा अता हुआ -

राम सिंघ राठोड़ को खलअत और घोड़ा अमरहमत हुआ -

चंद्रमन बंदेले को खलअत घोड़ा और झंडा मिला -

राजा अमर सिंघ नरवरी कुलदास सीसोदिया और राय सिंघ झाला को खलअत और घोड़े दिये गये - और हुकम हुआ कि तमाम अमीरों को फी एक सौ सवार दो हजार रुपये कि एक हजार सवार के एक लाख रुपये मुवाफिक हिसाब मनसब के होते हैं علاوہ तनख़ाह मनसब बतरीक मदद खर्च के दिये जावें احدیوں بندوقچیوں اور توپچیوں کو تین مہینے کی تنخواہ پیشگی تقسیم کر دیجاوے کہ خرچ سے تنگ نہوں -

اوسیدن شاہزادہ مراد بخش

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजा जसवंत सिंघ और ज
य सिंघ को रिख़्लत ख़ास ख़ासा ज
ड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत
सुनहरी साज़ का घोड़ा तवेलेख़ा
से से और ख़ासा हाथी इनायत
हुआ ॥

राव अमर सिंघ को रिख़्लत
ख़ास ख़ासे और सुनहरी ज़ीन के
घोड़े के सिवाय हज़ारी ज़ात का
इज़ाफ़ा भी हुआ जिससे ४ हज़ारी
ज़ात और ३ हज़ार सवारों का मन
सबदार हो गया ॥

राजा राय सिंघ को रिख़्लत
ख़ास मिला और हज़ारी ज़ात के
इज़ाफ़े से उसका मनसब ४ हज़ा
री ज़ात और २ हज़ार सवार का
होगया ॥

राव शत्रूसाल को रिख़्लत ख़ास
त और चांदी की ज़ीन का घोड़ा
इनायत हुआ ॥

राजा जगत सिंघ को रिख़

راجہ جسونت سنگھ اور جیسنگھ
کو خلعت خاصہ و جمدھر مرصع معہ
پھول کٹارا و اسپ طویلہ خاصہ
کے بازین طلا اور فیل حلقہ خاصہ
سے عطا ہوا ۔

راؤ امر سنگھ کو خلعت
خاصہ اور اسپ معہ زین مطلا کے
ملا اور اوسکا منصب بھی ہزاری
ذات کے اضافہ سے چار ہزاری
ذات اور تین ہزار سواروں کا
ہوگیا ۔

راجہ رائے سنگھ کو علاوہ
خلعت کے ہزاری ذات کا اضافہ
ہوا جس سے اوسکا منصب چار
ہزاری ذات اور دو ہزار سوار
کا ہوگیا ۔

راؤ شترسال ہاڈہ کو
خلعت اور گھوڑا معہ زین نقرہ کے
عنایت ہوا ۔

راجہ جگت سنگھ کو
خلعت اور گھوڑا ملا ۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेकिन शाहज़ादे दाराशिकोह ने अर्ज़ कराई कि हज़रत तो लाहोर में ही तशरीफ़ रखें और इस मुहिम पर मुझ को भेजें बादशाह ने उसको २० हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मनसब १२ लाख रुपया इनाम और १ भारी ख़िलअत देकर ५० हज़ार सवारों से क़ंधार की तरफ़ रवाने किया ३५ बड़े २ अमीर ५ हज़ार अहदी कमांदार बरक़ंदाज़ और ५ ही हज़ार बंदूक़ची मय बहुत से ख़ज़ाने और तोपख़ाने के उसके साथ किये जिनमें रजपूत सरदार इतने थे॥

१ राजा जसवंत सिंघ
२ राव अमर सिंघ
३ राव शत्रूसाल
४ राजा जयसिंघ
५ राजा रायसिंघ
६ हरीसिंघ राठोड़
७ महेशदास राठोड़
८ रामसिंघ राठोड़
९ चंद्रभाण बुंदेला
१० गोकुलदास सीसोदिया
११ राजा अमरसिंघ नरवरी
१२ रायसिंघ झाला

कराई कि हज़रत लाहोर में तशरीफ़ रखें और यह मुहिम मेरे मुतअल्लिक़ फ़रमावें बादशाह ने उसको बीस हज़ारी ज़ात और बीस हज़ार सवार का मनसब बारह लाख रुपया इनाम और बहुत भारी ख़िलअत देकर मअ पचास हज़ार सवार के क़ंधार की तरफ़ रुख़सत किया ३५ बड़े बड़े अमीर पांच हज़ार अहदी कमांदार बरक़ंदाज़ और पांच हज़ार अहदी बंदूक़ची मअ ख़ज़ाने व तोपख़ाने उसके साथ तअय्युन किये जिनमें राजपूत सरदार हसब ज़ील थे -

१ राजा जसवंत सिंघ
२ राव अमर सिंघ
३ राव शत्रूसाल
४ राजा जयसिंघ
५ राजा रायसिंघ
६ हरी सिंघ राठोड़
७ महेशदास राठोड़
८ रामसिंघ राठोड़
९ चंद्रभाण बुंदेला
१० गोकुलदास सीसोदिया
११ राजा अमरसिंघ नरवरी
१२ रायसिंघ झाला

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बरस १६वां

चैत सुदी ३ संबत १६९९ से
चैत सुदी ३ संबत १७००तक

चैत सुदी ६ को शाहज़ादा औरंगजेब दकखन की तरफ़ रवाने हुवा ॥

बैसाख बदी ६ को राजा जगत सिंघ और राजरूप के मंसब बहाल होगये ॥

ईरान के शाह सफ़ी का कंधार पर आना

इरान के शाह सफ़ी ने जो रूम के सुलतान मुरादखां से सुलह करके कंधार पर चढ़ाई करने का सामान कररहा था अपना सिपह सालार रुस्तम गुरजी को हिरोल कर के कंधार के ऊपर रवाने किया ॥

बादशाह ने उसके मुक़ाबिले को जाने की तैयारी की

برس سولہوان

سنہ ۱۰۵۲ھ

۱۳ مارچ سنہ ۱۶۴۲ء سے ۱۱ مارچ سنہ ۱۶۴۳ء تک

۴ محرم کو شاہزادہ اورنگ زیب دکھن کو روانہ ہوا۔

۱۹۔ محرم کو راجہ جگت سنگھ اور اوسکے بیٹے راج روپ کے منصب بدستور بحال ہو گئے

ایران کے بادشاہ شاہ صفی کا قندھار پر آنا

شاہ صفی نے جو سلطان روم مراد خان سے صلح کر کے قندہار کے اوپر لشکر کشی کرنے کا سامان کر رہا تھا اپنے سپہ سالار رستم گرجی کو بطور ہراول کے قندھار کے اوپر روانہ کیا بادشاہ نے یہ خبر سنکر خود مقابلہ کے واسطے جانے کی تیاری کی لیکن شاہزادہ دارا شکوہ نے عرض

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सिंघ और राजा रायसिंघ भीशा हज़ादे के साथ दरबार में हाज़िर हुवे थे ॥

इस बरस कशमीर में बहुत सख़्त काल पड़ा था जिससे वहां के ३०००० आदमी लाहोर में चले आये बादशाह ने १ लाख रुपया ख़ज़ाने से उनको इनायत करके हुक्म दिया कि हर रोज़ २०० रुपये का खाना उनके लिये दिया जावे और ३०००० कशमीर के हाकिम तरबियत ख़ां के पास भेजकर लिखा कि २०० रुपये रोज़ का खाना वहां के गरीबों को बांटा करें मगर उससे इसका इन्तज़ाम अच्छी तरह से न होसका तब बादशाह ने ज़फर ख़ां को फिर कशमीर का नाज़म करके भेजा और ३०००० और उसको वहां की परवरश के लिये दिये॥

اور راجہ امر سنگھ بھی شاہزادہ کے ہمراہ حاضر بارگاہ ہوئے۔

اس برس کشمیر مین بہت سخت کال پڑا تھا جس سے وہان کے ۳۰ ہزار آدمی لاہور مین چلے آئے تھے بادشاہ نے ایک لاکھ روپیہ خزانہ سے اونکے واسطے عنایت کرکے حکم دیا کہ ہر روز دو سو روپے کا کھانا اونکو دیا جاوے اور ۳۰ ہزار روپیہ کشمیر کے حاکم تربیت خان کے پاس بھیجکر لکھا کہ ایکسو روپیہ روز کا کھانا وہان کے غریبون کو تقسیم کیا جاوے مگر اوس سے اسکا انتظام اچھی طرح سے نہو سکا تب بادشاہ نے ظفر خان کو پھر کشمیر کا ناظم کرکے بھیجا اور تیس ہزار روپیہ اور اسکو وہان کے غربا کی پرورش کے لئے دئے +

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का सलाम कराया बादशाह ने २ लाख रुपये इनाम के दिये राव शत्रू साल हाडा और राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला भी जो दकखन में तईनात थे उसके साथ हाज़िर हुवे राव शत्रू साल ने २ हाथी नज़र किये ॥

करमसी राठोड़ के बेटे रयाम सिंघ को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ से हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसब इनायत हुवा

राय काशी दास को सूबे आगरे की दीवानी मिली ॥

चैत बदी ११ को शाहज़ादा मुराद बख़्श दरगाह में हाज़िर हुआ उसके साथ जगत सिंघ भी अपने बेटों समेत गरदन में रूमाल डाले हुवे आया बादशाह ने उसका क़सूर माफ़ कर दिया ॥

राजा जय सिंघ राव अमर

محمد سلطان کا سلام کرایا بادشاہ نے اُسکو دو لاکھ روپیہ بطور انعام دیئے۔

راجہ شتروسال ہاڈا اور راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ بھی جو دکھن مین تعینات تھے اُسکے ساتھ باریاب ملازمت ہوئے راؤ شتروسال نے دو ہاتھی نذر کئے۔

کرم سی راٹھوڑ کے بیٹے سیام سنگھ کو بادشاہزادہ اورنگ زیب کی عرض سے بادشاہ نے ہزاری ذات اور پانسو سوار کا منصب عطا کیا۔

رائے کاشی داس کو صوبہ آگرہ کی دیوانی مفوض ہوئی۔

۲۵ ذی الحجہ کو شاہزادہ مراد بخش حاضر آیا اُسکے ساتھ راجہ جگت سنگھ بھی اپنے بیٹے سمیت گردن مین رومال باندھے ہوئے حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکا قصور معاف کر دیا۔

راجہ جے سنگھ راؤ امر سنگھ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुकंददास को पांचसदी ज़ात और १०० सवारों का मनसब और रतन दफतर की खिदमत इनायत की और जसवंत राय को जो यह काम करता था बादशाही ख़ालिसे का काम मिला जो बिहारी मल करता था और बिहारीमल पंजाब की दीवानी पर भेजा गया॥

मंगसिर सुदी १२ को बादशाह गांव बाहन से लाहोरमें दाख़िल हुवे॥

माह बदी ५ मंगलवारको तुलादान के दरबार में महेश राठोड़ को हजारी ज़ात और १००० सवार का मनसब इनायत हुवा॥

चैत बदी ६ को नोरोज़ के दूसरे दिन शाहज़ादा औरंगज़ेब दकखन से हाज़िर आया। और अपने बेटे मोहम्मद सुलतान

پانصدی ذات اور چارسو سوار کا عنایت کرکے دفترداری تن کی خدمت پر جسونت رائے کے تغیر سے ممتاز فرمایا اور دفترداری خالصہ شریفہ کی خدمت جسونت رائے کو بہاری مل کے تغیر سے عنایت کی اور بہاری مل کو خدمت دیوانی صوبہ پنجاب پر مقرر کیا +

۱۱- رمضان کو بادشاہ بعد سیر و شکار گانو دامن کے لاہور مین واپس آئے +

روز شنبہ ۱۹ شوال مطابق تاریخ ۲- بہمن کو جشن وزن شمسی مین مہیش راٹھوڑ منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار سے معزز و ممتاز ہوا-

۲- ذی الحجہ کو نوروز کے دوسرے دن شاہزادہ اورنگ زیب دکھن سے لاہور مین بادشاہ کے پاس حاضر آیا اور اپنے بیٹے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का भाई था और बादशाह की इ
नायत से बहुत बड़े दरजे को प
हुंचा था कभी कोई अमीर किसीबा
दशाह के वक्त में इतना नहीं बढ़ा
था उसका मनसब ९ हज़ारी ज़ातऔ
र ९००० दोअस्पा और सिह अस्पा
सवारों का था उमदा और जैयद
जागीरों के मिलने से हर साल ५०
लाख रुपये की आमदनी उसकोअ
पने मनसब की जागीरों से होतीथीं
वह ढाई करोड़ का जवाहर सोना
चांदी और दूसरा माल असबाब छो
ड़ मरा जिसमें से बादशाह ने २० ला
ख का नक़द और जिनस तो उस
के बेटों और बेटियों को दियाऔ
र बाक़ी सरकार में ज़ब्त कियाउस
की हवेली जो २० लाख रुपये की
लागत से लाहोर में तैयार हुई थी
शाहज़ादे दारा शिकोह को देदी॥

मंगसिर सुदी ५ को बादशा
ह ने आसिफ़ खां के दीवान राय

बादशाह की इनायत से बहुत
बड़े दरजे को पहुंचा था इतना कोई
अमीर किसी बादशाह के वक्त मेंन
नहीं बढ़ा था इसका मनसब नौ
हज़ारी ज़ात और नौ हज़ार सवार
दो अस्पा व सह अस्पा का था
और उमदा व जैयद जागीरों के
मिलने से हर साल पचास लाख
रुपया उसको उन जागीरों से
हासिल होता था ढाई करोड़ रुपये
का ज़र व जवाहर छोड़ मरा बादशाह
ने उसमें से २० लाख रुपया का
नक़द व जिनस उसके बेटों और
बेटियों को दिया और बाक़ी ज़ब्त
कर लिया और उसकी हवेली जो लाहौर
में २० लाख रुपये की लागत
से बनी थी शाहज़ादा दाराशिकोह
को दे दी -

३ - रमज़ान को बादशाह
ने आसिफ़ खां के दीवान
राय मुकन्द दास को मनसब

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सं·१६६८ को राजा जगत सिंघस हित शाह ज़ादे केपास हाज़िर हुआ ॥

राजा जगसिंघ ने नूरपुर के सदर दरवाज़े के आगे १ बड़ी दी वार किले की जड़ से कंगुरों के सिरे तक १००० गज़ कूंचीब नाई थी और फिर उस्के ऊपर बुरज और कंगूरे भी झुकाये ये बादशाह का हुक्म उस्के गिरा देने का आया जिस्के वास्ते शाह ज़ादे ने बहादुर ख़ां और असालत ख़ां को वहां छोड़ा और आप बादशाह के पास रवाने होगया

दरबार के हालात

मंगसिर बदी ३ गुरवार को यमीनुद्दोला आसिफ़ ख़ां ख़ानख़ानां सिपह सालार मरगया यह बादशाह का सुसरा जहांगीर बादशाह का साला और नूरजहां बेगम

لایا +

راجہ جگت سنگھ نے نورپور کے دروازہ کلان کے آگے ایک بڑی دیوار قلعہ کی جڑ سے کنگورون کے سرے تک ہزار گز کی اونچی بنائی تھی اور اوسکے اوپر برج اور کنگورے بنائے تھے بادشاہ کا حکم اوس کے گرا دینے کا آیا جس کی تعمیل کرانے کے واسطے - شاہزادہ نے بہادر خان اور اصالت خان کو تو وہان چھوڑا اور آپ بادشاہ کے حضور میں روانہ ہوگیا +

دربار کا حال

۱۷- شعبان روز پنجشنبہ کو یمین الدولہ آصف خان جانخانان سپہ سالار مرگیا یہ بادشاہ کا خسر تھا جہانگیر بادشاہ کا سالا اور نورجہان بیگم کا بھائی تھا اور

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

और क़िले वाले भी बहुत बहा
दुरी के साथ लड़े ॥

पोस सुदी १५ की लड़ाई में
यमीनुद्दोला का बरखशी १००आ
दमियों समेत मारा गया ॥

राजा जगत सिंघ को १ तर
फ़ से बहादुर ख़ां और असालत
ख़ां ने दूसरी तरफ़ से राजा मा
न सिंघ गुलेरी और प्रथ्वीचंद
चंबे वाले ने यहां तक तंगकि
या कि उसने फिर शाहज़ादे से
माफ़ी मांगी शाहज़ादे ने बाद
शाह का मनशा लेकर हुक्म भे
जा कि जगत सिंघ के क़सूर इ
स शर्त पर माफ़ हो सक्ते हैं कि
वह तारा गढ का क़िला सौंपदे
वे जगत सिंघ ने मंज़ूर करके
ख़ान जहां को बुलाया उसने जा
कर कुछ हिस्सा क़िले का गिरा
दिया और अपने जमाई सैयदफ़ी
रोज़ को वहां छोड़ कर चैत सुदी

خوب بہادری کے ساتھ لڑے
۱۴- شوال کی لڑائی میں
یمین الدولہ آصف خان کا بخشی
خسرو بیگ معہ ایک سو آدمیوں
کے مارا گیا۔
راجہ جگت سنگھ کو ایک
طرف سے بہادر خان اور اصالت
خان نے اور دوسری طرف سے
راجہ مان سنگھ گلیری اور پرتھی چند
چنبہ والے نے اسقدر تنگ
کیا کہ اوس نے پھر شاہزادہ
سے معافی مانگی شاہزادہ نے
بادشاہ کا منشا معلوم کرکے حکم
بھیجا کہ جگت سنگھ کے قصور اس
شرط پر معاف ہو سکتے ہیں کہ وہ
تارا گڈھ کا قلعہ حوالہ کرے جگت سنگھ
نے خانجہان کو بلایا اوس نے
جاکر باہر تک قلعہ گرا دیا اور اپنے
خویش سید فیروز کو وہان چھوڑ کر
۲۹- ذی الحجہ کو شاہزادہ کے پاس
واپس آیا اور جگت سنگھ بھی ہمراہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

रुख़सत दी गई कि ज़रूरी बंदो बस्त करके मय काफ़ी जमैयत के तारा गढ़ के पीछे से आवे और उस टेकरी पर क़बज़ा करके क़िले वाला को तंग करे॥

पोस सुदी ६ को शाह ज़ादा मुराद मय सैयद ख़ान जहां वग़ैरा के नूरपुर में जाकर ठहरा और सैयद ख़ां को जम्मूं भेजा बहादुर ख़ां और असालत ख़ां को १२००० सवारों से तारा गढ़ फ़तह करने को भेजा और राजा मान सिंघ गुलेरी को जो जगत सिंघ का जानी दुशमन था हुक्म दिया किराजा प्रथ्वी चंद से मिलकर तारा गढ़ के ऊपर पीछे से हमला करे॥

इस मौक़े पर बादशाही लशकर रस्ता पेंचदार और घना जंगल होने पर भी हमला करने में बहुत कोशिश की

شائستہ کے عقب تاراگڈہ سے حملہ کرے اور اُس ٹیکرے پر قبضہ کرکے قلعہ والون کو تنگ کرے۔

۵ شوال کو شاہزادہ مراد بخش معہ سید خانجہان وغیرہ کے نورپور مین آکر ٹھہرا سعید خان کو جمّوں کی طرف روانہ کیا اور بہادر خان واصالت خان کو معہ بارہ ہزار سوارون کے تاراگڈہ فتح کرنے کے واسطے بھیجا اور راجہ مان سنگھ گلیری کو جو جانی دشمن جگت سنگھ تھا راجہ پرتھی چند سے ملکر تاراگڈہ کے اوپر پیچھے کی طرف سے حملہ کرنے کا حکم دیا۔

اس موقع پر بادشاہی لشکر نے باوجود خرابی و پیچ در پیچ ہونے راستہ اور جنگل کے حملہ کرنے مین بہت کوشش و جانفشانی کی اور قلعہ والے بھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बमूजिब हुक्म बादशाह के ब
हादुर खां और असालत खां के
साथ दरगाह कोरवाने हुआ
माह सुदी १ को बादशाह के पा
स पहुंचा बादशाह ने १ भारी खि
लअत और २ लाख रुपया इनाम
देकर वास्ते दूर करने फ़िसाद
राजा जगत सिंघ के भेजा चंबे
के ज़मींदार प्रथ्वी चंद को खि
लअत जड़ाऊ जमधर हज़ारी ज़ा
त और ४०० सवारों का मनसब
और राजा का खिताब और घोड़ा
इनायत हुआ जिस पहाड़ पर
कि तारा गढ़ का क़िला है और
जिसपर जगत सिंघ ने अन्या
य से क़बज़ा कर रक्खा था चंबे
के इलाक़े से मिला हुआ है और
उसपर १ ऐसी टेकरी है कि जि
स्के हाथ आने से तारा गढ़ फ़त
ह हो सक्ता है इस लिये राजा
प्रथ्वी चंद को वतन जाने की

اور اصالت خان کو ساتھ لے کر روانہ
درگاہ ہوا اور ۲۹ - رمضان کو بادشاہ
کے حضور میں پہنچا بادشاہ نے اوسکو
ایک بھاری خلعت اور دو لاکھ
روپے بطور انعام کے دیکر پھر
راجہ جگت سنگھ کا فساد رفع کرنے کو
بھیجا -

زمیندار چنبہ پرتھی چند کو خلعت
واسپ و جمدہر مرصع و منصب
ہزاری ذات اور چار سو سوارونکا
معہ خطاب راجگی کے عنایت ہوا
جس پہاڑ پر کہ تارا گڈہ کا قلعہ
ہے اور جگت سنگھ نے ظلم
سے قبضہ کر رکھا تھا چنبہ کے
علاقہ سے ملا ہوا ہے اور اسکے
اوپر ایک ایسی ٹیکری ہے کہ
جسکے ہاتھ آجانے سے تارا گڈہ
فتح ہو سکتا ہے اس لئے راجہ
پرتھی چند کو وطن جانے کی
رخصت دی گئی کہ ضروری
بندوبست کرکے معہ جمعیت

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इनायत हुआ ॥

पोस बदी १० को शाहज़ादे ने बादशाह के हुक्म से चंबे के ज़िमींदार पृथ्वी चंद को अल्लावेरदी ख़ां और मीर तुज़क के साथ जो उसे लेने को गये थे बादशाह के हज़ूर भेंर वाने किया इस्के बाप को जगत सिंघ ने मार डाला था और यह इस सबब से बादशाही अमीरों के वकील से बादशाही बंदों में दाखिल हुआ था ॥

फिर शाहज़ादे ने मरू में राजा जय सिंघ को थारी में कुलीचख़ां को दमदाल में गोकुलदास सीसोदिया को और पठान में मिरज़ा हसन सफ़वी को तईनात किया और दूसरे अमीरों को बहुत से बेलदारों और तबरदारों के साथ मरू के जंगल काटने और पहाड़ों का रस्ता चौड़ा करने के वास्ते छोड़ा और आप

مرصع اور اسپ و فیل عنایت فرمایا۔

۲۳۔ رمضان کو بادشاہ زادہ نے حسب الحکم بادشاہ کے پرتھی چند زمیندار چنبہ کو کہ جسکے لینے کے لئے اللہ ویردی خان اور میر تزک گئے تھے بادشاہ کے حضور مین روانہ کیا اُسکے باپ کو راجہ جگت سنگھ نے مار ڈالا تھا اور یہ اس سبب سے بوسیلہ اولیائے دولت زمرہ دولتخواہان سلطنت مین داخل ہوا تھا۔

پھر بادشاہزادہ نے مرو مین راجہ جے سنگھ کو تھاری مین قلیچ خان کو۔ دمدال مین گوکلداس سیسودیہ کو اور پٹھان مین مرزا حسن صفوی کو تعینات کیا اور کچھ بادشاہی بندون کو معہ بہت سے بیلدارون اور تبردارون کے مرو کے گرد کا جنگل کاٹنے اور راستہ چوڑا کرنے کے واسطے چھوڑا اور آپ بموجب حکم بادشاہ کے بہادر خان

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजा जगत सिंघ ने अपनी बाहर की फ़ौज भी जगह २ से क़िले में बुलाली और अंदर से बादशाही लशकर का मुक़ाबिला किया जब बहुत ही तंग होगया तो तारागढ़ के क़िले में चलागया जहां उसने अपने क़बीलों को पहिले से भेज दिया था यह ख़बर सुनकर नूरपुर के क़िलेदार और सिपाही भी भागगये॥

जब इस फ़तह की ख़ुश ख़बरी बादशाह को पहुंची तो सैयद ख़ान जहां का मनसब ६ हज़ारी ज़ात ६ हज़ार सवार दो अस्पा और सिंह अस्पा का और राजा रायसिंघ का ५ हज़ारी ५ हज़ार सवारों का कर दिया॥

राजा मान सिंघ गुलेरी को कि जिसने इस मोहिम में अच्छी ख़िदमत की थी ख़िलअत जड़ाऊ जमधर हाथी और घोड़ा

ہوکر پہاڑ کے اوپر چڑھے اور راجہ جگت سنگہ کو محصور کرکے تنگ کیا راجہ مذکور نے باہر کی جمعیت کو بھی جابجا قلعہ مین بُلالیا تھا اور اپنے عیال واطفال کو تو پہلے سے ہی تاراگڈہ کے قلعہ پر بھیجدیا تھا اور اب خود بھی بسبب غلبہ افواج بادشاہی کے فرار ہوکر قلعہ مذکور کو چلا گیا یہ حال سنکر نورپور کے قلعدار اور سپاہی بھی بھاگ گئے

جب یہ خوشی کی خبر بادشاہ کو پہونچی تو سید خانجہان بہادر ظفر جنگ کا منصب شش ہزاری ذات اور شش ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کا اور راجہ جے سنگہ کا پانچہزاری ذات اور پنجہزار سوار کا کردیا +

راجہ مان سنگہ گولیری نے اس مہم مین بخوبی خدمتگزاری اور جانثاری کی تھی اس لئے بادشاہ نے اُسکو خلعت جمدہر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लड़े इस ५ दिन की लड़ाई में ७०० आदमी बहादुर ख़ां के मारे गये और इतने ही दूसरे बादशाही बंदे भी काम आये और ज़ख़्मी हुवे ॥

जब यह लड़ाई इस तरह से दिन पकड़ गई तो बादशाह का हुक्म आया कि खानजहां और बहादुर ख़ां तो क़िले के नीचे पहुंचें और दूसरी फ़ौज भी जंगल से क़िले तक जावे और सब कोशिश करके उस्कोफ़त करें तब शाहज़ादे ने पोस बदी ७ को १ पहाड़ी के ऊपर जो सब मोरचों से ऊंची थी चढ़कर सरदारों को हमला करने का हुक्म दिया हमला दो तरफ़ से हुआ राजा जय सिंघ भी जो हमला करने वालों में था कुली ख़ां वग़ैरा के साथ घाटे के रस्ते जंगलों में होकर पहाड़ के ऊपर चढ़ा

شدہ ہنگام حرب و ضرب گرم گردانیدند
سید خانجہان و بہادر خان نے
اُوسکے مقابلہ مین بڑی بہادری کی اس
پانچ دن کی لڑائی مین سات سو آدمی
بہادر خان کے اور اسیقدر دوسرے بادشاہی
بندے مقتول و مجروح ہوئے۔
جب اسطرح یہ مہم طول پکڑ گئی
تو بادشاہ کا حکم آیا کہ سید خانجہان
بہادر اور بہادر خان تو قلعہ کے نیچے
پہونچین اور دوسری فوج بھی
جنگل سے قلعہ تک جاوے اور
بالاتفاق کوشش کرکے
فتح کرین۔
برطبق اُسکے شاہزادہ نے
۲۰۔ رمضان کو ایک پہاڑی کے
اوپر جو سب مورچون سے اونچی
تھی چڑھ کر سرداران لشکر کو یورش
کرنے کا حکم دیا پس دو طرف سے
حملہ ہوا راجہ جے سنگھ بھی حملہ آورون مین
تھا سرداران لشکر معہ قلیچ خان
وغیرہ کے براہ درہ جنگلون مین

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और फ़रमाया कि तुम्हारे क़सूर मा
फ़ कराने की बादशाह की रिज़
दमत में अर्ज़ की जावेगी मगर बा
दशाह ने उसकी कई अरज़ें क़
बूल न कीं इस लिये शाहजादे
ने राजा को रुख़सत देदी और
वह वतन में पहुंच कर फिर ल
ड़ाई का सामान करने लगा ॥

सैयद ख़ान जहां और बहा
दुर ख़ां बादशाहज़ादे के हुक्म
से गंगथल होकर फिर मऊ के
ऊपर गये जंगल काटते और दु
शमनों की मज़बूत दीवारों को
जो मुक़ाबिले के वास्ते बनारखी
थीं ढुकराते हुवे आगे बढ़े जब
मऊ के क़रीब पहुंचे तो जगत
सिंघ ने बहादुर भाई बंदों और
पहाड़ी सिपाहियों के साथ साम
ने आकर ५ रोज़ तक बराबर जंग
की सैयद ख़ान जहां और बहा
दुर ख़ां बहादुरी करके उससे

देखता तो पहिरहे तारीख़ ۱۰ رمضان کو مجرمون
کی طرح گلے مین فوطہ ڈالکر حاضر
خدمت ہوا بادشاہزادہ نے اُسکی
تسلی کی اور فرمایا کہ بارگاہ
خلافت مین عفو تقصیر کیواسطے
عرض کیجائیگی لیکن بادشاہ نے
اُوسکی بعض معروضات قبول نہ
کئے اس لئے شاہزادہ نے راجہ کو
رخصت دیدی اور وہ وطن مین
پہونچکر پھر جنگ کا سامان کرنیلگا۔

سید خانجہان اور بہادر خان
بادشاہزادہ کے حکم سے براہ گنگ
تھل پھر مئو کے اوپر گئے جنگل
کاٹتے ہوئے اور دشمنون کی مضبوط
دیوارون سے جو آڑ کے واسطے
بنا رکھی تھین مقابلہ کرتے ہوئے
آگے بڑھے جب مئو کے قریب
پہونچے تو راجہ جگت سنگھ نے پانچ
روز تک متواتر" باتھور پیشگان
قبیلہ ذلیلہ خود و جمعی دیگر از دلیران
کوہ نشین روبروے عساکر فیروزی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के वास्ते तईनात की गई है ताकि
द करता रहे ॥

जब बादशाहज़ादा मंगसि
र सुदी ३ को पठान सेर वाने ड़वा
तो राजा जगत सिंघ ने अपने बेटे
राज रूप को भेज कर अल्लाह वे
रदी ख़ां के वसीले से अर्ज़ कराई
कि अकसर दरबारी अमीर ईरखा
से इस मोहिम में मेरी जान और
इज़्ज़त लिया चाहते थे इस लि
ये मैं ने भी राज पूती की ग़ैरत से
उन का मन चाहा न होने देने
के वास्ते जैसा कुछ होसका उन
का मुक़ाबिला किया मगर अब
जो यह मोहिम आपके ज़िम्मे हो
गई तो मैं भी हर तरह से हुक्म उ
ठाने को हाज़िर हूं ॥

फिर मंगसिर सुदी ७ को वह खु
द भी गुनह गारों के माफ़ि क़ गले
में रूमाल डाल कर हाज़िर होगया
बादशाहज़ादे ने उसको तसल्ली दी

عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ
اتر آیا تھا اور جو فوجین اطراف
جوانب سے واسطے فتح قلعہ مئو
کے مامور ہوئے ہین اونکو بھی
تاکید و تہدید فتح کی کرتا رہے
بادشاہزادہ جب غرہ
رمضان کو مئو کی طرف روانہ
ہوا تو راجہ جگت سنگھ نے
اپنے بیٹے راجروپ کو بھیجکر
اللہ وردی خان کے وسیلہ
سے شاہزادہ کو کہلایا کہ اکثر
بندگان درگاہ نے کینہ ہمچشمی
ہمسری سے اس مہم مین سوائے
ہلاک قوم و قبیلہ و نقصان
جان و مال بندہ کے اور خواہش
نہین رکھتے تھے اسواسطے بندہ
نے غیرت رجپوتی اور حمیت سپاہگری
سے بآسانی تن بمرگ نہ دیکھکر جو کچھ ہوسکا
تردد کیا اب یہ مہم آپکے ذمہ ہوگئی ہے
اسلئے مین بھی اطاعت و فرمانبرداری
کے سوائے اور کوئی علاج نہین

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बुंदेलखंड से पठान में पहुंचकर अपनी फ़ौज की हाज़िरी दी ३००० सवार और इतने ही पैदल थे॥

मंगसिर सुदी १ को दमताल तो बहादुर खां की कोशिश से फ़तह हुआ और "यारी अल्लाहवे रदी खां की कोशिश से॥

बादशाह ने यह हाला तसुनकर लिखा कि असालत खां तो नूरपुर के घेरे पर रहे और सैयद खान जहां वग़ैरा गंगथल के रस्ते से मऊ पर जाकर उसके फ़तह करने में कोशिश करें कि उसके फ़तह होजाने से नूरपुर का फ़तह होजाना भी आसान होजावेगा और शाहज़ादा मुराद राव अमरसिंघ और मिरज़ा हुसैन सफ़वी को पठान में छोड़कर उस टेकरी पर डेरा करे कि जहां से अबदुल्ला खां फ़ीरोज़ जंग उतर आया था और उन फ़ौजों को जो हर तरफ़ से मऊ की फ़तह के

बहादुर खान ने मुलक बुंदेलखंड से बमूजब हुक्म बादशाह के पठान मेंं बादशाहज़ादे के पास पहुंचकर अपनी फ़ौज की हाज़िरी दी तीन हज़ार सवार और इसी क़दर पैदल थे

सलख माह मज़कूर को दमताल बहादुर खान की सअी से और तहारी अल्लाह दिरदी खान की कोशिश से फ़तह हुआ।

बादशाह का हुक्म आया कि असालत खान तो नूरपुर के मुहासरे मेंं मशग़ूल हुआ और सैयद खानजहान व रुस्तम खान वग़ैरह राह गंगथल से मऊ के ऊपर जाकर उसके फ़तह करने मेंं कोशिश करेंं कि जब वह क़िला फ़तह हो जायेगा तो नूरपुर बआसानी फ़तह होगा और शाहज़ादा मुराद राव अमरसिंघ व मिरज़ा हुसैन सफ़वी को पठान मेंं छोड़कर उस टेकरी पर डेरा करे कि जहां से अबदुल्ला खां फ़ीरोज़ जंग उतर आया था

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आगे एक एक दीवार उठाकर कोट की दीवारों से मिला दी थी और उसके ऊपर से किले में आने जाने का रस्ता रख दिया था सो जो दीवार इस बुरज के आगे थी वह भी आधी गिर पड़ी मगर सुरंग पूरी नथी इस सबब से लशकर वाले अंदर न जा सके सैयद लुतफ़ अली वग़ैरा कई शरब्स ख़ान के आदमियों के साथ दौड़े तो उसी दीवार के आड़े आजाने से अंदर न जा सके और बेलदारों से उसको गिरवाने लगे क़िले वाले जोर रस्ता होजाने के ख़्याल से अंदर चले गये थे दीवार के बाक़ी रहने का हाल मालूम करके पीछे चले आये और आधी रात तक तीर और बंदूक़ से लड़ते रहे जिस से कुछ बादशाही आदमी मारे गये और कि लाफ़तह न हुआ॥

इसी अरसे में बहादुर ख़ां ने

آگے ایک ایک دیوار اُٹھاکر کوٹ کی دیوار سے ملادی تھی اور اُوس کے اُوپر سے بُرج مین جانے کا راستہ رکھدیا تھا چنانچہ اِس بُرج کی دیوار بھی صدمہ سے آدھی گرگئی مگر بسبب پوری نہونے سُرنگ کے فوج اندر نہ جاسکے سید لطف علی وغیرہ چند شخص جو خان جہان کے آدمیون کے ساتھ دوڑے اُنکو بھی وہی دیوار حائل ہوئی اور وہ اُسکو بیلدارون سے گروانے لگے قلعہ والے جو بخیال راستہ ہوجانے کے اندر چلے گئے تھے دیوار کے باقی رہنے کا حال معلوم کرکے واپس آئے اور رات تک تیر و بندوق سے لڑتے رہے کچھ بادشاہی آدمی مارےگئے اور قلعہ فتح نہوا ٭

آخر ماہ شعبان مین

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को राजा मान ने १००० आदमी अप
ने किले "छत" पर भेजे जिन्होंने
क़िले दार को मार कर क़िला फ़
तह कर लिया ॥

क़िले नूरपुर के गिर्द ७ सु
रंगें दोड़ाई गईं थी ६ से तो क़िले
वालों ने वाक़िफ़ होकर उनके अं
दर पानी छोड़ दिया और सातवीं
क़िले से २।३ गज़ दूर रही थी कि
सैयद ख़ान जहां के बेटे और उस
के आदमियों ने इस डर के मारे
कि कहीं क़िले वाले उसको भी
निकम्मी न करदेवें उसमें बारूत
भरदी और ख़ान को कह लादिया
कि सुरंग पहुंच गई है ख़ान ने स
ब मोरचों में हुक्म भेज दिया कि
तैयार रहें ॥

मंगसिर बदी ३ को तीसरे
पहर पीछे उस सुरंगमें आग दीग
ई जिससे बुरज कुछ तो उड़ीं और
कुछ गिर गईं राजा ने हर बुर्ज के

کو راجہ مان نے ایک ہزار کے
قریب پہاڑی آدمی اپنے وطن کے
قلعہ "چھت" پر بھیجے اُنہون نے
قلعدار کو مار کر قلعہ فتح کرلیا +

قلعہ نورپور کے گرد سات
سرنگین لگائی گئین تھین چھ
سے تو قلعہ والون نے آگاہ ہوکر
اوسکے اندر پانی ڈالدیا اور
ساتوین سرنگ ابھی نورپور
کے بُرج سے دو تین گز ادھر
تھی کہ سید خانجہان کے
بیٹے اور اُسکے آدمیون نے
اس خیال سے کہ کہین قلعہ
والے اُسکو بھی بیکار نہ کردین
باروت بھردی اور خان کو
کہلایا کہ نقب پوری ہوگئی ہے
خان نے سب مورچون مین
کہلا بھیجا کہ تیار ہو رہین -

عصر کے وقت ۲۹ شعبان
کو آگ لگائی گئی بُرج کچھ تو اُڑی
اور کچھ گر گئی راجہ نے ہر بُرج کے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जलदी करने में फ़ायदा न देख कर यह बात ठहराई कि हररोज़ कुछ जंगल काटें और आहिस्ता २ आगे बढ़ें ॥

मंगसिर बदी ८ को निजाबत ख़ां १ घाटी के ऊपर चढ़ा उसके नीचे राजा बासू के बाग़ में दुशमनों का मोरचा था दूसरी तरफ़ से ज़ुलफ़िक़ार ख़ां और तीसरी तरफ़ से नज़र बहादुर और राजा मान वग़ैरा भी पहुंच कर तीर और बंदूक़ की लड़ाई दुशमनों से लड़ने लगे तब तो निजाबत ख़ां और राजा मान के आदमी ढालों के बदले लकड़ियों के तख़्ते सामने करके दोड़े और उस मोरचे के बराबर १ भींत लकड़ी और पत्थर की चुनकर लड़ने लगे जहां दोनों तरफ़ के बहुत से आदमी मारे गये ॥

मंगसिर बदी १४ की रात

یہ بات ٹھہرائی کہ ہر روز کچھ کچھ جنگل کاٹ کر آہستہ آہستہ آگے بڑھیں +

۲۱ شعبان کو نجابت خان ایک گھاٹی کے اوپر چڑھا - اوسکے نیچے راجہ باسو کے باغ میں دشمنون کا مورچہ تھا دوسری طرف سے ذوالفقار خان اور تیسری طرف سے نظر بہادر اور راجہ مان وغیرہ پہونچکر دشمنون کے ساتھ تیر و تفنگ سے جنگ کرنے لگے نجابت خان اور راجہ مان کے آدمی ڈھالون کی جگہہ تختہ سامنے کرکے دوڑے اور ایک دیوار چوب و سنگ سے مقابل مورچہ مذکور کے بناکر جنگ و جدل میں مشغول ہوئے جس میں بہت سے آدمی دونوں طرف کے مارے گئے +

۲۹ شعبان کی شب

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर उन्का मुक़ाबिला किया वे लो
ग झाड़ी की रोक से १जगह इकट्ठे
नहो सके ख़ान ने उन की मदद
को कुछ फ़ौज अपने बेटे लुतफ़ु
ल्लाह के साथ भेजी जिस का मु
क़ाबिला दुशमनों की १ दूसरी
टोली से हुआ जिसमें वह ज़ख़्मी
हुआ लेकिन ज़ुलफ़िकार ख़ांव
ग़ैरा अपने दुशमनों को भगाक
र ख़ान ज़फ़रजंग के पास चले
आये दूसरे दिन ख़ान ने रूपड़
में जाकर जंगल कटवाया और अ
पने लशकर के आस पास मट्टी
और कांटों का कोट बनाया यह
एसी जगह थी कि जहां से मऊके
किले पर दबाव पड़ सकता था
इस लिये दुशमनों ने भी हरत
फ़से वहां आकर मुक़ाबिले के
वास्ते दीवारें और बुरजें बनाईं
जिनमें बंदूकों के मारने केवा
स्ते जगह रकवी इस से ख़ान ने

ایک جگہہ جمع نہو سکے خان
نے اپنے بیٹے لُطف اللہ
کے ساتھ کچھ فوج مدد کو
بھیجی لطف اللہ کا مقابلہ
ایک دوسری جماعت سے
ہوا جسمین وہ زخمی ہُوا -
ذوالفقار خان وغیرہ اپنے
دشمنون کو مغلوب کر کے
خان کے پاس چلے آئے
دوسرے دن خان نے
روپڑ مین جاکر جنگل کٹوایا
اور اپنے لشکر کے گرد مٹّی
اور کانٹون کی آڑ بناکر ضابط
کیا دشمنون نے اس سبب
کہ وہ مقام سرکوب قلعہ
مئو کا تھا ہرطرف سے آکر
مقابلہ کے واسطے دیوارین
اور بُرجین بنائین اور اُنمین
بندوق مارنے کے لیے
جگہہ رکھی خان نے جلدی
کرنے مین فائدہ نہ دیکھ کر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रायदी और बादशाह का हुक्म सईदखां ज़फ़र जंग को उधर भेजने का आया जिस्के साथ जाने को निजाबत खां नज़र बहादुर अकबर कुली सुलतान गक्कड़ और राजा मान गुलेरी नूरपुर से तईनात हुवे॥

खान जहां ज़फ़र जंग ने कातिक सुदी ७ को नूरपुर के घाटे सेरवाने होकर पहाड़ के क़रीब रूपड़ के रस्ते पर डेरा किया और अपने दोनों बेटों को ज़ुलफ़िक़ार खां वग़ैरा के साथ पहाड़ के ऊपर मुक़ाम करने की जगह देखने के लिये भेजा उन्हों ने ऊपर जाकर खान को कहलाया कि यह बात किसी क़दर जंगल काटे बग़ैर मुम्किन नहोगी॥

इतने में ४।५ हज़ार दुशमनों ने एक पहाड़ की चोटी से उतर

اوسطرف بھیجنے کا آیا نجابت خان نظر بہادر خویشگی اکبر قلی سلطان گہکڑ اور راجہ مان گوالیاری (گلیری) اوس کے ساتھ جانے کو متعین ہوئے +

خان جہان بہادر ظفر جنگ نے ۵ شعبان کو نورپور کے گھاٹہ سے روانہ ہوکر پہاڑ کے قریب سرراہ رُوپڑ کے ڈیرہ کیا اور اپنے دو بیٹون کو معہ ذوالفقار خان وغیرہ کے پہاڑ کے اوپر ڈیرہ کرنے کی جگہہ دیکھنے کے لئے بھیجا انہون نے جاکر خان کو کہلایا کہ یہ بات بغیر قطع کرنے کسی قدر جنگل کے ممکن نہوگی +

اس اثنا مین چار پانچ ہزار دشمنون نے ایک پہاڑ کی چوٹی سے اُترکر اُون کا مقابلہ کیا بادشاہی آدمی جھاڑی کے سبب سے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

के चोतरफ़ खुद बहुत घनी झा
ड़ी थी ॥

बादशाही लशकर ने इन
दीवारों के पास मोरचे बनाने
शुरू किये जिन के ऊपर राजा
के आदमी अपने मोरचों में से
बराबर तीर और बंदूक मारते थे
और जो लोग जंगल में घास ल
कड़ी लेने को जाते थे मोक़ादे
ख कर उनके ऊपर भी हमला
करते थे ॥

कातक बदी ४ को रुसत
म ख़ां और कुलीच ख़ां पठा
न में शाहज़ादे के पास हाज़ि
र हुवे उसने बादशाह के हुक्म
मूजिब कुलीच ख़ां को मऊ की
तरफ़ भेजा और रुस्तम ख़ां को
वास्ते मदद ख़ान जहां के ख़ानेकिया
जो ज़िमींदार बादशाही चाकर
थे उन्होंने रूपड़ की तरफ़ से
मऊ के ऊपर हमला करने की

لشکر والون نے اُن
دیوارون کے پاس مورچے
بنانے شروع کئے راجہ کے
آدمی اپنے مورچون سے برابر
تیر اور تفنگ سر سانتے تھے اور
جو لوگ جنگل مین گھاس لکڑی
کے واسطے جاتے تھے موقع
پاکر اُنکو بھی ایذا پہنچاتے تھے

۱۷- رجب کو قلیچ خان اور
رستم خان پٹھان مین بادشاہ
زادہ مُراد بخش کے پاس
پہنچے بادشاہ زادہ نے بموجب
حکم بادشاہ کے قلیچ خان کو تو
مئو کی طرف بھیجا اور رستم خانکو
واسطے کُمک سید خانجہان کے
روانہ کیا۔

جو زمیندار کہ بادشاہی چاکر
تھے اُنھوں نے روپڑ کی
طرف سے مئو کے اوپر حملہ
کرنے کی رائے دی اور
بادشاہ کا حکم سعید خان کو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर नूरपूर के किले से आधको
स१ घाने के ऊपर जा पहुंचे खा
न जहां ने क़िले की तलहटी
को लूट कर क़िले को घेरा जग
त सिंघ ने तमाम सामान तैया
र करके २००० बंदूकची कि ले
की हिफ़ाज़त पर तईनात कि
ये थे उधर सईद खां ज़फर जंग"
हारा" पहाड़ के रस्ते से और राजा जय
सिंघ और असालत खां चक्की
नदी के किनारे पहुंच कर म
ऊ के पास शामिल हुवे और रा
जा बासू के बाग़ में जो पहाड़ के
नीचे है ठहरे॥

राजा जगत सिंघ ने पहा
डों और घाटों में कहीं नाका औ
र रस्ता ख़ाली नहीं छोड़ा था स
ब जगह ऊंची २ दीवारें उठाक
र उस्के ऊपर तोपें और बंदूकें ध
र दी थीं और चोकी पहरे जगह २
बैठा दिये थे और जो क़िला था उस

دوسری راہ سے
گذر کر قلعہ نورپور سے آدہ کوس
ایک تھانہ کے اوپر جا پہونچا
خانجہان نے قلعہ کی تلہٹی کو
لوٹ کر قلعہ کا محاصرہ کیا راجہ
جگت سنگھ نے تمام سازوسامان
جنگ کا تیار کرکے دو ہزار بندوقچی
قلعہ مین حفاظت کے لئے چھوڑے
تھے اودھر سعید خان ظفر جنگ
کوہ ہارا کے راستہ سے اور
جے سنگھ و اصالت خان کنار
آب چکی سے پہونچکر مئو کی پاس
شامل ہوئے اور راجہ باسو کے باغ
مین جو پہاڑ کے نیچے تھا فروکش ہوئے
راجہ جگت سنگھ نے کسی جگہہ
دروں مین کوئی راستہ اور
رخنہ باقی نہین چھوڑا تھا سب کے
اوپر اونچی اونچی دیوارین اٹھا کر
توپ اور بندوق چڑھا دی تھی
اور قلعہ کے گرد خود جھاڑی بہت
گھنی تھی +

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को मऊ का क़िला फ़तह करने के वास्ते भेजा और आपरसद व ग़ैरा ज़रूरी सामानोंकेपहुंचाने के वास्ते पठान में रहा जो मऊ से ३ कोस है ॥

सैयद ख़ान जहां बादशाह के हुक्म से भादों सुदी ४ को रायपुर से नूरपुर कोपहलवान की घाटी में होकर रवानेहुआ आगे जगत सिंघ का बेटा राजरूप घाटी रोके पड़ा था उसको खान जहां के हिरावल निजाबत ख़ां ने आसोज बदी ७ को भगा दिया कुछ लोग दीवारें बनाकर उनकी ओट में लड़ने को बैठेथे उनको भी दीवारें तोड़ कर लड़ाई में हरा दिया और लशकर घाटी के ऊपर चढ गया वहां से नूरपुर तक रस्ते में जगह २ लोग मुक़ाबिले के वास्ते बैठे थे मगरलशकर वाले १ दूसरे रस्ते से निकल

मऊ भेजा और आप वास्ते पहुंचाने रसद ज़ौक़ वग़ैरह के पठानमें रहा जो मऊ से ३ कोस है ॥

सैयद ख़ानजहां बादशाह के हुक्म से २- जमादी उलसानी को रायपुर से बराह कतल पहलवान नूरपुर को रवाना हुआ था कतल मज़कूर के ऊपर राजा जगत सिंघ का बेटा राजरूप रास्ता रोके हुए पड़ा था उसको ख़ानजहां के हिरावल निजाबत ख़ान ने तारीख़ २१- माह मज़कूर को भगा दिया कुछ लोग दीवारें बनाकर उनकी ओट में लड़ने को मुस्तइद बैठे थे अहल लशकर ने दीवारें तोड़ कर उनको भी बाद जंग भगा दिया- और घाटी के ऊपर चढ़ गये वहां से नूरपुर तक जाबजा लोग रास्ते में लड़ने के लिये बैठे थे

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जंगल काटने पर भेजा जिन्होंने प्रताप के आदमियों को हरा कर बाग़ में डेरा किया और वहां के पेड़ काट डाले आख़िर प्रताप ने डर कर ८०००० नज़राने के देने क़बूल किये और यह इकरार किया कि जब मेरी दिलजमईही जावे गी तो मे भी पटनेमें आजाऊंगा शायस्ता ख़ां गरमी की तकलीफ़ और बरसात के क़रीब आजाने से यह पेशकशले कर चैत बदी ८ संबत १६९७ को पटने की तरफ़ लौट आया॥

पठानकीमोहिम

मंगसिर बदी ३ को बादशाह शिकार के वास्ते राजा जगत सिंघ के वतन गांव बाहन की तरफ़ रवाने हुवे और शाहज़ादे ने पठान में पहुंच कर सईद ख़ां, राजा जय सिंघ और असालत ख़ां

اسی ہزار روپیہ بطور پیشکش کے دینا قبول کیا اور کہا کہ جب میری دلجمعی ہوجاوے گی تو مین بھی پٹنہ مین آؤنگا شایستہ خان بلحاظ موسم گرما وقرب بارش کے اُس سے زر پیشکش وصول کرکے تاریخ ۲۲- ماہ ذی قعدہ سنہ ۱۰۵۰ کو پٹنہ کی طرف لوٹ آیا

پٹھان کی مہم

۱۷- شعبان کو بادشاہ واسطے سیر وشکار کے گانو دائن کی طرف تشریف فرما ہوئے جو راجہ جگت سنگھ کا وطن تھا-

شاہزادہ نے پٹھان مین پہونچکر سعید خان راجہ جے سنگھ اور اصالت خان کو واسطے فتح قلعہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में अपने बेटे मोहम्मद तालि
ब को छोड़ कर मंगसिर बदी १
सं. १६९७ को ५०० सवारों सेर वा
नेहुआ "गया, तक पटनेऔर प
लामूं की सरहद थी वहां से आ
गे हर मंज़िल पर ख़ान अपनेल
शकर के चोतरफ़ खाई खोदक
र उसके ऊपर मिट्टी की दीवार
बनाता था और रात को पूरा चो
की पहरा रखता था कि जिसमें
दुशमन छापा न मार सके कूच
के वक्त जंगल काटता हुआऔ
रदोनों तरफ़ के गावों को जला
ता हुआ जाता था दुशमन घात
में रह कर जब क़ाबू पाते थेत
ब हमला करके मुक़ाबिला क
रते थे ख़ान इसतरह लड़ता
भिड़ता फागण सुदी ६ संबत
१६९७ को पलामूं के उत्तर मेंजा
पहुंचा मगर वहां बहुत ही घना
जंगल था ख़ानने कुछ लोगों को

معہ جمعیت پانچہزار سوارون کے
روانہ ہوا گیا تک پٹنہ اور پلامون
کی سرحد تھی اسلئے وہان سے
آگے خان مذکور ہر منزل پر
لشکر کے گرد خندق کھود کر
اور اوسکے اوپر مٹی کی دیوار بنا کر
رات کو پہرہ اور چوکی کا ضابطہ
کرتا تھا تاکہ دشمن چھاپہ نہ مار سکے
اور دن کو جنگل کاٹتا اور دونون
طرف کے گانو لوٹتا جاتا تھا دشمن
لوگ گھات مین رہکر جہان قابو
پاتے تھے مقابلہ کرتے تھے خانیہ
خان اسطرح لڑتا بھڑتا تاریخ ۵
ذیقعدہ کو پلامون کے شمالی
بازو پر پہنچا وہان جنگل بہت گھنا
تھا خان نے جنگل کٹوانے کے
لئے ایک جماعت مقرر کی جس
نے دشمنون کو مغلوب کرکے
ایک باغ مین ڈیرا کیا اور
درخت سب کاٹ ڈالے
آخر پرتاپ نے خائف ہوکر

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ग़रज़ मिली हुई देख कर उसको तो इस लामाबाद की तरफ़ बुंदेलों की मोहिम पर भेजदिया औ रबहादुर ख़ां के वहांसे शाहज़ादे के पास पहुंचने का हुक्म लिखा ॥

पलामूं पर मोहिम

पटने से २५ कोस पर पलामूं का इलाक़ा है और वहांसे १५ कोस ज़मींदार का क़िला है बलभद्र चेरू का बेटा प्रतापपीढियों से वहां का राजा था जोबिकट पहाड़ों में रहने से बादशाही बंदगी नहीं करता था अब दुल्ला ख़ां के पीछे शायस्ता ख़ां पटने का सूबेदार हुआ तो उसने बादशाह को अरज़ी पर तापकी शिकायत में लिखी जिसपर बादशाह ने सज़ा देने का हुक्मलिखा भेजा तब शायस्ते ख़ां पटने

واسطے انصرام بقیہ مہم بندیلہ کے بھیجدیا اور بہادر خان کو وہان سے شاہزادہ مراد بخش کے پاس پہنچکر راجہ جگت سنگھ کی مہم مین شامل ہونے کا حکم لکھا۔

پلامون کی مہم

پٹنہ سے ۲۵ کوس پر پلامونکا علاقہ ہے اور وہان سے ۱۵ کوس زمیندار کے رہنے کا قلعہ ہے بلبھدر چیرو کا بیٹا پرتاپ پشتون سے وہان کا راجہ تھا جو کوہستان دشوار گذار مین رہنے سے بادشاہ کی اطاعت نہین کرتا تھا عبداللہ خان کے بعد جب شایستہ خان پٹنہ کا صوبہ دار ہوا تو اُس نے بادشاہ کو عرضی پرتاپ کے اطاعت نکرنے کی شکایت مین لکھی بادشاہ نے اُوسکی گوشمالی کا حکم بھیجا شایستہ خان اپنے بیٹے محمد طالب کو پٹنہ مین چھوڑ کر تاریخ ۱۷- رجب سنہ ۱۰۵۰ کو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

رکھا اور اپنے تمام گھوڑون کا
سر دفتر کیا ایک گھوڑا معہ زین
طلا کے راجہ جسونت سنگہ کو بھی
عنایت فرمایا بادشاہ کو گھوڑون
کا بہت شوق تہا - اور ہمیشہ عمدہ
عمدہ گھوڑے عربی عراقی اور
ترکی وغیرہ منگوایا کرتے تھے
۸ - شعبان کو رائے ٹوڈرمل
فوجدار وامین چکلہ سہرند کو
بادشاہ نے ہاتھی اور گھوڑے
عنایت کئے کیونکہ اُسنے اس
ضلع کے خالصہ کو جیسا کہ چاہئے
آباد اور گلزار کیا تہا -
۱۴ - شعبان کو عبداللہ خان
بہادر فیروز جنگ جو واسطے تنبیہ
راجہ جگت سنگہ کے شاہزادہ
مراد بخش کے لشکر مین تعینات
ہوا تھا کچھ عرض معروض کرنے
کے لئے حاضر آیا بادشاہ نے
اُوسکی عرض مین کچھ غرض دیکھکر
اوسکو تو اسلام آباد کی طرف

گھوڑون سے اوّل نمبر پر رکھوا
اور ۱ گھوڑا سونہری زین کا را
جا جسونت سنگہ کو بھی بخشا
بادشاہ کو گھوڑون کا بہت
شوق تھا ہمیشہ اُمدہ ۲ گھوڑے
عربی عراقی اور ترکی نسل
کے منگایا کرتے تھے ॥

کاتک سُدی ۶ کو چکلے
سرہند کے فوجدار اور امین
رائے ٹوڈرمل کو خلعت
ہاتھی اور گھوڑا عنایت ہوا ۔
کیونکہ اُسنے اس ضلع
کے خالصہ کو جیسا کہ چاہئے
آباد کیا تھا ॥

کاتک سُدی ۱۵ کو عبد
اللہ خان فیروز جنگ جو شاہ
زادہ مراد کے لشکر مین راجا ج
گت سنگہ کو سزا دینے کے واسطے
تعینات ہوا تھا کچھ عرض کر
نے کے واسطے حاضر آیا مگر
بادشاہ نے اُسکی عرض مین کچھ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फिर अबदुल्ला खां बहा
दुर फ़ीरोज़ जंग और कुलीचखां
वग़ैरा कई और अमीर भी इस
मोहिम पर तईनात किये गये
भादों बदी ७ को बादशा
ह ने आगरे के सूबेदार वज़ीरखां
के मरने की ख़बर सुनकर आग
रे के क़िले और सूबे की हिफ़ा
ज़त राजा बिठ्ठल दास को सौं
पी और उस को ख़ासा ख़िलत
भी इनायत किया ॥
कातक बदी १ को बयूता
त (कारख़ानों) की दीवानी
आक़िलखां से उतर कर राय
रायां को मय ख़िलत के मिली
कातक बदी ४ को ७१
उमदा घोडे अरब से १ लाख
रुपयों में ख़रीद होकर आये
उन में से बादशाह ने १ घोडे को
जो १५०००) का था बादशाह पसं
द नाम रख कर अपने तमाम

फिर अबदुल्ला खां बहादुर फ़ीरोज़ जंग और कुलीचखां वग़ैरा कई और अमीर भी इस मोहिम पर तईनात किये गये ✦

२१-जमादी अव्वल को बादशाह ने आगरे के सूबेदार वज़ीरखां के मरने की ख़बर सुनकर क़िलेदारी की हिफ़ाज़त और सूबे दारुल्खिलाफ़त अकबराबाद की हिफ़ाज़त राजा बिठ्ठलदास को सौंपी और उसको ख़ासा ख़िलत मरहमत फ़रमाया ✦

१५ रजब को ख़िलत व ख़िदमत दीवानी बयूतात की राय रायां को बतग़ैर आक़िलखां के इनायत हुई -

१८-रजब को ७१ उमदा घोडे अरब से एक लाख रुपये में ख़रीद होकर आये उनमें एक घोडा जो पन्द्रह हज़ार रुपये की क़ीमत का तहा बादशाह ने पसन्द करके उसका नाम शाहपसंद

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को अफ़सर करके उस्के नाम हुक्म लिखवा कि जो अमीर सूबे का बुलकी मदद्गारी में तईनात हैं उनके साथ स्याल कोट के रस्ते से पठाणों[1] को जावे उस वक्त राजा जय सिंघ, राव अमर सिंघ, हरी सिंघ राठोड़, चंद्र भाण बुंदेला, राय काशी दास और नाहर सोलंखी शाह ज़ादे के पास तईनात थे॥

येतीनों फ़ौजें सावन सुदी ६ को विदा हुईं और शाह ज़ादे के पहुंचने तक उन को रायपुर और बहराम पुर में ठहरने का हुक्म हुआ॥

राय राय सिंघ राजा अमर सिंघ गोकुल दास सीसोदिया और राय सिंघ झाला को घोड़े और खिलत दिये गये॥

بادشاہ نے ان تینون فوجون کے اوپر شاہزادہ مراد بخش کو افسر کرکے اوسکے نام حکم لکھا کہ معہ امرائے کمکی صوبہ کابل کے سیالکوٹ کے راستہ سے پٹھان[1] کو روانہ ہوجاوے راجہ جے سنگھ راؤ امر سنگھ ہری سنگھ راٹھوڑ چندر من بندیلہ رائے کاشی داس و ناہر سولنکھی شاہزادہ کے ہمراہ تھے۔

یہ تینون فوجین ۶ جمادی الاول کو رخصت ہوئین انکو شاہزادہ کے آنے تک رائے پور اور بہرام پور مین ٹھہرنے کا حکم تھا۔

راجہ رائے سنگھ راجہ امر سنگھ گوکلداس سیسودیہ اور رائے سنگھ جھالا کو وقت رخصت اسپ خلعت عنایت ہوئے

(۱) راجا جگت سنگھ جس علاقہ کا مالک تھا اوسکا نام پٹھان ہے॥
[1] راجہ جگت سنگھ جس علاقہ کا مالک تھا اوسکا نام پٹھان ہے جہان اب نورپور ضلع کانگڑہ بتا ہے॥

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिख दिया सुंदर ने वहां पहुंच कर अरज़ी लिखी कि जगत सिंघ डरगया है और यह अर्ज़ करता है कि मुझ को १ साल और वतन में रहने की मोहलत मिल जावे मैं अपने बेटे राजरूप को भेज दूंगा मगर दिल में उसके पाप है इस पर बादशाहने ३ फ़ौजें उसको सज़ा देनेके लिये भेजीं १ फ़ौज का अफ़सर सैयद रवान जहां को दूसरी का सईद खां को और तीसरी का असालत खां को किया पहिली फ़ौज में राजा अमर सिंघ नरवरी, रावरण सिंघ भदोरिया दूसरी में राजा राय सिंघ मोकुलदास सीसोदिया, राय सिंघ झाला, किरपा राम गोड और चैन सिंघ या तीसरी में कोई रजपूत सरदार नहीं था इनतीनों के ऊपर शाहज़ादे मुराद

عرضی لکھی کہ اگرچہ جگت سنگھ ڈر گیا ہے مگر یہ عرض کرتا ہے کہ مجھکو ایک برس تک اور وطن مین رہنے کی مہلت ملجاوے مین اپنے بیٹے راجروپ کو بھیجدونگا مگر باطن مین گمراہ معلوم ہوتا ہے۔

بادشاہ نے یہ حال معلوم کرکے تین فوجین اوس کی گوشمالی کے واسطے روانہ کین ایک کا افسر سید خانجہان کو دوسری کا سعید خان بہادر ظفر جنگ کو اور تیسری کا اصالت خان کو کیا۔

پہلی فوج مین راجہ امر سنگھ نروری رن سنگھ بھدوریہ دوسری مین راجہ رائے سنگھ گوکل داس سیسودیہ رائے سنگھ جھالا کرپارام گوڑ اور چین سنگھ تھے اور تیسری مین کوئی راجپوت سردار نہین تھا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और हर साल ४ लाख रुपये पे
शकश के भी यहांके ज़िमींदा
रों से वसूल किया करूंगा जब
उस की यह अर्ज़ मंज़ूर हुई तो उ
स ने अपने वतन में जा कर तारा
गढ़ के क़िले को जो पहाड़ के
ऊपर है गोले और बारूद वग़ैरा
लड़ाई के सामानों से सजा या औ
र अपने भाई सूरजमल की तरह
जो सज़ा पा चुका था बाग़ी होने
का इरादा किया जब यह हाल
बादशाह को मालूम हुआ तो उ
स को हाज़िर होने का हुक्म लि
खा जिस के जवाब में उस ने कई
उज़र लिख भेजे बादशाह ने सुं
दर कविराय को उस का हाल
दरयाफ़ करने के वास्ते भेजा
और यह फ़रमाया कि उस को न
मक हरामी के बुरे नतीजे से भी
वाक़िफ़ कर देना और ३ हुक्म फिर
भी उस के नाम हाज़िर होने का

وہان کے زمینداروں سے بطور
پیشکش کے تحصیل کرونگا جب
اُوسکی یہ عرض منظور ہوئی تو اُس نے
اپنے وطن مین جاکر قلعہ تاراگڈہ
کو جو پہاڑ کے اوپر ہے آلات
قلعداری سے بخوبی استحکام
دیا اور اپنے بھائی سُورج مل
کی طرح ارادہ بغاوت کیا جو اپنے
اعمال کی سزا پا چکا تہا -
جب یہ حال بادشاہ کو
معلوم ہوا تو اُوسکے بلانے کو
حکم بہیجا جسکے جواب مین اُسنے
ایک عرضی چند در چند عُذرات
کی لکھ بھیجی بادشاہ نے سُندر
کب رائے کو اُوسکا حال دریافت
کرنے کے واسطے جانے کا حکم
دیکر فرمایا کہ اُسکو نمکحرامی کے
نتیجہ بد سے آگاہ کر دینا اور پھر ایک
فرمان بھی اُوسکی طلبی کا سُندر
کو لکھدیا -
سُندر نے وہان پہنچکر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

राजा जगत सिंघ के ऊपर मोहिम भादों बदी ४ को कांगड़े की थाने दारी राजा जगत सिंघ से उतर कर काबुल के अगले सूबेदार सईद ख़ां के बेटे ख़ाना ज़ाद ख़ां को इनायत हुई क्योंके अब सईद ख़ां पंजाब का सूबे दार होगया था ॥

यह राजा जगत सिंघ राजा बासू का बेटा था इस का बड़ा बेटा राजरूप ९ बरस पहिले जब कि बादशाह लाहोर में थे कांगड़े की फ़ौजदारी और वहां के ज़िमींदारों से पेशकश लेने के वास्ते मुक़र्रर हुआ था पिछले बरस जब बादशाह कशमीर में थे तो राजरूप का अपने बाप से बाग़ी होजाना मशहूर हुआ और राजा जगत सिंघ ने बाज़े वज़ीरों की मारफ़त अर्ज़ कराई कि जो कांगड़े की फ़ौजदारी मेरे हवाले होजावे तो मैं राजरूप को भी पकड़ लूंगा

جگت سنگھ کی بدلی فوجداری دامن کوہ کانگڑہ سے ہوئی اور اوسکی جگہہ سعید خان بہادر ظفر جنگ صوبہ دار سابق کابل و حال پنجاب کا لڑکا خانہ زاد خان مقرر ہوا یہ جگت سنگھ راجہ باسو کا بیٹا راجروپ دو سال پہلے فوجداری دامن کوہ کانگڑہ اور وہان کے زمینداروں سے پیشکش لینے کے واسطے مامور ہوا تھا دوسرے برس یعنے پچھلے سال جب بادشاہ کشمیر مین تھے تو راجروپ کا اپنے باپ سے باغی ہو جانا مشہور ہوا اوس وقت راجہ جگت سنگھ نے بعضے وزیرون کے ذریعہ سے عرض کرائی کہ جو فوجداری دامن کوہ کانگڑہ کی مجھ کو عنایت ہو تو مین راجروپ کو بھی گرفتار کرلون گا اور ہر سال چار لاکھ روپیہ بھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हाज़िर हुआ और १ हाथी नज़र किया ॥

असाढ बदी ५ को राजा बिठ्ठल दास को ख़ासा हलक़े से हाथी इनायत हुआ ॥

असाढ सुदी ६ सोमवार को तुलादान के दरबार में राजा जसवंत सिंघ को ख़ासा तवेले से सोने के साज़ का घोड़ा इनायत हुआ ॥

राजा अमर सिंघ को नक़्क़ारा मिला ॥

करम सी राठोड़ के बेटे राम सिंघ का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का होगया ॥

असाढ़ सुदी १२ को राय टोडर मल को जो फ़ौजदार और अमीन चकले सरहिंद का था लक्वी जंगल की फ़ौजदारी भी इनायत हुई ॥

۱۹- ربیع الاول کو ایک ہاتھی حلقہ خاصہ سے راجہ بٹھل داس کو عنایت ہوا +

روز دوشنبہ ۴ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین راجہ جسونت سنگہ کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا معہ ساز طلا کے عنایت ہوا -

راجہ راے سنگہ کو نقارا ملا -

رام سنگہ ولد کرم سی راٹھوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور سات سو سوارون کا ہو گیا

۱۰- ربیع الثانی کو لکھی جنگل کی فوجداری بھی راے ٹوڈرمل کے متعلق ہوئی جو امین و فوجدار چکلہ سرہند کا تھا +

راجہ جگت سنگہ کے اوپر مہم

۱۵- جمادی الاول کو راجہ

Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कोलियों को सज़ादेने के वास्ते च
ढेगा तो अपने बेटे को मय फ़ौज के
उस्के पास भेजेगा बाद इस ठहरा
व के जाम आज़म ख़ां के पास आ
या और आज़म ख़ां उससे मिलक
र शाह पुर को लोट गया ॥

पहिले जेठ की सुदी ४ को रा
जा जसवंत सिंघ को १ हाथी ख़ा
सा हलक़े में से इनायत हुवा ॥

दूसरे जेठ की सुदी २ को वह
नहर जो अली मरदान ख़ां की त
जवीज़ से तैयार होती थी लाहोर
में पहुंच गई बादशाह ने उस के
नारे पर बाग़ लगाने और महल
बनाने का हुक्म दिया ॥

दूसरे जेठ की सुदी ६ को राजा
बिट्ठल दास अपनी जागीर से आया

असाढ बदी ३ को नर वरके
राजा राम दास का बेटा राजा अम
र सिंघ गवालियर के जागीरदार से
यद ख़ान जहां के साथ दरगाह में

کی تنبیہہ وتادیب کو متوجہ ہوگا تو
اپنے بیٹے کو معہ فوج کے اُوس کے
پاس بھیجے گا بعد اس قرار داد کے
وہ اعظم خان کے پاس آیا - اور
اعظم خان نے اوُس سے ملکر
شاہ پور کی طرف مراجعت کی -

۲ - صفر کو ایک ہاتھی
خاصہ حلقہ مین سے راجہ جسونت سنگہ
کو عنایت ہوا -

۲۹ - صفر کو وہ نہر جو علیمردانخان
کی تجویز سے تیار ہو رہی تھی لاہور تک
پہونچگئی بادشاہ نے اُوسکے کنارہ
پر ایک عمدہ باغ اور محل تیار کرنے
کا حکم دیا -

۷ - ربیع الاول کو راجہ بٹھل داس
اپنی جاگیر سے آیا -

۱۷ - ربیع الاول کو نرور
کے راجہ امر سنگہ ولد راجہ رامداس
نے سید خانجہان جاگیردار گوالیار
کے ہمراہ درگاہ مین حاضر ہو کر
ایک ہاتھی نذر کیا -

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तक जो "जाम" और भाराइला कों और
समंदर से मिली हुई है किसी फ़
सादी को फ़साद करने की ताक़त
नरही मगर जाम ने जैसा किचा
हिये बंदगी नकी इस से आज़म
ख़ां उरके ऊपर चढ़कर गया जब
जाम नगर ७ कोस रहा तो जाम उ
ससे मिलने को आया मगर ख़ान
ने कहला भेजा कि जब तक महमू
दी सिक्कों की टकसाल नवानग
रसे मोकूफ़ न करोगे पीछा न छू
टेगा जाम ने १०० कच्ची घोड़े औ
र ३ लाख महमूदी देना क़बूल क
रके उस टक साल के बंद करदेने
का इक़रार कर लिया और यह
भी अंगेज़ लिया कि जो अहमदा
बाद की रैय्यत उरके मुल्क मेंहै उ
सकी अपनी सरहद से निकाल दे
गा ता कि वह अपने वतन को
चली जावे और जब अहमदाबा
द का सूबेदार गिरासियों और

خلیل آباد کولی واڑہ مین اور ایک
قلعہ شاہ پور کے نام سے کاٹھیاواڑ
مین بنایا اور سرحد جالور سے کاٹھیاواڑ
کی سرحد تک جو علاقجات جام و بہارا
اور دریائے شور سے ملحق ہے ایسا
انتظام کیا کہ کسی مفسد مین فساد
کرنے کی طاقت باقی نہ رکھی مگر جام نے
قرار واقعی بندگی نہ کی اس سے اعظم خان
اُوسکے اوپر چڑھکر گیا جب جام نگر کے سات
کوس ادھر پہنچا تو جام اُس سے ملنے
کے لئے آیا مگر خان نے اُس سے
کہلایا کہ جب تک نوانگر سے محمودی سکہ
کا مضروب ہونا موقوف نکرے گا
عقب گذاری نہوگی جام نے ایک سو
کچھی گھوڑے اور تین لاکھ محمودی
دینا قبول کرکے اُس ٹکسال کی
موقوفی کا بھی اقرار کیا اور کہا کہ احمد آباد
کی رعیت کو جو اُسکے ملک مین ہے
اپنی سرحد سے نکال دیگا تاکہ وہ
اپنے وطن کو چلی جاوے اور جب
ناظم احمد آباد کولیون اور گراسیون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बैसाख सुदी २ को बादशाह ने महेश दास राठौड़ को राज सिंघ के मर जाने से खिलअत और घोड़ा देकर राजा जसवंत सिंघ के कामों का अख्तियार दिया॥

बैसाख सुदी १३ को १००० सवार राजा जसवंत सिंघ के मनसब से जो पांच हजारी पांच हज़ार सवारों का था दो अस्पा और सिह अस्पा मुकर्रर हुवे॥

महेश दास महाबत खांनी को हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का मनसब मिला॥८

आज़म खां ने जो ८ बरस से गुजरात का सूबेदार था कोलियों और काठियों का चोरी घोड़ा बंद करके क़िला शाहपुर का काठियावाड़ में और मज़बूत क़िले आज़मपुर और खलील आबाद को लीवाड़े में बनाये और जालोर से लेकर काठियावाड़ की सरहद

ग़ुर्रे मुहर्रम को बादशाह ने महेश दास राठौड़ को राज सिंघ के मर जाने से खिलअत और घोड़ा इनायत करके राजा जसवंत सिंघ का मुख्तारुल मुहाम मुक़र्रर फ़रमाया॥

११ मुहर्रम को एक हज़ार सवार राजा जसवंत सिंघ के मनसब में से जो पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार का था दो अस्पा और सिह अस्पा हो गये।

महेश दास महाबत खानी को हज़ारी ज़ात और आठ सौ सवार का मनसब इनायत हुआ।

राये सिंघ जहालाने हज़ारी ज़ात और पांच सौ सवारों के मनसब पर मुक़र्रर होने की इज़्ज़त पाई।

आज़म खां ने जो आठ बरस से गुजरात का सूबेदार था कोलियों और काठियों की चोरी और राहज़नी बंद करने के वास्ते दो क़िले आज़म पुर और

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जसवंत सिंघ वतन से हाज़िर आया
बैसाख बदी ७ को राजा राय
सिंघ को हाथी इनायत हुआ ॥
जंमूं के चकले का फ़ौजदार
शक्र उल्ला अरब था वह मौक़ूफ़
हो कर सरंदाज़ ख़ां उसकी जगह
हुआ ॥
बैसाख बदी ८ को राव अम
र सिंघ को ख़िलअत और घोड़ा
चांदी की ज़ीन का और हाथी और
चतुरभुज चोहान को ख़िलअत औ
र घोड़ा इनायत हो कर दोनों को
शाहज़ादे मुराद के पास जाने का
हुक्म हुआ ॥
बैसाख बदी १३ को राजा जस
वंत सिंघ को ख़िलअत और जड़ा
ऊ चौप (कत्ती) इनायत हुई ॥

बरस १५ वां

बैसाख बदी १ सं· १६९८ से
बैसाख बदी १ सं १६९९ तक

जसवंत सिंघ ने वतन से आकर
दौलत मुलाज़मत हासिल की -
२१- ज़ी हिज्जह - राजा राय सिंघ
को हाथी इनायत हुआ +
जमूं के चकले का फ़ौजदार
शक्र उल्ला अरब था उसको बदलकर बादशाह
ने सरंदाज़ ख़ां को मुक़र्रर किया -
२२- ज़ी हिज्जह राव अमर सिंघ
को ख़िलअत और घोड़ा चांदी की ज़ीन का
और हाथी व चतुरभुज चोहान को ख़िलअत
और घोड़ा इनायत हो कर दोनों को
शाहज़ादा मुराद बख़्श की ख़िदमत में
जाने का हुक्म हुआ -
२७- ज़ी हिज्जह को राजा जसवंत सिंघ
को ख़िलअत और जड़ाऊ दो चौप
(कत्ती) इनायत हुई +

बरस पन्द्रहवां

सन १०५१

२ अप्रैल सन १६४१ ई से १२ मार्च सन १०४२ तक

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फागण सुदी १३ को राजा जयसिंघ अपने वतन से आया ॥

फ़ागण सुदी १४ को महेश दास के बेटे रतन को सुनहरी साज़ की तलवार इनायत हुई ॥

चैत सुदी ६ सं. १६९० को राजा जय सिंघ के बेटे बेटे रामसिंघ को हाथी इनायत हुआ ॥

चैत सुदी १० को किनो रोज़ (नया दिन) या बादशाह ने शाहज़ादे मुराद को फिर काबुल के इन्तज़ाम पर भेजा राजा जय सिंघ हरी सिंघ राठोड़ राजा जय राम राय काशी दास, नाहर, इन्द्र साल हाडा, और चंद्र भान कछवाहा, उस के साथ गये ॥

राजा जय सिंघ को खिलअत जमधर मीनाकार फूल कटारी और घोड़ा सुनहरी ज़ीन का इनायत हुआ ॥

बैसाख बदी २ को राजा ज

کو ہاتھی عنایت ہوئے۔

۱۲۔ ذیقعدہ کو راجہ جیسنگھ وطن سے حاضر آیا۔

۱۴ ذیقعدہ کو مہیش داس کے بیٹے رتن کو تلوار معہ سازطلائی کے عطا ہوئی ✤

۵ ذی الحجہ کو راجہ جے سنگھ کے بڑے بیٹے رام سنگھ کو ہاتھی عنایت ہوا ✤

۹ ذی الحجہ کو نوروز ہوا اُسدن بادشاہ نے پھر شاہزادہ مرادبخش کو کابل کی طرف روانہ کیا راجہ جے سنگھ کچھواہہ ہری سنگھ راٹھوڑ۔ راجہ جیرام۔ رائے کاشی داس ناہر۔ اندر سال ہاڈا۔ اور چندربھان کچھواہہ اُسکے ساتھ تعینات ہو کر گئے راجہ جے سنگھ کو خلعت جمدھر میناکار پھول کٹارہ سمیت اور گھوڑا معہ زین مطلا کے عنایت ہوا۔

۱۶۔ ذی الحجہ کو راجہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पोसबदी २ को सूबे काबुल के अख़बार से मालूम हुआ कि सैयद दिलेर ख़ां थानेदार नोशहरा यूसूफ़ ज़ई पठानों के मुक़ाबिले में जो उस्के ऊपर चढ़ कर आये थे अपने भाई बंदों समेत मारा गया ॥

फागण बदी ५ ब्रहसपत वार को बादशाह के ५० वें बरस शुरू होने का तुलादान हुआ जिस्के दरबार में अली मरदान ख़ां को बहुत सी नवाज़िशों के साथ काबुल की सूबेदारी मिली चंद्र मणि बुंदेला उस सूबे के मददगारों में था इस लिये उस्को घोड़ा इनायत हुआ ॥

फागण सुदी १० को रावरतन हाडा का बेटा माधो सिंघ ५०० सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारों का मनसबदार हुआ ॥

महेस दास राठोड और चंद्र भान को हाथी इनायत हुए ॥

کے وقایع سے معلوم ہوا کہ سید دلیر خان تھانہ دار نوشہرہ یوسف زئی افغانون کے حملہ مین معہ اپنے چند بھائیون اور رشتہ دارون کے کام آیا۔

روز پنجشنبہ ۱۹ شوال کو بادشاہ کا پچاسوان شمسی برس شروع ہوا جس کے تُلا دان کی جشن مین علیمردان خان کو بہت سی نوازشون کے ساتھ کابل کی صوبہ داری عنایت ہوئی اور چندرمن بندیلہ کو بھی جو اوس صوبہ کے کمکیون مین تھا گھوڑا بخشا گیا۔

۹ ذی قعدہ کو لاہور مین راؤ رتن ہاڈا کے بیٹے مادھو سنگھ نے پانسو سوارون کے اضافہ سے سہ ہزاری ذات و ڈھائی ہزار سوار کے منصب پر سربلندی پائی۔ مہیش داس راٹھوڑ اور چندربھان

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कशमीर से लाहोर की तरफ़ र
वाने हुवे किशटवार के राजा कं
वर सैन को जो सूबे कशमीर के
तइनातियों में से था खिलअ़त औ
र घोड़ा इनायत हो कर रुख़सत हुई

कातक सुदी ६ को मुक़ाम
बहीरे में राजा राम सिंघ ने हाज़िर
हो कर सलाम किया ॥

मंगसिर सुदी २ को बादशा
ह लाहोर में पहुंचे ॥

पोसबदी ७ को शाहज़ादे मुरा
द बख़्श हाज़िर हुआ उसके साथ
राव रतन का बेटा माधो सिंघ भी
दरबार में हाज़िर आया ॥

बहादुर ख़ां ने चंपत बुंदेले से
लड़ कर उसको भगा दिया ॥

माह बदी ३ को मुल्ला सा दु
ल्ला अर्ज़ मुकर्रर (दूसरी दफ़े अर्ज़
करने की) ख़िदमत पर नोकर हु
आ यही बाद को सादुल्ला ख़ां व
ज़ीर कहलाया ॥

دوشنبہ ہفتم جمادی الثانی کو
بادشاہ کشمیر سے لاہور کی طرف روانہ
ہوئے راجہ کنور سین کشٹواری کو
جو صوبہ کشمیر کی تعیناتیون مین سے
تھا خلعت اور اسپ عنایت ہو کر
گھر جانے کی رخصت ہوئی -

۵ رجب کو راجہ رام سنگھ نے
مقام بہیرہ مین حاضر ہو کر دولت
آستان بوسی کی حاصل کی -

غرہ شعبان کو بادشاہ لاہور
مین رونق افروز ہوئے -

۱۹ شعبان کو شاہزادہ
مرادبخش حاضر آیا اوسکے ساتھ راؤ
رتن کا بیٹا مادھو سنگھ بھی بادشاہ
کے حضور مین باریاب ہوا -

بہادر خان نے چنپت بندیلہ
سے لڑکر اُسکو بھگا دیا

۷ رمضان کو ملا سعد اللہ
خدمت عرض مکرر پر نوکر ہوا جو
بعد کو سعد اللہ خان وزیر کہلایا -

۱۶ - شوال کو صوبہ کابل

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भादों सुदी ७ को राजा जगत सिंघ ने अरज़ किया कि कांगड़े की फ़ौजदारी मुझ को इनायत हो वे तो हरसाल ४ लाख रुपये ॥ वहां के ज़मींदारों से लेकर ख़ज़ाने में भेजता रहूंगा॥

भादों सुदी ९ को बादशाह राजा जगत सिंघ को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर कांगड़े की फ़ौजदारी पर भेजा॥

इसी दिन टोडरमल अफ़ज़ल ख़ानी को राय का ख़िताब ख़िलअत और ख़िदमत दीवानी फ़ौजदारी और अमीनी सरकार सहरंद की इनायत हुई॥

असोज बदी १० को बादशाह ने जाफ़र ख़ां और राजा राय सिंघ वग़ैरा को ख़ालिसे के फ़ालतू कार ख़ानों के साथ अंबर की तरफ़ रवाने किया॥

आसोज सुदी ९ को बादशाह

کے عنایت ہوا۔

۶ جمادی الاول کو راجہ جگت سنگھ نے عرض کرائی کہ جو فوجداری دامن کوہ کانگڑہ کی مجھکو عنایت ہوجاوے تو مین ہر سال چار لاکھ روپیہ وہان کے پہاڑی زمینداروں سے وصول کرکے خزانہ مین پہونچایا کرونگا

۸ جمادی الاول کو بادشاہ نے راجہ جگت سنگھ کو خلعت اور گھوڑا روپہلی زین کا عنایت کرکے کوہستان کانگڑہ کی فوجداری پر بھیجا۔

اسی دن ٹوڈرمل افضلخانی کو خلعت رائے کا خطاب اور عہدہ دیوانی امینی اور فوجداری سرکار سہرند کا عنایت ہوا۔

۲۸ جمادی اول کو بادشاہ نے جعفر خان راجہ رائے سنگھ اور دوسرے بادشاہی بندوں کو معہ فالتو کارخانجات سرکار خالصہ شریفہ کے پہنبر کیطرف روانہ کیا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में हाजिर होकर ४ लाख रुपै नज़र
कियेहैंबादशाहने वहरुपया शाह
ज़ादे को ही बख़्श दिया ॥

आसाढ़ सुदी २ को शाहज़ादे
मुराद के नाम काबुल जाने का हु
क्म लिखा गया ॥

असाढ़ सुदी ३३ को करम सी
राठौड़ का बेटा राम सिंघ जो राणा
जगत सिंघ का भान जाया और रा
णा की ही नौकरी में था बादशाही
बंदगी के वास्ते राणा के पास सेहा
ज़िर आया बादशाह ने उसको खि
लअत देकर हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब बख़्शा ॥

सावन सुदी ५ को तुलादान
के दरबार में राय साल दरबारी के
बेटे भोज राज को हज़ारी ज़ात और
५०० सवारों का मनसब मिला, राय
रायां का १ हाथी नज़र हुआ और
राजा राय सिंघ को सुनहरी ज़ीन का
घोड़ा इनायत हुआ ॥

आया اور چار لاکھہ روپیہ اس
نوازش کے شکرانہ مین لایا
ہے بادشاہ نے وہ روپیہ شاہزادہ
کو ہی عطا کردیا۔

سلخ ماہ صفر کو شاہزادہ
مراد کے نام کابل جانے کا
حکم لکھا گیا۔

۱۱۔ ربیع الاول کو کرم سی
راٹھوڑ کا بیٹا رام سنگہ جو رانا جگت سنگ
کا بھانجا اور عمدہ نوکر تھا بادشاہی
ملازمت کے ارادہ سے حاضر
آیا بادشاہ نے اُسکو خلعت اور
منصب ہزاری ذات وچھہ سو
سوار کا عنایت فرمایا۔

۳ ربیع الثانی روز دوشنبہ
کو جشن وزن قمری مین رای سال
درباری کے بیٹے بھوجراج کو
ہزاری ذات اور پانسو سوار کا
منصب عطا ہوا۔

راے بان کا ایک ہاتھی نذر ہوا
راجہ رای سنگہ کو گھوڑا معہ زین مطلا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और अबदुल्ला ख़ां की जगह बहादुर ख़ां को बुंदेलों की मुहिम पर तईनात करके भेजा कियोंकि अबदुल्ला ख़ां से यह काम अच्छी तरह न हो सका था ॥

असाढ़ बदी ६ को रूस के क़ैसर मुराद ख़ां के वकील ने कशमीर में हाज़िर होकर १ घोड़ा और सुलतान का ख़त्ली ता पेश किया बादशाह ने उस्को १ भारी रिख़लअत मय जड़ाऊ ख़ंजर और १५००० नक़द के इनायत किया

भट नदी के चढ़जाने से कशमीर और पंजाब में बहुत नुक़सान पहुंचा ॥

असाढ़ बदी ७ को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ी से बादशाह को मालूम हुआ कि गोंड़वाने के ज़मींदार चांदा के बेटे बापजी ने कि जिस को बाप की जगह बैठने की इजाज़त हुई थी बुरहानपुर

قید کردیا اور بہادر خان کو بجائے عبداللہ خان واسطے استیصال بندیلون کے مقرر کرکے بہیجا کیونکہ یہ کام عبداللہ خان سے اچھی طرح نہو سکا تھا۔

۲۰ صفر کو کشمیر مین ارسلان آقا سفیر سلطان مراد خان والی روم نے حاضر ہو کر قیصر کا نامہ اور ایک گھوڑا پیش کیا خلعت فاخرہ کمر خنجر مرصع اور پندرہ ہزار روپیہ اُسکو عطا ہوئے۔

دریائے بہٹ کی طغیانی سے کشمیر اور پنجاب مین بہت نقصان پہونچا۔

۲۱ صفر کو شاہزادہ اورنگ زیب کی عرضی برہانپور سے پہونچی لکہا تھا کہ چاندا زمیندار گونڈوانہ کا بیٹا باپ جی جو بعد گذر جانے اپنے باپ کے حسب الحکم جانشین ہوا تہا اندنون برہان پور مین حاضر

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की मदद से कि जिन्हें वहां के सूबेदार ने इकट्ठा कर के सड़क बनाने के वास्ते भेजा था बरफ़ कटवा कर आदमियों और कारखानों के हाथियों के लिये गली निकाली और उसमें बरफ़ कुटवा कर सड़क बनवादी ॥

जेठ सुदी ५ को बादशाह बरफ़ की घाटी से गुज़रे और राजा जगत सिंघ ने घाटी के सिरे पर हाज़िर होकर मुजरा किया ॥

जेठ सुदी १० को बादशाह कशमीर पहुंचे॰

बरस १४ वां

बैसाख सुदी २ संबत १६९७ से बैसाख सुदी २ संबत १६९८ तक

अबदुल्ला खां ने जुझारसिंघ के बेटे प्रथ्वी राज को तो उरछे के क़रीब १ जंगल में पकड़ा और चंपत लड़ कर भाग गया बादशाह ने प्रथ्वी राज को गवालियर के क़िले में क़ैद रखने का हुक्म दिया ॥

اور اُسطرف کے مزدورون کی مدد سے کہ جنکو صوبہ دار کشمیر نے جمع کرکے سڑک بنانے کے واسطے بھیجا تھا برف ہٹاکر آدمیون اور کارخانونکے ہاتھیون کے لئے گلی نکالی اور اُسمین برف کوٹ کر سڑک بنادی -

۴- ذی الحجہ کو بادشاہ برف کی گھاٹی سے گذرے اور راجہ جگت سنگھ نے گھاٹی کے سرے پر حاضر ہوکر زمین بوس حاصل کی -

۹ ذی الحجہ کو بادشاہ کشمیر مین پہونچے

برس چودہوان

سنہ ۱۰۵۰ھ

۱۴- اپریل سنہ ۱۶۴۰ سے ۲ اپریل سنہ ۱۶۴۱ء تک

عبداللہ خان نے پرتھی راج بندیلہ ولد راجہ جوجھار سنگھ کو ایک جنگل مین سے قریب اُرچھہ کے گرفتار کرلیا اور چنپت بعد جنگ بھاگ گیا بادشاہ نے پرتھی راج کو قلعہ گوالیار مین

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

जब काबुल जाने का हुक्म पहुंचे तो फ़ौरन रवाने हो जावे उसके तईनातयों में माधो सिंघ हरी सिंघ राठोड़ और राजा जय राम भी थे॥

फागण सुदी १० को शाहज़ादा औरंग ज़ेब चिनाब नदी के किनारे से दौलता बाद को रूख़सत हुआ॥

फागण सुदी ११ को उसी मुक़ाम पर राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअत और घोड़ा सुनहरी ज़ीन का ख़ासा तवेले से इनायत हुआ और वतन जाने की रुख़सत मिली राज सिंघ को भी ख़िलअत और जड़ाऊ ख़ंजर इनायत हो कर उसके साथ जाने की इजाज़त हुई॥

चैत बदी ६ को राजा जगतसिंघ पुंगिच का रस्ता खोलने और घाटी से बरफ़ हटाने के वास्ते रवाने किया गया उसने वहां पहुंच कर कश्मीर के ज़मींदारों की

کہ جب کابل جانے کا فرمان پہونچے فوراً روانہ ہو جاوے اُسکی تعیناتیون مین مادہو سنگہ ہری سنگہ راٹھوڑ اور راجہ جے رام بھی تھے۔

۸ ذیقعدہ کو شاہزادہ اورنگ زیب کنارے دریائے چناب سے دولت آباد کو رخصت ہوا

۹ ذی قعدہ کو اُوسی مقام پر راجہ جسونت سنگہ کو خلعت اور گھوڑا سنہری زین کا طویلہ خاصہ سے عنایت ہوا اور وطن جانے کی رخصت ملی راج سنگہ کو بھی خلعت اور جمدہر مرصع عنایت ہو کر راجہ کے ساتھ جانے کی اجازت ہوئی۔

۱۹ ذیقعدہ کو راجہ جگت سنگہ پونچ کا رستہ کھولنے اور گھاٹی سے برف ہٹانے کیواسطے مامور ہوا اور اُس نے وہان پہنچکر کشمیر کے زمینداروں

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फ़रमाये ॥

इसी दिन शाहज़ादा औरंगज़ेब दखन से लाहोर में बादशाह के पास हाज़िर हुआ और बादशाह ने १० लाख रुपये उसको इनाम के दिये ॥

बंगाले से ख़बर आई कि माह सुदी ८ को अकबर नगर के क़िले में आग लग कर शाहज़ादे मोहम्मद शुजाअ के महल और कारख़ाने तमाम मय ७५ सहेलियों और ५ लाख के जवाहरात के जल गये बादशाह ने यह ख़बर सुनकर २ लाख रुपया नक़द २ लाख का जवाहर और २ लाख का ज़ेवर लाहोर से उसके पास भेजा ॥ (१)

फागण बदी १२ को बादशाह कश्मीर को रवाने हुअे और शाहज़ादे मुराद को बहीरे में ठहरने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि

اسیدن شاہزادہ اورنگ زیب دکھن سے حاضر آیا اور بادشاہ نے دس لاکھ روپیہ اُس کو بطور انعام کے مرحمت فرمائے

بنگالہ سے خبر آئی کہ تاریخ ۶- ماہ شوال کو اکبرنگر کے قلعہ مین آگ لگ کر شاہزادہ محمد شجاع کے تمام محل اور کارخانے معہ ۷۵ خادمہ عورتون اور پانچ لاکھ کے جواہرات کے جل گئے بادشاہ نے یہ خبر سنکر دو لاکھ روپیہ نقد دو لاکھ کا جواہر اور ایک لاکھ کا زیور لاہور سے اُوسکے پاس بھیجا۔ لے

۲۵- شوال کو بادشاہ لاہور سے واسطے سیر کشمیر کے روانہ ہوئے اور شاہزادہ مراد کو بہیرہ مین ٹھہرنے کا حکم ہُوا

(१) यह ख़बर लाहोर में बंगाले से १८ दिन में पहुंची थी ॥

لے بنگالہ سے لاہور مین یہ خبر ۱۸ دن مین پہونچی تھی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को उस्के उपर भेजा उसने पताल
गा कर खीलूजी को मार डाला॥

पोस बदी १३ को इक़बाल
नामें जहांगीरी का बनाने वाला
मीर बख़्शी मोतमिद ख़ां जो आ
ख़रीवक्त में लाहोर का सूबेदार
होगया था मरगया॥

माह बदी २ को बादशाहने
नरवरके राजा राम दास के मरने
की ख़बर सुनकर उसके पोते
अमर सिंघ को असल और इज़ा
फ़े से हज़ारी ज़ात और ६०० सवा
रों का मन सब और राजा का ख़ि
ताब दिया और क़िले नरवरकी
क़िलेदारी भी उस्के दादा के मा
फ़िक़ उस्को सोंपी गई और वह इ
लाक़ा उसकी जागीर में मुक़र्ररहु
आ॥

फागण बदी २ को बादशाह
ने हरनाथ महापत्र को हाथी घोड़ा
और लाख दाम नक़द इनायत

२६-शाबान को मोतमद खान
मुसन्निफ़ इक़बालनामे जहांगीरी
जो पहले मीर बख़्शी था और फिर
आख़री वक़्त मेंन लाहोर का
सूबेदार होगया था-
मरगया

१५-रमज़ान को बादशाह
ने नरवर के राजा रामदास
के मरने की ख़बर सुनकर
उस के पोते अमरसिंघ
को असल और इज़ाफ़े से हज़ारी
ज़ात और छहसो सवार का मनसब
और राजा का ख़िताब इनायत
किया और क़िलेनरवर की क़िलेदारी
बदस्तूर उसके दादा के उसी
को सोंपी गई और वह इलाक़ा भी
उसकी जागीर मेंन मुक़र्रर रहा-

१५-शवाल को लाहोर मेंन
बादशाह ने हरनाथ महापात्र को
हाथी घोड़ा और एक लाख
दाम नक़द इनायत किये-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यत हुई थी बादशाह की इजाज़त लेकर रावी नद्दी से लाहोर तक नहर लाने का काम जारी किया जिसका नाम शाह नहर हुआ॥

सीसतान के मालिक हमज़ह ने क़ंधार की हद में कुछ दख़ल दिया था जिस पर कुलीचख़ां सूबेदार ने सीस्तान पर फ़ोज भेजी जो लूट मार करने के सिवाय सीस्तान का बंद तोड़ कर पीछी आगई जिससे वह तमाम इलाक़ा ख़राब होगया॥

मंगसिर सुदी १ को राजा जयसिंघ को ख़ासा ख़िलअत इनायत होकर वतन जाने की रुख़सत मिली

खीलू जी जो बादशाही नोकरा छोड़ कर आदिल ख़ां के पास गया था मगर आदिल ख़ां ने अपने पास नहीं रखा इससे वह दोलताबाद के इलाक़े में लूट मार करने लगा औरंग ज़ेब ने मलिक हुसेन

بادشاہ کی اجازت لیکر دریائے راوی سے لاہور تک شاہ نہر کے لانے کا کام جاری کیا۔

حمزہ والی سیستان نے حدود قندھار مین کچھ مداخلت کی تھی اس لئے قلیچ خان نے سیستان کے اوپر فوج بھیجی یہ فوج ملک لوٹ کر اور سیستان کا بند توڑ کر کہ جس سے وہ تمام علاقہ خراب ہوگیا واپس آئے +

۲۹- رجب کو راجہ جے سنگھ عنایت خلعت خاصہ سے سرفراز ہوکر اپنے وطن کو رخصت ہوا

کہیلو جی جو بادشاہی نوکری چھوڑ کر عادلخان کے پاس گیا تھا اور اُسکے نہ رکھنے سے علاقہ دولت آباد مین لوٹ مار کرتا تھا اورنگ زیب نے اُوسکے اوپر ملک حسین کو بھیجا جس نے تلاش کرکے کہیلو کو مار ڈالا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दखल दिया था कि अली रायके बे
टे आदम के लिखने पर अली मरदा
न खां ने अपने जमाई हुसैन बेग को
कशमीर से भेजकर सिंगी बमखल
को निकाल दिया ॥

कातिक बदी २ को बादशाह
के डेरे लाहोर के पास जंडोले केत
लाव पर हुवे वहां गोर धन राठोड
को जो पहिले राजा गज सिंघ का
नौकर था ८ सदी ज़ात और २०० स
वार का मनसब मिला ॥

कातक बदी ७ को बादशाह ला
होर में दाखिल हुए और इसी दिन
शाहज़ादा दारा शिकोह भी राजा
जय सिंघ समेत पहुंच कर हज़ूर में
हाज़िर हुवा ॥

आदिल खां की पेशकश ८
लाख रुपये की बीजा पुर से पहुंची
अली मरदान खां ने किजि
सको कशमीर की सूबेदारी के सि
वाये लाहोर की सूबेदारी भी इना

سنگی منجل زمیندار تبت کلان نے
تبت خورد مین کچھ مداخلت کی تھی سو
علیمردان خان صوبہ دار کشمیر نے تبت خورد
کے زمیندار علی رائے کے بیٹے آدم کی تحریک
آنیسے اپنی داماد حسین بیگ کو بھیجکر سنگی منجل کو
تبت خورد سے نکلوا دیا۔

۱۶۔ جمادی الثانی کو بادشاہ کے
ڈیرے نواحی لاہور مین تالاب جنڈولہ
پر ہوئے وہان گوردھن راٹھوڑ کو جو
پہلے راجہ گجسنگھ کا نوکر تھا سات صدی
ذات اور دو سو سوارون کا منصب عطا ہوا۔

۲۱۔ جمادی الثانی کو بادشاہ
لاہور مین داخل ہوئے اور اسی دن
بادشاہزادہ دارا شکوہ بھی معہ راجہ
جے سنگھ کے وہان پہنچکر باریاب
ملازمت ہوا۔

عادل خان کی پیشکش قیمتی
دو لاکھ روپیہ کے بیجاپور سے پہونچی۔
علیمردان خان نے کہ جس کو
علاوہ صوبہ داری کشمیر کے لاہور کی
صوبہ داری بھی عنایت ہوئی تھی

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

र वाने हुवे और घाटे की तंगी से शाह ज़ादे दाराशिकोह को हुक्म हुआ कि कुछ दिन काबुल में रहकर मय राजा जयसिंघ वग़ैरा के पीछे से आवे और शाद ख़ां को १ लाख रुपैये की सौग़ात नज़र मोहम्मद ख़ां के वास्ते देकर बलख़ की तरफ़ बिदा किया ॥

भादों सुदी १० को राजा बिठ्ठल दास के बड़े बेटे अनिरुद्ध का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार १००० सवार का होगया ॥

आसोज बदी ६ को कोहाट में डेरे हुवे राजा जगत सिंघ जो दोनों बंगशों का थानेदार था और वहां हता था उसने ६ घोड़े नज़र किये

आसोज सुदी ८ को नीलाब के किनारे पर राजा जसवंत सिंघ को सुन हरी ज़ीन का घोड़ा ख़ास से तवेले से इनायत हुआ ॥

बड़ी तिब्बत के ज़मींदार सं गी वमरख़ल ने बेदी तिब्बत में कुछ

کابل سے کشمیر کو براہ بنگش روانہ ہوئے اور شاہزادہ محمد داراشکوہ کو بسبب تنگی راستہ گھاٹی بنگش کے حکم ہوا کہ چند روز کابل مین رہکر معہ راجہ جے سنگھ وغیرہ کے پیچھے سے آوے اور شاد خانکو بعد عطاے خلعت فاخرہ ویراق طلائی مینا کار کے ایک لاکھ روپیہ کی سوغات نذر محمد خان کیلئے دیکر بلخ کو روانہ کیا

۹ جمادی الاول کو راجہ بٹھلداس کا بڑا بیٹا انرودہ اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوارون کا منصب دار ہوگیا۔

۲۰ جمادی الاول کو موضع کوہاٹ مین بادشاہ کی سواری پہونچی راجہ جگت سنگھ نے جو تہانہ دار بنگش بالا اور پائین کا تہا اور وہان رہتا تھا نو گھوڑے پیشکش کئے

۷ جمادی الثانی کو نیلاب کے کنارے پر راجہ جسونت سنگھ کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا مع زین مطلا کے عنایت ہوا۔

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सावन बदी ६ को बलख़ के मालिक नज़र मोहम्मद ख़ां का वकील ४००००) रुपैये की सौग़ात लेकर हाज़िर आया कुछ रोज़ पीछे बादशाह ने उसको रुख़सत किया तो ६०००) और ख़िलअत इनायत फ़रमाया ॥

सावन सुदी १५ को तुलादान के दरबार में राज सिंघ राठोड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का और राय सिंघ झाला का हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया ॥

भादों बदी १ को राजा बिठ्ठलदास और उसके बेटे अरजुन गोड़ को जागीर में जाने की रुख़सत हुई राजा को ख़िलअत ख़ासा इनायत हुआ ॥

भादों बदी ११ को बादशाह काबुल से बंगश के रस्ते से पीछे

महेश दास राठोड़ का पाया अताई अस्प से बलन्द हुआ -

१९- रबीअ الاول को नज़र मुहम्मद ख़ान उज़बक वाली बलख़ का सफ़ीर मअ सौग़ात क़ीमती मबलग़ चालीस हज़ार रुपैये के हाज़िर दरगाह वाला हुआ -

चन्द रोज़ बअद बादशाह ने उसको साठ हज़ार रुपैये और ख़िलअत देकर रुख़सत किया -

१४- रबीअ الثانی को जशन वज़न क़मरी के दरबार में राज सिंघ राठोड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और छैसो सवार का होगया -

राय सिंघ झाला का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और चार सौ सवार का हुआ -

१५- रबीअ الثانی को राजा बिठ्ठलदास को ख़िलअत ख़ास इनायत हुआ वह मअ अपने बेटे अरजुन गोड़ के रुख़सत लेकर अपनी जागीर को गया

२५- रबीअ الثانی को बादशाह

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बरस १३वा

बैसाख सुदी ३ संबत १६९९ से ॥ ॥

बैसाख सुदी २ संबत १६९७ तक

बैसाख सुदी ३ को बादशाह अली मसजिद में पहुंचे राजा बिठ्ठलदास आगरे से लाहोर में खज़ानापहुंचा कर हाज़िर आया ॥

बैसाख सुदी ५ को राजा जसवंत सिंघ वग़ैरा भी बादशाह के पास पहुंच गये ॥

जेठ बदी ५ को कोटी काबुल में पहुंचकर बादशाह ने राजा बिठ्ठलदास को १ घोड़ा सोने की ज़ीन का ख़ासा तबेले से इनायत किया ॥

जेठ बदी १२ को बादशाह काबुल में दाख़िल हुवे ॥

असाढ सुदी ३ को राजा जसवंत सिंघ के परधान महेश दासराठोड़ को घोड़ा इनायत हुआ ॥

برس تیرہوان

سنہ ۱۰۴۹ء

۲۵ اپریل سنہ ۱۶۳۹ء سے ۱۳ اپریل سنہ ۱۶۴۰ء تک

یکم محرم سنہ ۱۰۴۹ کو بادشاہ علی مسجد مین پہونچے راجہ بٹھل داس بموجب حکم کے دارالخلافہ اکبرآباد سے خزانہ دارالسلطنت لاہور مین پہونچاکر حاضر خدمت ہوا۔

۳۔ محرم کو راجہ جسونت سنگہ وغیرہ اُمرا بھی بادشاہ کے حضور مین پہونچگئے۔

۱۸ محرم کو بادشاہ نے کابل خورد مین نزول اجلال فرماکر راجہ بٹھلداس کو ایک گھوڑا خاصہ طویلہ سے زین مطلا کا عنایت فرمایا

۲۵ کو بادشاہ دولتخانہ کابل مین داخل ہوئے۔

غرہ ربیع الاول کو کابل مین راجہ جسونت سنگہ راٹھوڑ کے پردان

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

राजा के ख़िताब से सरफ़राज़ हुआ जो अकबर बादशाह ने उसके दादा राजा मान सिंघ को दिया था ॥

राव अमर सिंघ को हाथी और राय सिंघ को झंडा इनायत हुआ ॥

राजा जयराम को हज़ारी ज़ात हज़ार सवार और गोकुलदास सीसोदिये को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब इनायत हुआ ॥

बैसाख बदी १२ को बादशाहज़ादे के वास्ते पीछे से आने का हुक्म हुआ और बादशाह आगे को रवाने होगये ॥

बैसाख बदी १ को बादशाह ने आसिफ़ ख़ां वज़ीर और राजा जसवंत सिंघ को भी पेशोर में छोड़ा और आप जमरोद को रवाने होगये और इन को हुक्म हुआ कि पीछे से आवें क्योंकि ख़ैबर के घाटे से एक दम इतने लशकर का गुज़रना मुशकिल था ॥

نوشہرہ مین فوج کی حاضری لی تو پچاس ہزار سوار قلمبند ہوئے۔

اُسیدن راجہ جے سنگہ کو مرزا راجہ کا خطاب عنایت ہُوا جو جانشین راجہ مان سنگہ اپنے دادا کا تھا اور یہ خطاب اُسکو اکبر بادشاہ نے ہمین بندگی عنایت فرمایا تہا

رائے امر سنگہ کو ہاتھی اور راجہ رائے سنگہ کو علم عنایت ہُوا

راجہ جے رام کو ہزاری ہزار سوار کا منصب اور گوکل داس سیسودیہ کو ہزاری اور ۶۰۰ سوار کا منصب عنایت ہُوا۔

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ شاہزادہ کی نسبت پیچھے سے آنیکا حکم دیکر آپ آگے روانہ ہوگئے۔

سلخ ذی الحجہ کو بادشاہ آصف خان اور راجہ جسونت سنگہ کو پشاور مین چھوڑکر جمرود کی طرف تشریف فرما ہوئے اور اُنکو حکم دیگئے کہ پیچھے سے آئین کیونکہ خیبر کے گھاٹہ سے ایک دم اتنے لشکر کا گذرنا محال تہا ۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शाहज़ादे दाराशिकोह के साथ हज़ूरमें हाज़िर आया बादशाह ने राजा जयसिंघ को मोतियों की माला बख़्शी और दूसरे दिन राजा जगतसिंघ को ख़िलअत देकर दोनों बंगशों के बंदोबस्त पर भेजा और यह हुक्म दिया कि हमारे काबुल पहुंचने तक रसद जमा करले और पहुंचने के पीछे दोनों बंगशों से बराबर नाज पहुंचाता रहे॥

चैत सुदी ११ को बादशाह ने राजा जयसिंघ और जसवंत को एक एक हाथी ख़ासा हाथियों में से इनायत किया।

बैसाख बदी ४ को बादशाह अटक से उत्तरे॥

बैसाख बदी ७ को बादशाह ने नोशहरे पहुंचकर राजा जयसिंघ और राव अमरसिंघ को घोड़े बख़्शे॥

बैसाख बदी ११ को बादशाह ने नोशहरे में अपने लशकर की हाज़िरी ली तो ५०००० सवार गिने गये॥

इसी दिन राजा जयसिंघ मिरज़ा

۴ کو راجہ جگت سنگہ ہمراہ شاہزادہ داراشکوہ کے بادشاہ کی خدمت مین حاضر ہوا اُسیدن بادشاہ نے راجہ جے سنگہ کو موتیون کی مالا عنایت کی۔

دوسرے دن راجہ جگت سنگہ کو بادشاہ نے خلعت مرحمت کرکے بنگش بالا اور بنگش پائین کے بندوبست پر بہیجا اور حکم دیا کہ رایات جہانکشا کے کابل مین پہونچنے تک رسد جمع کر رکھے اور ایسی کوشش کرے کہ بعد پہنچنے کابل کے دونون بنگش سے برابر غلہ پہونچتا رہے۔

۱۰ ذی الحجہ کو راجہ جے سنگہ اور جسونت سنگہ کو ایک ایک ہاتھی حلقہ خاصہ سے عنایت فرمایا۔

۱۸ ذی الحجہ کو بادشاہ دریائے اٹک کے پُل سے اُترے۔

۲۱ - ذی الحجہ کو بادشاہ نے نوشہرہ مین پہنچکر راجہ جے سنگہ اور راؤ امر سنگہ کو گھوڑے بخشے۔

۲۵ ذی الحجہ کو بادشاہ نے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शाहज़ादे दाराशिकोह कोईरानके शाह
सफ़ीके मुकाबिलेपर भेजा जो कंधार
पर आना चाहिताथा उसके साथ राजारा
यसिंघ और जगतसिंघ भी तईनात हो
कर गये राजा रायसिंघ को हाथी इनायत हुआ॥

फागण सुदी ३ को बादशाह खुद
भी काबुल को रवाने हुवे॥

बगलाने का ज़िमींदार भुरजीमर
गया बादशाहने उसके बेटे बहादुर पर
मजी को डेढ हज़ारी ज़ात और हज़ारस
वार का मनसब इनायत किया यह
फिर मुसलमान होगया और दौलतमं
द नाम पाया॥

चैत सुदी २ को नोरोज़ था उस
दिन बिहारीमल की जगह रायसमा
चंद लाहोर का दीवान हुआ और
बिहारीमल मुलतान का दीवान हुवा॥

चैत सुदी ३ सं० १६९६ को बादशा
ह का मुक़ाम रावलपिंडी में हुआ राजा
जयसिंघ नोशहरे से हुक्म के माफ़िक़ हाज़िर हुआ॥

चैत सुदी ५ को राजा जगतसिंघ

نے شاہزادہ محمد داراشکوہ کو
واسطے مقابلہ شاہ صفی کے
جو قندہار پر آنا چاہتا تھا کابل
کی طرف روانہ کیا اوسکے ساتھ
راجہ رائے سنگھ اور راجہ جگت سنگھ
بھی متعین ہوئے۔
راجہ رائے سنگھ کو ہاتھی عنایت ہوا
غرہ ذیقعدہ کو بادشاہ خود بھی
کابل کو روانہ ہوئے
بھرجی زمیندار بگلانہ مرگیا
بادشاہ نے اوسکے بیٹے بہادر پر بھرجی
کو جو بعدہ مسلمان ہوگیا اور دولتمند
نام پایا ڈیڑھ ہزاری ذات اور دو ہزار
سوار کا منصب عنایت فرمایا۔
۱۵ ذیقعدہ کو جشن نوروزی
مین سبھا چند دیوان لاہور بجائے بہاری مل
کے مقرر ہوا اور بہاری مل
دیوان ملتان ہوا۔
۲ ذالحجہ کو بادشاہ کا مقام راولپنڈی
مین ہوا۔
راجہ جے سنگھ نے نوشہرہ سے آکر ملازمت کی

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसी क़दर मनसब औरंगज़ेब का भी कर दिया और दाराशिको हकामनसब पहिले ही २०हज़ारी होगया था ॥

माह सुदी १२ को राजा जगत सिंघ काबुल से आया बादशाह ने ख़िलअत और मोतियों की माला उसको दी ॥

बुंदेलोंकाफ़िसाद

बुंदेलोंने जो जुझारसिंघ के बेटे प्रथ्वीराज को अपना सिरदार बनाया था चंपतबुंदेले नेउस की मदद करके बादशाहके आगरे से जाने के पीछे बड़ा फ़िसाद किया जब यह ख़बर बादशाहको पहुंची तो अबदुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंग को पटने की सूबेदारी से बदल कर बुंदेलों के ऊपर जाने काहुक्मदिया ॥

बादशाहकाकाबुलजाना

फागण बदी १ को बादशाहने

منصب دیکر بنگالہ کی صوبہ داری پر رخصت کیا اسی قدر منصب بادشاہزادہ محمد اورنگ زیب کا بھی کردیا اور داراشکوہ کا منصب پہلی ہی بیس ہزاری ہوگیا تھا۔

۱۰-شوال کو راجہ جگت سنگھ نے کابل سے حاضر آکر دولت ملازمت حاصل کی اور بادشاہ نے اُسکو خلعت معہ مالدے مروارید کے عطا فرمایا۔

بندیلوں نے جوجہار سنگھ کے بیٹے پرتھی راج کو اپنا سردار بنایا چنپت نامی بندیلہ نے اُسکی مدد کی اور جب بادشاہ آگرے سے لاہور کی طرف روانہ ہوگئے تو بڑا فساد کیا بادشاہ نے عبداللہ خان فیروزجنگ کو پٹنہ کی صوبہ داری سے بدلکر بندیلون کا فساد رفع کرنے کے واسطے بھیجا۔

بادشاہ کا کابل جانا

۱۴-شوال کو بادشاہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

माह बदी ४ को बादशाह की साल ग्रहके तुलादान में अमीरों के इज़ाफ़े हुये जिसमें राजा जसवंत सिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात और १००० सवारके इज़ाफ़े से ५ हज़ारी ज़ात ५ हज़ार सवारों का हो गया और राजा राय सिंघ के मनसब पर ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे उस का मनसब ३ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का हो गया ॥

दयानत राय को रायरायां का रिख़ताब मिला ॥

पोह सुदी ५ को बादशाह ने शाहज़ादे शुजाअ को जो काबुल से बुलाया हुआ आया था १५ हजारी ज़ात और ८ हजार सवार का मनसब देकर बंगाले की तरफ़ रवाने किया और

۱۸- رمضان مطابق چہارم ماہ بہمن کو بادشاہ کے وزن شمسی کا جشن تھا اُسمین راجہ جسونت سنگہ کو ہزاری ذات اور ہزار سوار کے اضافہ سے پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا منصب عطا ہُوا۔

راجہ رائے سنگہ کے منصب مین بھی پانسو سوارون کا اضافہ ہُوا جس سے اُوسکا منصب تین ہزاری دو ہزار سوار کا ہوگیا۔

دیانت رائے کو رائے رایان کا خطاب عنایت ہُوا

۲- شوال کو بادشاہ نے شاہزادہ محمد شجاع کو جو حسب الطلب کابل سے حاضر آیا تہا پندرہ ہزاری ذات اور نو ہزار سوار کا

لہ افضل خان کی تاریخ رحلت ایک تو علامی از دہر رفت ہے اور دوسری زخوبی بُرد گوئی نیکنامی ہے افضل خان بہت نیک ذات تہا باوجود اختیار اور اقتدار کے اُس سے کسی کو ضرر نہ پہنچا بادشاہ بھی کہا کرتے تھے کہ از افضل خان بار ہیچ کس سخن شنیدہ نہ شد ۱۲

(متعلق صفحہ ۵۵)

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुआ था ॥

पोस बदी १० को कछ के ज़मींदार भारा के बेटे भोज का भेजा हुवा १ घोड़ा बादशाह की नज़र से गुज़रा ॥

पोस सुदी ३ को राजा जगत सिंघ की अरज़ी और कुछ जड़ाऊ चीज़ें उस्का नोकर ईसरदास लेकर हाज़िर हुआ बादशाह ने उस्को खिलअत देकर रानाके वास्ते ख़ासा खिलअत और २ तुर्क पचाक़ (तुरकी) घोड़े सुनहरीजीनके भेजे ॥

पोस सुदी १३ को अल्लामी अफ़ज़ल ख़ां वज़ीर मरगया और दयानत राय को कुछ अख़्तियारात वज़ीरायत के मिले ॥

"ज़ुलक़रनैन" फ़रंगी को १ किताब के इनाम में जो बादशाह के नाम पर बनाई गई थी ५००० रुपये इनामके मिले ॥

زمیندار بہارا کے بیٹے بھوج کا بھیجا ہوا گھوڑا بادشاہ کی نذر ہوا۔

۲۔ رمضان کو رانا جگت سنگھ کا نوکر ایسر داس اُوسکی عرضی اور کچھ مرصع آلات بطور پیشکش کے لے کر حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکو خلعت دیا اور دو اسپ تیچاق معہ زین طلا اور مطلا کے رانا کے واسطے بھی اُوسکے ہاتھ بھیجے۔

۱۲۔ رمضان کو علامی افضل خان لاہور مین مرگیا جس سے دیانت رائے کو کچھ اختیارات صیغہ وزارت کے پیشگاہ شاہی سے عطا ہوئے۔

ذوالقرنین فرنگی کو ایک کتاب کے جایزہ یعنی انعام مین جو اوس نے بادشاہ کے نام پر تصنیف کی تھی پانچہزار روپیہ عنایت ہوا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रुपये फिर मिले ॥

शाह सफ़ी के वकील या दगार बेग को भी इरान जाने की रुख़सत हुई। उसको लाख रुपये रोकड़ और ५० हज़ार की जिन्स इनायत हुई थी और ५० हज़ार की जड़ाऊ सुराही प्याला और रकाबी उसके हाथ शाह के वास्ते भेजी गई ॥

मंगसिर सुदी ३ को राजा जगत सिंघ के बेटे राज रूप को मनसब का इज़ाफ़ा होकर घोड़ा और कांगड़े के पहाड़ों की फ़ौजदारी का काम मिला ॥

पोस बदी १ को बादशाह ने दारा शिकोह और मुराद बख़्श को ख़ासा पोस तीन दिया काबुल के सूबेदार सईद ख़ां और राजा जसवंत सिंघ को भी समूर की पोस्तीनें इनायत फरमाईं जिनके अबरे पर ज़री का काम किया

اسکو پہلے ہی مل چکا تھا اور پانچ لاکھ روپیہ پھر ملے۔

شاہ صفی کے وکیل یا دگار بیگ کو ایران جانے کی رخصت ہوئی اُسکو ابتک دو لاکھ روپیہ نقد اور پچاس ہزار کی جنس عنایت ہوئی تھی اور پچاس ہزار روپیہ کی صراحی معہ پیالہ مرصع و رکابی کے اُوسکے ہاتھ شاہ کے واسطے بھیجی گئی۔

غرۂ شعبان کو راجہ جگت سنگھ کے بیٹے راجہ راجروپ کا منصب اضافہ ہوکر گھوڑا اور کام فوجداری کوہستان کانگڑہ کا عنایت ہوا

۱۵۔ شعبان کو بادشاہ نے داراشکوہ اور مرادبخش اپنے شاہزادون کو پوستین خاصہ دے اور ایک ایک پوستین سمور کا راجہ جسونت سنگھ اور سعید خان ظفرجنگ صوبہ دار کابل کو بھی عنایت کیا جسکا ابرہ زربفت تھا۔

۲۴۔ شعبان کو کچھ کے

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तइनात था हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का असल और इज़ाफ़े से। कर दिया ॥

कातक सुदी १० को ब्यास नदी के कि नारे पर महेस दास राठोड़ का मनसब ६ सदी जात और ३०० सवारों का होगया औरउसे ख़िलत भी मिला ये पहिले राजा गज सिंघ का नोकर था फिर राजा जसवंत सिंघ का हुआ और इन दिनों में बादशाही नोकर था ॥

मंगसिर बदी ३ को बादशाह अशरफ़ी और रुपया लुटाते हुये लाहोर के दोलतखाने में दाख़िल हुये (१) अली मरदान ख़ां हाज़िर हुआ बादशा ने उस को आरी ख़िलत १ लाख रुपया और कश्मीर का सूबा दिया १ लाख रुपया पहिले भी मिल चुका था और पांच लाख

(१) बादशाह ईद की नमाज़ पढ़ने को जाते थे जब भी अशरफ़ी और रुपये लुटाते जाते थे ॥

۱۷ جمادی الثانی کو ستلج ندی کے کنارہ پر بادشاہ نے راجہ گج سنگہ کے بیٹے مبل سنگہ کو جو احمد آباد مین تعینات تھا ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب اصل اور اضافہ سے عنایت فرمایا

۸- رجب کو مقام کنارہ بیاس ندی پر مہیش داس راٹھوڑ جو پہلے راجہ گجسنگہ کا نوکر تھا اور پھر راجہ جسونت سنگہ کا رہا زمرۂ بندگان بادشاہی مین داخل ہوا اور بادشاہ کی طرف سے اسکو خلعت اور منصب ششصدی ذات اور تین سو سوار انکا عنایت ہوا۔

۱۵- رجب کو بادشاہ روپیہ اور اشرفی لٹاتے ہوئے لاہور کے دولتخانہ مین داخل ہوئے۔

علیمردان خان نے حاضر ہوکر ملازمت کی بادشاہ نے اسکو خلعت فاخرہ ایک لاکھ روپیہ اور کشمیر کا صوبہ دیا ایک لاکھ روپیہ

بادشاہ عید کی نماز پڑھنے جاتے تھے جب بھی اشرفی اور روپیہ لٹاتے جاتے تھے ۱۲

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भादों बदी ४ को बादशाह का आगरे से कूच हुआ घाट सामी के डेरे पर राजा जसवंत सिंघ को खासा तबेले से घोड़ा सुनहरी ज़ीन का इनायत हुआ ॥

भादों सुदी ६ को बादशाह दिल्ली में पहुंचे राजा जसवंत सिंघ के

आसोज बदी १ को बादशाह का दिल्ली से कूच हुआ राजा जसवंत सिंघ वग़ैरा कई अमीर जो हुक्म से दिल्ली में रहगये थे पालम में जा मिले ॥

आसोज सुदी ६ को गांव अख़तियारपुर परगने अंदरी में बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को ख़िलत ख़ासा और ख़ासा घोड़ा सुनहरी ज़ीन का बख़्शा ॥

कातक बदी ३ को बादशाह ने सतलुज नदी के किनारे पर राजा सूरज सिंघ के बेटे सबलसिंघ का मनसब जो सूबे गुजरात में

حکم کے دہندہیڑہ سے حاضر درگاہ ہوا تہا اور اُسکو خلعت جمدہر مرصع اسپ معہ زین مطلا کے اور خدمت قلعداری اکبر آباد کی مرحمت ہوئی

۱۷- کو آگرہ سے کوچ ہوا گہاٹ سوامی کے مقام پر راجہ جسونت سنگہ

پر دہان راج سنگہ نے ایک ہاتہی پیشکش کیا [نذر کیا]

کو خاصہ طویلہ سے گہوڑا سونیکی زین کا عنایت ہوا۔

۸- جمادی الاول کو بادشاہ دہلی مین پہونچے راجہ جسونت سنگہ کے

۱۵- کو دہلی سے کوچ ہوا راجہ جسونت سنگہ معہ دوسرے امیرون کے جو حسب الحکم دہلی مین رہگئے تھے ۲۵- کو علاقہ پالم مین بادشاہ سے جا ملے۔

۷- جمادی الثانی کو مقام موضع اختیار پور توابع پرگنہ اندری مین راجہ جسونت سنگہ کو خلعت خاصہ اور گہوڑا خاصہ طویلہ سے معہ زین مطلا کے عنایت ہوا۔

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

शाहज़ादे ने रामनगर उसी के पास रख कर ३०००) साल मालगुज़ारी के ठहरा लिये ॥

रखंग[1] के ज़मींदार का भाई मांगत राय जो चाटगाम[2] का हाकिम था अपने भाई के नौकर से जो उसकी जगह बैठ गया था लड़ाई हार कर पनाह लेने के वास्ते बंगाले में इसलाम खां के पास आ गया और इस सबब से १०। १२ हज़ार औरत मरद बंगाले के जो चाटगांव में क़ैद थे ४० बरस पीछे छूट कर अपने वतन में आये॥

बादशाह का लाहोर जाना

भादों बदी ३ को बादशाह लाहोर जाने के इरादे से "सैफ़ खां को आगरे में छोड़ा और राजा बिट्ठलदास को किले दारी सौंपी जो धंधेड़े से बुलाया गया था और उसको खिलत जड़ाऊ जमधर सोने की ज़ीन का घोड़ा भी दिया॥

रामनगर उसी के पास रहने दिया اور دس ہزار روپیہ سالانہ خراج کا اُس سے ٹھہرالیا -

रखंग[1] के ज़मींदार का भाई मांगत राय[2] जो चाटगाम[2] का हाकिम था अपने भाई के एक नौकर से जो उसकी जगह बैठ गया था शिकस्त खाकर वास्ते पनाह पज़ीरी के बंगाले के हाकिम इसलाम खान के पास आ गया इस वजह से दस बारह हज़ार मर्द औरत बंगाले के जो चाटगाम में क़ैद थे चालीस बरस बाद रिहा होकर अपने वतन में आ गये

رخنگ[1] کے زمیندار کا بھائی مانگت رائے جو حاکم[2] چاٹگام[2] تھا اپنے بھائی کے ایک نوکر سے جو اُسکا جانشین ہوگیا تھا شکست کھاکر واسطے پناہ پذیری کے بنگالے کے حاکم اسلام خان کے پاس آگیا اسوجہ سے دس بارہ ہزار مرد عورت بنگالے کے جو چاٹگام مین قید تھے چالیس برس بعد رہا ہوکر اپنے وطن مین آگئے

बादशाह का लाहोर जाना

१६- रबीउस्सानी को बादशाह ने लाहोर जाने की इरादे से सैफ़ खां को आगरे में छोड़ा और राजा बिट्ठलदास को किलेदारी सौंपी

بادشاہ کا لاہور جانا

۱۶- ربیع الثانی کو بادشاہ نے لاہور جانے کی ارادہ سے سیف خان کو آگرہ مین چھوڑا اور راجہ بٹھل داس کو قلعہ کی حفاظت تفویض کی یہ راجہ بموجب

(१) रखंग को अब अराकान कहते हैं (२) उसवक्त पहनी नदी बंगाले और सग (ब्रह्मा) की हद थी और चाटगाम रखंग वालों के कब्ज़े में था॥

[1] رخنگ کو اب اراکان کہتے ہیں [2] اُوسوقت پہنی ندی بنگالے اور سگ (برہما) کی حد تھی اور چاٹگام رخنگ والوں کے قبضہ میں تھا

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मुल्क में हाकिम मुकर्रर किया
पीपोल का क़िला भुरजी
के रिशते दार ऊदिया के पास
था वह भी फतह होगया औरऊ
दिया पहिले सावन की सुदी
५ को शाहज़ादे के पास हाज़ि
र होगया इन किलोंसे१२० तोपें
हाथ आईं ॥

बगलाने की जमा भुरजी
के वक्त में २० लाख टंके कीथी
जो वहां का सिक्का था औरबा
दशाही बंदो बस्त में ४ लाखरु
पये की जमा बंदी हुई ॥

बगलाने के इलाक़े मेंसे
राम नगर का परगना भुरजीके
जमाई सोमदेव को दिया हुआ
था जब भुरजीशाहज़ादे के पासहा
ज़िर होगया तो सोमदेव भीहा
किम सूरत के वसीले से हाज़ि
रहुआ मगर राम नगर की आम
दनी ख़र्च से कम थी इसलिये

طرف سے اُس ولایت مین حاکم مقرر کیا
پھر پیپول کا قلعہ جو اُودیا
زمیندار قوم بھرجی کے
پاس تھا وہ بھی فتح ہوگیا
اور اودیا ۴- ربیع الاول
کو شاہزادہ کے پاس
آگیا-
اِن قلعون سے ۱۲۰ توپیں ہاتھ آئین
بگلانہ کی جمع وقت آبادی
بھرجی کے بیس لاکھہ ٹنکہ کی تھی
مگر یہ ٹنکہ وہ ٹنکہ نہ تھا جو رائج ہو
بادشاہی بندوبست مین ۴
لاکھہ کی جمع ہوئی
بگلانہ کی مضافات مین
سے رام نگر بھرجی کے داماد
سوم دیو کے قبضہ مین بصیغہ
وراثت تھا بعد حاضر ہوجانے
بھرجی کے وہ حاکم سورت کے
وسیلہ سے شاہزادہ کے پاس
گیا مگر رام نگر کی آمدنی خرچ سے
کم تھی اس لیے شاہزادہ نے

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वकील किशनजी और आवों क़िलों की कुंजियों के शाहज़ादे के पास भे जकर अरज़ की कि जो सुलतानपुर का परगना मुझ को मिलजावे तो अपना असबाब लेकर वहां चला जाऊं बादशाहज़ादे ने भुरजी की मां को सिरो पाव वग़ैरा से राज़ी करके बादशाह को अरज़ी लिखी बादशाह ने इस लिहाज़ से कि भुरजी हमेशा हुक्म में रहा करता था नज़राना भेजा करता था जब काम पड़ता तो सिपहसालार दखन के बुलाने पर हाज़िर होजाता था उसको ३ हज़ारी ज़ात ५०० सवार का मनसब और सुलतानपुर का परगना इनायत किया तब भुरजी आसाढ़ सुदी २ सं. १६६५ को क़िले से निकल कर शाहज़ादे के पास हाज़िर आया शाहज़ादे ने उसको ख़िलअत जड़ाऊ जमधर हाथी और घोड़ा दिया और मोहम्मद ताहिर को अपनी तरफ़ से उस

की कुंजियों के शाहज़ादे के पास भेजकर अरज़ कराई कि जो सुलतानपुर का परगना मुझको मिलजावे तो अपने सामान व अयाल अत्फ़ाल को लेकर वहां चला जाऊं - बादशाहज़ादे ने भुरजी की मां को इनायात व मेहरबानी से राज़ी करके बादशाह को अरज़ी लिखी - भुरजी चूंकि बादशाह के हुक्म में रहा करता था और पेशकश भेजा करता था काम के वक़्त जब सिपहसालार दखन बुलाता था - तो हाज़िर होजाता था इस लिये बादशाह ने उसको सहज़ारी ज़ात दो हज़ार सवार का मनसब और सुलतानपुर का परगना इनायत किया भुरजी ग़ुर्रह सफ़र सन ४८ को क़िलह से निकलकर शाहज़ादे के पास हाज़िर हुआ शाहज़ादे ने ख़िलअत जमदहर मरसअ घोड़ा और हाथी इनायत किया और मुहम्मद ताहिर को अपनी

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भुरजी और उसके इलाक़े दारों के घर हैं ॥

बादशाह ने २ बरस पीछे बगलाना शाहज़ादे औरंग ज़ेब को इनायत करके यह हुक्म दिया था कि दक्खन में पहुंचकर फ़तह करलेना इस पर उस ने पोस सुदी १० संबत १६९४ को ३००० सवार और २००० बंदूक़ची बादशाही लशकर में से मालूजी दरवनी की सरदारी में और २००० सवार अपने नोकर मोहम्मद ताहिर के साथ बगलाना फ़तह करने को भेजे माह सुदी १२ को बाड़ी का कोट घेरा गया और कुछ लड़ाई के बाद फ़तेह हुवा भुरजी पांच छः सो आदमियोंसे किले मुल्हेर में चला गया और उसके अंदर बैठकर लड़ा जब बाहर के मोरचों के ज़ाबते से नाज की रसद बंद होगई तो उसने अपनी मां को मय अपने

بادشاہ نے دو برس پہلے یہ ولایت بگلانہ کی اپنے بیٹے اورنگ زیب کو عطا کرکے حکم دیا تہا کہ دکہن مین پہنچکر فتح کر لینا اس لئے شاہزادہ نے ۸- شعبان سنہ ۴۷ کو تین ہزار سوار اور دو ہزار بندوقچی بادشاہی لشکر سے مالوجی دکہنی کی سرداری مین اور دو ہزار سوار اپنے ملازم محمد طاہر کے ہمراہ بگلانہ فتح کرنے کو بہیجے ۱۰- رمضان سنہ ۴۷ھ کو حصار باڑی کا محاصرہ ہوا اور بعد جنگ وہ قلعہ فتح ہوگیا بہرجی پانچ چہہ سو آدمیون سے قلعہ مولہیر مین چلا گیا اور اُسکے اندر بیٹہکر لڑا جب بیرونی مورچون کی روک تھام سے غلہ کی آمد موقوف ہوئی تو بہرجی نے اپنی مان کو اپنے وکیل کشناجی کے ساتھ معہ آٹھون قلعون

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

तरह बल खाता चला गया है जिस
में बहुत सी ऐसी भी पहाड़ियां है
जिन पर मुशकिल से चढा जाता है
और दोनों क़िलों के बीच में तो ऐ
सी बिकट गली है कि जिसमें पां
व ठहराने के लिये सिर्फ़ गड्ढे ही
खुदे हुये हैं और जिनमें भी बग़ैर
मदद दूसरे आदमी के पांव नहीं
धराजासक्ता है हर क़िले में एक
एक तलाव भी है कि जिसमें सेपा
नी उबलता है॥

मोल्हेर भी एक पहाड़ के
ऊपर बना है और इस पहाड़ की
ऊपर से २ चोटियां फट गई हैं
नीचे की चोटी पर तो मोल्हेर है
और ऊपर की चोटी पर मोरा है
मगर मोल्हेर मोरा से ज़ियादा ल
म्बा चौड़ा है इस पहाड़ के बी
च में १ कोट है जिस को बाड़ी
और उसके बीच की बसंती को
शहर बाड़ी कहते हैं जिसमें।

سے لہرین کھاتا ہوا چلا گیا ہے
جسمین بہت سے دشوار گذار زینہ
ہین پھر دونون قلعوں کے درمیان
راہ اور بھی صعب المرور ہے
پانون جمانے کے واسطے پتھرون
مین رخنہ کئے ہوئے ہین اور
پھر بھی بغیر مدد اور سہارے ایک
آدمی کے دوسرا آدمی پانون
نہین اٹھا سکتا دونون قلعون
مین ایک ایک تالاب ہے جسمین
سے پانی ابلتا ہے
مولہیر بھی ایک پہاڑ کے
اوپر بنا ہے جس کی اوپر جاکر
دو چوٹیان ہوگئی ہین نیچی چوٹی
پر تو مولہیر ہے اور اونچی پر مورا
ہے مگر چوڑائی مین مولہیر مورا سے
بڑا ہے اس پہاڑ کے بیچ مین ایک
قلعہ ہے اسکو باڑی کہتے ہین اور
جو بستی اوسکے اندر بستی ہے اسکا
نام شہر باڑی ہے کہ جہان بھرجی
اور اسکے متعلقون کے گھر ہین

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इलाक़े दौलता बाद तक और प
च्छम की तरफ़ बंदर सूरत औ स्वारे
स मंदरतक चौड़ाई उत्तर में सुल
तान पुर और नज़र बार इलाक़े (मा
लवा) तक और दरवन में नासिक
त्रिम्बक तक है क़िलों के नाम
साल्हेर, मोल्हेर, मोरा, हरगढ, सा
लोदा, बावना, पीपोल, जोरेल, हैंइ
न में साल्हेर और मोलेर बहुत मज़
बूत हैं साल्हेर जो १ लंबे पहाड़ पर
बना है मज़बूती के सिवाये इस
बात के वास्ते भी मशहूर है कि उ
स्का रस्ता बहुत कठिन है इस
पहाड़ पर २ क़िले हैं एक तो ऊ
पर है जिस्को साल्हेर कहते हैं औ
र दूसरा अधबीच में है ये दोनों क़ि
ले कुदरती १ पत्थर के बने हुए हैं
मगर कहीं २ सिर्फ़ दराड़ें चूने औ
र पत्थरों के टुकड़ों से बंद की गई हैं
पहाड़ की जड़ से पहिले क़िलेत
क जो १ तंग रस्ता है वह सांप की

سے اور غربی بندر سورت اور
دریائے شور سے ملحق ہے
عرض شمالی سلطانپور نذربار
سے اور جنوبی ناسک و ترمبک
سے ملا ہوا ہے - سالہیر - مولہیر -
مورا - ہرگڈہ - سالودہ - باؤنہ
ہاٹ گڈہ - پیپول - اور جورل
اس ولایت کے قلعہ ہین
جن مین سب سے زیادہ مضبوط
سالہیر اور مولہیر ہین سالہیر ایک
لمبے پہاڑ پر بنا ہے جو استواری اور
صعوبت راہ مین معروف اور
مشہور ہے اس پہاڑ پر دو قلعہ
ہین ایک تو چوٹی پر جسکو سالہیر
کہتے ہین اور دوسرا درمیان مین
ہے دونو یک لخت سنگ سخت
سے قدرتی بنے ہوئے ہین مگر
دروازون اور بعضی دراڑون
مین چونہ اور پتھر بھرا گیا ہے پہاڑ
کے نیچے سے اوّل قلعہ تک
ایک راستہ سانپ کی طرح

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दाई २ किरोड़ के हासिल के हैं औ
र हरेक मनसब दार ७ हज़ारी ज़ात ७
हज़ार सवार या ५ हज़ार सवार दुअ
स्पा और सिह अस्पे की जागीर का
हासिल ३० लाख सालाना है और आ
सिफ़ ख़ां ख़ान ख़ानां सिपह सालार
की सालाना आमदनी ५० लाख की
है॥

विलायत बगलाना की फ़तह॥

बादशाह नामें लिखा है कि
इस विलायत में ९ क़िले ३४ परग
ने और १०९ गांव हैं और ज़मींदारी
यहां की १४०० और कई बरस से
हाल के ज़मींदार भुरजी के ख़ान
दान में चली आती है और यह विला
यत आब हवा की उमदगी, नहरों
की कसरत ख़ूबी और रिसाल मेवा
की बहुतायत में मशहूर है लंबाई
१०० कोस और चौड़ाई ७० कोस है
लंबाई उसकी पूरब की सरफ़ चांदोर

ہین اور حاصل جاگیر ہر ایک
منصب دار ہفت ہزاری ہفت ہزار
سوار کا اور پنجہزار سوار دو اسپہ اور
سہ اسپہ کا ۳۰ لاکھ سالیانہ ہے -
آصف خان خانخانان سپہ سالار
کا حاصل جاگیر پچاس لاکھ سالانہ ہے

فتح ولایت بگلانہ

بادشاہنامہ مین لکھا ہے
کہ یہ ولایت ۹ قلعہ ۳۴ پرگنے
اور ایک ہزار ایک گانو سے
شامل ہے یہان کی زمینداری
چودہ سو اور کئی سال سے زمیندار
حال بہرجی کے سلسلہ مین
چلی آتی ہے یہ سرزمین لطافت
آب و ہوا اور کثرت انہار و اشجار
و اثمار مین زبان زد روزگار ہے
لمبائی سو کوس رسمی اور چوڑائی
ستر کوس کی ہے - طول شرقی
پرگنہ چاندور علاقہ دولت آباد

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

क़िले पीछे फ़तह हुवे फ़िरबाक़ी के क़िले गरशक और फ़राह वग़ैरा भी ईरानियों से क़ुलीच ख़ां ने लेलिये और वे लोग क़ंधार के इलाक़े से निकल कर ख़ुरासान में चले गये तब क़ुलीच ख़ां भी भादों सुदी ६ को क़ंधार में पीछा आगया॥

ईरान की फ़ौज और उपज

बादशाह नामे में लिखा है कि इस वक़्त ईरान की कुल क़लमी फ़ौज ३० हज़ार सवारों की थी और आमदनी दो करोड़ ४० लाख रुपे की, वज़ीर की तनख़ाह १ लाख रुपये की और वज़ारत के दस्तूर समेत २ लाख रुपये की सालाना है सिपह सालार की ३ लाख और क़ौरचीबाशी की ५ लाख रुपये की और ख़ुरासान के बगलरबेगी की तनख़ाह १० लाख सालाना है और यहां कई सूबे आगरा, दिल्ली और लाहौर जैसे

के क़िले बअद फ़तह हुवे फिर बाक़ी क़िले गरशक और फ़राह वग़ैरा भी ईरानियों से क़लीच ख़ान ने ले लिये और वह लोग क़ंधार के इलाक़े से निकल कर ख़ुरासान में चले गये तब क़लीच ख़ान भी ८ जमादी الاول को क़ंधार में वापस आगया-

ایران کی فوج و آمدنی

बादशाहनामे में लिखा है कि इसवक़्त ईरान की कुल क़लमी फ़ौज ३० हज़ार सवारों की थी और आमदनी २ करोड़ चालीस लाख रुपये की - वज़ीर की तनख़ाह एक लाख रुपये सालाना और मअ रसम वज़ारत दो लाख सालाना - सिपह सालार की तीन लाख क़ौरची बाशी की पांच लाख और बेगलर बाशी ख़ुरासान की क़रीब दस लाख सालाना के और यहां कई सूबे मिस्ल आगरा दिल्ली و لاہور ढाई ढाई करोड़ रुपये हासिल के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़ात और ४०० सवारों का मनसब दिया और खिलअ़तभी मय घोड़े के इनायत फ़रमाया जो कि राजा जसवंत सिंघ नोजवानी में बड़े दरजे को पहुंचाया और उसको १ मोतबर कामदार चाहिये था इसलिये बादशाह ने कमाल मेहरबानी से हुक्म दिया कि जिसतरह राजसिंघ उसके बापके सामने काम किया करता था उसी तरह अबभी राजा के कामों का बंदोबस्त करता रहे ॥

दयानत राय को हथनी इनायत हुई ॥

क़ंधार की मुहिम

सूबे क़ंधार के क़िलों में से सारबान का क़िला तो राजा जगत सिंघ ने और हिरमंद का ज़ाहदबेग ने पहिले ही फ़तह कर लिया था ज़मीन दावर और बुस्त के

ہنود چنین کسے را پردھان گویند
در زمرہ بندگان آستان معلی
درآوردہ بمرحمت خلعت و منصب
ہزاری ذات و چار صد سوار و
عنایت اسپ نوازش فرمودند و
چون راجہ جسونت سنگہ را کہ در
آغاز برنائے بدولت عظیم رسیدہ
بود کاردانی معتمد بایستے از وفور
عنایت حکم شد کہ راج سنگہ بآئینے
کہ پیش پدر او متکفل معاملات بود
بہ نظم مہمات راجہ پردازد
دیانت رائے کو ہتھنی
عنایت ہوئی۔

مہم قندھار

صوبہ قندھار کے قلعون
مین سے ساربان کا قلعہ تو راجہ
جگت سنگہ نے اور ہیرمند کا
زاہد بیگ نے ماہ محرم مین
فتح کرلیا تھا زمین داور اور بست

को नज़र से गुज़रे ॥

राय सिंघ झाला को आठ सौ ज़ात और ४०० सवारों का मनसब मिला ॥

पहिले सावन की सुदी ७ को हरी सिंघ राठोड़ का मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का हो गया ॥

पहिले सावन की सुदी ११ को बादशाह शाहज़ादे दाराशिकोह के मकान पर गये और वहां कई अमीरों को रिख़लअ़त मिले उनमें से राजा जसवंत सिंघ को रिख़लअ़त "फ़रज़ी" समेत मिला ॥

दूसरे सावन की सुदी ७ को ६ हाथी राजा जसवंत सिंघ ने बादशाह के नज़र किये ॥

दूसरे सावन की बदी १ को राज सिंघ राठोड़ को कि जो राजा गज सिंघ का परधान था बादशाह ने अपने नोकरों में दाख़िल करके हज़ारी

راے سنگھ جھالا آٹھ صدی ذات اور چار سو سواروں کے منصب سے مشرف ہوا

۶- ربیع الاول کو ہری سنگھ راٹھوڑ ڈیڑھ ہزاری ذات اور نو سو سواروں کا منصب دار ہو گیا۔

۱۰- ربیع الاول کو بادشاہ شاہزادہ محمد داراشکوہ کے مکان پر تشریف لے گئے وہاں کئی امیروں کو خلعت ملے از انجملہ راجہ جسونت سنگھ کو خلعت معہ فرجی کے عنایت ہوا۔

۵- ربیع الثانی کو راجہ جسونت سنگھ کی پیشکش کے چھ ہاتھی بادشاہ کی نظر سے گذرے۔

۱۵- ربیع الثانی راج سنگھ راٹھوڑ راکہ مدار معاملات راجہ گج سنگھ بود و نہ بان

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वह राजा का ख़िताब पावे और जो छोटा भाई इस दरजे को पहुंचे तो उसका बड़ा भाई राव कहलावे और इस क़ौम का हाल बरख़िलाफ़ दूसरी तमाम राजपूत कौमों के हैं क्योंकि दूसरी क़ौमों में तो बड़ा बेटा अपने बाप की जगह बैठता है और राठोडों में जिसको मां ज़्यादा प्यारी अपने ख़ाविंद की होती है उसी का बेटा बाप की जगह बैठाया जाता है जैसा कि राजा उदय सिंघ के पीछे राजा सूरज सिंघ जो ३ भाइयों से छोटा था उसी मुहब्बत के सबब से जो राजा उदय सिंघ को उसकी मां के साथ थी राज पर बैठाया गया और सकत सिंघ जो सबमें बड़ा था राव कहलाया था ॥

दरबार का हाल

गोंडवाने के ज़मींदार रावचांदा की पेशकश के ४ हाथी बादशाह

باین پایہ رسد کلان تر براوی ملقب شود حال این فرقہ بخلاف سایر فرق راجپوتیہ است چہ در دیگر اقوام از اخلاف ہر کہ بزرگ سال بود جانشین بزرگان گردد درین طائفہ ہر کہ مادرش بخواہش و محبت شوہر مختص باشد او را بجانشینی برگزینند چنانچہ بعد از گزشتن راجہ اودے سنگہ راجہ سورج سنگہ را با آنکہ از سہ برادر خورد سال بود بسبب تعلقے کہ راجہ اودے سنگہ بوالدہ او داشت براجگی برگزیدند و سکت سنگہ را کہ کلان تر بود براوی -

دربار کا حال

چار ہاتھی پیشکش راجہ چاندا کے بادشاہ کی نظر سے گذرے یہ راؤ چاندا گونڈوانہ کا راجہ تھا -

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

झंडा नक्कारा सोने की ज़ीन का
घोड़ा और ख़ासा हाथी इनायत
किया राजा ने १००० मोहरें १२ हा
थी और कुछ जड़ाऊ रक़में नज़
रकीं राजा का बड़ा भाई अमर
सिंघ जो बादशाह के हुक्म से
शाहज़ादे मुहम्मद शुजाअ़ के
साथ काबुल में गया हुआ था उस
को १००० सवारों के इज़ाफ़े से ३
हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों
का मनसब और राव का ख़ि
ताब इनायत हुआ पहिले भी
राठोड़ों में राव का ख़िताब ही
था राजा सूरज सिंघ के बाप राजा
उदय सिंघ ने अकबर बादशाह
की बंदगी में रहकर इज़्ज़त हा
सिल की तो उन्हों ने उसको रा
जा का ख़िताब इनायत करके
यह बात ठहरा दी कि अब से
जो कोई आदमी इस ख़ानदान
का अपने बुज़ुरगों की जगह बैठे

چهار هزاری ذات و چهار هزار سوار و خطاب
راجگی بموجب وصیت پدر و مرحمت
علم و نقاره و اسپ با زین مطلا و فیل
از حلقه خاصه بر نواخته مشمول تربیت
گردانیدند و راجه هزار مهر بصیغه نذر و دوازده
فیل و برخی مرصع آلات برسم پیشکش
از نظر اطهر گذرانید و امر سنگه برادر
کلان راجه جسونت سنگه را که حسب الحکم
در خدمت درة التاج سلطنت بادشاه
زاده محمد شجاع بهادر به کابل رفته
بود باضافه هزار سوار به منصب سه
هزاری ذات و سه هزار سوار و خطاب
راوی سربلند گردانیدند و راول
بزرگ خانواده راٹھوڑیه امتیاز
براوی داشته چون راجه اودے سنگه
پدر راجه سورج سنگه به بندگی حضرت
عرش آشیانی جبین عزت برافروخت
آنحضرت او را بخطاب راجگی سرفراز
گردانیده مقرر فرمودند که پس ازین هر که
ازین قبیله بجای نیاکان نشیند
براجگی مخاطب گردد و اگر برادر خورد

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

के पीछे ख़ान दौरां और राजा जयसिंघ तो शाहज़ादे की दहनी तरफ़ बैठे और अली मरदान ख़ां को बाईं तरफ़ बैठाया फिर शाहज़ादे ने उसको १ भारी ख़िलअ़त देकर बादशाह की ख़िदमत में रवाने किया ॥

के خاندوران نصرت جنگ اور راجہ جے سنگہ دہنی طرف بیٹھے اور علیمردان خان کو بائیں طرف بٹھایا شاہزادہ نے اُسکو خلعت دیکر بادشاہ کے پاس روانہ کیا

राजा गजसिंघ का इन्तकाल

जेठ सुदी ३ को राजा गजसिंघ जो क़ुरब क़ायदे और फ़ौज की कसरत में हिन्दुस्तान के तमाम राजाओं से बढ़ा हुआ था मर गया बादशाह ने उसके कहने के माफ़िक़ ख़िलअ़त जड़ाऊ जमधर ४ हज़ारी ज़ात और २४००० सवार का मनसब राजा का ख़िताब

ذکر انتقال راجہ گج سنگہ

دویم محرم سنہ ۱۰۴۸ راجہ گجسنگہ کہ بدولت قرابت و قرب منزلت و فزونی دستگاہ وفراوانی سپاہ از دیگر راجہائے ہندوستان امتیاز داشت رخت ہستی بربست بادشاہ بندہ نواز جسونت سنگہ خلف اور العنایت خلعت وجمدہر مرصع ومنصب

(१) मारवाड़ की ख़ियात में महाराजा गजसिंघ देहान्त जेठ सुदी ३ सं. १६९६ को लिखा है सो मिती तो हमारे हिसाब से भी मिलती है रहा संबत सो मारवाड़ में सावन से संबत बदला जाता है चैत से नहीं जिससे संबत ९६ लिखा है सावन से लेकर आधे चैत तक तो मारवाड़ी और हिन्दुस्तानी चाल के संबत बराबर रहते हैं फिर आगे यों के रहजाते हैं ॥

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जो क़िलेदार था बाला क़िले पर चढ गया ३ सुरंगें उसके गिरद भी बनाई गई थीं जिनमें १ राजा जगत सिंघ ने बनाई थी उस से १ बुर्ज दरवाज़े समेत उड़ गई और सिपाही ढाल आगे कर के अंदर घुस गये बाला किला भी भादों बदी १० को फ़तह हो गया

باز کشادہ ہنگامہ قتال و معرکہ جدال گرم گردانیدند بہ تیغ خونبار کشتہ شدند آخر قلعہ فتح ہو گیا محمد ایمان قلعدار بالا قلعہ میں محصور ہوا تین سنگین اُسکے گرد بھی بنائی گئیں جنمیں ایک راجہ جگت سنگھ نے بنائی تھی اُس سے ایک برج معہ دروازہ قلعہ کے اُڑ گئی اور لوگ ڈھال سامنے کرکے اندر گھس گئے ۲۳ ربیع الثانی قلعہ ارک بھی فتح ہو گیا۔

अलीमरदानखां का हाज़िर होना

علیمردان خاں کا حاضر ہونا

दूसरे सावन बदी ३ को शाहज़ादे शुजाअ़ काबुल पहुंच कर "बुते ख़ाक" में ठहरा वहां अली मरदान ख़ां कंधार से "बुते ख़ाक" इलाक़े काबुल में हाज़िर होकर आदाब बजा लाया शाहज़ादे ने कई अमीरों को पेशवाई के वास्ते भेजा था दीवान ख़ाने के दरवाज़े तक ख़ान दौरां बहादुर नुसरत जंग भी गया था सलाम करने

شاہزادہ محمد شجاع ۱۷ ربیع الاول سنہ ۱۰۴۸ روز پنجشنبہ کو کابل پہنچکر بت خاک میں فروکش ہوا وہاں علیمردان خاں نے جو قندھار سے آکر ٹھہرا ہوا تھا ملازمت کی شاہزادہ نے کئی امیرون کو اُسکی پیشوائی کے لئے بھیجا تھا اور دیوانخانہ کے دروازہ تک خاندوران بہادر نصرت جنگ بھی گیا تھا بعد تسلیم کے

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मत कूंचा बनाकर उस को कल
से खाई के ऊपर रक्खें और उ
स्के ऊपर से लशकर को उतार
कर क़िले की दीवार उड़ावें औ
र उधर से क़िले में दाख़िल हो
वें मगर अमीरों की राय न मिल
नेसे काम न चला क़ूलीच ख़ां
सूबेदार यह ख़बर सुन कर ख़ु
द आया तब पहिले सावण की
सुदी ७ को क़िलेदार रोशनसु
लतान ने क़िला सौंप दिया फि
र फ़ौज क़िले बुरत के ऊपर ग
ई और दूसरे सावण की सुदी ६
को जब बारूद से क़िले की दी
वार उड़ाई गई तो दूसरे मोरचे
और ख़ास करके राजा जगतसिं
घ के मोरचे के आदमी तुरई
की आवाज़ सुनकर नसेनियों
से जो तैयार थीं क़िले में जा कूदे
और दुशमनों को मार कर क़ि
लाफ़तह कर लिया महंराब

کشیده از آب بگذراند تا
دیوار حصار پرانیده بران معقل
حصین در آیند" بعده
قلیچ خان صوبه دار امرائے
متعینه زمین داور کی نا اتفاق کا
حال سنکر خود آیا اور تاریخ
۶ ماه ربیع الاول کو روشن
سلطان قلعدار نے قلعه
سونپ دیا تب قلعه بست کے
اوپر فوج گئی اور تاریخ
۶ ماه ربیع الثانی کو جب
بارود سے دیوار قلعه کی
اڑائی گئی تو (بروفق قرار
داد مردم ملچار دیگر علی الخصوص
ملچار راجه جگت سنگه بشنیدن
آواز کرنا از راه نردبانها
که ترتیب داده بودند بسیار
در آمدند و بسیارے از
جهال کوتاه بین که پائے
حمیت به پیکار استوار
بر نهاده دست جسارت بکار زد

की गोलयों से मारे गये थे इस लिये राजा ने क़िले के घोड़े औ रसब साज़ सामान इन्हीं के पास रहने दिया ॥

इतने में ख़बर आई कि ज़मीन दावर से बुस्त वालों की मदद पर फ़ौज आती है राजा ने उसके ऊपर धावा देकर बहुतों को तो मार डाला और बाक़ी भाग गये ॥

फिर राजा जगत सिंघ ने ज़मीन दावर के क़िले पर पहुंच कर मोरचे लगाये उनमें से १ अपने आदमियों के ज़िम्मे किया और जब देखा कि इस तरह से काम बढ़ता है तो अपने मोरचे की तरफ़ से खाई का पानी निकालने के वास्ते नाला खोदा मगर पानी इधर से कम आता था इस लिये यह बात ठहराई कि लकड़ी के तख़्तों पर सलां

ازینان اسپ بسیار بزخم تفنگ
از کار باز ماندہ راجہ اسپ اسباب
قلعہ را باین جماعہ باز گذاشت ،،

اس اثنا مین خبر آئی کہ زمین
داور سے ایک جمعیت بُست والون
کی مدد کو آتی ہے راجہ نے اُوسکے
اوپر حملہ کرکے اکثر کو تو مار ڈالا اور
باقی بھاگ گئے -

بعدہ راجہ جگت سنگہ
نے قلعہ زمین داور پر پہنچکر
قلعہ کے گرد بارہ مورچے بنائے
ان مین سے ایک اپنے
آدمیوں کے حوالہ کیا اور
جب دیکھا کہ اس طرح معاملہ
طول پکڑتا ہے تو" ازطرف
ملچار خود برائے آوردن آب
جوئے کند واز آنروکہ آب ازین
راہ کم بروے آید قرار داد کہ از
چوب وتختہ استوار ساختہ بران
کوچہ سلامت ترتیب دہد وبجر
ثقیل بر روے خندق کشیدہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वालों से लड़े· आख़िर राजपूतजो लड़ाई में नाम को जानके बदले ख़रीदने और जान को नाम कवा स्ते बेचने का ब्योपार ख़ूब जान ते हैं आगे दोड़े· और दोड़ने में कुछ गिर भी गये तो भी दरवाज़े तक पहुंच कर आग लगा दी और इस तरह रस्ता करके रजपूत और मुग़ल साथ साथ क़िले में दाख़िल हुये और क़जलबाशों को मार कर १४० इरा की घोड़े· और दूसरा सामान ले आये राजा जगत सिंघ बंदूक़ की आवाज़ क़िले में सुन कर बहुत जलदी आपहुंचा और इन लोगों की बहादुरी और कोशिश की तारीफ़ करने लगा "

इस लड़ाई में राजा जगत सिंघ के रजपूतों ने बड़ी बहादुरी की थी ३० के क़रीब उनके आदमी मारे गये थे और कुछ ज़ख़्मी हुये थे और बहुत से घोड़े· बंदूक़

قلعه والوں سے جنگ کی انجام کار
راجپوتان تهور شعار که در روز بازار
جان ناموس را بزندگی خریدن
وزندگی را بناموس فروختن
تجارت رائجه دانند پیش دویدند
چندے بیکبار دویده تا زندگانی
در باختند" چون دروازه کو آگ
سے جلا دیا اور راستہ ہو گیا تو
مغل اور راجپوتوں نے ساتھ
ساتھ قلعہ میں داخل ہو کر قلباشوں
کو مار ڈالا ایک سو چالیس گھوڑے
عراقی اور دوسرا سامان ہاتھ آیا
راجہ جگت سنگھ بندوق کی
آواز سنکر جلدی سے قلعہ پر پہونچا
اور ان لوگوں کی بہادری اور
کوشش پر بہت تعریف اور تحسین
کی" چون دران هنگامه جانبازی
راجپوتان راجه جگت سنگه کمال
دلیری و دلاوری بروئے کار
آورده بودند و نزدیک سی تن
مغول که چند مجروح شده و

बरस १२ वां

जेठसुदी ३ संवत १६९५ से
बैसाखसुदी २ संवत १६९६ तक

क़ंधार की मुहिम

आसाढ़ बदी १३ को सईद
ख़ां ने राजा जगत सिंघ को ज़मीन
दावर और क़िले बुस्त के फ़तह
करने के लिये भेजा पुरदिल ख़ां
और ग़ज़ब ख़ां वग़ैरा बाहरे के सै
इदों और सूबे काबुल के कुमकी
राजपूतों को साथ दिया राजा ने
पुर दिल ख़ां वग़ैरा को तो क़िले
बुस्त को भेजा और आप ज़मीनदा
वर पर कूच करके रस्ते से अपने
१००० सवार और २००० पियादे रा
जपूतों को कुलीच ख़ां के कुछ आ
दमियों के साथ क़िले सारवा
न के ऊपर धावा करने का हुक्म
दिया वे क़िले के नीचे पहुंच
कर शाम से आधी रात तक क़िले

برس بارهوان

سنه ۴۸ ہجری
۶ مئی سنه ۱۶۳۸ سے ۲۴ جون سنه ۱۶۳۹ تک

مہم قندھار

۲۶- محرم کو سعید خان نے
راجہ جگت سنگھ کو واسطے فتح حصار
بست اور زمین داور کے روانہ کیا -
پُردل خاں و عوض خان وغیرہ
سادات بارہہ اور راجپوتان کمکی
صوبہ کابل کو اُوسکے ساتھ بھیجا راجہ
نے پُردل خاں اور عزت خان
وغیرہ کو تو قلعہ بست کے اوپر رخصت
کیا اور آپ زمین داور کو روانہ
ہوا راستہ سے اپنے ایکہزار سوار اور
دو ہزار پیدل راجپوتوں اور
کچھ قلیچ خاں کے آدمیوں کو قلعہ
ساربان کے اوپر دھاوا کرنیکا
حکم دیا انہوں نے قلعہ کے نیچے پہنچکر
اوّل شب سے دو پہر رات تک

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ना कर उनमें १००० सवार और ३००० बंदूक़ची रक्खे और ३ महीने तक वहां रहकर उस तरफ़ के ज़मींदारों को सर किया फिर हद्दे पहाड़ पर जो उत्तर कोल की तरफ़ आघाट और कजला के बीच में है जाकर बरसात गुज़ारने के वास्ते छावनी टाली वहां कई सरदार पास पड़ोस के आकर हाज़िर होगये ॥

जब ये समाचार इसलामख़ां की अरज़ी और हलकारों की ख़बरों से बादशाह को मालूम हुवे तो इसलाम के ५००० सवारों से कि जिनमें ३००० सवार तो पहिले से दुअस्पा और सिहअस्पा थे १००० और दुअस्पा और सिहअस्पा कर दिये और जिन २ अमीरों के वास्ते उसने सिफ़ारिश की उनके मनसब भी बढ़ा दिये ॥

पास दो क़लअ बनाकर उनमें एकहज़ार सवार और तीन हज़ार बंदूक़ची रक्खे और तीन महीने तक वहां रहकर उस तरफ़ के ज़मींदारों को मुतीअ किया फिर कोह शिह पर जो उत्तर कोल की तरफ़ सरी घाट और कजली के बीच में है पहुंचकर बरसात बसर करने के वास्ते छावनी डाली वहां भी कई सरदार आस पास के आकर हाज़िर हो गये।

जब यह हालात इसलाम ख़ां के अर्ज़ी और हरकारों की ख़बर से बादशाह को मालूम हुवे तो बादशाह ने इसलाम ख़ां के पांचहज़ार सवारों में से कि जिन में तीन हज़ार सवार दोअस्पा और सिहअस्पा थे एकहज़ार सवार और दोअस्पा और सिहअस्पा कर दिये और जिन जिन अमीरों के वास्ते उसने सिफ़ारिश की उनके भी मनसब बढ़ा दिये ॥

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पर खूब लड़ाई हुई बादशाही लश
कर ने क़त्ल आम शुरू कर दिया।
जो लोग लड़ाई में पकड़े गये उनको
भी मार डाला उसमें आसाम के राजा
का भाई भी था बाकी आसामी भाग
कर श्री घाट और पांडू में पहुंचे और
बलदेव दुरंग को चला गया॥

बादशाही लश्कर कोच हाजू हो
कर पोस बदी १० को आरिब या पहा
ड़ी के पास पहुंचा और अब फिर खु
श की और तरी (जलस्थल) में होने ल
गी जिस्को जीत कर बादशाही ल
शकर कजली की तरफ़ बढ़ा जो ब्र
ह्म पुत्र के किनारे पर आसाम देस
का द्वारा है और कुछ फ़ौज बलदेव
के ऊपर दुरंग की तरफ़ भी गई बल
देव भाग कर गाव सेंगरी में चला ग
या जो आसाम की अमलदारी में ब्रह्म
पुत्र के तट पर बस्ता था कजली में
भी आसामियों की हार हुई और बा
दशाही ने कजली के पास २ क़िले ब

ड़ाई

शकर

ہوئی بادشاہی لشکر نے قتل عام
شروع کر دیا اور جو لوگ میدان
جنگ مین گرفتار ہوئے اونکو
بھی مار ڈالا ان مقتولون مین
آسام کے راجہ کا داماد بھی تہا
جو باقی بچے وہ بہاگ کر سری
گھاٹ اور پانڈو مین پہونچے
اور بلدیو درنگ کو چلا گیا۔
بادشاہی لشکر کوچ ہاجو
ہو کر ۲۴۔ رجب کو آکھیا پہاڑی
کے پاس پہنچا اور اب پہر خشکی
اور تری مین لڑائی شروع ہوئی
بادشاہی لشکر فتح پاکر کجلی کیطرف
روانہ ہوا جو برہمپتر کے کنارہ ملک
آسام کے دہانہ پر ہے اور کچھ
فوج بلدیو کے اوپر درنگ کی
طرف بھی گئی بلدیو بہاگ کر موضع
سینگری مین چلا گیا جو آسام کی
عملداری مین برہمپتر کے کنارہ پر تہا
کجلی مین بھی دشمنون کو شکست
ہوئی اور بادشاہی لشکر نے کجلی کے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिस्सा बादशाही लशकर का पड़ा
था ॥

जब नदियों का पानी कमहुआ तो चंदन कोटे का लशकर भी बिशनपुर को रवानेहुआ बलदेव ने मंगसिर बदी ६ सं-६७ की रात को कुछ आदमी बादशाही लशकर पर छापा मारने को भेजे उन्हों ने काले पानी से उतर कर २ क़िले बादशाही आदमियों से लेलिये मगर बादशाही फ़ौज ने दूसरे दिन हल्ला करके २ पहर में १५ किले दुशमनों के छीने और ४००० आसामियों को और कई उन के सरदारों को मार डाला बाक़ी आदमी भाग कर बलदेव के पास पहुंचे ॥

बादशाही फ़ौज ने मंगसिर सुदी १४ को फिर ३ हिस्से होकर खुशकी से दुशमनों के ऊपर हमला किया और निवाड़े को पानी की तरफ़ से रस्ता रोकने के वास्ते भेजा क़िलों

بادشاہی لشکر کا تہا -

جب دریا کا پانی کم ہوا تو چندن کوٹہ کا لشکر بھی بشن پور کو روانہ ہوا بلدیو نے شب یکشنبہ تاریخ ۲۰ - جمادی الثانی سنہ ۱۰۴۷ کو کچھ فوج اپنی بادشاہی لشکر پر چھاپہ مارنے کے واسطے بھیجی - اوس نے کالا پانی سے اُتر کر دو قلعے بادشاہی آدمیون سے لے لئے مگر بادشاہی فوج نے دوسرے دن حملہ کرکے دوپہر مین ۱۵ قلعہ دشمنون کے چھین لئے اور چار ہزار آسامیون کو معہ کئی بڑے بڑے سردارون کے مار ڈالا باقی آدمی بہاگ کر - بلدیو کے پاس پہونچے -

بادشاہی فوج نے ۱۲ رجب کو پھر تین فوج ہوکر خشکی سے - دشمنون پر حملہ کیا اور نواڑہ کو پانی کی طرف سے راستہ روکنے کے واسطے بھیجا قلعون پر خوب لڑائی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गया जिस से उत्तर कोल और दक्षिण कोल का मुलक साफ़ होगया

फिर बादशाही लशकर चंदन कोटे पर गया वहां बुधनगर के ज़मींदार सरदापर का बेटा उत्तम नारायण भी बलदेव से लड़ाई हार कर आगया लशकर के सरदार उस को साथ लेकर बुध नगर को पहुंचे बलदेव वहांसे चौपड़ी की तरफ़ हटगया यह इलाक़ा भी सरदापर का था जब बादशाही लशकर बिशनपुर में दाख़िल हुआ तो बलदेव ४००० आदमियों से काला पानी तक जो बिशनपुर से ३॥ कोस है आपहुंचा और वहां क़िला बना कर रहा औरख सके लिखने से आसाम के राजा सुरगदेव ने पांडू से अपने बेटे के जमाई के साथ २०००० आदमी और भेजे॥

बलदेव ने कुछ आदमी भेज कर बिशनपुर और चंदन कोटे का रस्ता बंद कर दिया जहां १ बड़ा

कोहट गये उधर चंदरनारायन भी मरगया जिस से उत्तरकोल और दक्षिन कोल का मुलक साफ़ होगया फिर बादशाही लशकर चंदन कोटे को रवाना हुआ वहां बुधनगर के ज़मींदार सरदापर का बेटा उत्तम नारायन भी बलदेव से शिकस्त खाकर आगया सरदार लशकर उसको साथ लेकर बुधनगर पहुंचे बलदेव वहां से चौपड़ी की तरफ़ हटगया यह इलाक़ा भी सरदापर का था जब बादशाही लशकर बिशनपुर में पहुंचा तो बलदेव चालीस हज़ार आदमियों से कालापानी तक जो बिशनपुर से डेढ़ कोस है मुक़ाबले के वास्ते आपहुंचा और वहां क़िला बनाकर मुक़ीम हुआ उसके लिखने से आसाम के राजा सुरगदेव ने पांडू से अपने बेटे के दामाद के साथ बीस हज़ार आदमी और भेजे।

बलदेव ने कुछ आदमी भेजकर बिशनपुर और चंदनकोटे का रास्ता बंद कर दिया जहां एक बड़ा हिस्सा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कोवडे॰ तक़ाज़े से बुलाया शत्रजीतने अपने बेटे को जहांगीर नगर से बुला कर अपनी जगह छोड़ा और आप ख़ान के पास गया ख़ान ने उसको फिर मोही उद्दीन के साथ हाजू की तरफ़ भेजा यहां आकर वह आसाम के लशकर और बलदेव से मिल गया जिसपर इसलामख़ां ने उसके पकड॰ने का हुक्म भेजा वह गिरफ़तार हुआ और जहांगीर नगर के क़ैदख़ाने में पड़ा २ मरगया॥

कोच और आसाम के लशकर ने शेख़ अबदुलसलाम वग़ैरा को पकड॰ने के पीछे बादशाही लशकर की रोक के वास्ते जो नज़दीक था आये हीरापुर में मज़बूत क़िले बनाये और दोनों जगह फ़ौज रकवी ये दोनों इलाक़े ब्रह्मपुत्र के आस पास थे बादशाही फ़ौज धोपड़ी से उनके ऊपर गई ख़ानपुर की नदी उतरने में आसामियों से लड़ाई हुई और वे हारकर पीछे को हट गये उधर चंद्रनारायण भी मर

اُسنے شتروجیت کو بڑے تقاضے سے بُلایا شتروجیت نے اپنے بیٹے کو جہانگیر نگر سے بُلا کر اپنی جگہہ چھوڑا اور آپ خان کے پاس گیا خان نے پھر محی الدین کے ساتھ کوچ باجو کو بھیجا یہان آکر وہ لشکر آسام اور بلدیو سے ملگیا اسلام خان نے اُوسکے پکڑنے کا حکم لکھا جس سے وہ گرفتار ہُوا اور جہانگیر نگر کے قیدخانہ مین پڑا پڑا مر گیا۔

کوچ اور آسام کے مفسدون نے شیخ عبدالسلام وغیرہ کو گرفتار کرنے اور بادشاہی لشکر کو روکنے کے واسطے جوگی گُپا اور ہیراپور مین مضبوط قلعہ بنائے اور دونو جگہہ فوج تعینات کی یہ مقامات دریائے برہمپتر کے قرب وجوار مین تھے بادشاہی فوج دھوپڑی سے اُونکے اوپر ہوگئی دریائے خانپور کے اُترنے مین آسامیون سے لڑائی ہوئی اور وہ شکست کھاکر پیچھے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को उत्तर कोल की तरफ़ से करी मारी के सामने पहुंचे चंद्र नारायण सोल मारी की तरफ़ चला गया बादशाही अमीरों ने परगने मरदंगी में पहुंचकर वहां के ज़मींदार प्रीछत को अपने पास बुलाया जो चंद्र नारायण का सुसरा था वह आकर लशकर में हाज़िर होगया ॥

इस अरसे में शत्रू जीत भी पकड़ा हुआ ॥ जहांगीर नगर में आया यह बसीने के राजा मुकंदर का बेटा था इस्का इलाक़ा जहांगीर नगर से ३ मंजिल पर था जब शेख़ अलाउद्दीन कोच हाजू फ़तह करने को फ़ौज भेजी थी तो शत्रू जीत को भी उस के साथ तईनात किया था उसने उस मोहिम में अच्छा काम दिया जिस सेपांडू और कोह मती की थाने दारी उस को मिली उस्का बेटा जहांगीर नगर में रहता था जब इसलाम खां सूबेदार होकर बंगाले में आया तो शत्रू जीत

ہزار پیادے کوچ اور آسام کے جمع ہوگئے بادشاہی آدمی ۱۰ شعبان سنہ ۱۰۴۶ کو اُتر کول کیطرف سے کری ماری کے سامنے پہونچے چندر نراین سول ماری کی طرف چلا گیا بادشاہی اُمرا نے پرگنہ مردنگی مین پہونچکر وہان کے زمیندار پریچھت کو اپنے پاس بلایا جو چندر نراین کا سسرا تھا وہ آکر لشکر مین حاضر ہوگیا۔

اس عرصہ مین شتروجیت بھی گرفتار ہوکر جہانگیر نگر مین پہونچا یہ بسینہ کے راجہ مکندر کا بیٹا تھا اسکا علاقہ جہانگیر نگر سے تین منزل پر واقع تھا جب شیخ علاؤالدین نے کوچ ہاجو فتح کرنے کو فوج بھیجی تھی تو شتروجیت کو بھی اُوسکے ساتھ تعینات کیا تھا اُسنے اس مہم مین اچھا کام کیا تھا جس سے پانڈو کی اور کوہ متی کی تھانہ داری ملی تھی اور اُوسکا بیٹا جہانگیر نگر مین رہتا تھا جب اسلام خان صوبہ دار ہوکر آیا تو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर उस्के पास हाज़िर होगये और उ
राने उन्हें आसाम को चलता किया
रस्ते में ज़ैनुल आबदीन लड़ा और मा
रा गया ॥

उधर ज़ैनुद्दीन अली और मोह
म्मद ज़मान वग़ैरा मनसब दार जो बं
गाले से चले थे प्रीछत के बेटे चंद्रना
रायण के ऊपर गये जो परगने सवल
मारी ज़िले दकखन कोल में रहताथा
और यह ज़िला ब्रह्म पुत्र नदी के दह
ने तट पर फैला हुआ था और उस्के अकसर
परगने शत्रू जीत को दिये हुये थे और
उसने अपने भतीजे गोपी नाथ को परग
ने करी मारी की थाने दारी पर छोड़ कर
रखा था जहां१ मज़बूत क़िला था मग
रख़हां की प्रजा ने उस्के ज़ुल्म से थकता
कर चंद्र नारायण को बुलाया जिस
के आते ही गोपी नाथ थाना छोड़ कर
भागा और चंद्र नारायण के पास ६।७
हज़ार पैदल कोच और आसाम के इ
कट्ठे होगये बादशाही आदमी पोस मुदी

اوسکے پاس حاضر ہوگئے اُس نے
اُنھیں آسام کو روانہ کیا راستہ
مین سید زین العابدین جنگ
کرکے کام آگیا۔

زین الدین علی و محمد زمان
طہرانی وغیرہ منصب دار جو بنگالہ
سے روانہ ہوئے تھے پرچھت
کے بیٹے چندر نراین کے اوپر
گئے جو پرگنہ سول ماری ضلع
دکھن کول مین رہتا تھا اور
یہ ضلع برہمپتر دریا کے کنارہ پر
واقع ہے اور اُسکے اکثر پرگنہ
شترو جیت کی جاگیر مین دئے گئے
تھے اور اُسنے اپنے بھتیجے گوپی ناتھ کو
پرگنہ کری ماری کی تھانہ داری پر
رکھ چھوڑا تھا جہان ایک مضبوط
قلعہ بھی ہے مگر وہان کی رعیت نے
گوپی ناتھ کی سخت گیری سے تنگ
آکر چندر نراین کو بلایا جس سے
گوپی ناتھ تھانہ چھوڑ بھاگا اور
چندر نراین کے پاس چھ سات

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उस्के वास्ते बहुत सा नाज और
खज़ाना नावों में लदवा करभेजाक्यों
कि उसतरफ़ के पायक और ज़ि
मींदार आसामियों से मिलगयेथे
और रसद नहीं पहुंचातेथे॥
अब आसामियों ने ५०० ना
वों में आकर जल और थल (खुशकी)
की राह से बादशाहीनिवाड़े के ऊप
र हमला किया राजू जीत तो अप
नानिवाड़ा लेकर उससे जा मिला
मोहम्मद सालह कम्बो मारा गया।
और उसका साथी मजलिस बायज़ीद
पकड़ा गया बलदेव श्रीघाट और पां
डू की तरफ़ से कोच हाजू के ऊपर
गया रस्ते में अपने क़ायदे के माफ़ि
क मंज़िल २ के ऊपर क़िले बनाता
आताथा कोच हाजू को उसने घेर
कर ऐसा तंग किया कि अंदरर
सद बिलकुल न पहुंचसकीजि
रासे अब दलसलाम मोहीउद्दीन
और ज़ैनुल आबदीन माफ़ी मांग

साग़लह اور خزانہ بھی کشتیونمین
لدوا کر بھیجا کیونکہ اوسطرف کے
پایک اور زمیندار دشمنون سے
ملکر رسد نہین پہونچاتے
تھے۔
دشمنون نے پانسو کشتیون
مین آکر دریا اور خشکی کی راہ
سے بادشاہی نواڑہ کے اوپر
حملہ کیا شتروجیت تو اپنا نواڑہ
لے کر اوُن سے جا ملا محمد صالح
کنبو مارا گیا اور اوسکا رفیق "مجلس
بایزید" پکڑا گیا پھر بلدیو سری
گھاٹ اور پانڈو کی طرف سے
کوچ ہاجو کے اوپر روانہ ہُوا
راستہ مین اپنے قاعدہ کے
بموجب ہر منزل پر قلعہ بناتا
ہُوا آتا تھا کوچ ہاجو کا اوُس
نے ایسا سخت محاصرہ کیا
کہ رسد اندر نہین پہونچ سکتی
تھی آخر عبد السلام محی الدین
اور سید زین العابدین بچن لیکر

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर ने उसको हटा कर वे दोनों कि
ले ५ तोपों समेत उससे छीन लिये
दूसरी लड़ाई आगे चलकर श्रीघाट
में हुई वहां आसामी फ़ौज का भू
खन यानी सिपह सालार मारा गया
और बहुत से बादशाही आदमी का
म आये दूसरे दिन फिर लड़ाई हु
ई कई सरदार आसाम के मारे गये
बाक़ी रहे सो अपना निवाड़ा लेक
र भाग गये मगर आसाम से फिर
दूसरी मदद आने और ४०००० दु
शमनों के इकट्ठे होजाने की ख़बर
मशहूर हुई जिस से इस लामख़ां
ने तमाम सूबे की फ़ौज बुलाकर
ख़ुद मैदान जंग में जाना चाहा म
गर फिर सूबे को ख़ाली छोड़ना
मुनासिब न देख कर अपने भाई
ज़ीनउद्दीन अली और सिलहट के
फ़ौजदार मोहम्मद ज़मान वग़ैरे
को बहुत सा लश्कर देकर कोच
हाजू की तरफ़ रवाना किया और

توپوں کے اُس سے چھین لئے
دوسری لڑائی آگے چل کر
سری گھاٹ میں ہوئی وہاں
آسامی فوج کا بھوکھن یعنے
سپہ سالار مارا گیا اور بہت
سے آدمی بادشاہی فوج کے
بھی کام آئے دوسرے دن
پھر لڑائی ہوئی اور کئی سردار
آسام کے مارے گئے اور باقیماندہ
اپنے نواڑہ کو لے کر فرار ہوئے
مگر بعدہ آسام سے پھر کمک آنے
اور چالیس ہزار دشمنوں کے جمع
ہوجانے کی خبر مشہور ہوئی جس سے
خود اسلام خان نے تمام صوبہ
کی فوج کو جمع کرکے میدان
جنگ کو روانہ ہونا چاہا مگر پھر صوبہ
کو خالی چھوڑنا مصلحت وقت سے
دور دیکھ کر اپنے بھائی زین الدین
اور سلہٹ کے فوجدار محمد زمان طہرانی
وغیرہ کو معہ بہت سے فوج کے کوچ
ہاجو کی طرف روانہ کیا اور بہت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमला करेंगे शेख़ ने मुहम्मदसा
लेह को उसके साथ कर दिया जब
रात पड़ गई तो शत्रू जीत उसको र
स्ते में ठहरा कर यह कह गया कि
मैं थाने की ख़बर लेकर आता हूं
मगर दिन निकलने तक न आया
जब मुहम्मद सालेह आगे बढ़ा तो
देखा कि शत्रू जीत अपनानि वाड़ा
(नावों का बेड़ा) लिये चला आता
है मोहम्मद सालह ने देर का सब
ब पूंछा तो कहा कि दुशमनों ने मे
रा थाना लेलिया मैंनि वाड़े को बचा
लाया हूं ॥

दूसरे दिन शेख़ ज़ैनुल आब
दीन और बादशाही फ़ौज के बंगा
ले से हाजू में पहुंचने की ख़बर आ
ई तो मोहम्मद सालह मी वहांग
या दोनों मिल कर बलदेव से लड़
ने को गये वहं दुरंग से २ कोस आगे
आकर लड़ा जहां २ क़िले भी उसने
बना लिये थे मगर बादशाही लश

साथ कर दिया जब रात हो गई - तो
शत्रुजीत उसको रास्ते मीन ठहरा कर
यह कहा गया कि मीन थाना की ख़बर ले कर
आता हुन मगर सुबह तक नहीन आया जब
मुहम्मद सालह आगे बढ़ा तो देखा कि शत्रुजीत
अपना नवाड़ा लिये चला आता है मुहम्मद सालह
ने देर का सबब पूछा तो कहा
कि दुशमनों ने मेरा थाना ले
लिया मीन नवाड़ा यानि जहाज़ों
के बेड़ा को बचा लाया हुन -

दूसरे दिन शेख़
ज़ैनुल आबदीन के बंगाले से
हाजू पहुंचने की ख़बर आई तो वह भी वहां
चले आये तब ज़ैनुल आबदीन और
मुहम्मद सालह बादशाही फ़ौज ले कर
बलदेव से लड़ने को गये वह दुरंग से
दो कोस आगे आकर लड़ा जहां
दो क़िले भी उसने बनाये
थे मगर बादशाही लश्कर ने ग़ालिब
होकर वह दोनों क़िले सह पांच

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

याहे अगर तुम कोशिश करो तो मतलब हासिल होसक ता है बलदेव ने दुरंग से रवाने होक रउन लोगों पर हमला किया कि जिन को कोच हाजू के हाकिम अबदुल सलाम ने खेदे के वास्ते भेजाथा इसपर शेख ने इसलाम खां को लिख कर मदद मांगी उसने २००० सवार और पैदल मय जंगी किशतियों और सामान जंग के रवाने किये और कुछ आदमी घोड़ा घाट में नावों का बंदोबस्त करने को भेजे जो बरसात और नदियों के चढ़जाने से अपने घोड़ों और सामानों को घोड़ा घाट में छोड़ कर नावों में बैठ गये और कोच हाजू की तरफ़ रवाने हुए मुहम्मद सालह कदबो सब से पहिले वहां पहुंचा और उसी वक्त शत्रू जीत ने आकर शेख अबदुल सलाम से कहा कि दुशमन आज रात को मेरे थानेपर

نے بلدیو سے کہلا بھیجا کہ نیا حاکم آیا ہے اگر کچھ کوشش کرو تو مطلب حاصل ہو سکتا ہے بلدیو نے ورنگ سے روانہ ہو کر اُن لوگون پر حملہ کیا کہ جنکو کوچ ہاجو کے حاکم شیخ عبدالسلام نے کھیدہ کے واسطے بھیجا تھا شیخ نے اسلام خان کو لکھکر مدد مانگی اُس نے دو ہزار سوار اور پیدل معہ جنگی کشتیون اور سامان جنگ کے روانہ کئے اور کچھ آدمی گھوڑا گھاٹ مین کشتیون کے لانے کو بھیجے جو طوفان بارش اور ندیون کی طغیانی سے اپنے گھوڑے اور سامانون کو گھوڑا گھاٹ مین چھوڑ کر کشتیون مین کوچ ہاجو کی طرف روانہ ہوئے محمد صالح کنبو سب سے پہلے وہان پہونچا اور اُوسی وقت شتروجیت نے آکر شیخ عبدالسلام سے کہا کہ دشمن آج رات کو میرے تھانہ پر حملہ کرینگے شیخ نے محمد صالح کو اُوسکے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दूसरे ज़मींदार भी माल गुज़ारी में सुस्ती करने लगे ॥

बंगाले के अगले हाकिमों ने दस बारह हज़ार पायक (पैदल) को इस वास्ते जागीर देरक्खी थी कि जब खेदा यानी हाथियों का शिकार होवे येह लोग आकर काम करें नहीं तो अपनी जागीर में रहें क़ासमख़ांने अपनी सूबेदारी में खेदे का काम अच्छा न करने से इन पायकों के कई बड़े २ सरदारों को जहांगीर नगर में बुला कर क़ैद किया और फिर ३००० जुरमाने के लेकर छोड़ा इससे संतोष लशकर और जयराम लशकर जो नामी सरदार पायकों के थे बहुत से पायकों को लेकर स्वर्गदेव के पास जा रहे फिर जब बंगाले का सूबेदार इस लाम रवां हुआ तो पांडू के थानेदार शत्रू जीत ने बलदेव से कहला भेजा कि हाकिम नया आ

बंगाले के हाकिमों ने दस बारह हज़ार पायक (पैदल) को इस काम के वास्ते जागीर दे रक्खी थी कि जब खेदा यानी हाथियों की शिकार की जावे तो वह लोग आकर काम करें वरना अपनी जागीर में रहें क़ासम ख़ान ने अपनी सूबेदारी में खेदे का काम अच्छी तरह अंजाम न दिया इस से उन पायकों के कई बड़े सरदारों को जहांगीर नगर में बुलाकर क़ैद किया और फिर ३० हज़ार रुपैया जुर्माना लेकर छोड़ा इस से संतोष लशकर और जयराम लशकर नामी सरदार पायकों के थे बहुत से पायकों को लेकर स्वर्गदेव के पास भाग गये और उसने उन्हें सादे कर अपने पास रख लिया

इसी अस्नाम में बंगाले की सूबेदारी इस्लाम ख़ान को सुपुर्द हुई और पांडू के तहानेदार शत्रुजीत

हुक्म दिया कि तैयार रहै और बलदेव को ज़रूरत पड़े तो जाकर मदद करे ॥

बलदेव ने बादशाही सूबेदारों की बदला बदली के मौक़े पर क़ाबू पाकर पहिले तो दुरंग में क़बज़ा कर लिया जो कोचहाजू से १० कोस ब्रह्म पुत्र के किनारे पर पहाड़ के नीचे है और फिर दूसरे इलाक़ों में दस्तंदाज़ी करके दस बारा हज़ार पैदल कोची और आसामी अपने पास जमां कर लिये और आसाम का थाना जहां पहिले प्रीछत के ज़माने में रहा करता था वहां से बहुत आगे को बढ़ा कर बैठा दिया ख़ान ज़मां की ग़फलत से जो अपने बाप महाबत ख़ां की नायबी में बंगाले का हाकिम था उसका हौसिला और भी बढ़ गया लोकी और भावमंती के परगनों में भी उसका असल हो गया यह देखकर उस तरफ़ के

کو ضرورت پڑے تو جاکر مدد کرے -

بلدیو نے بادشاہی صوبہ داروں کے تغیر و تبدل کے موقع پر قابو پاکر پہلے تو درنگ مین قبضہ کر لیا جو کوچ ہاجو سے دس کوس برہمپتر کے کنارے پر پہاڑ کے نیچے ہے اور پھر دوسرے علاقون مین دست اندازی کرکے دس بارہ ہزار پیدل کوچی اور بنگالی اپنے پاس جمع کر لئے اور آسام کا تھانہ برخلاف زمانہ پریچھت کے بہت آگے کو بڑھا دیا خانزمان کی غفلت سے جو اپنے باپ مہابت خان کی نیابت مین بنگالہ کا حاکم تھا اوسکو اور بھی تقویت پہونچی لوکی اور بھاومنتی کے پرگنون مین بھی اوسکا عمل دخل ہو گیا یہ دیکھکر دوسرے زمیندار بھی اُس طرف کی ادائے مالگذاری مین پہلوتہی کرنے لگے -

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दार स्वर्गदेवहै जिस के पास
१००० हाथी और ००००० से ज़ियादा
पैदल हैं आसामी सिर मुंडाते हैं
और डाढ़ी मूंछ के बाल नक चोंटी
से लेते हैं सरदार अपने ही मुल्क
के हाथी और टांगन पर सवार होते
हैं लड़ाई के जहाज़ हरवक्त तैयार
रखते हैं लड़ाई में हर जगह बहुत
जलदी मिट्टी का क़िला बना कर
पर लकड़ियां पाट देते हैं जिन में
से तोप बंदूक चलाया करते हैं और
किले के चोतरफ़ खाई खोदकर
दुशमन का रस्ता बंद करदेते हैं॥

जब बलदेव आसाम में पहुंचा तो उसने वहां के राजा स्वर्गदेव से कहा कि जो मेरे साथ फ़ौज भेजो तो कोच हाजू का मुलक मुग़लों से फ़तह करदूंगा मगर हकूमत वहां की मुझ को देनी होगी राजा ने मंज़ूर करके कुछ फ़ौज तो उसी वक्त उसके साथ करदी बाक़ी को

ایکہزار ہاتھی اور دسہزار سے زیادہ
پیدل ہین آسامی سر منڈاتے ہین
اور ڈاڑہی مونچھ کے بال نچوٹی سے
نوچ ڈالتے ہین سردار اپنے ہی
ملک کے ہاتھی اور ٹانگن پر سوار ہوتے
ہین لڑائی کے جہاز ہر وقت تیار رکھتے
ہین لڑائی مین ہر جگہہ بہت جلد مٹی
کا قلعہ بناکر اوپر لکڑیان پاٹ دیتے
ہین جس مین سے توپ بندوق
چلایا کرتے ہین اور قلعہ کے چارون
طرف کھائی کہودکر دشمنون کا راستہ
بند کر دیتے ہین

جب بلدیو آسام مین پہونچا
تو اوسنے وہان کے راجہ سرگ دیو
سے کہا کہ اگر میرے ساتھ فوج
بہیجو تو کوچ ہاجو کا ملک مغلون
سے فتح کر دونگا۔ مگر حکومت
وہان کی مجہکو دینا ہوگی راجہ
نے منظور کرکے کچھ فوج تو اوسی
وقت اوسکے ساتھ روانہ کر دی
باقی کو حکم دیا کہ تیار رہے اور بلدیو

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़ल ही गयाथा कि आसामियोंने हमला करके बादशाही लशकर को काट डाला इस से शेरख़ कासम की सूबेदारी उतर गई ॥

आशाम परचढ़ाई

बादशाह नामें में लिखा है कि आसामी गैर आदमियों को अपने मुल्क में नहीं आनेदेते हैं- जिससे पूरा हाल तो वहां का मालू नहीं हुआ लेकिन जो आसाम के आदमी कोचहाजू में आते जाते हैं और जो वहां के क़ैदी दरबार में आये उनसे मालूम हुआ कि आसाम १ बड़ी विलायत है जहां हाथीओं र अगर बहुत होता है नदीयों की रेत धोनेसे कम क़ीमत सोना भी निकलताहै एक सरहद उसकी ख़ता से मिली हुई है दूसरी कशमीर और तिब्बत से- १ तरफ़ उसके मेड़ायच, तुरहत, मोरंग, कोचबिहार और कोचहाजू है यहां की ज़िमीं

پانچ منزل ہی گیا تھا کہ آسامیون نے حملہ کرکے بادشاہی لشکر کو کاٹ ڈالا اس سے شیخ قاسم کی صوبہ داری اوتر گئی۔

آسام پر چڑھائی

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے کہ آسامی غیر آدمیون کو اپنے ملک مین نہیں آنے دیتے ہین جس سے پورا حال تو وہان کا معلوم نہوا۔ لیکن جو آدمی آسام کے کوچ ہاجو مین آتے جاتے ہین اور جو وہان کے قیدی دربار مین آئے اُون سے معلوم ہوا کہ آسام ایک بڑی ولایت ہے جہان ہاتھی اور عود بہت ہوتا ہے ندیون کے ریت دہونے سے سونا بھی نکلتا ہے ایک سرحد اُسکی ختا سے دوسری کشمیر اور تبت سے ملی ہے تیسری طرف بھڑایچ۔ ترہت مورنگ کوچ بہار اور کوچ ہاجو ہین یہان کا زمیندار سُرگ دیو ہے جس کے پاس

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुकर्रम ख़ां ने सूबेदारके लिखने
से अपने भाई अबदुलसलाम को
खेले में छोड़ा और आप परीछत
को लेकर जहांगीर नगरमें पहुंचा
उसी दिन इसलाम ख़ां मरगया जहां
गीर बादशाह ने प्रीछत कोतो अ
पनेपासबुलाया और बंगाले की सू
बेदारी पर इसलाम ख़ांके भाई शे
ख़ कासम को मुक़र्रर किया उस
ने मुकर्रम ख़ां को कोच हाजू की
हिफ़ाज़त पर भेजा वह वहां पहुं
च कर १साल तक रहा मगर फि
रशेख़ की बदसलूकी से नाराज़
होकरपरभारा घोड़ा घाटके रस्ते
सेबादशाह के पास चला गयाओ
रशेख़ ने सैयद ह कीम को १०।१२
हज़ार सवार और पैदल से कोच
हाजूके बंदोबस्त पर भेजा और
आसाम की फ़तह करने का हुक्म
दिया वह कोच हाजू पहुंच कर आ
साम कोर वाने हुआ अभी ४।५मं

थी कर्म खान ने सूबेदार के लिखने
से अपने भाई अब्दुल सलाम को खेल
मेंछोड़ा और आप परीछत को ले कर
जहांगीर नगर मेंपहुंचा उसी दिन
इसलाम खान मर गया जहांगीर बादशाह ने
परीछत को तो अपने पास बुलाया
और बंगाले की सूबेदारी पर इसलाम खान
के भाई शेख़ कासम को मुक़र्रर किया
उस ने मुकर्रम खान को कोच हाजू
की हफ़ाज़त पर भेजा वह वहां
पहुंचकर एक साल तक रहा मगर
शेख़ की बदसलूकी से नाराज़ हो कर
बालाघाट के रास्ते
से बादशाह के पास चला गया।
शेख़ ने सैयद हकीम को जो बादशाही
मोतमदों में से था मय
अपने मुलाज़िम सैयद बाबर के दस
बारह हज़ार सवार व पैदल से कोच हाजू
के बंदोबस्त पर भेजा और आसाम
फ़तह करने का भी हुक्म
दिया वह कोच हाजू पहुंच कर आसाम
को रवाना हुआ। अभी चार

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का इक़रार किया और बल्कि भे
ज भी दिये लेकिन सूबेदारने मंज़ू
र न करके प्रीछत के पकड़ने का
हुक्म लिखा प्रीछत यह मालूम क
रके ४०० सवार १०००० पैदलोंसे धू
पड़ी के ऊपर चढ़ आया और वहांसे
शिकस्त खा कर फिर गजाधरनंदीके
मुहाने मेंसरिया की लड़ाई लड़ा
वह भी हार कर खेले को वापिस
गया तो सुना कि लछमी नारायण
दूसरी तरफ़ से बादशाही लशकर
को लिये हुये आरहाहै इसी प्रीछतको
अपनी राजधानी छोड़ कर बुधनगर
में जाना पड़ा जो बनास नदी पर बस्ता
है बादशाही फ़ौज ने खेले में अमल
कर लिया तब प्रीछत ने फिर अपने
वकील भेजे और शेख़ कमाल जाकर
उसको मय उसके हाथियों और लशक
र के ले आया मगर उसका भाई बलदे
व भाग कर आसाम के राजके पास प
हुंचा जिससे उसकी रिशतेदारी थी

ایک سو ٹانگن بیس من اگر اور رگھناتھ
کے بال بچے بھیجنے کا اقرار کیا اور بلکہ
بھیج بھی دئے لیکن صوبہ دار نے اسپر
اکتفا نہ کرکے پرچھت کے پکڑنے کا حکم لکھا
پرچھت یہ سنکر چار سو سوار اور دس ہزار
پیدلون سے دھوپڑی کے اوپر چڑھ
آیا اور وہان شکست کھا کر دریائے
گجادھر کے مہانہ مین دریا کی لڑائی لڑا
اُسمین بھی ہار کر کھیلہ کو واپس گیا
تو وہان سنا کہ لچھمی نرائن دوسری
طرف سے بادشاہی لشکر لئے ہوئے
آرہا ہے اس سے پرچھت کو اپنی
راجدھانی چھوڑ کر بدھ نگر مین جانا
پڑا جو بناس ندی کے کنارہ پر
واقع تھا ادھر بادشاہی فوج نے
کھیلہ مین عمل کر لیا پرچھت نے پھر
اپنے وکیل بھیجے اور شیخ کمال جاکر
اُسکو معہ اوسکے ہاتھیون اور
لشکر کے لے آیا مگر اُسکا بھائی
بلدیو بھاگ کر راجہ آسام کے
پاس پہونچا جس سے اُسکی رشتہ داری

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कासदर मुक़ाम था) से ३ महीने के
और दूसरा २० दिन के रस्ते पर है ज
हांगीर बादशाह के वक्त में कोच हा
जू पर प्रीछत का और कोच बिहार
पर लिछमी नारायण का क़बज़ा
था उनके ८ वें जलूसी बरस में जब
कि इसलाम ख़ां बंगाले का सूबेदा
र था परगने सोसंग ज़मींदार रघु
नाथ ने उसके पास आकर यह फ़
रयाद की के परीछत ने ज़ुलम से मे
रे बाल बच्चों को क़ैद कर रखा है.
और सूबेदार ने उस की फ़रयाद लछमी
नारायण के लिखने से ६ हज़ार स
वार और १० दस बारां हज़ार पैदल अ
पने दामाद मुकर्रम ख़ां के साथ भेजे
क़िले धूपड़ी पर परीछत के ५०० स
वार और १००० पैदल महीने भर तक
लडे. जब वह टूटा तो परीछत ने अ
पनी राजधानी गांव खेले से वकील
भेजकर १०० हाथी १०० टांगा २० मन
अगर और रघुनाथ के बालबच्चे भेजने

जहांगीरनगर (उसवक्त बंगाले का
सदरमुक़ाम था) से एक महीने
के और दूसरा बीस दिन की राह पर
है जहांगीर बादशाह के अहद मे
कूच हाजो पर पीछत का और कूच बहार
पर लछमी नारायन का क़बज़ा था उनके
आठवें जलूसी बरस मे जबकि
इसलाम ख़ां बंगाले का सूबेदार
था परगने सोसंग ज़मींदार रघु
नाथ ने उसके पास आकर यह फ़
रयाद की के परीछत ने ज़ुलम से मे
रे बाल बच्चों को क़ैद कर रखा है
सूबेदार ने उस की फ़रयाद लछमी
नारायन के लिखने से ६ हज़ार स
वार और १० दस बारां हज़ार पैदल अ
पने दामाद मुकर्रम ख़ां के साथ भेजे
क़िले धूपड़ी पर परीछत के ५०० स
वार और १००० पैदल महीने भर तक
लडे. जब वह टूटा तो परीछत ने अ
पनी राजधानी गांव खेले से वकील
भेजकर १०० हाथी १०० टांगा २० मन
अगर और रघुनाथ के बालबच्चे भेजने

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

त और ६०० सवारोंका होगया ॥

दयानत राये दफ़तरदार ख़ालिसे को ख़िलत और मनसब हज़ारी ज़ात और १५० सवारोंका असल और इज़ाफ़े से इनायत होकर दफ़तर तनक़ी ख़िदमत भी सोंपी गई ॥

बैसाख सुदी ६ को गोकुलदास सीसोदिया हज़ारी ज़ात और ५०० सवारोंके मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

जेठ बदी ४ को क़ुलीच ख़ां कंधार में पहुंचा और अली मरदान ख़ां काबुल की तरफ़ रवाना हुआ·

कोच हाजूकी फ़तेह

बादशाह नामें में लिखाहै कि बंगाले के उत्तर में २ मुल्क हैं १ तो कोच हाजू जो ब्रह्मपुत्र दरया के ऊपर है और दूसरा कोच बिहार यह दरया से बहुत दूर है पहिला तो जहांगीर नगर (उसवक्त बंगाले

اور چھ سو سوارون کا ہوگیا

دیانت رائے دفتردار خالصہ کو بادشاہ نے خلعت اور منصب ہزاری ذات و ڈیڑھ سو سوارون کا اصل اور اضافہ سے عنایت کرکے دفتر تن کی خدمت بھی اوسکے متعلق کردی -

۸ ذی الحجہ کو گوکل داس سیسودیہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا ہوگیا -

۱۸ - ذی الحجہ کو قلیچ خان قندہار پہونچا اور علیمردان خان کابل کی طرف روانہ ہوا -

کوچ ہاجو کی فتح

بادشاہنامہ مین لکھا ہے کہ بنگالہ کے اوتر مین دو ملک ہین - ایک تو کوچ ہاجو جو برہمپتر دریا کے اوپر ہے اور دوسرا کوچ بہار - یہ دریا سے بہت دور ہے پہلا - تو

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भेजा तो राजा जगत सिंघ के वास्ते भी रिख़लत जड़ाऊ जमधर हाथी और घोड़ा इनायत फरमाया ॥

गोपाल सिंघ को रिख़लत और मनसब हज़ारी ज़ात व ७०० सवारों का मिला ॥

राये काशी दास को खिलत के सिवाय हज़ारी ज़ात और ढाई सो २५० सवारों का मनसब इनायत हुआ

हिरदे राम के बेटे जगराम का भी मनसब बढ़ गया ॥

बादशाह का वकील सफ़दर खां उस वक़्त इरान में था शाह सफ़ी ने उसको हिन्दुस्तान जाने की रुख़सत देकर कहा कि मैं एरवान[1] और बग़दाद से तो दिल उठा लूंगा लेकिन कंधार से दिल नहीं उठाऊंगा ॥

दरबार का हाल

चैत सुदी ६ को नोरोज़ के दरबार में महेस राठोड़ का मनसब व असल और इज़ाफे से हज़ारी ज़ा

के خلعت کے ساتھ خلعت جڑاؤ جمدہر ہاتھی و گھوڑا عنایت ہوا۔

گوپال سنگھ کو خلعت اور منصب ہزاری ذات و سات سو سوارون کا ملا۔

رائے کاشی داس دیوان کابل کو خلعت اور منصب ہزاری ذات اور ڈھائی سو سوارون کا مرحمت ہوا۔

ہردے رام کے بیٹے جگرام کے منصب مین بھی اضافہ ہوا

بادشاہ کا وکیل صفدر خان اوسوقت ایران مین تھا اُس کو شاہ صفی نے ہندوستان جانیکی رخصت دیکر کہا کہ مین ایران[1] اور بغداد سے دل اُٹھا لونگا۔ مگر قندھار سے کبھی نہین اُٹھاؤنگا۔

وقایع دربار

۴۔ ذیقعدہ کو جشن نوروز مین مہیش داس راٹھوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات

[1] ایرڈان اور بغداد دو ایرانی صوبے سلطنت روم کی سرحد سے ملی ہوئی تھی جنکی بابت ایرانیون اور رومیون سے جنگ

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

सान के हाकिमों समेत ये क़ंधार से
कोसपर दोनों लशकरों की मुढभेड़
हुई क़ज़लबाशों "ईरानयों" काहिरा
वल बादशाही हिरावल पर आया म
गर हार कर पीछा गया यहांहम फिर
बादशाह नामें के लफ़ज़ लिखते हैं
कि बादशाही हिरावल राजा जगत
सिंघ और दूसरे ग़ैरतदार व लड़ाका
राजपूतों की बहादुरी से सिकंदर
की दीवार के माफ़िक़ मज़बूत था
जिसमें दुशमन कोई छिद्र नकरस
का और पछताकर चला गया ॥

आख़िर कज़लबाश भागगये
और सईद ख़ां ने अरगंदाब नदीसे उ
तर कर उनका डेरा डंडा लूट लिया ॥

१०५ बरस पहिले इसी जगह
बाबर बादशाह के बेटे मिरज़ाकाम
रां ने भी शाहशुहमास्प के बेटे साम
मिरज़ा को लड़ कर भगाया था ॥

बादशाह ने फ़तेह की ख़बर
सुनकर जब सईद ख़ां को ख़िलत

وغیرہ علاقہ جات خراسان کے تھے
قندہار سے ایک کوس دونوں لشکر
مقابل ہوئے جب قزلباشوں کا
ہراول ہندوستان کے ہراول پر
آیا تو ناکام گیا کیونکہ "چون ہراول
بدلیری راجہ جگت سنگھ و دیگر راجپوتان
ناموس جوئے نبرد خوئے بسان
سد سکندر کہ بہ تند باد حوادث
لرزش نہ پذیرد پابرجا بود یا جوج
ہراول غنیم ناستقیم رخنہ دران
نیفگندہ بہ ندامت برگردید۔

آخر قزلباش بھاگ گئے
اور سعید خان نے دریائے ارغنداب
سے عبور کرکے اونکا خیمہ اور
اسباب لوٹ لیا۔

۱۰۵ برس پہلے اسی میدان
میں بابر بادشاہ کے بیٹے مرزا کامران
نے بھی شاہ طہماسپ کے بیٹے سام
مرزا کو لڑکر بھگایا تھا۔

جب یہ خبر بادشاہ کو پہونچی تو
راجہ جگت سنگھ کو بھی سعید خان

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नखूद के मैदान में पड़ा था हमला किया राय काशी दास दीवान काबुल कौल (बीच की अरी) में था और राजपूत यहां भी हिरावल थे जैसा कि बादशाहनामे में लिखा है कि हरोल को बहादुर राजपूतों के मजबूत क़दमों से ताक़त दी गई जो घोर संग्रामों में कि जहां मरदों के मुंह का रंग उड़ जाता है लड़ाई का रंग जमा देते हैं॥

मोहकम सिंघ व गोपाल सिंघ, उग्रसेन, राम सिंघ (दोनों भाई) गज सिंघ बिहारी दास का बेटा जगराम हिम्मत सिंघ मेदनी मल भदोरया इंद्रभान और दूसरे राजपूत जो सूबेदार काबुल के मददगार थे ४०० बरकंदाज़ों से इस फ़ौज में मुक़र्रर किये गये और सरदारी इन की राजा जगत सिंघ को दी गई

सियावश के पास भी ५-६ हज़ार सवार नेशापूर वग़ैरा खुरा

پڑا تھا حملہ کیا رائے کاشی داس دیوان کابل قول میں تھا اور راجپوت یہاں بھی ہراول تھے - جیسا کہ بادشاہ نامہ مین لکھا ہے "وقشون ہراول را بہ پائے ثبات راجپوتان نبرد گزین تہور آئین کہ جانبازی را بازی و سر اندازی را کارسازی دانستہ در معرکہ کہ رنگ از رخ مردان بریزد رنگ بر روئے روزگار جنگ باز آرند نیرو دادہ محکم سنگہ و گوپال سنگہ و اوگرسین و رام سنگہ برادر او و گج سنگہ و جگرام ولد بہاری داس و ہمت سنگہ و میدنی مل بہدوریہ و اندربھان و دیگر راجپوتان کمکی صوبہ کابل را با چار صد برق انداز درین فوج مقرر ساختہ راجہ جگت سنگہ را سرکردہ این گروہ گردانید -

سیاوش کے پاس بھی پانچ چھہ ہزار سوار معہ حکام نیشاپور

आजो क़ंधार के क़िले में दाख़िल होगये ये मुलतान का सूबेदार क़ुलीच ख़ां कंधार का सूबेदार हुआ और पंजाब के सूबेदार वज़ीर ख़ां को रसद पहुंचाने और काबुल में जाकर बंदोबस्त करने का हुक्म पहुंचा ॥

बैसाख बदी ४ को सईद ख़ां ने काबुल से कंधार पहुंचकर बादशाह का ख़िलअत मय १ लाख रुपये इनाम के अली मरदान ख़ां को दिया ॥

राजा जगत सिंघ सईद ख़ां के साथ पिशौर से काबुल और काबुल से कंधार को गया ॥

बैसाख बदी १३ को सईद ख़ां ने ८००० सवारों के साथ कंधार से निकल कर शाह सफ़ी के सिपहसालार और मशहद के हाकिम सियावश परजो मय फ़ौज ख़ुरासान के कंधार से कुछ दूर "किशक

اور قلیچ خان صوبہ دار ملتان قندہار کا صوبہ دار مقرر کیا گیا وزیر خان صوبہ دار پنجاب کو رسد پہنچانے اور کابل مین جاکر بند و بست کرنے کا حکم پہنچا -

۲۷ - ذلقعدہ کو سعید خان نے کابل سے قندھار پہنچکر بادشاہ کا خلعت معہ ایک لاکھ روپیہ انعام کے علیمردان خان کو دیا -

راجہ جگت سنگھ سعید خان کے ساتھ پشاور سے کابل کو اور کابل سے قندھار کو گیا -

۲۶ - ذلقعدہ کو سعید خان نے آٹھ ہزار سوارون کے ساتھ قندہار سے نکل کر شاہ صفی کے سپہ سالار اور مشہد کے حاکم سیاوش کے اوپر جو کشک نخود مین قندہار سے کچھ دور معہ فوج خراسان کے

रान काबादशाह सेफ़ी जो कंधारप
र आवे तो उसको रोकें इस फ़ोज में
इतने रानपूत सरदार थे ॥
१ राजा जयसिंघ
२ राजा गज सिंघ का बेटा अमर सिंघ
३ राव रतन का बेटा माधो सिंघ
४ हरी सिंघ ॥
५ कृपाराम ॥
नंबर १ को ख़ासा रिवलत रवा
सा घोडा सोने की ज़ीन का, नंबर
२ और ३ को रिवलत्त घोडे चांदीकी
ज़ीन के और नक्कारे इनायत हुये
हरी सिंघ और कृपाराम को भी उ
नके रुतबे के माफ़िक़ नवाज़ि
श हुई ॥
इस मोहिम का इख़तियार
मालवे के सूबेदार "खान दौरां ब
हादुर नुसरत जंग को दिया गया
और काबुल के सूबेदार सईद ख़ां
को अली मरदान ख़ां और बादशा
ही अमीरों की मदद का हुक्म हु

مین اس غرض سے روانہ کیا کہ اگر شاہ
صفی قندہار پر آوے تو اوسکو روکے
اس فوج مین راجپوت سردار حسب ذیل تھے
۱- راجہ جے سنگہ کچھواہہ
۲- امر سنگہ ولد راجہ گج سنگہ
۳- مادہو سنگہ ولد راؤ رتن ہاڈا
۴- ہری سنگہ
۵- کرپا رام
راجہ جے سنگہ کو خلعت خاصہ
اور گھوڑا طویلہ خاصہ سے معہ زین مطلا
کے اور مادہو سنگہ کو خلعت و گھوڑا معہ
زین نقرہ اور نقارہ کے عنایت ہوا -
ہری سنگہ اور کرپا رام کو بھی اونکے
رتبہ کے موافق نوازش ہوئی -
خاندوران بہادر نصرت جنگ
صوبہ دار مالوہ طلب ہوکر اس لشکر کے
حل و عقد کا مختار ہوا اور سعید خان
صوبہ دار کابل کو واسطے مدد -
علی مردان خان و امرائے -
بادشاہی کے جو قلعہ قندہار
مین داخل ہوئے تھے حکم لکھا گیا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किशनसिंघ राठोड़ के बेटे हरीसिंघ के मनसब में पांच सदी ज़ात का इज़ाफ़ा हुआ जिस्से उस्का मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का होगया ॥

कंधार में क़बज़ा

चैत सुदी ८ को शाह ईरान के नौकर अलीमरदान ख़ां ने क़ंधार का क़िला ग़ज़नीन के हाकिम ख़वज़ख़ां को सोंप दिया जो संबत १६७९ में जहांगीर बादशाह के क़बज़े से निकल गया था तीसरे दिन बादशाह के नाम की आयत पुआई फिरी और क़िलात ग़िलज़ई वग़ैरा में भी बादशाही अमल करा दिया बादशाह ने यह ख़बर सुनकर काबुल के हाकिम सईद ख़ां को मय फ़ौज और ख़ज़ाने के कंधार जाने का हुक्म लिखा और शाहज़ादे शुजाअ को २०००० सवारों से इस ग़रज़ से भेजा कि ई

राजा जैसिंघ ने अपने वतन से आगया तहा मजरा किया -

हरी सिंघ वलद राजा किशन सिंघ राठोड़ का मनसब पांचसदी ज़ात के इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और आठसौ सवारों का हो गया

क़न्दहार मेंन क़बज़ा

३१ - शवाल को ईरान के बादशाह शाह सफ़ी के मुलाज़िम अलीमरदान ख़ान ने क़न्दहार का क़िला और मुल्क ग़ज़नीन की बादशाही हाकिम अवज़ ख़ान की हवाले कर दिया जो सन ۱۰۳۷ में जहांगीर बादशाह के क़बज़े से निकल गया था

तीसरे दिन बादशाह के नाम का ख़ुत्बा क़न्दहार मेंन पढ़ा गया और क़िलात ग़िलज़ई वग़ैरा मेंन भी अमल हो गया -

बादशाह ने यह ख़बर सुनकर काबुल के हाकिम सईद ख़ान को मअ फ़ौज व ख़ज़ाना व तोपख़ाना के क़न्दहार जाने का हुक्म लिखा और शाहज़ादे शुजाअ को मअ बीस हज़ार सवारों के शरूअ माह ज़ीक़अदह

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह जलाला वहीं था जिसनेअकबरबादशाह के ज़माने में १ नया मत जारी करके बड़ा फिसाद किया था और इस मत के मानने वाले पठानों की अकबर नामे में तारी की (अंधेरी) लिखा है॥

फागण बदी १४ को बादशाह आगरे से शिकार के वास्ते सोरों और सहसवान की तरफ रवाने हुए ११ शेर तो सोरों में मारे और १८ सहसवान के परगने में मारे और असालतखां वग़ैरा ने परगने चंदवार के फ़सादियों पर हमला करके उनको सज़ादी॥

फागण सुदी ६ को (सहसान में) रावरतन के बेटे माधो सिंघ और हरी सिंघ ने अपने वतन से आकर हाथी नज़र किये॥

जमनाके किनारे पर जब कि बादशाह पीछे आते थे राजा जयसिंघ ने अपने वतन से वापस आकर मुजरा किया॥

اکبر بادشاہ کے زمانہ مین ایک نیا مذہب جاری کرکے بڑا فساد برپا کیا تھا اور اس مت کے ماننے والے پٹھانونکو اکبر نامہ مین تاریکی (اندہیری) لکھا ہے۔

۲۷۔ رمضان کو بادشاہ آگرہ سے شکار کے واسطے سورون اور سہسوان کیطرف روانہ ہوئے گیارہ شیر تو سورون مین اور اٹھارہ سہسوان کے پرگنون مین مارے گئے اور اصالت خان وغیرہ نے فسادیان پرگنہ چندوار پر حملہ کرکے اُنکو سزا دی۔

۴۔ شوال کو راو رتن کے بیٹے مادہو سنگہ اور ہری سنگہ اپنے وطن سے (سہسوان) مین حاضر آئے اور دونون نے ایک ایک ہاتھی نذر کیا۔

۲۴۔ شوال کو جب بادشاہ وقت واپسی جمنا کے کنارہ پر آرہے تھے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अनिरुद्ध अपने बाप की नायबी में काम करताथा ॥

पोस सुदी १० को राजा बिट्ठल दास को बादशाह ने रिवलअत देकर वतन जाने की रुखसत दी ॥

पोस सुदी १४ नाहर सोलंखी को हाथी इनायत हुआ ॥

माह सुदी ११ को बादशाह की साल ग्रह के तुलादान का दरबार था उसमें राजा गज सिंघ को रिवलअत इनायत हुआ ॥

फागुण बदी ११ को बादशाह ने राजा जगत सिंघ के नोकर कल्याण झाला को हाथी इनायत करके बिदा किया और राना के वास्ते भी हाथी और रिवलअत उसके साथ भेजा

काबुल के सूबेदार सईद खां और राजा जगत सिंघ ने बंगश में हमला करके जलाल के बेटे करीमदाद को पकड़ा और बादशाह के हुक्म से मरवा डाला ॥

ہوا اور اضافہ منصب و مرحمت اسپ سے سرفراز و مفتخر ہو کر اُسطرف کو رخصت ہو گیا۔

۸ شعبان کو راجہ بٹھلداس کو بادشاہ نے خلعت عنایت کر کے وطن جانے کی رخصت مرحمت فرمائی۔

۱۲ شعبان کو ناہر سولنکھی کو ہاتھی عنایت ہوا۔

۹۔ رمضان کو جشن وزن شمسی مین راجہ گجسنگھ کو بادشاہ نے خلعت مرحمت فرمایا۔

۲۴۔ رمضان کو کلیان جھالا ملازم راجہ جگت سنگھ نے اسپ اور فیل سے سرفراز ہو کر واپس جانے کی رخصت پائی بادشاہ نے کمال عاطفت سے رانا کے واسطے خلعت اور ہاتھی اُوسکے ہاتھ بھیجا۔

کابل کے صوبہ دار سعید خان اور راجہ جگت سنگھ نے بنگش مین حملہ کر کے جلالہ کے بیٹے کریم داد کو پکڑا اور بادشاہ کے حکم سے مروا ڈالا۔ یہ جلالہ وہی تھا کہ جس نے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गाना सुनकर बहुत खुश हुए और ब
हुत सा इनाम देकर उसका दरजा स
ब उस्के बराबर वालों से बढ़ा दिया।

आज हिन्दुस्तान के गवैये
बख़्शू और तानसेन की किताबों प
र चलते हैं॥

पोस बदी ४ को राजा बिट्ठलदा
स धंधेड़े से हाजिर आया जो वतन के
तौर उस्को इनायत किया गया था॥

पोस बदी ५ को राजा गजसिंघ
अपने बेटे जसवंत सिंघ समेत वतन से
दरगाह में हाज़िर हुआ॥

पोस बदी १२ को राणा जगतसिं
घ के नौकर कल्याण झाला ने दरगाह
में हाज़िर हो कर कुछ चीज़ें जो राणा
ने भेजी थी नज़र से गुज़रानीं॥

पोस सुदी ६ को अजमेर की फ़ौज
दारी राजा बिट्ठलदास के बेटे आनेरु
ह से उतर कर शाह अली को
मिली॥

اسکو درگاہ مین روانہ کردیا جب وہ
حاضر ہوا تو پادشاہ اُسکی نغمہ پردازی
اور لطف آواز سے اسقدر خوش ہوئے
کہ اوسکا درجہ تمام ہمسرون سے بڑہا کر
بڑی بڑی نوازشین اور عنایتین اوسکے
حال پر مبذول فرمائین۔

آج ہندوستان کے خنیاگرون کا
مدار بخشو نایک اور تان سین کی تصنیفات
پر ہے

۱۷ رجب کو راجہ بٹھل داس دھندھیڑہ
سے جو بطریق وطن اسکو عنایت ہوا تہا۔
حاضر آیا۔

۱۸ رجب کو راجہ گجسنگہ معہ اپنے
بیٹے جسونت سنگہ کے وطن سے دربار مین پہنچا

۲۵ رجب کو کلیان جہالا کہ جو
ملازم رانا جگت سنگہ تہا پیشگاہ والا
مین حاضر ہوا رانا نے کچھ چیزین بطور
پیشکش کے اوسکے ہاتھ بھیجین تہین وہ
اوسنے بادشاہ کی نذر کین۔

۴ شعبان کو شاہ علی خلعت
خدمت فوجداری اجمیر سے تغیر انروہ ولد راجہ بٹھل داس گوڑ کے جو نیابتاً اوس کام کو کرتا تہا مشرف

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कालंजर के राजा कीरत के पास चला
गया और वहां बड़े आराम से रहा आ
खिर गुजरात के बादशाह सुलता
न बहादुर ने नायक की तारीफ़ सुन
कर उसको राजा कीरत से मांगा राजा
ने उसके पास भेज दिया सुलतान ब
हादुर नायक का गाना सुन कर ब
ड़त खुश हुआ और नायक आखी
र उमर तक वहीं रहा उसके पीछे
तान सेन के गाने का चरचा लोगों
में फैला वह पहिले बांधों गढ़ के रा
जा राम चंदर बाघेले के पास बड़े आ
राम से रहता था अकबर बादशाह
ने जिनके दरबार में मुल्क २ के गुणी
जन हाज़िर रहते थे उस की तारीफ़ सु
न कर राजा के पास अपना १ भला
आदमी भेजा और तान सेन के भेजने
को लिखा राजा का दिल उसके जुदा
करने को नहीं चाहता था तो भी हुक
म उठा लिया और तानसेन को दर
गाह में भेज दिया बादशाह उसका

قبضہ سے نکلگیا تو بخشو کالنجر کے راجہ
کیرت کے پاس جا رہا وہان بہی وہ بہت
آسودگی سے گزر کرتا تہا آخر سلطان
بہادر گجراتی نایک کا حال سنکر اسقدر
مشتاق ہوا کہ راجہ کیرت سے اسکو مانگا
راجہ نے کام و ناکام اوسکو سلطان
کے پاس بہیجدیا اوسکے پہونچنے سے
سلطان کو نہایت خوشی حاصل
ہوئی اور وہ بقیہ عمر تک وہان ہی
رہا اوسکے بعد تان سین کلانوت
کے نغمہ دلکش کا شہرہ ہوا یہ شیخ
محمد غوث کا منظور نظر تہا پہلے ملک
بیتہ اور قلعہ باندہون کے راجہ رامچندر
بگھیلہ کے پاس آرام سے رہتا تہا
جب اوسکی یکتائی فن موسیقی کا
ذکر اکبر بادشاہ کے دربار میں ہوا جو
مجمع دانشوران روزگار و مرجع ہنر
مندان ہر دیار تھا تو اوسکے بلانیکا
حکم ایک معتمد کے ہاتھ راجہ کے پاس
بھیجا گیا اگرچہ راجہ کو تان سین کی کمال
خواہش تہی لیکن بنظر فرمان برداری

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आदमियों की तारीफ़ में हों॥
और ३ धुर्पद जिसमें नेह प्रीति की बातें हों
राजा मान के शागिर्दों में बख़्श
नायक बड़ा गुनी था जिसने गाने में
नई २ बारीकयां निकाल कर उस
को कमाल के दरजे पर पहुंचाया
था उस की आवाज़ इतनी ऊंची थी
कि और गवैये तो जब तक कि प
हिले दो जने मिल कर शुरू न करें
अच्छी तरह नहीं गा सकते और
वह अकेला बड़ी ख़ूबी और पूरे सु
रों से गाता था और टीप को भी जो ब
ड़त ही ऊंचे सुरों से गाई जाती है
इस ख़ूबसूरती से अदा करता था
कि बड़े २ गवैये तारीफ़ करते थे औ
र गाते वक़्त परवावज भी बजाता जा
ता था और अलाप में भी इक्का था
जब राजा मान मर गया तो उस के बे
टे बिक्रमाजीत के पास रहा और ज
ब ग्वालियर का राज बिक्रमाजीत
के क़ब्ज़े से निकल गया तो नायक

اور عشق کے مضامین مین تہی اوسکا
نام دُہرپد ہے -
نایک بخشو کلانوت جو راجہ مان
کے تربیت یافتون مین سے تہا حسن
نغمہ اور تصرفات مین کامل تہا اُوسکی
الاپ کا شہرہ زمانہ مین پہیل گیا تہا
اور اُسکی آواز اسقدر بلند تہی کہ برخلاف
تمام گوئیون کے کہ جب تک دو آدمی
ہم آواز نہون اچہی طرح سے الاپ
نہین سکتے وہ اکیلا ہی کمال خوبی
اور سیراہنگی سے گانے لگتا تہا اور ٹیپ کو
بہی جو بہت اونچے سُرون مین ہوتی
ہے اسطرح سے ادا کرتا تہا کہ بڑے بڑے
دانا اور استاد اس فن کے تحسین اور
آفرین کرتے تھے اور متاثر ہوتے تھے
اور گاتے ہوئے پکہاوج بہی بجاتا
جاتا تہا اور سُر بہرنے مین کہ جس سے
گانا شروع کیا جاتا ہے یکتا تہا جب
راجہ مان مرگیا تو بخشو کچھ دنون اُسکے
بیٹے بکرماجیت کے پاس رہا جب گوالیار
کا قلعہ اور ملک راجہ بکرماجیت کے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तरह का गाना निकाला ॥

१ "कौल" जो अरबी और फ़ारसी में इक ताला दो ताला तिताला और चोताला भी होता है ॥

२ ग़ज़ल और तराना फ़ारसी में जो इक ताला होता है ॥

३ तराना यह भी इक ताला होता है ॥

४ ख़याल हिन्दुस्तानी ज़बान में यह मीरसे पहिले भी गाया जाता था ॥

फिर ग्वालियर के राजा मानतंवर ने जो हिन्दुस्तान की गानविद्या और साहित्य शास्त्र को ख़ूब जानता था सब लोगों को आसानी से समझ में आजाने के वास्ते ग्वालियर की बोली में नई चाल का गाना निकाला जिसके ३ दरजे रखे १ बिशान पद श्रीकृष्ण जी की तारीफ़ में ॥

२ अस्तुत, जो देवताओं की और बड़े

मین پیدا ہوا تہا چار طرح کا گانا نکالا (۱) قول جو گیت کے موافق ہوتا ہو عربی ہو خواہ فارسی نظم ہو یا نثر وہ یکتالہ بہی ہوتا ہے اور دو تالہ تنتالہ وچوتالہ بہی -

(۲) فارسی - کہ فارسی اشعار ترانہ کے ساتھ گائے جاتے تھے اور وہ یکتالہ ہوتے تھے -

(۳) ترانہ بغیر شعر کے یہ بہی یکتالہ ہوتا تہا

(۴) تصنیف ہندوستانی زبان کی تہی اوسکا نام خیال وغیرہ ہے اور خیال میرے کچھ پہلے بہی گایا جاتا تہا اوسکے بعد راجہ مانتو والی قلعہ گوالیار نے جو ہندوستان کے نغمات اور تصنیفات سے آگاہی رکہتا تہا گوالیار کی زبان مین ایک نئی طرح کا گانا نکالا تاکہ اوسکا جاننا سب کو آسان ہو اسمین جو تصنیف کرشن کے ذکر مین تہی اوسکا نام تو بشن پد رکہا اور جو دوسری بزرگان دین کی تعریف یا توصیف اہل ثروت مین تہی اوسکو استت کہا اور جو حسن

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसके शागिर्दों से अच्छी तरह सीखा है और उसके ढंग पर धुरपदों के गाने में जवाब नहीं रखता है उसके ४ बेटे हैं जो उसका साथ देते हैं इन में खुशहाल और बिश्राम बड़ते अच्छे हैं और गाने में एक दूसरे के बराबर हैं पहिलेकी समझ बूझ अच्छी है इस सबब से बादशाह के नाम पर काव्य भी बनाता है लेकिन इस सुख चैन के ज़माने के कबियों का सरदार तो जगंनाथ महा कबि है पहिले ज़माने में तो इस बहिश्त जैसे हिन्दुस्तान के गवैये गीत छंद धुरपद और अस्तुति गाते थे मगर ये सब करनाटक देस की भाषा में होते थे और इस मुल्क के आदमी सिवाये राग और अलाप के और कुछ मतलब और मायने उनके नहीं समझ सकते थे इस लिये निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद मीर खुसरो ने ४

گانیکے طرز اوسکے شاگردون سے سیکھے تھے اور اوسکے انداز پر دھرپدون کے گانیمین اپنا جواب نہین رکھتا تھا اوسکے چار بیٹے ہین جو گانے مین اوسکا ساتھ دیتے ہین خوشحال اور بسرام سب مین اچھے ہین اور گانیمین دونو برابر ہین خوشحال کا فہم اور سلیقہ بہت اچھا ہے وہ بادشاہ کے نام پر راگ اور راگنیان بناتا ہے لیکن اس عیش اور خوشی کے زمانہ مین سب مصنفون کا سردفتر تو جگناتھ رائے مہاکبی ہے اگرچہ پرانے گویہ ہندوستان کے گیت چھند دھرپد اور استت گایا کرتے تھے لیکن یہ نغمات کرناٹک کی زبان مین تھے اس سبب سے اس زمین کے آدمی اونکے معنی نہین سمجھ سکتے تھے صرف راگ اور الاپ کو جانتے تھے اسلئے میر خسرو نے جو شیخ نظام الدین بداونی کے مریدون مین قوم ہزارہ سے تھا اور دہلی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

११ वेंबरस काबाक़ी हाल
सं. १६९४ व
सं१६९५

आसोज सुदी ११ को राजा अनूपसिंघ के बेटे अपने बाप के मरे पीछे हाज़िर हुए बड़ा बेटा जैराम था उस्को बादशाह ने ख़िलअत और मनसब हज़ारी ज़ात ८०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से राजा का ख़िताब और हाथी घोड़े इनायत किये और उस्से ४ दूसरे लड़कों को उनकी लियाक़त के माफ़िक़ मनसब दिये॥

मंगसिरसुदी ३ को लाल ख़ां कलावंत जो उस वक़्त के गवैयों का सरताज था ख़िलअत और गुणसमुद्र के ख़िताब से सरफ़राज़ हुआ यह तानसेन के बेटे बिलास का जमाई था॥

बादशाह नामें मे लिखा है कि लाल ख़ां तान सेन के गाने का ढंग

بقیہ حال سال ۱۱

سنہ ۱۰۴۷ ہجری
سنہ ۱۶۳۷ و ۱۶۳۸ عیسوی

۹ جمادی الثانی کو راجہ انوپ سنگھ کے بیٹے بعد گزر جانے اپنے باپ کے حضور مین حاضر ہوئے جیرام بڑا تہا اوسکو تو خلعت اور ہزاری ذات و آٹھ سو سوار کا منصب معہ خطاب راجہ کے عنایت ہوا اور ہاتھی گہوڑی بہی ملے اور چار جو اُس سے چہوٹے تہے اونکو اُنکے درجہ کے موافق منصب دیئے گئے۔

غرہ رجب کو لعل خان کلاونت کو جو اُس عہد کے ہندوستانی گویون مین سب سے اول درجہ کا گویا تہا بادشاہ نے خلعت اور گن سمدر کا خطاب عطا فرمایا وہ تان سین کے بیٹے بلاس کا داماد تہا بادشاہ نامہ مین لکہا ہے کہ لال خان نے تان سین کے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

को क़िले बलख़ की हिफ़ाज़त सोंपना।

२३६ तेमूरा बाद में बहादुर खां और अली मरदान खां का उजबकों से लड़ना और शाह ज़ादे का राजा राय सिंघ राव शत्रु साल और ग़ज़नफ़र अली वग़ैरा को मदद के वास्ते भेजना

२३६ बाद शाही लशकर की फ़तह और सद्दर्खा ज़फ़र जंग का मारा जाना।

२३७ शाह ज़ादे का बलख़ से आगे जाना और फिर उजबकों का बलख़ पर आना सुनकर पीछा लोटना।

२३८ उज़बकों का दुबारा हमला और राजा पहाड़ सिंघ वग़ैरा का उनको भगाना

२३८ औरंग ज़ेब का इरादा उज़बकों के ऊपर धावा करने का और उनका जेहून नदी से उतर जाना।

२४० शाहज़ादे मुराद और औरंग ज़ेब की ग़लतियां उज़बकों के मुक़ाबिले में।

२४० बाद शाह नामे की दूसरी जिल्द का

۴۳۶ کو قلعہ بلخ کی حفاظت سونپنا
تیمور آباد میں بہادر خاں اور علی مردان خاں کا اوزبکوں سے لڑنا اور شاہزادہ کا راجہ راے سنگھ راو ستروسال اور مظفر علی بیگ وغیرہ کو مدد کے واسطے بھیجنا۔

" بادشاہی لشکر کی فتح اور راجہ پہاڑ سنگھ وغیرہ کا اُنکو بھگانا۔

۴۳۷ شاہزادہ کا بلخ سے آگے جانا اور پھر اوزبکوں کا بلخ پر آنا سُنکر واپس آنا

۴۳۸ اوزبکوں کا دوبارہ حملہ اور راجہ پہاڑ سنگھ وغیرہ کا اُنکو بھگانا

۴۳۹ اورنگ زیب کا ارادہ اوزبکوں کے اوپر دھاوہ کرنے کا اور اُنکا جیحوں ندی سے اُتر جانا

۴۴۰ مراد بخش اور اورنگ زیب کی غلطیاں اوزبکوں کے مقابلہ میں

۴۴۱ بادشاہ نامہ کی دوسری جلد کا خاتمہ

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

और उसकी अरज़से मुराद बख़्श को दरबार में हाज़िर होने की इजाज़त मिलना.

२३४ राजा जय सिंघ का दखन से हाज़िर आना.

२३४ सादुल्ला ख़ां और इसलामख़ां को ७ हज़ारी मनसब.

२३४ राजा जय सिंघ का २ हज़ारी २ हज़ार सवार का मनसब और बलख़ जाने का हुक्म और २० लाख रुपये उसके साथ भेजना.

२३५ रतन महेस दासोत को खिलअत और घोड़ा

२३५ हमीर सिंघ सीसो दिया बल्लू चोहान और महेस दास केभाई जसवंत को घोड़े देकर राजा जय सिंघ के साथ भेजना.

बलख़ की मुहिम

२३५ शाहज़ादे औरंग ज़ेब का बलख़ पहुंचना और माधो सिंघहाड़ा

اور اُسکی عرض سے مراد بخش کو دربار میں حاضر ہونے کی اجازت ملنا

۲۳۴ راجہ جے سنگھ کا دکن سے حاضر آنا

" سعد اللہ خاں اور اسلام خاں کو سات ہزاری منصب

" راجہ جے سنگھ کا پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار کا منصب اور بلخ جانے کا حکم اور بیس لاکھ روپیہ اُسکے ساتھ بھیجنا

۲۳۵ رتن مہیس داسوت کو خلعت اور گھوڑا

" ہمیر سنگھ سیسودیہ بلو چوہان اور جسونت کو گھوڑے دے کر راجہ جے سنگھ کے ساتھ بھیجنا

بلخ کی مہم

" شاہزادہ اورنگ زیب کا بلخ پہنچنا اور مادھو سنگھ ہاڈا

CC-0. Kankul Hindi Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

२३२ औरंग ज़ेब का काबुल से बलख को रवाने होना
२३२ घाटे में उज़बकों का खलील बेग गिरदावर से लड़ना
२३२ शाहज़ादे का राजा राय सिंघ शुजु साल नज़र बहादुर राय रूप सिंघ चन्द्रावत राजा अमर सिंघ कछवाहा बल राम हाड़ा और इन्द्र साल को उज़बकों पर भेजना
२३२ राय राय सिंघ और शजु साल हाड़ा का घाटे में से फिर उज़बकों को भगाना

दरबार का हाल

२३३ बाद शाह का काबुल पहुंचना
२३३ राजा जग मनि को घोड़ा इनायत
२३३ अर्जुन गोड़ का इज़ाफ़ा
२३३ राय मुकंद दास दीवान बयूतात का इज़ाफ़ा
२३३ प्रेम चन्द का इज़ाफ़ा
२३३ शाह शुजाअ का बंगाले से आना

२३२ औरंग ज़ेब का काबुल से बलख को रवाना होना
" घाटे में उज़बकों का खलील बेग गिरदावर से लड़ना
" शाहज़ादे का राजा राय सिंघ सतरो साल नन्द बहादुर राव रूप सिंघ चन्द्रावत राजा अमर सिंघ कछवाहा बलराम हाड़ा और इन्द्र साल को उज़बकों पर भेजना
" राय राय सिंघ और सतरो साल हाड़ा का घाटे में से फिर उज़बकों को भगाना

दरबार का हाल

२३३ बादशाह का काबुल पहुंचना
" राजा जगमन को घोड़ा इनायत
" अर्जुन गोड़ का इज़ाफ़ा
" राजा मुकुन्द दास दीवान बयूतात का इज़ाफ़ा
" प्रेम चन्द का इज़ाफ़ा
" शाह शुजाअ का बंगाले से आना

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सीसो दिया को मोहक सिंघ और पहलवान दर वेश के पास क़िले बलख़ की हिफ़ाज़त पर भेजना.

سیسودیہ کو محکم سنگھ اور پہلوان درویش کے پاس قلعہ بلخ کی حفاظت پر بھیجنا

२२८ अब दुल अज़ीज़ ख़ां का कुरशी से आना.

" عبدالعزیز خاں کا قرشی سے آنا

२३० नज़र मोहमद ख़ां का सफ़ाहान में जाकर शाह ईरान से मिलना और कुछ फ़ौज लेकर मशहद में आना.

۲۳۰ نذر محمد خاں صفاہان میں جاکر شاہ ایران سے ملنا اور کچھ فوج لیکر مشہد میں آنا

मेमने के क़िले पर ४ महीने तक बाद शाही क़िलेदार शाद ख़ां का नज़र मोहम्मद ख़ां से लड़ना.

" قلعہ میمنہ پر چار مہینے تک بادشاہی قلعدار شاد خاں کا نذر محمد خاں سے لڑنا

२३१ नज़र मोहम्मद ख़ां का अपने बेटे क़तलक़ सुलतान को बलख़ फ़तह करने के वास्ते भेजना और उस का अब दुल अज़ीज़ ख़ां से जा मिलना.

۲۳۱ نذر محمد خاں کا اپنے بیٹے قتلق سلطان کو بلخ فتح کرنے کے واسطے بھیجنا اور اُسکا عبدالعزیز خاں سے جا ملنا

औरंगज़ेब का बलख़ जाना

اورنگ زیب کا بلخ جانا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

علاؤالدین گوپال سنگہ بھیش داس راٹھور جگرام کچھواہہ اور اپنے چچا نیک نام کو اُن کے مقابلہ پر بھیجنا

۲۲۴ المانوں کی ہزیمت

بدخشاں میں لڑائی

۲۲۵ المانوں کا طالقان پر آنا قلیچ خاں اور راجہ راجروپ کا اُنسے لڑنا

۲۲۶ راجہ راجروپ کا احداد مہند کے بچانے میں زخمی ہونا

۲۲۹ المانوں کا چشمہ علی منول پر جانا اصالت خاں راجہ پہاڑ سنگہ اور راجہ جے رام کا لڑکر اُن سے لوٹ کا مال چھین لینا

" عبدالعزیز خاں کے سواروں کا خان آباد کے تھانہ پر آنا اور بہادر خاں کا اُنکے مقابلہ کو جانا رام سنگہ راٹھور عجب سنگہ

اعلا اوددین گوپال سنگہ مہیش داس راٹھور جگرام کچھواہہ اور اپنے چچا نیک نام کو اُن کے مقابلہ پر بھیجنا

۲۲۴ المانوں کی ہزیمت

बदख़शां में लड़ाई

۲۲۵ अलमानों का तालक़ां पर आना. कुलीच ख़ां और राजा राज रूप का उन से लड़ना

۲۲۶ राजा राज रूप का अहदाद मोहमंद के बचाने में ज़ख़मी होना.

۲۲۸ अलमानों का चशमें अलीम पूल पर जाना असालत ख़ां राजा पहाड़ सिंघ और राजा जय राम का लड़ कर उनसे लूट का माल छीन लेना.

۲۲۹ अब दुल अज़ीज़ के सवारों का ख़ाना बाद के थाने पर आना और बहादुर ख़ां को उनके मुक़ाबले को जाना राम सिंघ राठोड़ अजब सिंघ

Haridwar. Digitized by eGangotri

क़िले दारी.	قلعداری
२२२ राजा विट्ठल दास को ख़ासा घोड़ा	۲۲۲ راجہ بیٹھل داس کو گھوڑا خاصہ
२२२ बाद शाह काबुल के बाग़ सफ़ा में.	" بادشاہ کابل کے باغ صفا میں
२२२ माधो सिंघ हाड़ा, रूप सिंघ राठोड़, और राम सिंघ राठोड़ के वास्ते बलख़ में घोड़े भेजे जाने.	" مادہو سنگہ ہاڈا روپ سنگہ راٹھور اور رام سنگہ راٹھور کے واسطے بلخ میں گھوڑے بھیجنا
बलख़ में लड़ाई	**بلخ میں لڑائی**
२२२ अलमानों का कलते पर आना उग्र सेन कछवाहे नरूके का उन को भगाना.	" المانوں کا کلتہ پر آنا - اگرسین کچھواہہ نروکے کا اُنکو بھگانا
२२२ बहादुर ख़ांका राजा जय राम. रूप सिंघ राठोड़, गोकुल दास सीसोदिया. और अपने चचा नेक नाम को उग्रसेन की मदद पर भेजना.	" بہادر خاں کا راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور گوکل داس سیسودیہ اور اپنے چچا نیکنام کو اگرسین کی مدد پر بھیجنا -
२३ अलमानों का सेरम और सरपुल की तरफ़ जाना और बहादुरख़ां का राजा देवी सिंघ राजा जय राम रूप सिंघ राठोड़ मोतमद ख़ां मीर आतिश गोकुल दास सीसोदिया	۲۲۳ المانوں کا سیرم اور سرپل کی طرف جانا اور بہادر خاں کا راجہ دیوی سنگہ راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور معتمد خاں میر آتش گوکل داس سیسودیہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

	سنگھ راو روپ سنگھ چندراوت راجہ امر سنگھ راجاوت کو بلخ جانے کا حکم
۲۱۹	راوت دیالداس جھالا کو خلعت
"	چنبہ کے راجہ پرتھی چند کو گھر جانے کی رخصت
"	داراشکوہ کے دیوان رائے بہاری مل کو منصب
۲۲۰	مہیس دلپتوت کا انتقال اور اسکا درجہ دربار میں
۲۲۱	مہیس داس کے بڑے بیٹے رتن کو جالور ملنا
	بادشاہ کا کابل جانا
"	عبدالعزیز خاں کے آنے کی خبر اور بادشاہ کا کابل کو کوچ
"	سیوارام گوڑ کو کابل کی

मिंघ, राव रूप सिंघ, चन्द्रा वत, राजा अमर सिंघ, राजा वत को बलख जाने का हुक्म.
२१८ रावत दयाल दास झाला को खिलअत
२१९ चंबे के राजा पृथ्वी चंद को घर जाने की रुखसत
२१९ दारा शिकोह के दीवान राय बिहारी मल को मनसब.
२२० महेस दास दलप तोत का इन्तकाल और उसका दरजा दर बार में
२२१ महेस दास के बड़े बेटे रतन को जालोर मिलना.

बाद शाह का काबुल जाना

२२१ अब दुल अज़ीज़ खां के आने की खबर और बाद शाह का काबुल को कूंच
२२१ सेवा राम गोर को काबुल की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२१७ बलराम को रुख़सत और उसके हाथ राना और राज कंवर के वास्ते खिलत.

२१९ औरंग ज़ब का दखन से आना और बलख़ बदख़ शां उस को मिलना.

२१७ पृथ्वी राज को बलख़ में ख़ज़ाना पहुंचने का हुक्म.

२१८ बुख़ारा में काल और लोहोर में मरी.

२१७ بلرام کو رخصت اور اُسکے ہاتھ رانا اور راج کنور کے واسطے خلعت

" اورنگ زیب کا دکھن سے آنا اور بلخ اور بدخشاں اُسکو ملنا

" پرتھی راج کو بلخ میں خزانہ پہنچانے کا حکم

" بخارا میں کال اور لاہور میں مری

बरस इक्कीसवां

२१८ काल के सताये हुवे ग़रीबों को ३००००) रुपये ईनायत.

२१८ फ़जान सिंघ सीसो दिया का इज़ाफ़ा

२१८ नज़र मोहम्मद ख़ांके बेटे अबदुल अज़ीज़ ख़ां के बुख़ारा से बलख़ पर आने की ख़बर.

२१८ औरंग ज़ेब का लाहोर से कूंच

२१८ अली मरदान ख़ां, राजा राय

اکیسواں برس

۲۱۸ قحط زدوں کی تیس ہزار روپیہ کی امداد

" سجان سنگھ سیسودیہ کا اضافہ

" نذر محمد خاں کے بیٹے عبدالعزیز خاں کے بخارا سے بلخ پر آنے کی خبر

" اورنگ زیب کا لاہور سے کوچ

" علی مردان خاں راجہ رائے

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आगरे की
२१५ पृथ्वी राज राठोड़ का एक करोड़ रुपय लेकर आगरे से लाहोर पहुंचना
" शाह ज़ादे मुराद बख़्श का मन सब कम होना

اوزبکوں کے حملے

२१६ उज़बकों का बलख़ के सूबे में लूट मार मचाना
" राजा जय राम गोपाल सिंघ राय तिलोक चन्द और जग राम का बहादुर ख़ांके हुक्म से उज़बकों को भगाना
" मुग़लों का शेरख़ाँ को घेरना राजा देवी सिंघ और तुर्क ताज़ ख़ांका उन को भगाना

دربار کا حال

२१७ राना जगत सिंघ के वकील बलराम का हाज़िर आना

री आगरे की
२१२ पृथ्वी राज राठोड़ का १ करोड़ रुपय लेकर आगरे से लाहोर पहुंचना
२१५ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का मन सब कम होना

उज़बकों के हमले

२१६ उज़बकों का बलख़ के सूबे में लूट मार मचाना
२१६ राजा जय राम गोपाल सिंघ राय तिलोक चन्द और जग राम का बहादुर ख़ांके हुक्म से उज़बकों को भगाना
२१६ मुग़लों का शेरख़ान को घेरना राजा देवी सिंघ और तुर्क ताज़ ख़ांका उन को भगाना

दर बार का हाल

२१७ राजा जगत सिंघ के वकील बल राम का हाज़िर आना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

	آنا	आना-
۲۱۲	کابل کا دولت خانہ	२१२ काबुल का दौलत ख़ाना-
"	بادشاہ کا کوچ کابل سے	२१२ बाद शाह का काबुल से कूंच
"	شاہ ایران کو بلخ اور بدخشاں کا فتحنامہ بھیجنا	२१२ शाह ईरान को बलख़ और बदख़ शाह का फ़तह नामा भेजना
"	روپ سنگھ اور رام سنگھ راٹھور کا اضافہ	२१२ रूप सिंघ और राम सिंघ राठोड़ों का इज़ाफ़ा-
۲۱۳	گوکل داس سیسودیہ بھوجراج کنگار نراین داس سیسودیہ کیسری سنگھ اور پرتھی راج کے منصب بڑھنا	२१३ गोकुल दास सीसो दिया भोज राज खंगार, नरायन दास, सीसोदिया, केसरी सिंघ, और पृथ्वी राज, के मनसब बढना-
"	پشاور میں کنور رام سنگھ کو وطن جانے کا خلعت	२१३ पिशोर में कंवर राम सिंघ को वतन जाने का ख़िल अत-
"	راجہ جے سنگھ کے دکن سے بلانے کا حکم	२१३ राजा जय सिंघ के दखन से बुलाने का हुक्म-
۲۱۴	رائے کاشی داس کا آگرہ سے بنگالہ کی دیوانی پر بدلا جانا	२१४ राय कासी दास का आगरे से बंगाले की दीवानी पर बदला जाना
"	راجہ جے رام کا اضافہ	२१४ राजा जय राम का इज़ाफ़ा
"	بادشاہ لاہور میں	२१४ बाद शाह लाहोर में
"	راجہ بیٹھل داس کا اضافہ	२१४ राजा विट्ठल दास का इज़ाफ़ा
"	گردھر داس گوڑ کو قلعہ داری	२१४ गिरधर दास गोड का क़िलेदा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और बाद शाह का मीर अबदुल अज़ीज़ को उसके पास भेजना· नज़र मोहम्मद ख़ां का उस से न मिलना और शाह ईरान का मीर को ठहरा लेना·	और बादशाह का मीर अबदुल अज़ीज़ को उसके पास भेजना नज़र मोहम्मद ख़ां का उस से न मिलना और शाह ईरान का मीर को ठहरा लेना
दरबार का हाल	**दरबार का हाल**
२१० राजा राज रूप का इज़ाफ़ा·	२१० राजा राजरूप का इज़ाफ़ा
२१० राजा जसवंत सिंघ को ख़ासा घोड़ा·	" राजा जसवंत सिंघ को ख़ासा घोड़ा
२११ जगत सिंघ के बेटे बहादुर सिंघ का ख़ज़ाने के साथ बलख़ जाना·	२११ जगत सिंघ के बेटे बहादुर सिंघ का ख़ज़ाने के साथ बलख़ जाना
२११ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का काबुल पहुंचना और बाद शाह की नाराज़ी	" शाहज़ादे मुराद बख़्श का काबुल पहुंचना और बादशाह की नाराज़ी
२१३ राजा विट्ठल दास गोड़ और महेस दास राठोड़ का नज़र मोहम्म ख़ां के क़बीलों को लेकर बाद शाह के पास हाज़र होना·	" राजा बिट्ठल दास और महेश दास राठोर का नज़र मोहम्मद ख़ां के क़बीलों को लेकर बादशाह के पास हाज़र होना
२१२ सादुल्ला ख़ां का बख़्ल से-	२१२ सादुल्लाह ख़ां का बलख़ से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

और चन्द्र भाण बुंदेले का अन्द खुद की तरफ़ जाना और उग्रसेन कछवाहे का कलत्ते और गुरगान की हकूमत पाना.

اور چندر بھان بندیلہ کا اندخود کی طرف جانا اور اگرسین کچھواہہ کا کلتہ اور گرگاں کی حکومت پانا

बदख़्शां का हाल

بدخشاں کا حال

२०५ राजा राज रूप का अलमानों को भगाना.

۲۰۵ راجہ راجروپ کا المانوں کو بھگانا

२०५ अलमानों का कुंदुज पर आना और बुंदेलों को क़िले को बचाना.

المانوں کا قندز پر آنا اور بندیلوں کا قلعہ کو بچانا

२०८ अलमानों का अंदख़ुद के हाकिम रुस्तम ख़ां पर जाना और राजा देवी सिंघ का उनसे बहादुरी के साथ लड़ना.

۲۰۸ المانوں کا اندخود کے حاکم رستم خاں پر جانا اور راجہ دیوی سنگھ کا اُن سے بہادری کے ساتھ لڑنا

नज़र मोहम्मद ख़ां का निकल जाना ॥

نذر محمد خاں کا نکل جانا

२०९ नज़र मोहम्मद ख़ां का लड़ाई हार कर ख़ुरासान जाना.

۲۰۹ نذر محمد خاں کا لڑائی ہار کر خراسان جانا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

	ہاڑا - چتر بھوج چوہان نبیرہ لکھمن سین - چندربھان نروکہ اُس لڑائی میں تھے	डा· चतर भुज चोहान लखमन सेन का पोता, चन्द्र भान नरूका उस लड़ाई में थे·
۲۰۲	مہیس دلپوت راٹھور - راجہ جے رام - روپ سنگہ راٹھور رام سنگہ راٹھور باؤ روپ سنگہ سیسودیہ مہیش داس راٹھور عجب سنگہ - چوہان چتر بھوج چندربھان نروکہ - سنگرام سنگہ کچھواہے - بلوچوہان اور گوبند داس کو خلعت و اضافہ	२०२ महेस दलप तोत राठोड़, राजा जय राम· रूप सिंघ राठोड़· राम सिंघ राठोड़· राव रूप सिंघ सीसोदिया· महेस दास राठोड़· अजब सिंघ· चोहान चतुर भुज· चन्द्र भान नरूका संग्राम सिंघ कछ्वाहा· वल्लू चोहान· और गोयंद दास को खिलअत और इज़ाफ़ा·
۲۰۳	راجہ راجروپ کو خلعت اور اضافہ	२०३ राजा राज रूप को खिलअत और इज़ाफ़ा·
"	شاہزادہ مراد بخش کا قیام بلخ سے گبرا جانا اور سعد اللہ خاں وزیر کا اُس کے سمجھانے کو آنا	२०३ शाह ज़ादे मुराद का बलख में रहने से घबरा जाना और सादुल्ला खां वज़ीर का उसके समझाने को आना·
۲۰۴	اصالت خاں اور بہادر خاں کا صوبہ دار بلخ اور قلیچ خاں کا صوبہ دار بدخشاں ہونا -	२०४ असालत और बहादुर खां का सूबे दार बलख और क़लीच खां का सूबे दार बदख्शां होना·
۲۰۴	راجہ دیوی سنگہ پہاڑ سنگہ	२०४ राजा देवी सिंघ· पहाड़ सिंघ

Collection Earthwar. Digitized by eGangotri

खां का नज़र मोहम्मद खां के पीछे भेजना.

१९७ महेस दास रूप सिंघ और राम सिंघ राठोड़ का भी लड़ाई के शोक से बहादुरखां के साथ होलेना.

१९८ नज़र मोहम्मद खांके माल की ज़बती.

१९९ बलख़ और बदख़शां की आमदनी.

१९९ बलख़ में बाद शाह के नाम का ख़ुतबा और सिक्का.

२०० शेरख़ान में बाद शाही लशकर की उज़बकों के ऊपर फ़तह.

२०० महेस राठोड़ दलप तोत, रूप सिंघ राठोड़ राम सिंघ राठोड़ रूप सिंघ चन्द्रावत. राजा अमर सिंघ राजा वत महेस दास राठोड़, राय तिलोक चन्द सेखावत, संग्रामराजा वत, गोयंद दास ख़ांन दोरानी, बल्लू चोहान. राजा जय राम, जग राम कछवाहा अजब सिंघ हाडा

خاں کو نذر محمد خاں کے پیچھے بھیجنا۔

۱۹۷ مہیش داس روپ سنگھ اور رام سنگھ راٹھور کا لڑائی کے شوق سے بہادر خاں کے ہمراہ ہونا

۱۹۸ نذر محمد خاں کے مال کی ضبطی

۱۹۹ بلخ اور بدخشاں کی آمدنی

۱۹۹ بلخ میں بادشاہ کے نام کا سکہ اور خطبہ

۲۰۰ شیر خاں میں بادشاہی لشکر کی اوزبکوں کے اوپر فتح

" مہیش داس راٹھور دلپتوت روپ سنگھ راٹھور۔ رام سنگھ راٹھور روپ سنگھ چندراوت راجہ امر سنگھ راجاوت۔ مہیش داس راٹھور رائے تلوک چند شیخاوت سنگرام راجاوت۔ گوبند داس خاندرانی بلوچوہان راجہ جیرام جگرام کچھواہہ عجب سنگھ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

۱۹۵	بہادر خاں اور راجہ بٹھلداس کا طول کی گھاٹی سے گذرنا
"	قلعہ کھرو کا فتح ہونا
"	راجہ پہاڑ سنگھ اور راجہ دیوی سنگھ قلعہ غوری پر
۱۹۶	نذر محمد خاں کے بیٹے خسرو کا شاہزادہ کے پاس حاضر آنا
"	الماتوں کا قندز کو جلا کر واپس جانا
"	شاہزادہ مراد بخش کا راجہ راج روپ کو قلعہ قندز میں چھوڑنا
"	خسرو کا کابل میں بادشاہ کے پاس حاضر ہونا
"	بلخ میں بادشاہی عمل ہونا
۱۹۷	نذر محمد خاں کا بھاگ جانا
"	شاہزادہ کا راجہ بیٹھل داس کو اپنے پاس رکھ کر بہادر

۱۹۴ بہادر خاں اور راجہ بٹھلداس کا طول کی گھاٹی سے گذرنا۔
۱۹۴ قلعہ کھرو کا فتح ہونا۔
۱۹۴ راجہ پہاڑ سنگھ اور راجہ دیوی سنگھ قلعہ غوری پر۔
۱۹۶ نذر محمد خاں کے بیٹے خسرو کا شاہزادہ کے پاس حاضر آنا۔
۱۹۶ الماتوں کا قندز کو جلا کر واپس جانا۔
۱۹۶ شاہزادہ مراد بخش کا راجہ راج روپ کو قلعہ قندز میں چھوڑنا۔
۱۹۶ خسرو کا کابل میں بادشاہ کے پاس حاضر ہونا۔
۱۹۶ بلخ میں بادشاہی عمل ہونا۔
۱۹۷ نذر محمد خاں کا بھاگ جانا۔
۱۹۷ شاہزادہ کا راجہ بیٹھل داس کو اپنے پاس رکھ کر بہادر

۱۸۹	بادشاہ کا پیشاور اور مراد بخش کا کابل پہنچنا
"	راجہ بیٹھل داس کا مراد بخش کے پاس حاضر ہونا
"	راجہ جسونت سنگھ کا اضافہ
۱۹۱	مہیش راٹھور کو نقارہ
"	راجہ جسونت سنگھ اور کنور رام سنگھ بادشاہی لشکر سے ایک منزل آگے
"	گھوڑوں کے داغ کا قاعدہ
۱۹۲	فوج کو پیشگی تنخواہ
۱۹۳	بہادر خاں اور راجہ بیٹھلداس کا بدخشاں پر جانا
"	بادشاہ کا کابل پہنچنا
"	راجہ جسونت سنگھ اور سعد اللہ خاں کا پیشوائی کرنا
"	دولت آباد کی قلعداری پر تھی راج راٹھور سے تغیر ہو کر سیادت خاں کو ملنا
"	کنور رام سنگھ کو موتیوں کی مالا

۱۸۹ बाद शाह का पिशोर और मुराद बख्श का काबुल पहुंचना

۱۸۹ राजा बिट्ठल दास का मुराद बख्श के पास हाज़िर होना.

۱۸۹ राजा जसवंत सिंघ का इज़ाफ़ा

۱۹۱ महेस राठोड को नक़्क़ारा

۱۹۱ राजा जसवंत सिंघ और कंवर राम सिंघ बाद शाही लश्कर से १ मंजिल आगे.

۱۹۱ घोड़ों के दाग़ का क़ायदा

۱۹۲ फौज को पेश गी तन्ख़्वाह

۱۹۳ बहादुर ख़ां और राजा बिट्ठल दास का बदख़्शां पर जाना.

۱۹۴ बाद शाह का काबुल पहुंचना

۱۹۴ राजा जसवंत सिंघ और साद उल्ला ख़ां का पेश वाई में आना.

۱۹۴ दौलता बाद की क़िल्ले दारी पृथ्वी राज राठोड़ से उतर कर सआदत ख़ां को मिलना.

۱۹۴ कंवर राम सिंघ को मोतियों की माला.

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१८६ लाहोर में काल और बादशाही ख़ैरात-	۱۸۶ لاہور میں قحط سالی اور بادشاہ کی خیرات
१८६ ईरान की वकील भेजना-	" ایران کو ایلچی بھیجنا
तारा गढ़ के क़िले की फ़तह	**فتح قلعہ تاراگڈہ**
१८६ राजा जगत सिंघ के मरने पर तारा गढ में बाद शाही क़बज़ा होना-	" راجہ جگت سنگھ کے مرنے پر تاراگڈہ میں بادشاہی قبضہ ہونا
बाद शाह का काबुल जाना	**بادشاہ کا کابل جانا**
१८८ बाद शाह का लाहोर से काबुल जाना-	۱۸۸ بادشاہ کا لاہور سے کابل جانا
१८८ राजा जय सिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ को मन सब-	" راجہ جے سنگھ کے بیٹے کنور رام سنگھ کو منصب
१८८ राजा जसवंत सिंघ को कटार और घोड़ा-	" راجہ جسونت سنگھ کو کٹار اور گھوڑا
१८९ कंवर राम सिंघ को घोड़ा-	۱۸۹ کنور رام سنگھ کو گھوڑا

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मेड़ तिया, गोयंदास खान दोरानी बल्लु चोहान, रावत नारायण दास सीसो दिया का शाहजादे के साथ तईनात होना-

سیرشیہ گوبندداس خاندورانی بلوچوہان راوت نراین داس سیسودیہ کا شاہزادہ کے ساتھ تعینات ہونا

१८४ राजा बिट्ठल दास का राजपूतों पर अफ़सर होना-

۱۸۴ راجہ بیٹھل داس کا راجپوتوں پر افسر ہونا

१८४ राजा देवी सिंघ राजा राय सिंघ राजा जय राम जग राम राना बहरोज अजब सिंघ और किशन सिंघ दहनी हाथ की फ़ोज में.

" راجہ دیبی سنگھ راجہ رائے سنگھ راجہ جے رام جگ رام راجہ بہروز عجب سنگھ اور کشن سنگھ دہنی ہاتھ کی فوج میں

१८५ राजा पहाड़ सिंघ चन्द्र मणि बुंदेला और भोज राज बांयें हाथ की फ़ोज में-

۱۸۵ راجہ پہاڑ سنگھ چندرمن بندیلہ اور بھوج راج بائیں ہاتھ کی فوج میں

१८५ शत्रु साल हाड़ा सेवा राम गोड़ राम सिंघ राठोड़ गोकुल दास सीसो दिया गिरधर दास राजा अमर सिंघ नरवरी राय सिंघ झाला और अरजुन गोड़ को ख़िलअत-

" ستروسال ہاڈا سیوا رام گوڑ رام سنگھ راٹھور گوکل داس سیسودیہ راجہ امر سنگھ نروری رائے سنگھ جھالا اور ارجن گوڑ کو خلعت

१८६ राव रूप सिंघ और राय सिंघ झाला का इज़ाफ़ा-

۱۸۶ راو روپ سنگھ اور رائے سنگھ جھالا کا اضافہ

बरस बीसवां

بیسواں برس

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बलख़ और बदख़शां की मुहिम

بلخ اور بدخشاں کی مہم

१८२ शाह ज़ादे मुराद बख़श का बलख़ और बदख़शा की फ़तह को भेजा जाना-

۱۸۲ شاہزادہ مراد بخش کو بلخ اور بدخشاں کی فتح کو بھیجنا

१८२ राजा बिट्ठल दास, राव शत्रु साल, माधो सिंघ हाड़ा महेस दलप तोत, सेवा राम गोड़, राजा रूप सिंघ राठोड़ राम सिंघ राठोड़ मोहकम सिंघ गोपाल दास गोकल दास सीसो दिया गिरधर दास गोड़, राजा अमर सिंघ नरवरी राय सिंघ, अर्जुन गोड़, महेस दास राठोड़ सुजान सिंघ सीसो दिया, किशन सिंघ तंवर, रावत रूप सिंघ चद्रावत कृपा राम गोड़ उग्रसेन, इन्द्र साल, तिलोक चन्द चन्द्र भान नरूका संग्राम कछवाहा हमीर सिंघ सीसो दिया पृथ्वी सिंघ कछवाहा पैम चन्द राय मनोहर का पोता डाणी दास

۱۸۲ راجہ بٹھلداس راؤ ستروسال
ہاڑہ مہیس دلپتوت راؤ ہوسنگہ
ہاڑہ سیوارام گوڑ راجہ روپ سنگہ
راٹھور رام سنگہ راٹھور محکم سنگہ
گوپالداس گوکل داس سیسودیہ
گردھرداس گوڑ راجہ امرسنگہ
نروری رائے سنگہ جھالا
ارجن گوڑ مہیس داس راٹھور
سجان سنگہ سیسودیہ کشن سنگہ
تنور راوت روپ سنگہ چندراوت
کرپارام گوڑ اگرسین اندرسال
تلوک چند چندربھان نروکا
سنگرام کچھواہہ ہمیرسنگہ سیسودیہ
پرتھی سنگہ کچھواہہ پیم چند
رائے منوہر کا پوتہ ڈانی داس

Digitized by eGangotri

का वतन से हाज़िर होना-
१७७ लाहोर के क़िले दार महेस राठोड़ का मुजरा-
१७७ राय सिंघ झाला को मनसब-
१७८ राय तोडर मल्ल का इज़ाफ़ा
१७८ किशन सिंघ कछ वाहे का मन सब-
१७९ राजा जय राम और गोकल दास सीसो दिया का इज़ाफ़ा-
१७९ महेस दास राठोड़ का इज़ाफ़ा
१७९ नूर जहां बेगम का इन्त काल-
१७९ नज़र मोहम्मद खां के वकील का आना-
१७९ सादुल्ला खां वज़ीर का ६ हज़ारी होना-
१८० राजा विट्ठल दास, राजा पहाड़ सिंघ, महेस दास राठोड़ और अनिरुद्ध गोड़ का इज़ाफ़ा-
१८१ राजा जगत सिंघ का मरना और राज रूप का बलख की मुहिम पर तईनात होना-

کا وطن سے حاضر آنا
۱۷۷ لاہور کے قلعہ دار مہیس راٹھور کا مجرا
" رائے سنگھ جھالا کو منصب
" رائے ٹوڈرمل کا اضافہ
۱۷۸ کشن سنگھ کچھواہہ کا منصب
" راجہ جے رام اور گوکل داس سیسودیہ کا اضافہ
۱۷۹ مہیس راٹھور کا وظیفہ
" نورجہاں بیگم کا انتقال
" نذر محمد خاں کے وکیل کا آنا
" سعد اللہ خاں وزیر کا ۶ ہزاری ہونا
۱۸۰ راجہ بٹھلداس راجہ پہاڑ سنگھ مہیس داس راٹھور اور انرودہ راٹھور کا اضافہ
۱۸۱ راجہ جگت سنگھ کا مرنا اور راجروپ کا بلخ کی مہم پر تعینات ہونا۔

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहिले जाना-

१७१ राजा का अन्दराब और सूराब के बीच में लकड़ी का क़िला बनाना-

१७१ नज़र मोहम्मद ख़ां के उज़बकों का राजा से लड़ने आना और लड़ाई हार कर भागना-

१७४ अली मरदान ख़ां का राजा के बेटे राज रूप को राजा की मदद पर भेजना और उज़बकों का फिर लड़ाई हार ना-

१७२ राजा का उज़बकों का हटा कर पंच शहर में पहुंचना

दरबार का हाल

१७७ बाद शाह का कशमीर से लोट ना-

१७७ किस्ट वार के राजा कंवर सेन को रुख़सत-

१७७ बाद शाह का लाहोर पहुंच ना-

१७७ शाह ज़ादे मुराद बख़श का मुलतान से और राजा जसवंत सिंघ

पेशतर रवाना हो जाना

१७६ राजा का अन्दराब और सराब के दरमियान लकड़ी का क़िला बनाना-

" नज़र मुहम्मद ख़ां उज़बक के उज़बकों का राजा से लड़ने आना और लड़ाई हार कर भागना

१७४ अली मरदान ख़ां का राजा के बेटे राजरूप को राजा की मदद पर भेजना और उज़बकों का फिर लड़ाई हार जाना

१७५ राजा का उज़बकों को शिकस्त देकर पंच शहर में पहुंचना

दरबार का हाल

१७७ बादशाह का कश्मीर से लौटना

" किश्तवार के राजा कंवर सेन को रुख़सत

" बादशाह का लाहोर पहुंचना

" शाहज़ादा मुराद बख़्श का मुलतान से और राजा जसवंत सिंघ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण से मारा जाना और उसके बेटोंके मनसब-		برہمن کے ہاتھ سے مارا جانا اور اُسکے بیٹوں کو منصب
१६६ राजा जय सिंघ को खिलअत भेजा जाना-	१६६	راجہ جے سنگھ کو خلعت بھیجا جانا
१६६ राजा जसवंत सिंघ को लाहोर में बुलाना-	"	راجہ جسونت سنگھ کو لاہور میں بلانا
१६६ हमीर सिंघ सीसोदिया का नौकर होना-	"	ہمیر سنگھ سسودیہ کا نوکر ہونا
१६६ इसलाम खां का दखन के चारों सूबों की हकूमत पर भेजा जाना-	"	اسلام خاں کا دکھن کے چاروں صوبوں کی حکومت پر بھیجا جانا
१६६ गोविंद दास राठोड़ को मनसब	"	گوبند داس راٹھور کو منصب
१६६ शाहजादे शुजाअ के बेटेकी शादी-	"	شاہزادہ شجاع کے بیٹے کی شادی
बलख़की मुहिम		**بلخ کی مہم**
१६६ नज़र मोहम्मद खांसे लड़ाई शुरू होना-	"	نذر محمد خاں سے لڑائی شروع ہونا
१३८ राजा राय सिंघ को भटक जाने का हुक्म-	१६६	راجہ رائے سنگھ کو اٹک جانے کا حکم
१३९ राजा जगत सिंघ की बलख़ पर चढ़ाई राजा के बेटे माव सिंघ का	"	راجہ جگت سنگھ کی بلخ پر چڑھائی راجہ کے بیٹے بھاؤ سنگھ کا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१६२ बलख़ और बदख़्शां पर मुहिम का हुक्म-	۱۶۲ بلخ اور بدخشاں پر مہم کا حکم
१६३ पृथ्वी राज राठोड़ का इज़ाफ़ा-	۱۶۳ پرتھی راج راٹھور کا اضافہ
१६३ बादशाह का कश्मीर पहुंचना-	" بادشاہ کا کشمیر پہنچنا
१६३ बीजा पुर और गोल कुंड के बाद शाहों का नज़राना-	" بیجاپور اور گولکنڈہ کے بادشاہوں کا نذرانہ
१६३ राजा जगत सिंघ की मुहिम बलख़ पर तईनात-	" راجہ جگت سنگھ کی تعیناتی مہم بلخ پر
१६४ राजा राय सिंघ, राजा पहाड़ सिंघ, और माधो सिंघ हाड़ा का उस मुहिम में मुकर्रर होना-	۱۶۴ راجہ رائے سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ اور مادھو سنگھ ہاڈا کا اُس مہم میں شامل ہونا
१६४ इलाबाद का सूबा चिनार और रोहतास का किला दारा शिकोह की इनायत होना-	" صوبہ الہ آباد کا مع قلاع چنار و رہتاس کے شاہزادہ داراشکوہ کو عنایت ہونا
१६५ सरदार ख़ां को धामूनी और जोरा गढ की जागीर दारी-	۱۶۵ سردار خاں کو دھامونی اور جورا گڈھ کی جاگیرداری ملنا-
१६५ ख़ान दोरां का एक कश्मीरी	" خاندوراں کا ایک کشمیری

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लाहोर जाना

१६० बाद शाह का कूंच आगेर से लाहोर को

१६० रूप बास में राजा जसवंत सिंघ को खिलअत देकर राज धानी की रख वाली पर छोड़ना-

१६० राय कासी दास दीवान आगरा

१६० राय बेनी दास दीवान बिहार

१६० मथ रामें हामू फ़कीर का दलद्र दूर होना

१६१ बाद शाह का दिल्ली पहुंचना

१६१ औरंग ज़ेब को गुजरात का सूबा मिलना-

बरस उन्नीसवां

१६२ राय टोडर मल को खिलअत

१६२ बाद शाह का लाहोर पहुंचना

१६२ महेस दास राठोड को लाहोर की क़िले दारी-

१६२ बाद शाह का कशमीर जाना

لاہور جانا

۱۶۰ بادشاہ کا کوچ آگرہ سے لاہور کو

" روپ واس میں راجہ جسونت سنگھ کو خلعت دیکر دارالخلافہ کی حفاظت پر چھوڑنا

" رائے کاشی داس دیوان آگرہ

" رائے بینی داس دیوان بہار

" متھرا میں ہامو فقیر کا غنی ہونا

۱۶۱ بادشاہ کا دہلی پہنچنا

" اورنگ زیب کو گجرات کا صوبہ

اُنتیسواں برس

۱۶۲ راجہ ٹوڈرمل کو خلعت

" بادشاہ کا لاہور پہنچنا

" مہیش داس راٹھور کو قلعداری لاہور ملنا

" بادشاہ کا کشمیر جانا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

री होना-

१५७ राजा रूप सिंघ राठोड़ का इज़ा फ़ा-

१५७ सुजान सिंघ सीसो दियो को इज़ा री मन सब मिलना-

१५७ अली मरदान ख़ां की बलख़ और बुख़ारा वालों पर फ़तह-

१५८ अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़ जंग का मरना-

१५८ राव अमर सिंघ के बेटे राय सिंघ का हाज़िर आना और मनसब पाना-

१५८ बाद शाह का शाह ज़ादे दारा शिकोह के बेटे सिपहरशिकोह के देखने को जाना और शाह ज़ादे की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत मिलना-

१५९ बेग़म साहिब की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत

१६० राजा पहाड़ सिंघ का हाथी न ज़र करना-

	होना
१५७	राजा रूप सिंघ राठोर का इज़ाफ़ा
"	सुजान सिंघ सीसोदिया को हज़ारी मनसब मिलना
"	अली मरदान ख़ां की बलख़ और बुख़ारा वालों पर फ़तह
१५९	अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़ जंग का मरना
"	राव अमर सिंघ के बेटे राय सिंघ का हाज़िर आना और मनसब पाना
"	बादशाह का शाहज़ादा दारा शिकोह के बेटे सिपहरशिकोह को देखने जाना और शाहज़ादे की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत
१५९	बेग़म साहिबा की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत
१६०	राजा पहाड़ सिंघ का हाथी नज़र न होना

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१२२ राव शत्रु साल को घर जाने की रुख़सत	राؤ ستروسال کو گھر جانے کی رخصت	१५५
१२४ राना जगत सिंघ के वकील कल्यान झाला को रुख़सत और राना के वास्ते ख़िलअत-	رانا جگت سنگھ کے وکیل کلیان جھالا کو رخصت اور رانا کے واسطے خلعت	१५६
१२६ गोरधन राठोड़ का क़िलेदार असीर होना-	گوردھن راٹھور کا قلعدار آسیر ہونا	१५६
१२६ ख़ान दौरां का दखन से बुलाया जाना और उसकी जगह राजा जय सिंघ का भेजा जाना-	خاندوراں کا دکن سے بلایا جانا اور اُس کی جگہہ راجہ جیسنگھ کا بھیجا جانا	"
१२७ राजा विट्ठल दास का अपने वतन से आना-	راجہ بیٹھل داس کا اپنے وطن سے آنا	१५८
१२७ बेग़म साहिब को आराम होने की ख़ुशी में २० लाख रुपये ख़रच होना-	بیگم صاحبہ کو آرام ہونے کی خوشی میں ۲۰ لاکھ روپیہ خرچ ہونا	"
१२७ बेग़म साहिब की शिफ़ारिश से औरंग ज़ेब के क़सूर माफ़ किये जाना-	بیگم صاحبہ کی سفارش سے اورنگ زیب کے قصور معاف ہونا	"
१२७ एक हज़ार आदमियों को ख़िलअत और इज़ाफ़ा	ایک ہزار آدمیوں کو خلعت اور اضافہ	"
१२७ राजा विट्ठल दास का पञ्च हज़ा	راجہ بیٹھل داس کا پنج ہزاری	१५८

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१४७ राव अमर सिंघ राठोर का बख़्शी सलाबत ख़ां को मार कर ख़ुद भी अर्जुन गोड़ व ख़लील उल्लाह ख़ां वग़ैरे के हाथ से मारा जाना-

१४८ बीकानेर के राव सूर और अमर सिंघ से सरहद का झगड़ा था

१५० अमर सिंघ के आदमियों का मीर ख़ां मीर तुज़क और मलूक चंद बशरफ़ दौलत ख़ाने ख़ास को मार डालना-

१५१ बल्लू राठोड़ और भाव सिंघ का अमर सिंघ के आदमियों से मिल कर अर्जुन गोड़ से बदला लेने का इरादा करना बाद शाही फ़ौज का आना और उससे जंग होना-

दरबार का हाल

१५४ अर्जुन गोड़ गोपाल सिंघ और श्याम सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा-

१५५ द्वारका दास के बेटे नर सिंघ दास का क़िलेदार का वील होना-

१४७ राव अमर सिंघ राठोर का बख़्शी सलाबत ख़ां को मार कर ख़ुद भी अर्जुन गोड़ व ख़लील उल्लाह ख़ां वग़ैरे के हाथ से मारा जाना

१४८ बीकानेर के राव सूर राव अमर सिंघ से सरहद का झगड़ा था-

१५० अमर सिंघ के आदमियों का मीर ख़ां मीर तुज़क व मलूक चंद बशरफ़ दौलत ख़ाने ख़ास को मार डालना

१५१ बल्लू राठोर और भाव सिंघ का अमर सिंघ के राजपूतों से मिल कर अर्जुन गोड़ से बदला लेने का इरादा करना बादशाही फ़ौज का आना और उस से जंग होना

दरबार का हाल

१५४ अर्जुन गोड़ गोपाल सिंघ और श्याम सिंघ राठोर का इज़ाफ़ा-

१५५ द्वारका दास के बेटे नर सिंघ दास का क़िलेदार का वील होना

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किशन गढ का राज दिया जाना.
१४३ औरंग ज़ेब का दखन से आना
१४३ राजा सूरज सिंघ के बेटे सबल सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा.
१४३ राव हटी सिंघ का मरना और रूप सिंघ को राम पुरा दिया जाना.
१४४ मुराद बख़श का मुलतान से आना-
१४४ औरंग ज़ेब का मनसब ज़बत होना और मालवे के सूबे दार ख़ांन दौरां का सूबेदार दकखन होना.
१४४ पृथ्वी राज राठोड़ का दोलता बाद की और सेवा राम गौड़ को आसेर की क़िले दारी मिलना
१४५ शाह ज़ादे मुराद बख़श का मुलतान जाना.
१४५ राजा बिट्ठल दास को घर जाने की रुख़स-

राव अमर सिंघ का काम आना

किशन गढ़ का राज दिया जाना
१४३ औरंगज़ेब का दकखन से आना
" राजा सूरज सिंघ के बेटे सबल सिंघ राठोर का इज़ाफ़ा
" राव हटी सिंघ का मरना और रूप सिंघ को राम पुरा दिया जाना
१४४ मुराद बख़श का मुलतान से आना
" औरंग ज़ेब का मनसब ज़बत होकर मालवे के सूबेदार ख़ानदौरां का सूबेदार दकखन होना
" पृथ्वी राज राठोर को दौलत आबाद की और सेवा राम गौड़ को आसेर की क़िलेदारी मिलना
१४५ शाहज़ादे मुराद बख़श का मुलतान जाना
" राजा बिट्ठल दास को घर जाने की रुख़सत

राव अमर सिंघ का काम आना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

دار دیوکن ہونا

۱۳۹ پرتاب کا پٹنہ میں حاضر ہوجانا اور بادشاہ کی طرف سے اُسکو منصب ملنا

" پلاموں کی جمع ایک کروڑ دام کی تھی

گنور کی فتح

۱۴۰ سنگرام کا مرنا اور اُس کے غلام مارو کا گنور میں قبضہ کرنا

۱۴۰ مالوہ کے صوبہ دار کا چڑھائی کرکے سنگرام کے بیٹے بھوپت کو پکڑنا اور گنور فتح کرنا

۱۴۱ گوبند داس راٹھور - راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ - اور پرتھی راج راٹھور اس مہم ملاپوں میں شامل تھے

دربار کا حال

۱۴۲ ہری سنگھ راٹھور کا مرنا اور اُسکے بھتیجے روپ سنگھ کو

दार देवकन होना·

१३९ पर ताप का पटने में हाज़िर हो जाना और बाद शाह की तरफ़ से उसको मन सब मिलना

१३९ पलामूं की जमा: करोड़ दाम (२५०००००) की थी-

॥ गुन्नोर की फ़तह

१४० संग्राम का मरना और उस के गुलाम मारू का गुन्नोर में क़बज़ा करलेना-

१४० मालवे के सूबेदार का चढाई करके संग्राम के बेटे भोपत को पकड़ना और गुन्नोर फ़तह करना

१४१ गोबिंद दास राठोड़ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला और पृथ्वी राज राठोड़ इस मुहिम में शामिल थे

दरबार का हाल

१४३ हरि सिंघ राठोड़ का मरना और उसके भतीजे रूप सिंघ को

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

جل جانا और बाद शाह का बहुत सा रुपया ख़ैरात करना·

पलामूं पर चढ़ाई

१३४ पला मूं के राजा प्रताप सिंघ को उसके चचा दरया राय और तेज राय का क़ैद करना·

१३४ तेज राय का राजा होना·

१३४ सूबे दार बिहार का दरिया राय की मिलावट से क़िले देवकन में अमल कर लेना

१३४ तेज राय के वकील बदन सिंघ का देव कन पर आना और बाद शाही फ़ौज से भाग ना·

१३६ दरया राय का बाद शाही फ़ौज की मदद पर जाना·

१३६ बदन सिंघ के बेटे सूरत सेन और सबल सेन का प्रताप को क़ैद से छोड़ देना तेज सिंघ और बदन सिंघ का भाग जाना

१३७ धरनी धर उज्जानिये का क़िले

जलजाना اور بادشاہ کا بہت سا روپیہ خیرات کرنا

پلاموں پر فوج کشی

۱۳۴ پلاموں کے راجہ پرتاب سنگھ کو اسکے چچا دریا رائے اور تیج رائے کا قید کرنا

۱۳۴ تیج رائے کا راجہ ہونا

۱۳۴ صوبہ دار بہار کا دریا رائے کی سازش سے قلعہ دیوکن میں دخل کر لینا۔

۱۳۵ تیج رائے کے وکیل بدن سنگھ کا دیوکن پر آنا اور بادشاہی فوج کی مدد پر جانا

" دریا رائے کا بادشاہی فوج کی مدد پر جانا

" بدن سنگھ کے بیٹے سورت سین اور سبل سین کا پرتاپ کو قید سے چھوڑ دینا تیج سنگھ اور بدن سنگھ کا بھاگ جانا

۱۳۶ دھرنی دھر اوجینیہ کا قلعہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१२९ मालपुरे में विट्ठल दास की नज़र-	۱۲۹ مالپورہ میں راجہ بٹھل داس کی نذر
१३० राजा किशन सिंघ भदोरिये के मरने पर बदन सिंघ का राजा होना	" راجہ کشن سنگھ بھدوریہ کے مرنے پر بدن سنگھ کا راجا ہونا
१३१ नाहर सोलंखी की नज़र	۱۳۱ ناہر سولنکھی کی نذر
१३१ बाद शाह का आगरे पहुंचना	" بادشاہ کا آگرہ پہنچنا
१३१ सुजान सिंघ सीसोदिये का इज़ाफ़ा-	" سجان سنگھ سیسودیہ کا اضافہ
१३१ राजा बदन सिंघ भदोरिये को हाथी इनायत-	" راجہ بدن سنگھ بھدوریہ کو ہاتھی عنایت
१३१ आगरे में मरी और बाद शाह का शिकार जाना-	" آگرہ میں وبا اور بادشاہ کا شکار جانا
१३२ ईरान तूरान अरब और काशग़र बग़ैरा के बहुत से आदमियों का आकर नौकर होना	۱۳۲ ایران توران عرب اور کاشغر وغیرہ کے بہت سے آدمیوں کا آکر نوکر ہونا
१३२ बीजा पुर और गोल कुंडे के बाद शाहों के नज़राने-	۱۳۲ بیجاپور اور گول کنڈہ کے بادشاہوں کے نذرانہ
१३२ सईद ख़ां ज़फ़रजंग का क़ंधार जाना और जगत सिंघ का क़िलात से काबुल में बदला जाना-	۱۳۲ سعید خاں ظفر جنگ کا قندہار جانا اور جگت سنگھ کا قلات سے کابل میں بدلا جانا
१३३ जहां आरा बेगम का आग से	۱۳۳ جہاں آرا بیگم کا آگ سے

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

१२४ राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत	१२४ राजा बीठल दास को खलअत
" राव शत्रुसाल को हाथी-	" राव सत्रसाल को हाथी
१२५ औरंग जेब के बेटे मोअज़्ज़म का पैदा होना	१२५ औरंग ज़ेब के बेटे मुहम्मद मअज़म का पैदा होना
१२६ राय राया का काशी सेवन-	
१२६ बाद शाह का अजमेर जाना	
१२६ राजा जय सिंघ का चाटसू में हाज़िर होना-	१२६ राये रायां की गोशा नशीनी काशी में
१२६ राना जगत सिंघ के बड़े बेटे राज कुंवर का आना-	१२७ बादशाह का अजमेर जाना
	" राजा जे सिंघ का चाटसू में हाज़िर होना
१२७ राना जगत सिंघ का कुछ हाल	" राना जगत सिंघ के बड़े बेटे राज कुंवार का हाज़िर आना
१२७ बाद शाह का अजमेर पहुंचना	" राना जगत सिंघ का कुछ हाल
१२८ राजा जस वंत सिंघ का वतन से आना-	" बादशाह का अजमेर पहुंचना
१२८ बाद शाह का देग़ चढ़ाना-	१२८ राजा जसवंत सिंघ का वतन से आना
१२८ बाद शाह का अजमेर से कूंच करना-	" बादशाह का अजमेर में देग चढ़ाना
	" बादशाह का अजमेर से कूच करना
१२८ राजा जसवंत सिंघ जय सिंघ और जय सिंघ के बेटे राम सिंघ और कीरत सिंघ को ख़िलअत और रुख़सत घर जाने की मिलना	" राजा जसवंत सिंघ राजा जे सिंघ और राजा जे सिंघ के बेटे राम सिंघ व कीरत सिंघ को खलअत और रुख़सत घर जाने की-
१२९ राना जगत सिंघ के बेटे राज कुंवर को ख़िलअत और रुख़सत	१२९ राना जगत सिंघ के बेटे राज कुंवार को खलअत और रुख़सत

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१२२ गिरधर गोड़ का इज़ाफ़ा	۱۲۲ گردھر گوڑ کا اضافہ
१२२ राय तोडर मल का इज़ाफ़ा	″ رائے توڈرمل کا اضافہ
१२२ बाद शाह का दिल्ली पहुंचना, लाल क़िले का बनना.	″ بادشاہ کا دہلی پہونچنا اور قلعہ شاہجہان آباد کا تیار ہونا
१२२ बाद शाह का आगरे पहुंचना और विट्ठल दास का सलाम	″ بادشاہ کا آگرہ مین پہونچنا اور راجہ بٹھل داس کا پیشوائی مین حاضر ہونا
१२३ अली मर दान ख़ां को अमीरुल उमरा का ख़िताब	۱۲۳ علیمردان خان کو امیرالامرا کا خطاب
१२३ राजा विट्ठल दास का पंच हज़ारी होना.	۱۲۳ راجہ بٹھل داس کا پنجہزاری ہونا
१२३ ताज बीबी का रोज़ा	″ روضہ تاج گنج
१२३ राजा विट्ठल दास को हाथी इनायत-	″ راجہ بٹھل داس کو ہاتھی عنایت
१७वां साल	**۱۷واں برس**
१२३ राजा विट्ठल दास को घोड़ा-	۱۲۳ راجہ بٹھل داس کو گھوڑا عنایت
१२३ राजा जस वंत सिंघ को वतन जाने की रुख़सत.	″ راجہ جسونت سنگھ کو وطن جانے کی رخصت
१२३ बाद शाह का अपने पोते का मुंह देखने को जाना ॥	″ بادشاہ کا اپنے پوتہ کا مونہہ دیکھنے کے واسطے جانا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

११९ महेस राठोड़ को जालोर मिलना-	" مہیس راٹھوڑ کو جالور ملنا
११९ शाहजादे दारा शिकोह का हाज़िर आना-	" شاہزادہ دارا شکوہ کا حاضر دربار ہونا
१२० कशमीर के ज़मींदारों को ५०००० रुपया इनायत होना-	१२० کشمیر کے زمینداروں کو پچاس ہزار روپیہ عنایت
१२० राम सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा	" رام سنگھ راٹھوڑ کا اضافہ
१२० राय मुकंद दास का दीवान व्योतात होना-	" رائے مکند داس کا دیوان بیوتات ہونا
१२० राजा जय सिंघ और राव अमर सिंघ का क़ंधार से आना	" راجہ جیسنگھ اور راو امر سنگھ کا قندہار سے آنا
१२१ लाहोर का बाग़	१२१ لاہور کا باغ
१२१ राव सत्रु साल हाडा का हाज़िर होना-	" راو ستروسال ہاڈا کا حاضر ہونا
१२१ बाद शाह लाहोर से आगरे को-	" بادشاہ لاہور سے آگرہ کو
१२१ राजा जय सिंघ को घर जाने की रुख़सत-	" راجہ جیسنگھ کو گھر جانے کی رخصت
१२१ शाहजादे दारा शिकोह का राजा जगत सिंघ के क़िलों को देखने के लिये जाना-	" شاہزادہ دارا شکوہ کا حسب الحکم واسطے معاینہ قلعجات راجہ جگت سنگھ کے جانا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को बलख के हाकिम नज़र मोहम्मद खा के मुक़ाबिले के वास्ते तैयार रहने का हुक्म पहुंचाना.
११६ शाह ईरान का मरना और शाहज़ादे दाराशिकोह का पीछा आना.

दरबार का हाल

११७ चंबे के राजा पृथ्वी चन्द को हाथी ईनायत होना.
११७ गिरधर दास गोड़ का इज़ाफ़ा.

बंदेलों की मोहिम

११८ राजा पहाड़ सिंघ का चंपत बुंदेले के ऊपर भेजे जाना.
११८ चंपत का हाज़िर हो जाना.

दरबार का हाल

११९ माधो सिंघ हाड़ा का ३ हज़ारी होना.

को वास्ते तैयार रहने मुक़ाबिले नज़र मुहम्मद खान वाले बलख के हुक्म पहुंचना
" शाह ईरान का मरना और शाहज़ादे दाराशिकोह का वापस आना

दरबार का हाल

११७ चंबे के राजा पृथ्वी चन्द को हाथी ईनायत होना
" गिरधरदास गोड़ का इज़ाफ़ा

बुंदेलों की मोहिम

११८ राजा पहाड़ सिंघ का चंपत बुंदेले के ऊपर भेजा जाना
" चंपत का हाज़िर हो जाना

दरबार का हाल

११९ माधो सिंघ हाड़ा का तीन हज़ारी होना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ईरान के बाद शाह का क़ंधार पर आना

११२ ईरान के बाद शा हका इरादा क़ंधार पर और शाह ज़ादे दारा शिकोह का उसके मुक़ाबिले पर भेजा जाना-

११३ राजा जस वंत सिंघ राव अमर सिंघ राव शत्रु साल राजा जय सिंघ राजा राय सिंघ हरी सिंघ राठोड़ महेस दास राठोड़ राम सिंघ राठोड़ चन्द्र भाण बुंदेला गोकुल दास सीसोदिया राजा अमर सिंघ नर वरी राय सिंघ झाला का शाह ज़ादे के साथ तईनात होना और इन को ख़िलत वग़ैरा मिलना-

११६ शाह ज़ादे मुराद का भाई की मदद पर मुक़र्रर होना ।

११६ अली मर दान सूब काबुल

شاہ ایران کا عزم قندہار پر

۱۱۲ ایران کے بادشاہ کا ارادہ قندہار پر اور شاہزادہ داراشکوہ کا اوسکے مقابلہ پر بھیجا جانا

۱۱۳ راجہ جسونت سنگہ راٹھوڑ راؤ امر سنگہ راؤ ستروسال راجہ جیسنگہ راجہ راے سنگہ ہری سنگہ راٹھوڑ مہیس داس راٹھوڑ رام سنگہ راٹھوڑ چندر من بندیلہ گوکلداس سیسودیہ راجہ امر سنگہ نروری اور راے سنگہ جھالا کا شاہزادہ کے ساتھہ تعینات ہونا اور انکو خلعت وغیرہ ملنا

۱۱۶ شاہزادہ مراد بخش کا بھائی کی مدد پر مقرر ہونا

۱۱۷ علی مردان خاں صوبہ دار کابل

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

११० औरंग ज़ेब राव शत्रु साल हाडा और राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले का दखन से लाहोर आना.
० करमसी राठोड़ के बेटे स्याम सिंघ को मनसब मिलना.
११० राय काशी दास का दीवान लाहोर होना.
११० शाह ज़ादे मुराद का हाज़िर आना.
११० राजा जगत सिंघ और उसके बेटे के क़सूर माफ़ होना.
११० राजा जय सिंघ और अमर सिंघ का हाज़िर होना.
११० कश्मीर में काल और उसका इन्तज़ाम.

बरस १६वां

११२ शाह ज़ादे औरंग ज़ेब का दखन को जाना.
११२ राना जगत सिंघ और राज रूप के मनसब बहाल होना.

११० औरंगज़ेब का मय राव शत्रुसाल हाडा और राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले के दखन से आना
" करमसी राठोड़ के बेटे स्याम सिंघ को मनसब मिलना
" राय काशीदास का दीवान लाहोर होना
" राजा जगत सिंघ और उसके बेटे राजरूप के क़सूर माफ़ किये जाना
" राजा जे सिंघ और अमर सिंघ का हाज़िर होना
" कश्मीर में क़हत और उसका इन्तज़ाम

सोलवां बरस

११२ शाहज़ादा औरंगज़ेब का दखन जाना
११२ राजा जगत सिंघ और राजरूप के मनसबों की बहाली

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

۱۰۳ چنبہ کے راجہ پرتھی چند کا شاہزادہ مراد کے وسیلہ سے بادشاہ کی پاس حاضر ہونا

۱۰۳ شاہزادہ مراد کا بادشاہ کے پاس گانو وامن مین آنا

〃 پرتھی چند راجہ چنبہ کو خلعت اور منصب عنایت ہونا

۱۰۵ شاہزادہ مراد کا پہر نورپور کو جانا اور راجہ پرتھی چند سے ملکر بادشاہی فوج کا تاراگڈہ پر حملہ کرنا۔

۱۰۶ راجہ جگت سنگہ کا نورپور پر سپرد کر دینا

دربار کا حال

۱۰۷ رحلت اصف خان وزیر

۱۰۸ رائے مکند داس جسونت رائے اور بہادری مل

۱۰۹ بادشاہ کا گانو وامن سے دوہور کو لوٹنا

〃 مہیس راٹھوڑ کا اضافہ

१०३ चंबे के राजा पृथ्वी चन्द का शाह ज़ादे मुराद के मारफ़त बाद शाह के पास हाज़िर होना-

१०३ शाह ज़ादे मुराद का बाद शाह के पास गांव वामन में आना-

१०३ चंबे के पृथ्वी चन्द को ख़िलअत और मन सब इनायत होना-

१०५ शाह ज़ादे का फिर नूर पुर जाना और राजा पृथ्वी चन्द से मिल कर बाद शाही फ़ौज का तारागढ पर हमला करना-

१०६ राजा जगत सिंघ का नूर पुर सोंप देना-

दरबार का हाल

१०७ आसिफ़ ख़ां वज़ीर का मरना

१०८ राय मुकंद दास, जस वंतराय और विहारी मल-

१०९ बाद शाह का गांव वामन से लाहोर को लोटना-

१०९ महेस राठोड़ का इज़ाफ़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वाहन की तरफ़ जाना-
९९ सईद खां और राजा जय सिंघ का मऊ फ़तह करने को जाना-
९९ राजा जगत सिंघ का बाद शाही फौज से लड़ना-
९३ गुलेर के राजा मान का बाद शाही लश्कर कर के शामिल हो कर उस लड़ाई में मदद देना-
९८ बहादुर खां का बुंदेल खंड से ३००० सवार लेकर शाह जादे मुराद के लश्कर में शामिल होना-
९९ जगत सिंघ का फ़तह चाहना बाद शाह का मनजूर न करना और फिर लड़ाई शरू होना-
१०२ नूर पुर के क़िले की फ़तह होना-
१०२ खान जहां को ६ हज़ारी और जय सिंघ को पंच हज़ारी मनसब मिलना-
१०२ राजा मान सिंघ गुलेरी को हाथी सिरो पाव मिलना-

دامن کیطرف جانا
" سعید خان اور راجہ جیسنگہ کا مئو فتح کرنے کو جانا
" راجہ جگت سنگہ کا بادشاہی فوج سے لڑنا
۹۳ گلیر کے راجہ مان سنگہ کا بادشاہی لشکر کے شامل ہو کر اوس لڑائی مین مدد دینا
۹۸ بہادر خان کا بندیل کھنڈ سے معہ تین ہزار سوارون کے شاہزادہ مراد بخش کے لشکر مین شامل ہونا
۹۹ راجہ جگت سنگہ کا صلح چاہنا بادشاہ کا منظور نہ کرنا اور پھر لڑائی شروع ہونا
۱۰۲ قلعہ نورپور کا فتح ہونا
" خان جہان کو ششہزاری اور راجہ جیسنگہ کو پنجہزاری منصب ملنا
" راجہ مان سنگہ گلیری کو خلعت معہ فیل کے عنایت ہونا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गरे की किले दारी और उस सूबे की सूबे दारी मिलना-

८५ राय रायां का दीवान व्योतात होना

८५ घोडों का शौक़ और एक लाख रुपेय के घोडे खरीदे जाना

८५ राजा जसवंत सिंघ को अर बी घोड़ा इनायत होना-

८६ राय तोडर मल को हाथी और घोडा इनायत

८६ अब दुल्ला खां का बुंदेलों पर भेजा जाना -

पालामू की मुहिम

८७ बलभ धर के बेटे प्रताप का बाग़ी होना और शायस्ते खां सूबे बिहार का उसके ऊपर जाना-

पठाणा की मुहिम

८८ बाद शाह का शिकार के वास्ते राजा जगत सिंघ के वतन गांव

कासूबेदार आगरे और क़िलेदार आगरे मुक़र्रर होना

" रायेरायान का दीवान बेतात होना

" बादशाह का शौक़ और एक लाख रुपेय के घोड़े खरीदना

" राजा जसवंत सिंघ को अरबी घोड़ा इनायत होना-

८६ रायेतोडरमल को हाथी और घोड़ा इनायत

" अब्दुल्ला खान का बुंदेलों पर भेजा जाना

पलामों की मुहिम

८७ बलभद्र के बेटे प्रताप का बाग़ी होना और शायस्ता खान सूबेदार बिहार का उसके ऊपर जाना

पठान की मुहिम

८८ बादशाह का शिकार के वास्ते राजा जगत सिंघ के वतन गांव

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बेटे राज रूप का बागी होना-
८३ राजा जगत सिंघ के ऊपर बाद शाही फ़ौजों की चढाई.
८३ नर बर के राजा अमर सिंघ राठ सिंघ भदोरिया, राजा राय सिंघ, गोकुल दास सीसो दिया, राय सिंघ झाला, कृपा राम गोड़ और चैन सिंघ का उस चढाई में तइनात होना-
८३ शाह ज़ादे मुराद बख़्शका राजा जगत सिंघ के ऊपर जाना-
८३ राजा जय सिंघ, हरी सिंघ राठोड़, चन्द्र भाण बुंदेला राय कासी दास और नाहर सोलंखी, शाहज़ादे मुराद बख़्श की तई नाती में-
८३ राजा राय सिंघ राजा अमर सिंघ गोकुल दास सीसो दिया और राय सिंघ झाला को ख़िलअत

दरबारका हाल

८३ राजा बिट्ठल दास गोड को आ

बेटे राज रूप का बाग़ी होना
८३ राजा जगत सिंघ के ऊपर बादशाही फ़ौजों की चढ़ाई
" राजा अमर सिंघ नरूरी - रन सिंघ बहदूरिया - राजा राय सिंघ गोकुल दास सिसोदिया राय सिंघ जहाला - कृपा राम गोड़ और चैन सिंघ का उस चढ़ाई में तइनात होना
" शाहज़ादा शुजाअ का सरलश्कर होकर
" राजा जैसिंघ - हरी सिंघ राठोड़ चन्द्रभान बुंदेला - राय कासीदास और नाहर सोलंखी शाहज़ादा मुराद बख़्श की तइनाती में
" राजा राय सिंघ अमर सिंघ गोकुलदास सिसोदिया और राय सिंघ जहाला को ख़िलअत

दरबार का हाल

राजा बिट्ठल दास गोड़

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

"	راجہ جسونت سنگہ کو فیل خاص عنایت	۷۶ جس بنت سنگھ کو خاصا ہاتھی اِنایت -
"	لاہور کی نہر اور راو اوسکے اوپر باغات و محلات	۷۶ لاہور کی نہر اور اوسکے اوپر باغ و محل -
"	راجہ بٹھل داس گوڑ و راجہ امر سنگہ والی نروڑ کا حاضر آنا	۷۶ راجا بٹھل داس اور راجا امر سنگھ نروڑ والے کا حاضر ہونا -
۹۰	بٹھل داس گوڑ کو ہاتھی عنایت	۸۰ بٹھل داس کو ہاتھی اِنایت
"	راجہ جسونت سنگہ کو اسپ خاصہ عنایت	۸۰ راجا جسونت سنگھ کو خاصا گھوڑا اِنایت -
"	راجہ رائے سنگہ کو نقارہ عنایت	۸۰ راجا رائے سنگھ کو نقارا اِنایت -
"	رام سنگہ رام ٹھوڑ کا اضافہ منصب	۸۰ رام سنگھ راٹھوڑ کے منصب کا اِضافہ -
۸۰	رائے تودرمل کو لکھی جنگل کی فوجداری	۸۰ رائے تودرمل کو لکھی جنگل کی فوجداری -
	راجہ جگت سنگہ پر مہم	**راجا جگت سنگھ پر مہم**
۸۱	راجہ جگت سنگہ اور اوسکے	۸۱ راجا جگت سنگھ اور اوسکے

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

کا اوسکے ساتھ تعینات ہونا

७५ राजा जय सिंघ को ख़िलअत-

७५ راجہ جے سنگھ کو خلعت

७६ राजा जसवंत सिंघ का वतन से आना-

७६ راجہ جسونت سنگھ کا وطن سے آنا

७६ राजा राय सिंघ को हाथी

७६ راجہ جیسنگھ کو ہاتھی

७६ जंबु का फ़ौजदार

" جمبو کا فوجدار

७६ राव अमर सिंघ और चतुर भुज चौहान को ख़िलअत-

" راؤ امر سنگھ اور چتربھوج چوہان کو خلعت

बरस १५वाँ

برس پندرہواں ۱۵

७७ महेस दास राठोड़ का राज सिंघ के मरने पर परधान मारवाड़ होना-

७७ مہیس داس راٹھوڑ کا راج سنگھ راٹھوڑ کے مرنے پر مہاجن مارواڑ ہونا

७७ राजा जसवंत सिंघ का पंच हज़ारी होना-

" راجہ جسونت سنگھ کا پنجہزاری ہونا

७७ महेस दास महावत ख़ानी

" مہیس داس مہابت خانی

७७ राय सिंघ झाला का हज़ारी मनसब

" رائے سنگھ جھالا کا ہزاری منصب

७७ आज़म ख़ां सूबे गुजरात की जाम नगर पर चढ़ाई-

" اعظم خان صوبہ دار گجرات کی جام نگر پر چڑھائی

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होना-	ہونا
७३ मुल्ला सादुल्ला या सादुल्ला खां वज़ीर	〃 ملا سعد اللہ یا سعد اللہ خان وزیر
७४ थाने दार नोशहरा का यूसुफ़ ज़ई पठानों के हाथ से मारा जाना-	〃 تھانہ دار نوشہرہ کا یوسف زئی پٹھانوں کے ہاتھ سے مارا جانا
७४ अली मरदान खां को काबुल की सूबे दारी दी गई-	〃 علیمردان خان کو کابل کی صوبہ داری پر مقرر کرنا
७४ चन्द्र भान बुंदेले को घोड़ा इनायत-	〃 چندر بھان بندیلہ کو گھوڑا عنایت
७४ माधो सिंघ हाड़ा का इज़ाफ़ा	〃 مادھو سنگھ ہاڈا کا اضافہ
७४ महेस दास राठोड़ और चंद्र भान को हाथी इनायत और महेस के बेटे रतन को तलवार	〃 مہیس داس راٹھوڑ اور چندر بھان کو ہاتھی عنایت اور مہیس داس کے بیٹے رتن کو تلوار
७५ जय सिंघ के बड़े बेटे राम सिंघ को हाथी इनायत	۷۵ راجہ جیسنگھ کے بڑے بیٹے رام سنگھ کو ہاتھی عنایت
७५ मुराद बख़श का फिर काबुल जाना राजा राय सिंघ हरी सिंघ राठोड़ राजा जय राम, राय कासी दास, नाहर, इन्द्रे साल हाड़ा और चन्द्र भान बुंदेले	۷۵ شاہزادہ مراد بخش کا پھر کابل جانا راجہ رائے سنگھ ہری سنگھ راٹھوڑ راجہ جے رام - رائے کاشی داس ناہر اندر سال ہاڈا اور چندر بھان بندیلہ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मोर ओर पेजाब में नुकसान हो ना-	اور پنجاب مین نقصان ہونا
७०. बाप जो ज़मीदार गोंड वारा	″ باب جی زمیندار گونڈوانہ
७१ करम सी राठाड़ क वेटे राम सिंघ का बाद शाही नोकर होना-	۷۱ رام سنگہ ولد کرم سی راٹھوڑ کا ملازم شاہی ہونا
७१ राय सल दर बारो के वेट मोज राज को मन सब मिलना	″ راے سال درباری کے بیٹے بہوج راج کو منصب ملنا
७१ राय मान की नज़र	″ راے مان کی نذر
७१ राजा राय सिंघ को घोड़ा इनायत	″ راجہ راے سنگہ کو گھوڑا عنایت
७२ राजा जगत सिंघ का फ़ोजदार कांगड़े होना-	۷۲ راجہ جگت سنگہ کا فوجدار کوہ کانگڑہ ہونا
७२ टोडर मल को राय का खिताब-	تودرمل کو راے کا خطاب
७२ राजा राय सिंघ वगेरे का कश्मीर से रवाना होना-	″ راجہ راے سنگہ وغیرہ کا کشمیر سے روانہ ہونا
७३ किस्टवार के राजा कंवर सेन को घोड़ा इनायत-	۷۳ کشٹوار کے راجہ کنور سین کو گھوڑا عنایت
७३ बाद शाह लाहोर में	″ بادشاہ لاہور مین
७३ शाह ज़ादे मुराद बख्श ओर माधो सिंघ हाड़ा का हाज़िर	″ شاہزادہ مراد بخش اور مادھو سنگہ ہاڈا کا حاضر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६७ औरंग ज़ेब का दखन से आना	۶۷ اورنگ زیب کا دکن سے آنا
६७ बंगाले में शाह ज़ादे शुजाअ के दौलत ख़ाने का जल जाना-	〃 بنگالہ میں شاہزادہ شجاع کے دولت خانہ کا جلجانا
६७ बाद शाह का कशमीर जाना-	〃 بادشاہ کا کشمیر جانا
६८ माधो सिंघ हरी सिंघ राठोड़ और राजा जय राम का शाह ज़ादे मुराद बख़श के साथ काबुल जाने को तर्द्दुदात होना-	۶۸ مادھو سنگھ ہری سنگھ راٹھوڑ اور راجہ جی رام کا شاہزادہ مراد بخش کے ساتھ کابل جانے کو متعین ہونا
६८ औरंग ज़ेब को दखन भेजना	〃 اورنگ زیب کا دکن کو واپس جانا
६८ राजा जसवंत सिंघ और राज सिंघ प्रधान को वतन की रुख़सत	〃 راجہ جسونت سنگھ اور پردھان راج سنگھ کو وطن جانے کی رخصت
६८ राजा जगत सिंघ कशमीर का रसता साफ़ कराने में-	〃 راجہ جگت سنگھ کا واسطے صاف کرنے راستہ کشمیر کے مامور ہونا
६९ बाद शाह का कशमीर पहुंचना	۶۹ بادشاہ کا کشمیر پہونچنا
६९ पृथ्वी राज बुंदेले का पकड़ा जाना और बहा दुर ख़ां का बुंदेलों पर भेजना-	۶۹ پرتھی راج بندیلہ کا پکڑا جانا اور بہادر خاں کا بندیلوں پر بھیجا جانا
७० रूम के वकील का आना	۷۰ روم کے وکیل کا آنا
७० भट नदी के चढ जाने से कश	〃 دریائے بہٹ کی طغیانی سے کشمیر

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६४	गोरधन राठोड़ का बादशाही नौकर होना-	۶۴ گوردھن راٹھوڑ کا بادشاہی نوکر ہونا
६४	बादशाह लाहोर में	۶۴ بادشاہ لاہور مین
,,	शाहज़ादा दारा शिकोह और राजा जय सिंघ का काबुल से लाहौर में आना-	,, شاہزادہ دارا شکوہ اور راجہ جیسنگھ کا کابل سے لاہور مین آنا
६४	आदिल खां की पेश कश	,, عادل خان کی پیشکش
६४	अली मरदान खां का रावी नदी से लाहोर तक नहर बनाना-	,, علیمردان خان کا راوی ندی سے لاہور تک نہر لانا
६५	कुलीच खां का कंधार से फ़ौज भेज कर सीस्तां के बंद को तोड़ना-	۶۵ قلیچ خان کا قندہار سے فوج بھیجکر سیستان کے بند کو توڑنا
६५	राजा जय सिंघ को वतन जाने की रुख़सत-	,, راجہ جیسنگھ کو وطن جانے کی رخصت
६५	खीलू जी का मारा जाना-	,, کھیلوجی کا مارا جانا
६६	दुक़ बाल नामे के बनाने वाले मोतमद ख़ां का मरना-	۶۶ معتمد خان مولف اقبالنامہ جہانگیری کا انتقال
६६	नरवर के राजा रामदास का मरना और उसके पोते अमर सिंघ का राजा होना-	,, نروار کے راجہ رام داس کا مرنا اور اوسکے پوتے امر سنگھ کا راجہ نروار ہونا
६६	हर नाथ महापात्र को इनाम-	,, ہرناتھ مہاپاتر کو انعام

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

६१	काबल खुरदमین राजہ بٹھل داس گوڑ کو گھوڑا عنایت ہونا
६१	بادشاہ کابل مین
६१	راجسنگہ راٹھوڑ کو گھوڑا عنایت
६२	بلخ کے وکیل کا آنا
६२	راجسنگہ راٹھوڑ اور رائے سنگہ چہالا کا اضافہ
६३	بٹھل داس اور ارجن گوڑ کو گھر جانے کی رخصت
६३	بادشاہ کی روانگی کابل سے کشمیر کو
६३	انرودھ کا اضافہ
६३	کوہاٹ مین راجہ جگت سنگہ کا بادشاہ کے پاس حاضر ہونا
६३	نیلاب کے کنارہ پر جسونت سنگہ کو گھوڑا عنایت
६४	تبت کلان کے زمیندار کا چھوٹی تبت مین نکالا جاتا

६१ छोटी काबुल में विठ्ठल दास को घोड़ा इनायत होना
६१ बाद शाह काबुल में-
६१ राज सिंघ राठोड़ को घोड़ा इनायत-
६२ बलख का वकील आया-
६२ राज सिंघ राठोड़ और राय सिंघ झाला का इज़ाफ़ा
६२ विठ्ठल दास और अर्जुन गोड़ को घर जाने की रुख सत
६२ बाद शाह का काबुल से कश्मीर में जाना-
६३ राजा जय सिंघ काबुल में
६३ अनि रुद्र गोड़ का इज़ाफ़ा
६३ कोहाट में राजा जगत सिंघ का बाद शाह के पास हाज़िर होना-
६३ नीलाब के किनारे पर जसवत सिंघ को घोड़ा इनायत-
६४ बड़ी तिब्बत के ज़मीदार का छोटी तिब्बत में निकाला जाना-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

५९ नोशहरे में राजा जय सिंघ और राव अमर सिंघ को घोड़ा इनायत	नोशहरे मेन राजा जैसिंघ राई सिंघ और राव अमर सिंघ को घोड़ा इनायत
६० नोशहरे मे ५०००० सवारों की हाजरी-	६० नोशहरे मेन पचास हजार सवारों की हाजरी
६० राजा जय सिंघ को मिरज़ा राजा का ख़िताब -	६० राजा जैसिंघ को मिरज़ा राजा का खिताब
६० अगर सिंघ को हाथी और राय सिंघ को झंडा इनायत-	६० अमर सिंघ को हाथी और राय सिंघ को झंडा इनायत
६० जय राम और गोकुल दास सीसोदिये के मनसब इज़ाफ़े होना-	६० जी राम और गोकुल दास सीसोदिये का मनसब इज़ाफ़ा होना
६० राजा जसवंत सिंघ को पिशावर में छोड़ना-	६० राजा जसवंत सिंघ को पेशावर मेन छोड़ना

१३वां बरस

तेरहवां बरस

६१ राजा विठ्ठल दास का आगरे से खज़ाना लेकर अली मसजिद में बादशाह के पास हाज़िर होना,	६१ राजा बिठल दास का आगरे से खज़ाना लेकर अली मसजिद मेन बादशाह के पास हाज़िर होना
" राजा जसवंत सिंघ वगैरा अमीरों का बादशाह के पास पहुंचना	६१ राजा जसवंत सिंघ वगैरा अमीरों का बादशाह के पास पहुंचना

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पर रवाना करना राजा जगत सिंघ और राय सिंघ का साथ जाना ॥

५७ राजा राय सिंघ को हाथी इनायत-

५८ बग लारो के अरजी का मरना और उसके बेटे परम जी का मुसलमान होकर दौलत मंद नाम पाना

५८ सभा चंद का दीवान लाहोर और बिहारी मल का दीवान मुलतान होना-

५८ राजा जय सिंघ का नोशहरे रावल पिंडी में बाद शाह के पास हाज़िर होना-

५९ राजा जगत सिंघ का शाहजादे दारा शिकोह के साथ बादशाह के हज़ूरमें हाज़िर हो कर बंगश के बंदोबस्त पर जाना-

राजा जय सिंघ को मोतियों की माला और हाथी इनायत-

५९ राजा जसवंत सिंघ को हाथी इनायत-

پر روانہ کرنا راجہ جگت سنگھ اور راسے سنگھ کا ساتھ جانا

۵۷ راجہ راسے سنگھ کو ہاتھی عنایت

۵۸ بگلانہ کے راجہ بہرجی کا مرنا اور اوسکے بیٹے پرم جی کا مسلمان ہوکر دولت مند نام پانا

۵۸ سبھا چند کا دیوان لاہور اور بہاری داس کا دیوان ملتان ہونا

۵۸ راجہ جیسنگھ کا نوشہرہ سے راول پنڈی مین بادشاہ کے پاس حاضر آنا

۵۹ راجہ جگت سنگھ کا شاہزادہ دارا شکوہ کے ساتھ بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوکر بنگش کے بندوبست پر جانا

۵۹ راجہ جیسنگھ کو موتیون کی مالا اور ہاتھی عنایت

۵۹ راجہ جسونت سنگھ کو ہاتھی عنایت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

۵۵	افضل خان وزیر کا مرنا اور دیانت رائے کا اختیار بڑھنا
۵۵	ذوالقرن فرنگی کو انعام
۵۶	راجہ جسونت سنگھ کا ہزاری ذات اور ہزار سوارون کا اضافہ
۵۶	راجہ رائے سنگھ کے منصب مین اضافہ
۵۷	دیانت رائے کو رائے ریان کا خطاب
۵۷	شاہ زادہ شجاع کا کابل سے بنگالہ کی صوبہ داری پر بھیجا جانا
۵۷	راجہ جگت سنگھ کا کابل سے حاضر آنا
۵۷	عبداللہ خان کا پٹنہ سے پرتھی راج اور چمپت بندیلہ پر جانا
۵۷	بادشاہ کا کابل جانا
۴	شاہزادہ داراشکوہ کو ایران کے شاہ صفی کے مقابلہ

५५ अफ़ज़ल ख़ां वज़ीर का मरना और दयानत राय का अख़्तियार बढ़ना

५५ ज़ुल करनेन फ़रंगी को इनाम-

५६ राजा जसवंत सिंघ को हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का इज़ाफ़ा-

५६ राजा राय सिंघ के मन सब में इज़ाफ़ा-

५७ दया नत राय को राय रायां का ख़िताब-

५७ शाह ज़ादा शुजाअ का काबुल से बंगाले की सूबदारी पर भेजना

५७ राजा जगत सिंघ का काबुल से हाज़िर आना-

५७ अब दुल्ला ख़ां का पटने से-

प्रथ्वी राज और चंपत बुंदेले पर जाना-

५७ बाद शाह का काबुल जाना

५७ शाह ज़ादे दारा शिकोह को ईरान के शाह सफ़ी के मुक़ाबिले

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में बाद शाह से मिलना-
५२ राजा जस वंत सिंघ को ख़ासा ख़िलअत और घोड़ा मिलना-
५३ राजा गज सिंघ के बेटे सबल सिंघ के मनसब में इज़ाफ़ा-
५३ महेस राठौड़ का बाद शाही नौकर होना-
५३ बाद शाह का लाहौर पहुंचना और अली मरदान ख़ां का हाज़िर होना.
५४ ईरान के शाह सफ़ी के वकील को रुख़सत-
५४ राजा जगत सिंघ के बेटे राजरूप का कांगड़े में फ़ौज दार होना
५४ शाह जादों राजा जस वंत सिंघ और सईद ख़ां को पोस तीनों इनायत
५४ कच्छ के राजा भारा के बेटे भोज का भेजा घोड़ा नज़र होना-
५५ राना जगत सिंघ की अरज़ी और उस के वास्ते ख़िलअत

مین بادشاہ سے ملنا
۵۲ راجہ جسونت سنگہ کو خلعت خاصہ اور گھوڑا ملنا
۵۳ راجہ گج سنگہ کے بیٹے سبل سنگہ کے منصب مین اضافہ
۵۳ مہیش راٹھوڑ کا بادشاہی نوکر ہونا
۵۳ بادشاہ کا لاہور پہونچنا اور علیمردان خان کا حاضر ہونا
۵۴ ایران کے شاہ صفی کے وکیل کو رخصت
۵۴ راجہ جگت سنگہ کے بیٹے راجروپ کا کانگڑہ مین فوجدار ہونا
۵۴ شاہزادون کو راجہ جسونت سنگہ اور سعید خان کو پوستین عنایت
۵۴ کچھ کے راو بہارا کے بیٹے بھوج کا بھیجا ہوا گھوڑا نذر ہونا
۵۵ رانا جگت سنگہ کی عرضی اور اوسکے واسطے خلعت

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर गना उस को दिया जाना-

५० पीपोल का क़िला ऊदिया क़ौम भरजी से फ़तह होना-

५० राम नगर भरजी के जमाई सोम देव के पास दस हज़ार रुपया माल गुज़ारी पर रहना-

५१ रेखंग के ज़मी दार का भाई मांग त राय जो हाकिम चाट गाम था हाकम बंगाले के पास हाज़िर आया जिस्से १२००० मर्द औरत बंगाले के जो ४० बरस से चाट गाम में कैद थे छूट कर अपने घरों को आये-

५१ बाद शाह का लाहौर जाना और राजा विठ्ठल दास गोड़ को आगरे के क़िले में छोड़ जाना-

५२ राजा जसवंत सिंघ को घोड़ा इनायत-

५२ राजा जसवंत सिंघ के परधान राज सिंघ का हाथी नज़र करना-

५२ राजा जसवंत सिंघ का प[illegible]म

का परगना उसको दिया जाता

५० क़िलह पीपोल का उदिया क़ौम भरजी से फ़तह होना

५० राम नगर का भरजी के जमाई सोम देव के पास दस हज़ार रुपया मालगुज़ारी पर रहना

५१ रेखंग के ज़मींदार का भाई मांगत राय जो हाकिम चाटगाम था हाकिम बंगाला के पास हाज़िर आया जिस से दस हज़ार मर्द औरत बंगाला के जो चालीस बरस से चाटगाम में क़ैद थे छूट कर अपने घरों को आये

५१ बादशाह का लाहौर जाना और राजा बीठल दास गौड़ को आगरे के क़िले में छोड़ जाना

५२ राजा जसवंत सिंघ को घोड़ा इनायत

५२ राजा जसवंत सिंघ के परधान राज सिंघ का हाथी नज़र करना

५२ राजा जसवंत सिंघ का पालम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इज़ाफ़ा-

४२ बादशाह का शाहज़ादे दारा शिकोह के मकान पर जाना और राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअत मिलना-

४२ राजा जसवंत सिंघ का बादशाह को ६ हाथी नज़र करना-

४३ राज सिंघ राठोड़ परधान राजा जसवंत सिंघ-

क़ंधार की मुहिम

४३ राजा जगत सिंघ का सारबान के क़िले को फ़तह करना-

४४ हीरमंद गरशक और फ़राह वग़ैरे के क़िलों का फ़तह होना और ईरानियों का क़ंधार के इलाक़े से ख़ुरासान में चला जाना-

४४ ईरान की आमदनी और फ़ौज-

४५ बंगलाने का मुल्क भरजी से लिया जाना और सुलतान [illegible]

اضافہ

۴۲ بادشاہ کا شاہزادہ داراشکو کے مکان پر جانا اور راجہ جسونت سنگہ کو خلعت ملنا

۴۲ راجہ جسونت سنگہ کا بادشاہ کو چھ ہاتھی نذر کرنا

۴۳ راجسنگہ راٹھوڑ پروہان راجہ جسونت سنگہ

مہم قندہار

۴۳ راجہ جگت سنگہ کا قلعہ ساربان کو فتح کرنا۔

۴۴ ہیرمند گرشک اور فرہ وغیرہ قلعجات علاقہ قندہار کا فتح ہونا اور ایرانیون کا ضلع قندہار سے خراسان چلا جانا

۴۴ ایران کی آمدنی اور فوج

۴۵ بنگلانہ کا ملک بھرجی سے لیا جانا اور سلطان پور

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुहिम क़ंधार

३४ राजा जगत सिंघ का ईरानियों से बस्त और ज़मींदार के क़िले फ़तह करना-

३८ अली मरदान ख़ां का क़ंधार से काबुल में शाह ज़ादे शुजअ के पास हाज़िर होना-

३९ राजा गज सिंघ राठोड़ के मरने पर जसवंत सिंघ का राजा होना और अमर सिंघ को राव की पदवी मिलना-

४१ राठोडों में गद्दी उसरानी के बेटे को मिलती है कि जो राजा की बहुत प्यारी हो और उस की नज़ीरें-

दरबार का हाल

४१ गोंडों के राजा चांदा की नज़र-

४२ राय सिंघ झाला को मनसब मिलना-

४२ हरी सिंघ राठोड़ के मन[illegible] का

مہم قندہار

۳۴ راجہ جگت سنگہ کا ایرانیون سے بست اور زمینداور کے قلعے فتح کرنا۔

۳۸ علیمردان خان کا قندہار سے کابل مین شاہزادہ شجاع کے پاس حاضر ہونا۔

۳۹ راجہ گج سنگہ راٹھوڑ کا انتقال جسونت سنگہ کا راجہ ہونا اور امر سنگہ کو راو کا خطاب ملنا

۴۱ راٹھوڑون مین گدی اوس رانی کے بیٹے کو ملتی ہے کہ جس سے راجہ کو بہت محبت ہو اور اوسکی نظیرین

دربار کا حال

۴۱ گونڈوانہ کے راجہ چاندا کی نذر

۴۲ راے سنگہ جہالا کو منصب ملنا

۴۲ ہری سنگہ راٹھوڑ کے منصب کا

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१५ कुलीच ख़ां क़ंधार में और अली मरदान ख़ां काबुल में-

कोच हाजू की मुहिम

१६ कोच हाजू का राजा प्रीछत

१६ कोच बिहार का राजा लिछमी नरायण

१७ प्रीछत का भाई बल देव-

आसाम पर चढ़ाई

१८ आसाम का राजा सरग देव-

१९ शत्रु जीत थाने दार पांडू बिसीने को राजा मुकंद का बेटा-

२० प्रीछत का बेटा चंद्र नारायण-

२१ शत्रु जीत का बेटा गोपी नाथ-

२२ सरदा पुर के ज़मींदार का बेटा उत्तम नारायण-

२३ इसाम ख़ां का इज़ाफ़ा आसामियों पर फ़तह पाने में-

१२ वां बरस

۱۵ قلیچ خان قندھار میں اور علی مردان خان کابل میں

کوچ ہاجو کی مہم

۱۵ کوچ ہاجو کا راجہ پرچھت

۱۶ کوچ بہار کا راجہ لچھمی نراین

۱۶ پرچھت کا بھائی بلدیو

آسام پر فوجکشی

۱۹ آسام کا راجہ سرگ دیو

۲۲ شترو جیت تھانہ دار پانڈو بسنید کے راجہ مکند کا بیٹا

۲۰ پرچھت کا بیٹا چندر نارائن

۲۱ شترو جیت کا بیٹا گوپی ناتھ

۲۲ سردار پور کے راجہ کا بیٹا اوتم نراین

۲۳ اسلام خان صوبہ دار بنگال کا اضافہ اسامیوں پر فتح پانے میں

بارہواں برس

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

१२ राय कासी दास दीवान काबुल, मो
हकम सिंघ गोपाल सिंघ उगर सेन राम
सिंघ गज सिंघ जग राम वल्द बिहा
री दास सुत, हिम्मत सिंघ मेदनी मल
भदोरिया और इन्द्र भान राजा जगत सिं
घ की अफ़सरी में ईरानियों से लडे-
१३ क़ज़ल बाशों यानी ईरानियों का
भाग जाना-
१३ सईद खां और राजा जगत सिंघ
को खिलअत-
१४ गोपाल सिंघ राय काशी दास
और जग राम का इज़ाफ़ा-
१४ शाह ईरान का बाद शाही वकी
ल सफ़दर खां को जवाब-

दरबार का हाल

१४ महेस दास राठोड़ का इज़ाफ़ा-
१५ दयानत राय को इज़ाफ़ा और त
न दफ़तर-
१५ गोकुल दास सीसोदिये का

۱۲ رائے کاسی داس دیوان کابل
محکم سنگھ گوپال سنگھ
اوگرسین رام سنگھ گج سنگھ
جگرام ولد بہاری داس
ہمت سنگھ میدنی مل بھدوریہ
اور اندر بھان کا راجہ جگت سنگھ
۱۳ کی افسری میں ایرانیوں سے لڑنا
۱۳ قزلباشوں یعنی ایرانیوں کا
بھاگ جانا سعید خان اور
راجہ جگت سنگھ کو خلعت
۱۴ گوپال سنگھ رائے کاسی داس
اور جگ رام کا اضافہ
۱۴ شاہ ایران کا بادشاہی وکیل صفدر خان
کو جواب

دربار کا حال

۱۴ مہیش راٹھور کا اضافہ
۱۵ دیانت رائے کو اضافہ اور
تن دفتر
۱۵ گوکل داس سیسودیہ کا اضافہ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सोंपना-

१० शाह ईरान के ऊपर शाहज़ादे शुजाअ को भेजना-

१० राजा जय सिंघ कछवाहा अमर सिंघ राठोड़ माधो सिंघ हाड़ा हरी सिंघ राठोड़ और कृपा राम गौड़ ईरान की मोहिम में-

१० खान दौरां सूबे दार मालवे का फ़ोज मुसाहिब होना-

११ सईद ख़ां सूबे दार काबुल को मदद का हुक्म पहुंचना-

११ कुलीच ख़ां का सूबे दार कंधार होना-

११ वज़ीर ख़ां सूबेदार पंजाब को रसद पहुंचाने का हुक्म-

११ अली मरदान ख़ां को ख़िलअत-

११ राजा जगत सिंघ की काबुल और कंधार में तईनाती-

११ सईद ख़ां की किशक जमीद में ईसनियों पर फ़तह-

۱۰ شاہ ایران کے اوپر شاہزادہ شجاع کو بھیجنا

۱۰ راجہ جیسنگہ کچھواہا امر سنگہ راٹھوڑ مادھو سنگہ ہاڑا ہری سنگہ راٹھوڑ اور کرپا رام گوڑ کا مہم ایران مین تعینات ہونا

۱۰ خاندوران صوبہ دار مالوہ کا سرعسکر ہونا

۱۱ سعید خان صوبہ دار کابل کو مدد کا حکم پہونچنا

۱۱ قلیچ خان کا صوبہ دار قندہار ہونا

۱۱ وزیر خان صوبہ دار پنجاب کو رسد پہونچانے کا حکم

۱۱ علمردان خان کو خلعت

راجہ جگت سنگہ کی کابل اور قندہار مین تعیناتی

سعید خان کی کشک نخود مین ایرانیون پر فتح

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जगह फ़ौज दार अजमेर होना ॥
७ राजा विठ्ठल दास को रिवल्अत
७ नाहर सो लखी को हाथी-
७ राजा गज सिंघ को रिवल्अत
७ कल्यान झाला को रुख सत
७ जलाला के बेटे करीम दाद को
राजा जगत सिंघ और सईद खां
का पकड़ना-
८ सोरू और सेस वान में शेरों का
शिकार-
८ चंदबार के फ़िसादियों को सज़ा
८ माधो सिंघ और हरी सिंघ हाड़ो
का हाज़िर आना-
८ राजा जे सिंघ का वतन से आना
९ राजा किशन सिंघ के बेटे हरी
सिंघ का इज़ाफ़ा

क़ंधार की मुहिम

९ क़ंधार और कलात ग़िलज़ई का
मुल्क ईरानी सूबे दार अली
मरदां का [illegible]

گوڑ کے فوجدار اجمیر ہونا
۷ راجہ بٹھلداس کو خلعت
۷ ناہر سو لکھی کو ہاتھی
۷ راجہ گج سنگھ کو خلعت
۷ کلیان جھالا کو رخصت
۸ جلالہ کے بیٹے کریم داد کو
راجہ جگت سنگھ اور سعید خان
کا پکڑنا
۸ سورن اور سیسوان میں
شیروں کا شکار
۸ چندوار کے فسادیوں کو سزا
۸ مادھو سنگھ اور ہری سنگھ
ہاڈوں کا حاضر آنا
۸ راجہ جیسنگھ کا وطن سے آنا
۹ راجہ کشن سنگھ کے بیٹے ہری سنگھ
کا اضافہ

مہم قندہار

۹ قندہار اور قلات غلزئی کا ملک
ایرانی صوبہ دار علی مردان خان کا
بادشاہی آدمیوں کو سپرد کرنا

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

فہرست

بقیہ حال سال ۱۱

صفحہ نمبر	
۱	راجہ انوپ سنگھ بڈگوجر کا مرنا اور اوسکے بیٹے جی رام کا جانشین ہونا لال خان کلاونت کو گن سمندر کا خطاب
۲	جگناتھ راے مہاکسی کی تعریف
۲	ہندوستان کا علم - موسیقی اور میر خسرو - راجہ مان تنور - نایک بخشو اور تان سین کا ذکر
۵	کالنجر کا راجہ کیرت
۵	باندھون گڈھ کا راجہ رام چندر
۶	راجہ چھتراس گوڑ اور راجہ گج سنگھ راٹھور کا حاضر آنا
۶	رانا جگت سنگھ کے وکیل جہالا کلیان کا حاضر درگاہ ہونا
۷	شاہ علی کا [illegible]

सूचीपत्र

११ वें बरसका बाक़ी हाल

१ राजा अनोप सिंघ बड़ गूजर का मरना और उसके बेटे जय राम का राजा होना ॥

१ लाल ख़ां कलावंत को गुण समंदर की पदवी ॥

२ जगन्नाथ राय महा कविकी तारीफ़

२ हिंदुस्तान का गाना और नामी गवैये मीर ख़ुसरो राजा मान तुंवर नायक बख़्शू और तान सैन २-५

५ कालंजर का राजा कीरत-

५ बांधो गढ का राजा राम चन्दर

६ राजा विट्ठल दास और गज सिंघ का हाजिर होना-

६ राजा जगत सिंघ का वकील [illegible] ल्याया [illegible]

७ शाह अली का अपनी [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri